राजयोगी टीचर्स

Only for RajYogi Teacher

राजयोगी टीचर

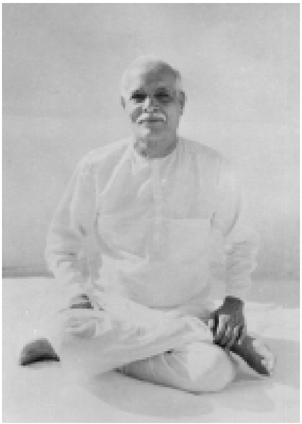

राजयोगी टीचर

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कईं वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'राजयोगी टीचर'** एक है।

प्रस्तावना

सृष्टि पर एक ही बार गुप्त वेश में अवतरीत 'शिव परमात्मा' को अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाली पदमा-पदम भाग्यशाली आत्मायें, शिव-शक्ति स्वरूप, स्वयं भगवान के गुरु-भाई, यज्ञ के आधारमूर्त, विश्व परिवर्तन के भगीरथ कार्य में निमित्त बनने वाले आदरणीय ब्रह्माकुमारी बहनों (टीचर्स) के लिए बापदादा ने 1969 से 2009 तक जो महावाक्य उच्चारण किये हैं उनका ये बहुत अच्छा संग्रह हैं।

इसे बार-बार पढ़ने से बापदादा की हम टीचर्स के लिए क्या भावना हैं, क्या चाहना हैं - वह दिल में छप जाती हैं और आत्मा सम्पन्नता की स्टेज में उड़ती कला का अनुभव करती हैं।

ओम् शान्ति्

'बापदादा की टीचर्स बहनों प्रति शुभ आशाएं'

सभी निमित्त आत्मायें हो ना? सदा अपने को सेवार्थ निमित्त आत्मा हूँ - ऐसा समझकर चलते हो? निमित्त आत्मा समझने से सदा दो विशेषतायें साकार रूप मे दिखाई देंगी।

1. सदा नम्रता द्वारा निर्माण करते रहेंगे।

2. सदा सन्तुष्टता का फल खाते और खिलाते रहेंगे। तो मैं निमित्त हूँ- इससे न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव करेंगे। मैंने किया यह भी कभी वर्णन नहीं करेंगे। मैं शब्द समाप्त हो जायेगा। 'मैं' के बजाए 'बाबा बाबा'। तो बाबा-बाबा कहने से सबकी बुद्धि बाप की तरफ जायेगी। जिसने निमित्त बनाया उसके तरफ बुद्धि लगने से आने वाली आत्माओं को विशेष शक्ति का अनुभव होगा क्योंकि सर्वशक्तिवान से योग लग जायेगा। शक्ति स्वरूप का अनुभव करेंगे। नहीं तो कमजोर ही रह जाते हैं। तो 'निमित्त' समझकर चलना यही सेवाधारी की विशेषता है। देखो - **सबसे बड़े ते बड़ा सेवाधारी बाप है लेकिन उनकी विशेषता ही यह है - जो अपने को निमित्त समझा। मालिक होते हुए भी निमित्त समझा। निमित्त समझने के कारण सबका प्रिय हो गया। तो निमित्त हूँ, न्यारी हूँ, प्यारी हूँ, यही सदा स्मृति में रखकर चलो।** सेवा तो सब कर रहे हो, यह लाटरी मिल गई लेकिन इस मिली हुई लाटरी को सदा आगे बढ़ाना या कहाँ तक रखना यह आपके हाथ में है। बाप ने तो दे दी, बढ़ाना आपका काम है। भाग्य सबको एक जैसा बांटा लेकिन कोई सम्भालता और बढ़ाता है, कोई नहीं। इसी से नम्बर बन गये। तो सदा स्वयं को आगे बढ़ाते, औरों को भी आगे बढ़ाते चलो। औरों को आगे बढ़ाना ही बढ़ना है। **जैसे बाप को देखो, बाप ने माँ को आगे बढ़ाया फिर भी नम्बरवन नारायण बना।** वह सेकण्ड नम्बर लक्ष्मी बनी। लेकिन बढ़ाने से बढ़ा। बढ़ाना माना पीछे होना नहीं, बढ़ाना माना बढ़ना।

निमित्त समझकर सेवा करो तो सेवा एक गुणा से चार गुणा हो जायेगी। बाप समान सीट मिली है अभी इसी सीट पर सेट होकर सेवा को बढ़ाओ।

(06.04.1982)

टीचर्स भी अच्छे मिले हैं जहां भी जिसका गुण देखो वह जल्दी से उठाना। क्योंकि हरेक में कोई न कोई विशेष गुण होता है। तो हरेक से गुण उठाते उठाते सर्वगुण सम्पन्न बनना है। अगर अवगुण देखो तो पीठ कर लेना। खिलौना देखा है ना। सीता के सामने रावण करते हैं तो पीठ कर देती है। राम को सामने करते हैं तो सम्मुख हो जाती है। आप भी सीता तो हो ही। गुण देखो तो धारण करना। अवगुण को देखते हुए न देखना। सुनते हुए न सुनना, न सोचना। सुनना और देखना तो दूसरी स्टेज है। लेकिन सोचना भी नहीं। इसको कहा जाता है पीठ देना।

(02.03.1969)

याद की यात्रा में कमी है, इसलिए इतनी महसूसता नहीं होती। अमृतवेले याद का इतना अनुभव नहीं होता है। इसलिए जैसे साकार में यहाँ बाहर खुली हवा में सैर भी कराते थे, लक्ष्य भी देते थे, योग का अनुभव भी कराते थे। इसी रीति जो कुमारियों के निमित्त टीचर्स हैं वह उन्हों को आधा घण्टा एकान्त में सैर करावें। जैसे शुरू में तुम अलग-अलग जाकर बैठते थे, सागर के किनारे - कोई कहाँ, कोई कहाँ जाकर बैठते थे। ऐसी प्रैक्टिस कराओ। छतें तो यहाँ बहुत बड़ी-बड़ी हैं। फिर शाम के समय भी 7 से 7.30 तक - यह समय विशेष अच्छा होता है। जैसे अमृतवेले का सतोगुणी टाइम होता है वैसे यह शाम का टाइम भी सतोगुणी है। सैर पर भी इसी टाइम निकलते हैं। उसी समय संगठन में योग कराओ और बीच-बीच में अव्यक्ति रूप से बोलते रहो- कोई का बुद्धियोग यहाँ वहाँ होगा तो फिर अटेन्शन खैंचेगा। योग की सबजेक्ट में बहुत कमी है। भाषण करना, प्रदर्शनी में समझाना - यह तो आजकल के स्कूलों की कुमारियों को एक सप्ताह ट्रेनिंग दे दो तो बहुत अच्छा समझा लेंगी। लेकिन यह तो जीवन में अतीन्द्रिय सुख का

अनुभव करना है ना। उस समय ऐसे समझो जैसे कि बापदादा के निमन्त्रण पर जा रहे हैं। जैसे बापदादा सैर करने आते हैं वैसे बुद्धियोग- बल से तुम सैर कर सकती हो। जब याद की यात्रा का अनुभव करेंगे तो अव्यक्ति स्थिति का प्रभाव आपके नयनों से, चलन से प्रत्यक्ष देखने में आयेगा। फिर उन्हों से माला बनवायेंगे। जैसे शुरू में आप खुद माला बनाती थी ना।

(13.03.1969)

सभी किसकी याद में बैठे हो? एक की याद थी या दो की? जो एक की याद में थे वह हाथ उठायें। और जो दो की याद में थे वह भी हाथ उठायें। अब वह दो कौन? अव्यक्त-वतन वासी वा व्यक्त-वतन वासी? आप सब टीचर्स हैं ना। आपके पास कोई जिज्ञासू आवे तो उनको कौनसा ठिकाना देंगे? सबको टीचिंग क्या देंगे? आप टीचर्स हो ना। टीचर्स अपने टीचर का शो निकालते है। जिज्ञासू को जिस रीति परवरिश करेंगे और ठिकाना देंगे; वह टीचर का शो निकलता है। अगर आप जिज्ञासू को आने से ही अव्यक्त वतन का ठिकाना देंगे जो रास्ता कब देखा ही नहीं तो पहुंचेगा कैसे? पहले एड्रेस कौन-सी दी जाती है? आप संग्रहालय में क्या समझाते हो? जिज्ञासू को क्या परिचय देते हो? उनको कौन-सा रास्ता, कौन-सा ठिकाना देते हो? बीज किसने बोया? बीज तो बीज ही है। वह बीज भल सड़ भी जाए, तो भी समय पर कुछ न कुछ टालियां आदि निकलती रहती हैं, बरसात पड़ती है तो निकल आता है। आप बीज को भूल जायेंगे तो फिर रास्ता कैसे बतायेंगे! बीज कौन-सा है?

टीचर्स को युक्तियुक्त बोलना चाहिए। छोटे बच्चे तो नहीं हो ना। छोटे बच्चों को पहले से सिखलाया जाता है। आप तो सीखकर, इतनी परवरिश लेकर यही इम्तहान देने आये हो। पढ़ेगे भी, साथ में इम्तहान भी देंगे। दोनों कार्य इक्ट्ठे चलेंगे। बाप अव्यक्त वतन-वासी बना तो आप सबको भी अव्यक्त वतन-वासी बनना है। वह किस सृष्टि पर खड़े होकर अव्यक्त बने? आपको कहाँ बनना है?

(साकार सृष्टि में) सृष्टि तो आलराउन्ड गोल है। सृष्टि में सारा झाड समाया हुआ है। परन्तु सृष्टि का ठिकाना संगम है। संगम की बलिहारी है, जिसने आप सबको यहाँ पहुंचाया। आप अपने ठिकाने को भूल जायेंगे तो फिर क्या होगा? ठिकाना देने वाला ही भूल जायेगा। ठिकाना पक्का याद करो और बापदादा की जो पढ़ाई मिली है उनको धारण करो। धारणा से धैर्यवत, अन्तर्मुख होंगे। उससे कलियुगी रावण राज्य को खत्म कर देंगे। तो अब पढ़ाई का समय और साथ-साथ इम्तहान देने का भी समय है। यह हुई एक बात।

दूसरी बात - जरा ध्यान में रखो इतना समय जो बापदादा की गोद में पले और उसमें जो भी कुछ कर्तव्य किया। ऐसे भी है -कोई-काई ने लज्जा के मारे बापदादा से छिपाया है। ऐसे नहीं बाप को पहचान कर सब बाप के आगे रखा है। नहीं। जो समझते हैं -ऐसी भी भूल हुई है। जैसे कोई अपनी दिल से भूल नहीं करते हैं, परन्तु अलबेलाई से हो जाती है। तो यह सबको लिखना है। बापदादा से जिन्होंने बात की है, उन्हों को भी लिखनी है सारी जन्म-पत्री। यह अन्त का समय है ना। 84 का हिसाब-किताब यहाँ ही चूक्तू होता है। 'सच्चाई' और 'सफाई' अक्षर तो कहते हैं, परन्तु सच्चाई और सफाई में भी अन्तर क्या है- उस अर्थ को नहीं समझा है। अब उसकी गहराई में जाकर सारा लिखना है।

अव्यक्त वतन से बापदादा बच्चों की सर्विस करने और साफ बनाने लिए आये हैं। बाप सेवा करते हैं। आप सब बच्चों का शुरू से लेकर अन्त तक बाप सेवक है। सेवा करने लिए सदैव तैयार है। बाप को कितना फखुर रहता है - हमारे बच्चे सिरमोर हैं, आंखों के सितारे हैं! जिन्हों के लिए स्वर्ग स्थापन हो रहा है, उस स्वर्ग के वासी बनाने के लिए तैयार कर रहे हैं! जो समझते हैं - हम लक्ष्मी-नारायण बनेंगे इतना लक्ष्य पकड़कर फिर भी गफलत करते रहते है। तो इसलिए बापदादा फिर भी सेवा करने आये हैं।

अन्त मती सो गति। समय नहीं है। समय बहुत नजदीक आने वाला है। आप शेरनी शक्तियों को भुजायें तैयार करनी हैं। तब तो दुश्मन से लड़ सकेंगे।

अगर अपने में फेथ नहीं, बापदादा का पूरा परिचय नहीं - तो न शक्ति सेना बन सकेंगे, न वह शक्तिपने के अलंकार आयेंगे। अगर शक्ति अपने में धारण की, तो फिर आने वालों को भी पूरा ठिकाना मिलेगा और वह सब शक्ति-सेना में दाखिल हो जायेंगे। तो अपने को सच्चा जेवर बनाने के लिए खामियां सब निकाल स्वच्छ बनना है। सोना कितने किस्म का होता है! कोई 9 कैरेट कोई 12....प्युअर तो प्युअर ही है। कैरेट अक्षर निकल जाना चाहिए। अपने को करेक्ट करना है। अब करेक्शन करने का समय मिला है। यह बात अच्छी रीति ध्यान पर रखना।

धरत परिये धर्म न छोड़िये। कौन-सा धर्म, कौन-सा धरत? मालूम है? एक बार वायदा कर लिया, बापदादा को हाथ दे दिया; फिर धर्म को नहीं छोड़ना है। पतिव्रता नारी जो होती है वह अपने धर्म में बहुत पक्की रहती है। आप सच्ची-सच्ची सीता, सच्ची लक्ष्मी हो जो महालक्ष्मी बनने वाली हो। अपने लक्ष्य से अगर उतर गये हो तो फिर जम्प मार लक्ष्य पर बैठ जाओ।

बापदादा आप बच्चों की सेवा करने के लिए सेवक बनकर शिक्षा दे रहे हैं। फरमान नहीं करते हैं परन्तु शिक्षा देते हैं। क्योंकि बाप टीचर भी है, सतगुरू भी है। अगर बच्चों को फरमान करे और न मानें, तो वह भी अच्छा नहीं। इसलिए शिक्षा देते हैं।

आज फाउन्डेशन पड़ता है। छोटे बच्चों को तो टीका लगाया जाता है, उनको रास्ता बताना होता है- क्या करना है, कैसे बनना है। आप सब को रास्ता तो मिल ही गया है। आप औरों को रास्ता बताने निमित्त बने हो। अगर उस रास्ते में कोई गड़बड़ है, अगर-मगर है; तो वह निकालनी है। अब भी नहीं निकलेगी तो आगे के लिए जो शक्तियों को बल मिला है, वह खलास समझो। ऐसा बापदादा को कहाँ-कहाँ दिखाई दे रहा है। इसलिए संगठन में सबके दिलों को एक दिल बनाने, पूरा रास्ता बताने लिए आप को बुलाया है। आप सबको खुशी होगी। छोटे-छोटे बच्चों को कहाँ फंक्शन आदि पर ले जाना होता है तो बहुत खुशी होती है ना-वहाँ जायेंगे, नया कपड़ा पहनेंगे! आप सबको नया कपड़ा श्रृंगार आदि

कौन-सा करना है? एक तरफ सेवक भी बनना है। सेवक अर्थात् पतित आत्माओं का उद्धार करना। उस सेवा को कायम रखो। आप सबको आने वाली आत्माओं का कैसे उद्धार करना है? कैसे विघ्नों को हटाना है? तीर में जौहर भरा हुआ होगा तो एक ही बार में पूरा तीर लग जायेगा, उस आत्मा का भी उद्धार हो जायेगा। छोटी-छोटी बच्चियां किसका उद्धार करेंगी? कौन-सा पहाड़ उठाया है? पहाड़ उठाने कौन निमित्त है? गोप-गोपिकायें। गोपिका भी तब हो सकती जब पूरा कर्तव्य करे। पहाड़ भी तब उठा सकते जब इतना बल हो। तो इन सब बातों की रोशनी देने लिए बाप को आना पड़ा है।

बाकी टीका तो एक ही बार बापदादा ने लगा दिया है। लाल टीका है या चन्दन का? लाल टीका है सूरत की शोभा, चन्दन है आत्मा की शोभा। तुमको जेवर भी सूरत की शोभा के लिए नहीं पहनने हैं, वस्त्र भी दुनिया को दिखाने लिए नहीं पहनने हैं। परन्तु आन्तरिक अपने को ऐसा श्रृंगारना है, जेवर ऐसा पहनना है जो लोक-पसन्द हो वा दिल पसन्द हो। लोक-पसन्द है बाहर मुख, दिल-पसन्द है अन्तर्मुख। तो अन्तर्मुख होकर अपने को सजाना है। लोक-पसन्द भाषण किया, खुश किया। परन्तु भाषा का जो रहस्य, तन्त है वह एक-एक अपनी कर्मेन्द्रियों में बस जाए, तब ही शोभा हो। कर्तव्य से दैवी गुणों का शो हो। दैवी गुणों का क्लास होता है सज़ने के लिए। ऐसे ही सज-सज कर संगम से पार होना है। फिर अपने घर जाना है। फिर घर से कहाँ जाना है? ससुर-घर। कन्या ससुर-घर जाती है अगर पढ़ी-लिखा-अक्लमंद नहीं होती तो सासु-ससुर कहते हैं-इनमें चलने, उठन-बैठने का अक्ल नहीं है। अब तुमको ससुर-घर चलना है। तो बाप कदम-कदम को नहीं देखते, परन्तु एक-एक कर्मेन्द्रियों को देखेंगे। कदम अक्षर मोटा है। कदम से पदम मिलता है, वह अपने कल्याण के लिए है। परन्तु कर्मेन्द्रियों को सजाना है। गहना पहनकर चलना है। अब सजने के लिए किसके पास आये हो? बापदादा के घर सो अपने घर आये। सजाने वाले कौन हैं? जब सगाई होती है तो गहना बनाने वाला एक होता है, पहनाने वाला दूसरा होता है। तो अब सज़कर चलना है। समझा?

समझा, सयानी टीचर तो हो ही। 15 दिन की रिजल्ट मानो अन्त की रिजल्ट है! इतना पुरुषार्थ कर प्रवीण टीचर सबको बनना है। फिर जब अपना सेन्टर जाकर सम्भालेंगे तो आने वाले को दृष्टि से सतयुगी सृष्टि दिखा सकेंगे। वह तब होगा जब गहने अच्छी रीति पहनेंगे। अगर लापरवाही से कोई गहना गिर गया तो नुकसान भी होगा और सजावट की शोभा भी चली जायेगी। इसलिए न शोभा को हटाना है, न गहनों को उतारना है। बड़ी बात नहीं है। छोटी समझेंगे तो सहज समझ आयेगी। अगर कहेंगे बहुत बड़ा ऊंचा ज्ञान है; तो कोई नहीं आयेगा। कहेंगे- 7 दिन में जीवन-मुक्ति की प्राप्ति होती है; तो लाटरी लेने सब आयेंगे। लाटरी सब डाल देते हैं। फिर लाटरी में किसको कुछ मिल जाता है तो नसीब मानते हैं। चांस है, देखें, नसीब किसका लगता है। किसको बड़ी लाटरी मिलती हैं, किसको छोटी। पेपर लास्ट में होगा। 3 नम्बर निकलेंगे। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे उतना नम्बर मिलेगा। नसीब को बनाना खुद के हाथ में है। तो अब लाटरी की इन्तजार में नहीं रहना, इन्तजाम करते रहना।अच्छा!

बहुत कुछ खजाना मिला। अब उसको अपने पास जमा करो और गऊ मिसल उगारना है। आप सब गायें भी हो, गोपियां भी हो। पहाड़ को कैसे उठाना है, गऊ बन कैसे उगारना है - यह कर्तव्य इस भट्ठी में करना है। बहु रूप धारण कर बहु कर्तव्य बजाना है। भट्ठी के अन्दर सब अनुभव करना है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतनी रिजल्ट निकलेगी। सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त करने का लक्ष्य क्या है, साधन क्या है; उसको जानना है। साधन मिल जायेंगे तो लक्ष्य को पकड़ लेंगे। रत्नों की भी परख चाहिए ना। पूरी वैल्यू रखनी है। जेवर की वैल्यु जवाहरी ही परख सकेगा। जिनको परख नहीं उनके पास वैल्यु नहीं रहेगी। परख तब होगी जब जेवर पर पालिश हो, चमक हो। तब वैल्यु भी होगी और पहचानने वाले पहचान लेंगे। चमत्कार नहीं होगा तो खरीद कौन करेंगे! समझेंगे - 'पता नहीं सच्चा है वा झूठा जेवर है। पैसा भी देवे, जेवर भी काम का न हो; इससे क्या फायदा।' तो

आप सबकी पूरी सज़ावट हो जायेगी, तो खरीददार भी निकलेंगे और आप वतन-वासी बनते जायेंगे।

(06.07.1969)

अपने को कहाँ के निवासी समझते हो? परमधाम के निवासी समझते हो? यह कितना समय याद रहती है? यह एक ही बात याद रहे कि हम परमधाम निवासी आत्मा इस व्यक्त देश में ईश्वरीय कर्त्तव्य करने के निमित्त आये हुए हैं। मधुबन में आकर के विशेष कौन सा गुण लिया है? मधुबन का विशेष गुण है मधुरता। मधु अर्थात् मधुरता। स्नेही। जितना स्नेही होंगे उतना बेहद का वैराग्य होगा। यह है मधुबन का अर्थ। अति स्नेही और इतना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति। अगर मधुबन के विशेष गुण जीवन में धारण करके जायें तो सहज ही सम्पूर्ण बन सकते हैं। फिर जो रूहानी टीचर्स बनना चाहिए तो नम्बर वन की टीचर बन सकते हो। क्योंकि जैसी अपनी धारणा होगी वैसे औरों को अनुभव में ला सकेंगे। इन दोनों गुणों की अपने में धारणा करनी है। मधुबन की लकीर से बाहर निकलने के पहले अपने में पूरी रीति यह भरकर जाना।

(26.01.1970)

जितना-जितना अपने को सफलता मूर्त्त देखते जाओ उतना समझो सम्पूर्णता के नजदीक हैं। यह ग्रुप सफलता मूर्त्त बनने के लिए कौन सा सलोगन सामने रखेंगे? सलोगन यह है प्यूरिटी ही संगमयुग की प्रासपर्टी है। यह है सलोगन। प्यूरिटी की कितना विस्तार है, प्यूरिटी कौन सी और किस युक्तिओं से धारण कर सकते हो इन टॉपिक्स पर टीचर्स क्लास करायेंगी। बापदादा सिर्फ टॉपिक दे रहे हैं। प्यूरिटी के विस्तार को समझना है। सम्पूर्ण प्यूरिटी किसको कहा जाता है? तो प्यूरिटी ही प्रासपर्टी है यह है इस ग्रुप का श्रेष्ठ सलोगन। समाप्ति के समय सम्पूर्णता की परीक्षा लेंगे। पेपर के क्वेश्चन पहले से ही बता देते हैं। फिर तो पास होना सहज

है ना। सम्पूर्णता क्या होती है उसकी मुख्य चार बातों का पेपर लेंगे। कौन सी चार बातें यह नहीं बतायेंगे।

(30.11.1970)

आज इस संगठन को कौनसा संगठन कहेंगे? इस संगठन का क्या नाम देंगे? यह संगठन है ब्रह्मा बाप की भुजाएं। इसलिए इस संगठन को बापदादा के मददगार, वफादार, बापदादा के दिल तख्त-नशीन, मास्टर सर्वशक्तिवान कहेंगे। अब समझा, इतने अनेक टाइटिल्स इस ग्रुप के नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। जो दिल के तख्तनशीन होंगे उन्हों की निशानी क्या होती है? टीचर्स हैं इसलिए प्रश्न-उत्तर कर रहे हैं। तख्तनशीन की निशानी क्या है? जो तख्तनशीन हुए हैं उनकी निशानी है - एक तो जब भी कोई तख्त पर बैठते हैं तो तिलक और ताज दोनों तख्तनशीन की निशानी होती है। इस रीति दिल तख्त पर विराजमान आत्माओं की निशानी यही होती है। उनके मस्तक पर सदैव अविनाशी आत्मा की स्थिति तिलक दूर से ही चमकता हुआ नज़र आयेगा। दूसरी बात-और सर्व आत्माओं के कल्याण की शुभ भावना उनके नयनों में वा मुख से, मुख अर्थात् मुखड़ा, फेस से दिखाई दे। मुखड़े से यह सब स्पष्ट दिखाई दे यह निशानी है। तीसरी बात उनका संकल्प, वचन और कर्म बाप के समान हो। चौथी बात - जिन आत्माओं की सर्विस करे उन आत्माओं में स्नेह, सहयोग और शक्ति तीनों ही गुण धारण कराने की उसमें शक्ति हो। यह चार बातें उनकी निशानी है। अभी आप अपनी रिज़ल्ट को चेक करो कि यह चार ही निशानियाँ कहाँ तक दिखाई देती हैं। जैसे जो स्वयं होता है वैसे ही समान बनाता है। आज टीचर्स संगठन में हैं इसलिए यह सुना रहे हैं, जिन्हों की आप सेवा करती हो वा कर रही हो उन्हों में यह सब बातें भरनी चाहिए। अब तक रिज़ल्ट क्या है? हरेक अपनी रिज़ल्ट को तो देखते ही है। मैजारटी क्या दिखाई देती है? कोई में स्नेहीपन की विशेषता है, कोई में सहयोगीपन की, लेकिन शक्ति रूप की धारणा कम है। इसकी निशानी फिर क्या दिखाई देती है, मालूम

है? शक्तिपन के कमी की निशानी क्या है? परखने की शक्ति कम की निशानी क्या है? एक बात तो सुनाई - सर्विस की सफलता नहीं। उनकी स्पष्ट निशानी दो शब्दों में यह दिखाई देगी - उनका हर बात में क्यों, क्या, कैसे....? क्वेश्चन मार्क बहुत होगा। ड्रामा का फुल-स्टॉप देना उनके लिए बड़ा मुश्किल होगा। इसलिए स्वयं ही 'क्यों, क्या कैसे' की उलझन में होगा। दूसरी बात-वह कभी भी समीप आत्मा नहीं बना सकेगा। सम्बन्ध में लायेंगे लेकिन समीप सम्बन्ध में नहीं लायेंगे। समझा? ब्राह्मण कुल की जो मर्यादाएं हैं उन सर्व मार्यादाओं स्वरूप नहीं बना सकेंगे। क्योंकि स्वयं में शक्ति कम होने के कारण औरों में भी इतनी शक्ति नहीं ला सकते जो सर्व मर्यादाओं को पालन कर सकें। कोई न कोई मर्यादा की लकीर उल्लंघन कर देते हैं। समझते सभी होंगे, समझने में कमी नहीं होगी। मर्यादाओं की समझ पूरी होगी। परन्तु मर्यादाओं में चलना यह शक्ति कम होगी। इस कारण जिन्हों की वह सेवा करते हैं उन्हों में भी शक्ति कम होने कारण हाईजम्प नहीं दे सकते। संस्कारों को मिटाने में समय बहुत वेस्ट करते हैं। अब इन बातों से अपने स्वरूप को चेक करो। जैसे बहुत बढ़िया और मीठा फल तब निकल सकता है - जब उस वृक्ष में सब बातों का ध्यान दिया जाता है। धरती उखाड़ने का भी ख्याल, बीज डालने का, जल का, सभी का ध्यान देना पड़ता है। ऐसे श्रेष्ठ फल तैयार करने के लिए संस्कार मिटाने की शक्ति, यह हुई धरती उखड़ने की शक्ति। उसके साथ जैसे सभी चीजें बीच डालने वाले देखते हैं, वैसे स्नेही भी बनावें, सहयोगी भी बनावें और शक्ति-स्वरूप भी बनावें। अगर कोई एक की भी कमी रह जाती है तो क्या होता? जो शुरू में सुनाया कि दिल के तख्तनशीन नहीं बन सकते। इसलिए टीचर्स को यह ध्यान एक-एक के ऊपर देना चाहिए।

आप लोग जब एम-आबजेक्ट सुनाते हो तो क्या सुनाते हो? देवता बनना यह तो लक्ष्य देते हो। देवताओं की महिमा सर्व गुण सम्पन्न। तो वह लक्ष्य रखना चाहिए। सर्व गुण एक-एक आत्मा में भरने का प्रयत्न करना चाहिए। आप टीचर्स को हरेक से मेहनत इतनी करनी चाहिए जो कोई आत्मा भी यह उलाहना न दे कि

हमारी निमित्त बनी हुई टीचर ने हमको इस बात के ऊपर ध्यान नहीं खिंचवाया। वह करे न करे, वह हुई उनकी तकदीर। परन्तु आप लोगों को सभी के ऊपर मेहनत करनी है। नहीं तो अब तक की रिज़ल्ट में कोई उलाहना अभी तक मिल रहे हैं। यह सर्विस की कमी है। इसलिए कहा कि सर्व बातें उन्हों में भरने से वह फल भी ऐसा लायक बनेगा। आप सोचो, जितना कोई बड़ा आदमी होता है, उनके सामने कौन-सा फल रखेंगे? बड़ा भी हो और बढ़िया भी हो। साकार में भी कोई चीज़ लाते थे तो क्या देखते थे? तो अब बापदादा के आगे भी ऐसे जो फल तैयार करते हैं वही सामने ला सकते हैं। इसलिए यह ध्यान रखना है। जितना जो स्वयं जितने गुणों से सम्पन्न होता है उतना औरों में भी भर सकता है। हरेक रचयिता की सूरत रचना से दिखाई देती है। सर्विस आप लोगों के लिए एक दर्पण है, जिस दर्पण द्वारा अपने अन्दर की स्थिति को देख सकते हो। जैसे दर्पण में अपनी सूरत सहज और स्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे सर्विस के दर्पण द्वारा अपनी फीचर्स-सूरत नहीं, सीरत का सहज स्पष्ट साक्षात्कार होता है। वह है सूरत का आइना, यह है सीरत का आइना। हरेक को अपना साक्षात्कार स्पष्ट होता है? होना चाहिए। अगर अब तक स्पष्ट साक्षात्कार नहीं होगा तो अपने को सम्पूर्ण कैसे बना सकेंगे। जब अपनी कमज़ोरियों का मालूम होगा तब तो शक्ति भर सकेंगे। इसलिए अगर स्वयं के साक्षात्कार में कोई स्पष्टीकरण न हो तो निमित्त बनी हुई बहनों द्वारा मदद ले अपना स्पष्ट साक्षात्कार करने का प्रयत्न ज़रूर करना। यह बापदादा का काम नहीं हैं, बापदादा का कर्त्तव्य है इशारा देना।

टीचर्स के फीचर्स कैसे होने चाहिए? टीचर्स को अपने फरिश्ते पन के फीचर्स द्वारा सर्विस करनी चाहिए। टीचर्स द्वारा यह शब्द अब तक नहीं निकलने चाहिए कि यह मेरी नेचर है। यह कहना शक्तिहीनता की निशानी है। 'पुरुषार्थ' शब्द, पुरुषार्थ शब्द से यूज़ नहीं करते हैं। परन्तु 'पुरुषार्थ' शब्द पुरुषार्थ से छुड़ाने का साधन बना दिया है। इसलिए आप लोगों के शब्द रचना द्वारा भी आपके सामने आते हैं। इसलिए सदैव ऐसे समझो जैसे कोई गुम्बज़ में जो आवाज़ किया जाता है

वह लौटकर अपने पास आ जाता है। इतना अटेन्शन अपने संकल्पों पर भी रखना है। कहाँ-कहाँ से यह समाचार आते हैं, कौन से? कि आज कल स्टूडेन्ट सुनते नहीं हैं। मेहनत करते हैं लेकिन आगे नहीं बढ़ते हैं, वहाँ के वहाँ खड़े हैं। यह रिज़ल्ट क्यों? यह भी अपनी स्थिति का रिटर्न है। क्योंकि स्टूडेन्ट भी चलते-चलते निमित्त बनी हुई टीचर्स की कमज़ारियों को परख कर उसका एडवान्टेज उठाते हैं।

(22.01.1971)

टीचर्स तो है ही टीचर्स। टीचर्स को सदैव यह स्मृति में रहना चाहिए कि टीचर बनने से पहले स्टूडेन्ट हूँ। स्टूडेन्ट स्मृति से स्टडी याद रहेगी। जब स्वयं स्टडी करेंगे तो औरों को स्टडी करायेंगे। स्टूडेन्ट लाइफ़ न होने के कारण औरों को स्टूडेन्ट नहीं बना सकेंगे। वातावरण को बदलने के लिए अपने को सदैव यह समझना चाहिए कि मैं मास्टर सूर्य हूँ। सूर्य का कर्त्तव्य क्या होता है? एक तो रोशनी देना, दूसरा किचड़े को खत्म करना। तो सदैव यह समझना चाहिए कि मेरी चलन रूपी किरणों से यह दोनों कर्त्तव्य होते हैं। सर्व आत्माओं को रोशनी भी मिले, किचड़ा भी खत्म हो। मानो, रोशनी मिलते किचड़ा खत्म न हो तो समझो कि मेरी किरणों में पावर नहीं। जैसे धूप तेज़ नहीं तो कीटाणु खत्म नहीं होंगे। मेरे में पावर कम तो ज्ञान रोशनी देगा परन्तु पुराने संस्कारों रुपी कीटाणु खत्म नहीं होंगे। जितनी पावरफुल चीज उतनी जल्दी खत्म। पावर कम तो समय बहुत लगेगा। तो पावरफुल बनना है। ऐसे नहीं समझो कि पढ़ी लिखी नहीं हूँ। सृष्टि की नालेज पढ़ ली तो उसमें सब आ जाता है।

(26.01.1971)

इस ग्रुप को कौन सा ग्रुप कहें? (स्पीकर्स ग्रुप) स्पीकर्स अर्थात् स्पीच करने वाले। स्पीच के साथ स्पीड भी है? क्योंकि स्पीच के साथ-साथ अगर पुरुषार्थ की स्पीड भी है तो ऐसे स्पीच करने वाले के प्रभाव से विश्व का कल्याण हो

सकता है। अगर स्पीड के बिना स्पीच है, तो विश्व का कल्याण होना मुश्किल हो जाता है। तो ऐसे कहें कि यह स्पीच और स्पीड़ में चलने वाले ग्रुप हैं। जिन्हों की स्पीच भी पावरफुल, स्पीड भी पावरफुल है उनको कहते हैं विश्व कल्याणकारी, 'मास्टर दु:ख -हर्ता सुख-कर्ता'। तो ऐसे कार्य में लगे हुए हो? जो 'दु:ख-हर्ता सुख-कर्ता' होता है वह स्वयं इस दुनिया की लहर से भी परे होगा। और उन्हों की स्पीच भी दु:ख की लहर से परे ले जाने वाली होगी। ऐसी स्टेज पर ठहर कर स्पीच करते हो? स्पीच तो स्टेज पर ठहर कर की जाती है तो आप किस स्टेज पर ठहर स्पीच करते हो? जो बाहर की बनी हुई स्टेज होती है उस पर? स्पीकर को जिस समय कोई स्थूल स्टेज पर जाना होता है तो पहले अपनी स्थिति की स्टेज तैयार है वा नहीं-यह चेक करता है। ऐसे स्टेज पर ठहर कर स्पीच करने वाले को कहते हैं श्रेष्ठ स्पीकर। जैसे स्थूल स्टेज को तैयार करने के लिए भी कितना समय और परिश्रम करते हैं। ऐसे ही अपनी स्थिति की स्टेज सदैव तैयार रहे-उसके लिए भी इतना ही पुरुषार्थ करते हो? ऐसी पावरफुल स्टेज पर ठहर स्पीच करने वाले का यहाँ आबू में यादगार है। कौन-सा? (दिलवाला), दिलवाला तो याद की यात्रा का यादगार है। गऊमुख नहीं देखा है। गऊमुख किसका यादगार है? यह मुख का यादगार है। जैसे बाप का यादगार है- गऊमुख। क्योंकि मुख द्वारा ही सारा स्पष्ट करते हैं इसलिए मुख का यादगार है। स्पीकर का भी काम मुख से है लेकिन ऐसे जो श्रेष्ठ स्टेज पर ठहर कर स्पीच करते हैं। सदैव एवररेडी स्टेज हो। ऐसे नहीं कि समय पर तैयार करनी पड़े। एवररेडी स्टेज होने से जो प्रभाव होता है, वह बहुत अच्छा पड़ता है। इसलिए पूछा कि प्रभावशाली हो? इस ग्रुप को प्रभावशाली ग्रुप कहें? सभी सर्टीफिकेट देंगे? (अच्छा ग्रुप है) अगर आप सर्टीफिकेट देती हो तो फिर यह सर्व को सैटिस्फाय करने वाले भी होंगे। सन्तुष्ट मणियां तो हो ना। इसमें 'हां' करते हो? अगर खुद सन्तुष्ट मणियां हैं तो औरों को भी सन्तुष्ट करेंगे। टीचर्स का भी पेपर होता है, कैसे? (टीचर का पेपर सूक्ष्मवतन से आता है) टीचर का पेपर कदम-कदम पर होता है। जो भी कदम उठाते हो वह ऐसा ही समझकर

उठाना चाहिए कि पेपर हाल में बैठकर कदम उठाती हूँ। क्योंकि स्पीकर अर्थात् स्टेज पर बैठे हैं। तो जो सामने स्टेज पर होता है उसके ऊपर सभी की नज़र होती है। आप लोग भी ऊंची स्टेज पर बैठे हो। अनेक आत्माओं की निगाह आप लोगों के कदम पर है। तो आपको कदम-कदम पर ऐसा अटेन्शन से कदम उठाना है। अगर एक कदम भी ढीला वा कुछ भी नीचे-ऊपर उठता है तो अनेक आप लोगों को फ़ालो करेंगे। इसलिए टीचर्स को जो भी कदम उठाना है वह ऐसा सोचकर उठाना है। क्योंकि ताजधारी बने हो ना? ताज कौन सा मिला है? ज़िम्मेवारी का ताज। जितनी बड़ी जिम्मेवारी उतना बड़ा ताज। तो जो बड़ी जिम्मेवारी मिली हुई है तो अपने को ऐसे निमित्त बने हुए समझकर के फिर कदम उठाओ। अभी अलबेलापन नहीं। ताज व तख्त-धारी बनने के बाद अलबेलापन समाप्त हो जाता है। अलबेलापन अर्थात् पुरुषार्थ में अलबेलापन। इस ग्रुप को सदैव यह समझना चाहिए कि जो भी कदम वा कर्म होता है वह हर कर्म विश्व के लिए एक एक्जेम्पुल बनकर के रहे। क्योंकि आप लोगों के इन कर्मो का कहानियों के रुप में यादगार बनेगा। आप लोगों के यह चरित्र गायन योग्य बनेंगे। इतनी ज़िम्मेवारी समझ करके चलते हो? यह इस ज़िम्मेवार ग्रुप की विशेषतायें हैं। जो जितना ज़िम्मेवार उतना ही हल्का भी रहेगा।

(11.02.1971)

आज टीचर्स के उद्घाटन का दिन है। सम्पूर्ण आहुति डालने की सामर्थ्य है? यह ग्रुप इन्चार्ज टीचर्स का है ना। अभी हैं वा बनने वाली हैं? मुख्य धारणा यही है कि सदैव अपनी सम्पूर्ण स्थिति का वा अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करते रहो। जैसे कोई का आह्वान किया जाता है तो बुद्धि में वही स्मृति में रहता है ना। इस रीति से सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करते रहेंगे तो सदैव वही स्मृति में रहेगा। और इसी स्मृति में रहने के कारण रिजल्ट क्या होगी? यह जो आवागमन का चक्र चलता रहता है; आवागमन का चक्र कौन-सा? कभी ऊंच स्थिति में

ठहरते हो, कभी नीचे आ जाते हो। यह जो ऊपर-नीचे आने-जाने का आवागमन का चक्र है इस चक्र से मुक्त हो जायेंगे। वह लोग जन्म-मरण के चक्र से छूटना चाहते हैं और आप लोग यह जो स्मृति और विस्मृति का आवागमन का चक्र है, इससे मुक्त होने का पुरुषार्थ करते हो। तो सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करने से आवागमन से छूट जायेंगे अर्थात् इन व्यर्थ बातों से किनारा करने से सदैव चमकता हुआ लक्की सितारा बन जायेंगे। इन्चार्ज टीचर बनने के लिए पहले अपनी आत्मा की बैटरी चार्ज करो। जितनी जिसकी बैटरी चार्ज है उतना ही अच्छा इन्चार्ज टीचर बन सकती है। समझा? जब यह याद आये कि मैं इन्चार्ज हूँ, तो पहले यह अपने से पूछो कि मेरी बैटरी चार्ज हुई है? अगर बैटरी चार्ज कम होगी तो इन्चार्ज टीचर में भी उतनी कमी दिखाई देगी। तो अब क्या करना है? अच्छी तरह से बैटरी चार्ज कर के फिर इन्चार्ज बनकर जाना। ऐसे ही सिर्फ इन्चार्ज नहीं बन कर जाना। अगर बैटरी चार्ज के बिना इन्चार्ज बनेंगी तो क्या होगा? चार्ज अक्षर के दो-तीन मतलब होते हैं। एक होता है बैटरी चार्ज, दूसरा चार्ज अर्थात् ड्यूटी भी होता है और तीसरा चार्ज अर्थात् दोष को कहते हैं। कोई पर चार्ज लगाते हैं ना। तो इन्चार्ज होने से अगर बैटरी चार्ज है तो फिर इन्चार्ज यथार्थ रीति बनते हैं। अगर बैटरी चार्ज नहीं, यथार्थ रूप नहीं तो फिर भिन्न-भिन्न चार्जेज़ लग जाते हैं। तो अब समझा, कैसे इन्चार्ज बनेंगे? धर्मराजपुरी में पहले चार्ज लगाकर फिर सज़ा देंगे। तो अगर बैटरी चार्ज नहीं होगी तो चार्जेज लगेगी। अभी ऐसे बनकर जाना जो सभी की निगाहों में यह ग्रुप आ जाये। सभी अनुभव करें कि बड़े तो बड़े लेकिन छोटे सुभान अल्लाह। ऐसा लक्ष्य रख, भट्ठी से ऐसे ही लक्षण धारण करके जाना। ऐसा कोमल होना है जो अपने को जहां मोड़ने चाहो वहाँ मोड़ सकते हो। कोमल चीज़ को जहाँ मोड़ने चाहते हैं वहाँ मोड़ सकते हैं। लेकिन सख्त को कोई मोड़ नहीं सकेंगे। कोमल बनना है लेकिन किस में? संस्कार मोड़ने में कोमल बनो। लेकिन कोमल दिल से बचकर रहना। यह लक्ष्य और लक्षण धारण करके जाना है। इस स्नेही और सहयोगी बनने वाले ग्रुप के लिये सलोगन है -'अधिकारी

बनेंगे और अधीनता को मिटायेंगे'। कभी अधीन नहीं बनना-चाहे संकल्पों के, चाहे माया के। और भी कोई रूपों के अधीन नहीं बनना। इस शरीर के भी अधिकारी बनकर चलना और माया से भी अधिकारी बन उसको अपने अधीन करना है। सम्बन्ध की अधीनता में भी नहीं आना है। चाहे लौकिक, चाहे ईश्वरीय सम्बन्ध की भी अधीनता में न आना। सदा अधिकारी बनना है। यह सलोगन सदैव याद रखना। ऐसा बनकर के ही निकलना। जैसे कहावत है ना कि मान सरोवर में नहाने से परियां बन जाते थे। इस ग्रुप को भी भट्ठी रूपी ज्ञान मानसरोवर में नहाकर फरिश्ता बनकर निकलना है।

जब फरिश्ता बन गया तो फरिश्ते अर्थात् प्रकाशमय काया। इस देह की स्मृति से भी परे। उनके पांव अर्थात् बुद्धि इस पांच तत्व के आकर्षण से ऊंची अर्थात् परे होती है। ऐसे फरिश्तों को माया व कोई भी मायावी टच नहीं कर सकेंगे। तो ऐसे बनकर जाना जो न कोई मायावी मनुष्य, न माया टच कर सके। कुमारियों की महिमा बहुत गाई हुई है। लेकिन कौन सी कुमारी? ब्रह्माकुमारियों की महिमा गाई हुई है। ब्रह्माकुमारी अर्थात् ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाली कुमारी। जो टीचर्स बनती हैं उन्हों को सिर्फ प्वाइन्ट बुद्धि में नहीं रखनी है वा वर्णन करनी है लेकिन प्वाइन्ट रूप बनकर प्वाइन्ट वर्णन करनी है। अगर स्वयं प्वाइन्ट स्थिति में स्थित नहीं होंगे तो प्वाइन्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए प्वाइन्ट इकट्ठी करने के साथ अपना प्वाइन्ट रूप भी याद करते जाना। जब कापियां भरती हों तो कापी को देख यह सब चेक करना कि साकार ब्रह्मा बाप के चरित्रों की कापी बनी हूँ? कापी जो की जाती है वह तो हूबहू होगी ना। ऐसे बाप समान दिखाई पड़ो। सुनाया था ना कि जितनी समानता होगी उतनी सामना करने की शक्ति होगी। समानता लाने से सामना करने की शक्ति स्वत: आ जायेगी। अच्छा।

यह ग्रुप कम नहीं है। इतना बड़ा शक्तिदल जब कोने-कोने में सर्विस पर फैल जायेगा तो क्या होगा? आवाज बुलन्द हो जायेगा - ब्रह्माकुमारियों की जय। अभी तो गालियां देते हैं ना। यहां ही आप लोगों के सामने महिमा के पुष्प चढ़ायेंगे।

इसलिए कहा कि ऐसे बनकर के जाना जो देखते ही सभी के मुख से यह आवाज़ बुलन्द हो निकले। इस ग्रुप को यह प्रैक्टिकल पेपर देना है। चारों ओर बापदादा और मददगार बच्चों की जय-जयकार हो जाये। ऐसी शक्ति है? एक के संग में रहने से संगदोष से छूट जायेंगे। सदैव चैकिंग करो कि बुद्धि का संग किसके साथ है? एक के साथ है? अगर एक का संग है तो अनेक संगदोष से छूट जायेंगे। संगदोष कई प्रकार के दोष पैदा कर देते हैं। इसलिए इसका बहुत ध्यान रखना। एक बाप दूसरे हम, तीसरा न कोई। जब ऐसी स्थिति होगी तो फिर सदैव आप लोगों के मस्तक से तीसरे नेत्र का साक्षात्कार होगा। यहाँ का जो यादगार है उसमें योग की निशानी क्या दिखाई है? तीसरा नेत्र। अगर बुद्धि में तीसरा कोई आ गया तो फिर तीसरा नेत्र बन्द हो जायेगा। इसलिए सदैव तीसरा नेत्र खुला रहे, इसके लिए यह याद रखना कि तीसरा न कोई।

(25.03.1971)

यह सक्सेसफुल ग्रुप है, नालेजफुल है, सर्विसएबुल है। यह छाप है। अपने इस ट्रेड-मार्क को सदैव देखते रहना। त्रिमूर्ति छाप लगी ना। और यही स्मृति में रख कर हर सर्विस के कदम को पदमों की कमाई में परिवर्तन कर चलना है। यह चेक करो कि हर संकल्प से पदमों की कमाई जमा की? हर वचन से, हर कर्म से, हर कदम से पदमों की कमाई जमा की? नहीं तो यह कहावत किसलिए है - हर कदम में पदम हैं? पदम कमल पुष्प को भी कहते हैं ना। तो पदम समान बनकर चलने से हर संकल्प और हर कदम में पदमों की कमाई कर सकेंगे। एक संकल्प भी बिना कमाई के नहीं होगा। अब तो ऐसा अटेन्शन रखने का समय है-एक कदम भी बिना पदम की कमाई के न हो। निमित्त बना हुआ ग्रुप है ना। ताजधारी तो होना ही है। अपनी ज़िम्मेवारी का ताज जितना-जितना धारण करेंगे उतना दूसरे की ज़िम्मेवारी का ताज भी धारण कर सकेंगे। जो निमित्त टीचर्स हैं, ज्यादा नज़र तो आप लोगों में सभी की है। सामने एग्ज़ाम्पल तो आप हो। इसलिए ज्यादा ज़िम्मेवारी आप लोगों

के ऊपर है। आप लोग एक दर्पण के रूप में उन्हों के आगे हो। आपके नालेज की स्थिति के दर्पण से अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराने वाले दर्पण आप हो। तो जितना दर्पण पावरफुल उतना साक्षात्कार स्पष्ट। तो उसकी स्मृति पावरफुल रहेगी। तो ऐसा दर्पण हरेक हो जो सामने कोई आवे तो अपना साक्षात्कार ऐसा स्पष्ट करे जो वह स्मृति उसको कभी न भूले। जैसे अपनी देह का साक्षात्कार होने के बाद भूलते हो? जब देह अविनाशी स्मृति में रहती है तो यह भी ऐसा साक्षात्कार कराओ, जो वह स्मृति कभी भूले नहीं। पावरफुल दर्पण बनने के लिए मुख्य धारणा कौनसी है? जितना-जितना स्वयं अर्पणमय होगा उतना ही दर्पण पावरफुल। ऐसे तो अर्पणमय हो। लेकिन जो संकल्प भी करते हो, कदम उठाते हो वह पहले बाप के आगे अर्पण करो। जैसे भोग लगाते हो तो बाप के आगे अर्पण करते हो ना। उसमें शक्ति भर जाती है। तो यह भी ऐसे हर संकल्प, हर कदम बाप को अर्पण करो - जो किया, जो सोचा बाप की याद अर्थात् बाप के कर्त्तव्य की याद। जितना अर्पणमय के संस्कार उतना पावरफुल दर्पण। हर संकल्प निमित्त बनकर करेंगे। तो निमित्त बनना अर्थात् अर्पण। नम्रचित्त जो होते हैं वह झुकते हैं, जितना संस्कारों में संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। संस्कार में भी झुकना। यह संकल्प भी न हो दूसरे हमारे आगे भी तो कुछ झुकें? हम झुकेंगे तो सभी झुकेंगे। सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब तो सेवा करेंगे। छोटे और प्यारे होते हैं। इसलिए अपने के सिकीलधे समझो। सर्व के स्नेही हो। बड़ों को तो फिर भी कहेंगे, छोटे तो छूट जाते हैं। लेकिन अपने में कोई कमी नहीं रखना। सभी के आगे जाने का लक्ष्य जरूर रखना है। आगे बढ़ते हुए भी आगे बढ़ाने वालों का रिगार्ड नहीं छोड़ना है। बढ़ाने वालों का रिगार्ड रखेंगे तब वह आपका रिगार्ड रखेंगे। जैसे आप करेंगे आप को देख अन्य करेंगे।

हैंडस अर्थात् विशालबुद्धि, वे सभी तरफ देखते हैं कि नुकसान किसमें हैं, लाभ किसमें है। सभी विशालबुद्धि, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हो। कोई भी कर्म देखकर पीछे करो। फिर यह कभी नहीं कहेंगे कि न मालूम कैसे यह हो गया। जब चैकिंग

कम होती है तब हो जाता। त्रिकालदर्शी के यह शब्द नहीं हैं, कि चाहते तो नहीं थे लेकिन हो गया। मास्टर सर्वशक्तिमान चाहे और वह न कर सके, हो सकता है? अब यह भाषा खत्म करो। शक्तियां हो ना। शक्तियों का कर्म और संकल्प समान होता है। संकल्प एक और कर्म दूसरे - तो यह शक्ति की कमी है।

(11.07.1971)

ब्राह्मण बच्चों की साधारण रीति से दिनचर्या बीते वह आजकल के समय प्रमाण न होना चाहिये, नहीं तो वह प्रभाव बढ़ जायेगा। इसलिये विशेष रीति से वातावरण को याद की यात्रा से पावरफुल बनाने में सब बच्चों का अटेन्शन खिंचवाना चाहिए। अपने को उस दुनिया के वातावरण से कैसे बचा सकें? वह स्टेज क्या है? कर्म योगी होते हुए भी योगीपन की स्टेज किसको कहा जाता है? इसी प्रकार की प्वाइण्ट्स के ऊपर अब विशेष अटेन्शन देना है। क्योंकि अब ड्रामानुसार चारों ओर बड़ी-बड़ी सर्विस करने का टाइम कुछ समय के लिये मर्ज है ना। बड़े-बड़े प्रोग्रामस बाहर के नहीं कर पाते हो-तो टीचर्स फ्री हुई-बाहर की सर्विस नहीं तो बाकी रही सेन्टर्स पर आने वालों की सेवा। बाहर की सर्विस से बुद्धि फ्री है। नहीं तो कहते हैं बहुत बिजी रहते हैं - प्लैन्स बनाना, मंथन करना। लेकिन अब तो वह भी नहीं है। तो अब याद की यात्रा की सब्जेक्ट के ऊपर ज्यादा अटेन्शन देना है। कोई-न-कोई प्रोग्राम हर सेन्टर पर चलना चाहिए-जो आने वालों में बल भर जाये। ऐसे समय पर वह भी न्यारे रहे, साक्षी होकर समस्या का सामना करें। उसके लिये याद का बल चाहिए। तो जब तक बाहर की सर्विस का, नये-नये प्लैन्स का फोर्स कम है तो कोई प्वाइन्ट का जोर होना चाहिए। नहीं तो फ्री होकर फिर व्यर्थ का साइड ज्यादा हो जायेगा। सर्विस में बिजी रहने से व्यर्थ की बातों से बचे रहते हैं। अभी वह सर्विस का स्कोप कम है, तो ज़रूर समय बचेगा-वह फिर व्यर्थ वातावरण में समय जायेगा। इसलिये ब्राह्मणों को खबरदार, होशियार करने के लिये व स्वयं की सेफ्टी के लिये कुछ ऐसी प्वाइन्ट्स व क्लासेज के प्रोग्राम्स

बनाओ, जिससे वह यह समझें कि हमें मधुबन लाइट हाऊस से विशेष लाइट आ रही है।

(03.08.1975)

हर समय अपने को निमित्त बनी हुई समझती हो? जो अपने को निमित्त बनी हुई समझती हैं, उन्हों में मुख्य यह विशेषता होगी - जितनी महानता उतनी नम्रता। दोनों का बैलेन्स होगा। तब ही निमित्त बने हुए कार्य में सफ़लतामूर्त बनेंगे। जहाँ नम्रता के बजाय महानता ज्यादा है या महानता की बजाय नम्रता ज्यादा है तो भी सफ़लतामूर्त नहीं बनेंगे। सफ़लतामूर्त बनने के लिए दोनों बातों का बैलेन्स चाहिए। टीचर्स वह होती हैं, जो सदा अपने को बाप समान वर्ल्ड सर्वेन्ट समझ कर चलती हैं। वर्ल्ड सर्वेन्ट ही विश्व-कल्याण का कार्य कर सकते हैं। टीचर्स को सदैव यह स्मृति रहनी चाहिए, कि टीचर को स्वयं को स्वयं ही टीचर नहीं समझना चाहिए। यदि टीचरपन का नशा रखा तो रूहानी नशा नहीं रहेगा। यह नशा भी बॉडीकॉन्सेस है। इसलिए सदा रूहानी नशा रहे कि - 'मैं विश्व-कल्याणकारी बाप की सहयोगी विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ।'

कल्याण तब कर सकेंगे जब स्वयं सम्पन्न होंगे। जब स्वयं सम्पन्न नहीं होंगे तो विश्व-कल्याण नहीं कर सकेंगे। सदैव बेहद की दृष्टि रखनी चाहिए। बेहद की सेवा-अर्थ जब बेहद का नशा होगा, तब बेहद का राज्य प्राप्त कर सकेंगी। सफल टीचर अर्थात् सदा हर्षित रहना और सर्व को हर्षितमुख बनाना। समझा सफ़लतामूर्त की निशानी? टीचर को सफ़लतामूर्त बनना ही है। बाप और सेवा के सिवाय और कोई बात उसकी स्मृति में न हो। ऐसी स्मृति में रहने वाली टीचर सदा समर्थ रहेगी। कमजोर नहीं रहेगी। ऐसी टीचर हो? ऐसा समर्थ अपने को समझती हो? समर्थ टीचर ही सफ़लतामूर्त होती है। ऐसी ही हो ना? टीचर को कमजोरी के बोल बोलना भी शोभता नहीं है। संस्कारों के वशीभूत तो नहीं हो ना? क्या संस्कारों को अपने वश में करने वाली हो? कम्पलेन्ट करने वाली टीचर तो नहीं हो

ना? टीचर्स तो अनेकों की कम्पलेंट को खत्म करने वाली होती हैं, फिर तो अपनी कम्पलेन्ट तो नहीं होनी चाहिए। टीचर्स को चॉन्स तो बहुत मिलते हैं। कम्पलेन्ट समाप्त हो गई, फिर तो कम्पलीट हो गये बाकी और क्या चाहिए?

(11.10.1975)

टीचर बनना अर्थात् सौभाग्य की लॉटरी लेना

आप हर कर्म करके दिखाने के निमित्त हैं। हर टीचर के पीछे देख कर चलने वाले, करने वाले, आगे बढ़ने वालों की कितनी बड़ी लाइन होती है? तो टीचर सही लाइन पर चलाने के निमित्त है। वह रुकती है तो सारी लाइन रुक जाती है, तुम्हारी लाइन की जिम्मेवारी है। ऐसी जिम्मेवारी समझ कर चले तो हर कर्म कैसा करेंगे? वैसे भी कहा जाता है - ज़िम्मेवारी बड़े से बड़ा टीचर है। जैसे टीचर लाइफ बनाते हैं ना, वैसे जिम्मेवारी भी लाइफ बनाने की शिक्षा देती है। तो हर टीचर के ऊपर इतनी विशाल जिम्मेवारी है। ऐसा समझने से भी अपने ऊपर अटेन्शन रहेगा। अब अटेन्शन रहेगा तो बाप और सेवा के सिवा और कुछ बुद्धि में रहेगा ही नहीं। जिम्मेवारी बड़ापन लाती है। यदि जिम्मेवारी नहीं तो बचपन हो जाता है। जिम्मेवारी होने से अलबेलापन समाप्त हो जाता है। टीचर को हर संकल्प, हर कदम पीछे, सोचना चाहिए कि मेरे पीछे कितनी जिम्मेवारी है। ऐसे भी नहीं कि यह जिम्मेवारी भारी करेगी-बोझ रहेगा। नहीं, जितनी यह जिम्मेवारी उठायेगे उतना जो अनेकों की आशीर्वाद मिलती है तो वह बोझ खुशी में बदल जाता है। वह बोझ महसूस नहीं होता, हल्के रहते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप निमित्त बने वैसे आप सब निमित्त हैं। तो आप सबको ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना चाहिए। जिम्मेवारी और हल्कापन दोनों का बैलेन्स था, ऐसे ही फॉलो फादर। टीचर्स का स्लोगन फॉलो फादर। 'फॉलो फादर' नहीं तो सफल टीचर्स नहीं। टीचर का पहला सर्टीफिकेट है स्वयं संतुष्ट रहना और दूसरों को सन्तुष्ट करना। फर्स्ट नम्बर टीचर की निशानी सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। टीचर सन्तुष्ट क्यों नहीं रहेगी? टीचर्स को चॉन्स

कितने हैं? एक चॉन्स समर्पण होने का, दूसरा सेवा का चान्स, तीसरा निमित्त बनने से अपने ऊपर अटेन्शन का चान्स और चौथा जितनों को आप-समान बनायेंगी, उसमें पुरुषार्थ की सफ़लता का चान्स। सबसे ज्यादा पुरुषार्थ में नम्बर लेने का चान्स। आने वाले स्टुडेण्ट को तो हंस बगुला इक्ट्ठा रहना पड़ता है। टीचर्स को वातावरण का भी चान्स अच्छा मिलता है। तो टीचर बनना अर्थात् लॉटरी लेना। टीचर्स का ड्रामा में बहुत अच्छा पार्ट है। टीचर्स को अपने भाग्य को देख खुश होना चाहिए। अपने प्राप्ति की लिस्ट सामने रखो कि क्या मिला है? कितना मिला है? वह देखते हो? अमृत वेले रूह-रूहान सब करती हो? जो रूह-रूहान करने से रस का अनुभव कर लेते हैं वह सारे दिन में सफल रहेगे। अलबेले तो नहीं रहते। सदा अपने ऊपर अटेन्शन रहता है और रस भी आता है? एक है नियम निभाने वाले, दूसरे प्राप्ति करने वाले। आप सब तो प्राप्ति करने वाली हो ना?

(15.10.1975)

त्याग-मूर्त्त और तपस्वी-मूर्त्त सेवाधारी ही यथार्थ टीचर

टीचर्स अर्थात् सेवाधारी। सेवाधारी अर्थात् त्याग और तपस्वी-मूर्त्त। टीचर्स को अपने अन्दर महीन रूप से चैकिंग करनी चाहिए। मोटे रूप से नहीं बल्कि महीन रूप से। वह यही है कि सारे दिन में सर्व प्रकार के त्याग-मूर्त्त रहे अथवा कहीं त्याग-मूर्त्त के बजाय कोई भी साधन व कोई भी वस्तु को स्वीकार करने वाले बनें? जो त्याग-मूर्त्त होगा वह कभी भी कोई वस्तु स्वीकार नहीं करेगा। जहाँ स्वीकार करने का संकल्प आया तो वहाँ तपस्या भी समाप्त हो जायेगी। त्याग, तपस्या-मूर्त्त ज़रूर बनायेगा। जहाँ त्याग और तपस्या खत्म वहाँ सेवा भी खत्म। बाहर से कोई कितने भी रूप से सेवा करे, परन्तु त्याग और तपस्या नहीं तो सेवा की भी सफ़लता नहीं।

कई टीचर्स सोचती है कि सर्विस में सफ़लता क्यों नहीं? सर्विस में वृद्धि न होना वह तो और बात है, परन्तु विधि-पूर्वक चलना यह है सर्विस की सफ़लता। तो

वह तब होगी जब त्याग और तपस्या होगी। मैं टीचर हूँ, मैं इन्चार्ज हूँ, मैं ज्ञानी हूँ या योगी हूँ यह स्वीकार करना, इसको भी त्याग नहीं कहेंगे। दूसरा भले ही कहे, परन्तु स्वयं को स्वयं न कहे। अगर स्वयं को स्वयं कहते हैं तो इसको भी स्व-अभिमान ही कहेंगे। तो त्याग की परिभाषा साधारण नहीं। यह मोटे रूप का त्याग तो प्रजा बनने वाली आत्मायें भी करती हैं, परन्तु जो निमित्त बनते हैं उनका त्याग महीन रूप में है। कोई भी पोज़ीशन को या कोई भी वस्तु को किसी व्यक्ति द्वारा भी स्वीकार न करना - यह है त्याग। नहीं तो कहावत है कि जो सिद्धि को स्वीकार करते तो 'वह करामत खैर खुदाई'। तो यहाँ भी कोई सिद्धि को स्वीकार किया जो ज्ञानयोग से प्राप्त हुआ मान व शान तो यह भी विधि का सिद्धि-स्वरूप प्रालब्ध ही है। तो इनमें से किसी को भी स्वीकार करना अर्थात् सिद्धि को स्वीकार करना हुआ। जो सिद्धि को स्वीकार करता है, उसकी प्रालब्ध यहाँ ही खत्म फिर उसका भविष्य नहीं बनता। तो टीचर्स की चैकिंग बड़ी महीन रूप से हो। सेवाधारी के नाते से त्याग और तपस्या निरन्तर हो। तपस्या अर्थात् एक बाप की लगन में रहना। कोई भी अल्पकाल के प्राप्त हुए भाग्य में यदि बुद्धि का झुकाव है तो वह सेवा में सफ़लतामूर्त्त नहीं बन सकता। सफ़लतामूर्त्त बनने के लिये त्याग और तपस्या चाहिए। त्याग का मतलब यह नहीं कि सम्बन्ध छोड़ यहाँ आकर बैठे। नहीं। महिमा का भी त्याग, मान का भी त्याग और प्रकृति दासी का भी त्याग - यह है त्याग। फिर देखो मेहनत कम सफ़लता ज्यादा निकलेगी। अभी मेहनत ज्यादा, सफ़लता कम क्यों? क्योंकि अभी इन दोनों बातों में अर्थात् त्याग और तपस्या की कमी है। जिसमें त्याग-तपस्या दोनों हैं वह है यथार्थ टीचर अर्थात् काम करने वाला टीचर। नहीं तो नाम-मात्र का टीचर ही कहेंगे।

टीचर्स को कोई भी सब्जेक्ट में कमजोर नहीं होना चाहिए। अगर टीचर कमज़ोर है तो वह जिनके लिये निमित्त बनी है वह भी कमज़ोर होंगे। इसलिए टीचर्स को सभी सब्जेक्ट्स में परफेक्ट होना चाहिए। टीचर्स का यह काम नहीं कि वह कहे कि क्या करूँ, कैसे करूँ या कहे कि आता नहीं। यह टीचर के बोल नहीं,

यह तो प्रजा के बोल हैं। ऐसे अपने को सफ़लतामूर्त समझती हो? चेक करो, कहीं न कहीं रुकावट है। इसलिए सफ़लतामूर्त्त नहीं। जहाँ त्याग-तपस्या की आकर्षण होगी वहाँ सर्विस भी आकर्षित हो पीछे आयेगी। समझा? ऐसे सफ़लता-मूर्त्त टीचर बनो। ऐसे टीचर के पीछे सर्विस की वृद्धि का आधार है। ऐसे को कहते है लक्की (भाग्यवान)। इसके लिए ही कहावत है - 'धूल भी सोना हो जाता है'। धूल भी सोना हो जायेगा अर्थात् सफ़लतामूर्त्त बन जायेंगे। टीचर्स ऐसे सफ़लतामूर्त्त हैं? नम्बरवार तो होंगे। टीचर्स के नम्बर तो आगे हैं। अच्छा अगर ऐसी सफ़लतामूर्त्त न बनी हो तो अभी से बन जाना।

(20.10.1975)

बेहद की शिक्षिका समझ वैराग्य वृत्ति को धारण करो

अपने को मास्टर विश्व की शिक्षक समझती हो अथवा अपने-अपने सेवा-केन्द्रों कि मैं फलाने स्थान की टीचर हूँ, यह बुद्धि में रहता है? **यह बुद्धि में रहना चाहिए कि मैं विश्व की निमित्त बनी हुई मास्टर विश्व-शिक्षक हूँ!** हद याद रहती है या बेहद? बेहद का नशा और बेहद की सेवा के प्लैन चलते हैं या अपने स्थान के प्लैन चलते हैं? बेहद का नशा रहेगा तब विश्व की मालिक बनेंगी। अगर हद का नशा और हद की स्मृति रहती है, तो विश्व के मालिकपन के संस्कार नहीं बनेंगे, फिर तो छोटा-छोटा राजा बनेंगे। विश्व-महाराजन की प्रालब्ध पाने की निशानियाँ अभी से ही दिखाई देंगी। जैसे कोई भी पहेली हल करानी होती है तो उसकी निशानियाँ पूछते हैं जिससे कैसी भी कठिन पहेली हो, वह जल्दी हल हो जाती है। तो यहाँ भी कौन क्या बनता है, यह पहेली है, तो इन निशानियों से परख सकता है। अपने आपको भी मालूम पड़ सकता है कि मैं अपने पुरुषार्थ प्रमाण क्या बन सकती हूँ।

टीचर्स स्वतन्त्र हैं, कोई कर्म-बन्धन नहीं सिर्फ सेवा का बन्धन है। वह बन्धन, बन्धन नहीं, लेकिन बन्धन-मुक्त करने वाला है। जब सब बातों में स्वतन्त्र

हो, तो टीचर्स की बेहद की बुद्धि होनी चाहिए। **जहाँ तक हो सके वहाँ तक बेहद की सेवा में सहयोग देने का चॉन्स स्वयं लेना चाहिए।** क्योंकि जितना स्वयं बेहद की सेवा का अनुभव करेंगे उतना ही जास्ती अनुभवीमूर्त्त कहलायेंगी। अनुभवी-मूर्त्त की ही वैल्यू होती है, जैसे पुराने जमाने के जो अनुभवी होते हैं उनकी राय की वैल्यु होती है कि यह पुराने अनुभवी हैं। तो यहाँ भी अनुभवी बनना चाहिए। स्वयं चॉन्स लेना चाहिए। प्रोग्राम प्रमाण करना उसमें आधा हिस्सा अपना होता, आधा दूसरे का हो जाता है। जैसे कमाई का शेयर (हिस्सा) होता है। तो प्रोग्राम प्रमाण करने में आधा हो जाता है। जो स्वयं चॉन्स लेते वह फुल ही मिलता है। ऐसे नहीं कहो कि मुझे योग्य समझा जाए। मैं स्वयं बनकर दिखलाऊं। **आफरीन उसको मिलती है जो स्वयं को ऑफर करता है।** यह कभी नहीं सोचना या इन्तज़ार करना कि मुझे चान्स मिलेगा तो करुंगी या मुझे आगे बढ़ाया जायेगा तो बढ़ूँगी। यह भी आधार हुआ। टीचर तो स्वयं आधारमूर्त्त हैं। तो जो आधारमूर्त्त हैं वह किसका आधार नहीं लेते। यह भी लॉटरी नहीं गँवाना। **स्वयं, स्वयं को ऑफर करो और बेहद के अनुभवी बनो। बेहद के बुद्धिवान बनो। चॉन्स लेते जाओ तो चॉन्स मिलता जायेगा।** इसको कहेगे मास्टर विश्व-शिक्षक। बाकी है अपने-अपने सेन्टर की शिक्षक। जैसे बाप को देखा एक स्थान मधुबन में रहते चारों ओर के प्लान बनाते थे, न कि सिर्फ मधुबन के। ऐसे ही निमित्त कहाँ भी रहती हो, लेकिन बेहद के प्लैन्स बनाती रहो। ऐसी हैं सब बेहद की बुद्धि वाली टीचर्स? चारों ओर चक्कर लगाती हो कि सिर्फ अपनी एरिया में चक्कर लगाती हो? जो जितना ईश्वरीय सेवा-अर्थ चक्कर लगाते हैं उतना ही चक्रवर्ती राजा बनते हैं। अच्छा, यह तो हुई बेहद की टीचर्स के निमित्त। अभी तो भविष्य प्लैन बताया।

बेहद की वैराग्य वृत्ति को टीचर्स अपने में अनुभव करती हैं? बेहद की वैराग्य वृत्ति है कि अपने सेन्टर्स व जिज्ञासुओं से लगाव नहीं। जब इस लगाव से बेहद का वैराग्य होगा तब जयजयकार होगी। सब स्थूल, सूक्ष्म साधनों से बेहद का

वैराग्य। ऐसी धरनी बनी है अथवा थोड़ा सेन्टर्स से चेन्ज करें तो हिलेंगी? जिज्ञासुओं पर तरस नहीं पड़ेगा? जरा भी उन्हों के प्रति संकल्प नहीं आयेगा? ऐसे अपने को चेक करना चाहिए कि ऐसा पेपर आये तो नष्टोमोहा हैं? वह है लौकिक सम्बन्ध और यह है सेवा का सम्बन्ध। यदि उस सम्बन्ध में मोह जाये तो आप लोग वाणी चलाती हो। यह अलौकिक सेवा का सम्बन्ध है, इसमें यदि आपका मोह होगा तो आने वाले स्टूडेण्ट्स इस पर वाणी चलायेंगे। तो अपनी महीन रूप से चेकिंग करो कि अभी कोई ऑर्डर हो तो एवररेडी हैं? इस सेन्टर की सर्विस अच्छी है, तो सर्विस अच्छी से भी लगाव तो नहीं है? जब सबसे उपराम हों तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसे कि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते हैं।

लगाव की निशानी यह है कि बुद्धि बार-बार बाप से हट कर उस तरफ जाये तो समझो लगाव है। अपने आप से भी लगाव न हो। जो अपने में विशेषता है, कोई में हैन्डलिंग पॉवर अच्छी है वा कोई में वाणी की पॉवर है तो कहेंगी मैं ऐसी हूँ। परन्तु यह तो बाप-दादा की देन है। अपने ज्ञान की विशेषता, विशेषता कोई भी हो, उससे भी लगाव नहीं। इसमें भी अभिमान आ जाता है इससे तो **यह बुद्धि में रखो कि - 'यह बाप से मिला हुआ वर्सा है। जो सर्व-आत्माओं के प्रति हमें मिला है, जो दे रहे हैं, हम तो निमित्त हैं।'** ऐसे बेहद के वैराग्य वृत्ति का संगठन टीचर्स का होना चाहिए। जो चलने से, देखने से और बोलने से सबको महसूस हो कि ये बेहद के वैरागी हैं। ज्ञान से सेवा करने में होशियार हैं, यह तो सब महसूस करते हैं। अब बेहद के वैराग्य का अनुभव करो, जो दूसरे भी अनुभव करें।

(25.10.1975)

पुरुषार्थ को तीव्र करने की युक्ति - अब नहीं तो कभी नहीं

टीचर्स जैसे विशेष सेवार्थ निमित्त बनी हुई विशेष आत्मायें हैं, वैसा पुरुषार्थ भी चलता है या जैसे स्टूडेण्ट्स का चलता है, वैसे ही चलता है? पार्ट के अनुसार

विशेष पुरुषार्थ कौनसा चलता है? सम्पूर्ण बनना है, सतोप्रधान बनना है - यह तो सभी का लक्ष्य है, यह तो इन-जनरल हो गया। लेकिन टीचर्स का विशेष पुरुषार्थ कौनसा चलता है? आजकल जो विशेष पुरुषार्थ करना है व होना चाहिये, वह यही है कि हर संकल्प पॉवरफुल हो- साधारण न हो, समर्थ हो व्यर्थ न हो। टीचर का अर्थ क्या है? सर्विसएबल, एक सेकेण्ड भी सर्विस के बिना न हो। मुरली पढ़ना, और चेकिंग करना - यह तो मोटी बात है!

जैसे समय समीप आ रहा है, तो निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को पुरुषार्थ यह करना है कि समय से तेज दौड़ लगायें। ऐसे नहीं कहना है कि इतना समय पड़ा है, कमी दूर हो ही जाएगी। नहीं। यह बुद्धि में रखना है कि अभी नहीं तो कभी नहीं। हर संकल्प, हर सेकेण्ड के लिए यह स्लोगन कि अब नहीं तो कभी नहीं। जब ऐसे अभी के संस्कार भरेंगे तो ऐसी अभी कहने वाली आत्मायें सतयुग के आदि में आयेंगी। कभी कहने वाले मध्य में आयेंगे। कभी कहने वाले समय का इन्तज़ार करते हैं। तो पद में भी इन्तज़ार करेंगे। तो हर सेकेण्ड, हर संकल्प में यह स्लोगन याद रहे। अगर यह पाठ पक्का नहीं होगा तो सदैव कमज़ोरी के संस्कार रहेंगे। महावीर के संस्कार हैं - 'अब नहीं तो कभी नहीं!' हमारे से ये आगे हैं, यह करेंगे तो हम करेंगे - यह अलबेलेपन के संस्कार हैं। जो संकल्प आया वह अब करना ही है। कल नहीं आज, आज नहीं अब, अर्थात् अभी करना है।

सभी विशेष आत्मायें हो न? अपने को छोटा तो नहीं समझते हो? पुरुषार्थ में हर एक बड़ा है। कारोबार में छोटा-बड़ा होता है, पुरुषार्थ में छोटा-बड़ा नहीं होता। पुरुषार्थ में छोटा आगे जा सकता है। कारोबार में मर्यादा की बात है। पुरुषार्थ में मर्यादा की बात नहीं। 'पुरुषार्थ में जो करेगा, सो पायेगा'। अब ऐसे चेक करना है कि ऐसा पुरुषार्थ है या कि जैसे साधारण सबका चलता है, वैसे चलता है? टीचर्स सदा हर्षित हैं? टीचर्स को अनेकों की आशीर्वाद की लिफ्ट भी मिलती है और किसी को कमज़ोर बनाने के निमित्त बनती है, तो पाप भी चढ़ता है। जिस बोझ के कारण जो चाहते हैं वह कर

नहीं पाते। बोझ वाला ऊपर उठ नहीं सकेगा। इसलिए चाहते हुए भी चेन्ज नहीं होते तो ज़रूर बोझ है। उस बोझ को भस्म करो - विशेष योग से, मर्यादाओं से और लगन से। नहीं तो बोझ में समय बीत जावेगा, आगे बढ़ न सकोगे। अमृतवेले उठ कर अपनी सीट को सेट करो। जैसी सीट है, उसी प्रमाण सेट हैं? - यह चेक करो। अपने पोज़ को ठीक करो। अगर पोज़ ठीक न भी होगा तो चेक करने से ठीक हो जावेगा।

(24.10.1976)

अभी तो चलते-फिरते ऐसे अनुभव होना चाहिये जैसे साकार को देखा - चलते-फिरते या तो फरिश्ते रूप का या भविष्य रूप का अनुभव होता था, तभी तो औरों को भी होता था। मैं टीचर हूँ, मैं सेवाधारी हूँ - यह तो जैसा समय, वैसा स्वरूप हो जाता है। अब स्वयं को फरिश्ते रूप में अनुभव करो तो साक्षात्कार होगा। साक्षात्कार का रूप कौन-सा है? फरिश्ता रूप बनना। चलते-फिरते 'फरिश्ता स्वरूप'। अगर साक्षात् फरिश्ते नहीं बनेंगे तो साक्षात्कार कैसे करा सकेंगे? तो टीचर्स के लिये अब विशेष पुरुषार्थ कौन-सा है? यही कि फरिश्ता इस साकार सृष्टि पर आया हूँ सेवा अर्थ। फरिश्ते प्रकट होते हैं, फिर समा जाते हैं। फरिश्ते सदा इस साकारी सृष्टि पर ठहरते नहीं, कर्म किया और गायब! तो जब ऐसे फरिश्ते होंगे तो इस देह और देह के सम्बन्ध व पुरानी दुनिया में पाँव नहीं टिकेगा। जब कहते हो कि हम बाप के स्नेही हैं; तो बाप सूक्ष्मवतन-वासी और आप सारा दिन स्थूलवतन-वासी, तो स्नेही कैसे? तो सूक्ष्मवतन-वासी फरिश्ते बनो। **सर्व आकर्षणों या लगावों के रिश्ते और रास्ते बन्द करो तो कहेंगे कि बाप स्नेही हो।** यहाँ होते हुए भी जैसे कि नहीं है - यह है लास्ट स्टेज। विशेष सेवार्थ निमित्त हो, तो पुरुषार्थ में भी विशेष होना चाहिये। जब दूसरों को चलते-फिरते यह अनुभव होगा कि आप लोग फरिश्ते हैं, तो दूसरे भी प्रेरणा ले सकेंगे। अगर साकार सृष्टि की स्मृति से परे हो जाओ तो जो छोटी-छोटी बातों में टाइम वेस्ट करते हो, वह नहीं

होगा। तो अब हाई जम्प लगाओ - साकार सृष्टि से एकदम फरिश्तों की दुनिया में व फरिश्ता स्वरूप इसको कहते हैं हाई जम्प। तो छोटी-छोटी बातें शोभेंगी नहीं। तो यह बाप की विशेष सौगात है। सौगात लेना अर्थात् फरिश्ता स्वरूप बनना। तो बाप भी यह फरिश्ता स्वरूप का चित्र सौगात में देते हैं। इस सौगात से पुरानी बातें सब समाप्त हो जायेंगी। 'क्या' और 'क्यों' की रट नहीं लगानी है। निर्णय-शक्ति, परखने की शक्ति, परिवर्तन-शक्ति - जब ये तीनों शक्तियाँ होंगी तो ही एक-दूसरे को खुशखबरी सुनायेंगे। अगर खुद में परिवर्तन नहीं तो दूसरों में भी परिवर्तन नहीं ला सकेंगे।

(02.02.1976)

कनेक्शन और करेक्शन के बैलेन्स से कमाल

टीचर्स को विशेष दो बातों का अटेन्शन रखना चाहिये, वह दो बातें कौन-सी हैं? मधुबन से, बाप के साथ तथा दैवी परिवार के साथ मर्यादा-पूर्वक कनेक्शन हो। मर्यादापूर्वक कनेक्शन यह है कि जो भी संकल्प व कर्म करते हो, उसके हर समय करेक्शन करने के अभ्यासी हो। दो बातें - एक यथार्थ कनेक्शन और दूसरा हर समय अपनी हर करेक्शन करने की अटेन्शन। अगर दोनों ही बातों में से एक में भी कमी है तो सफ़लतामूर्त्त नहीं बन सकते। करेक्शन करने के लिये सदैव साक्षीपन की स्टेज चाहिये। अगर साक्षी हो करेक्शन नहीं करेंगे तो यथार्थ कनेक्शन रख न सकेंगे। तो यह सदैव चेक करो कि हर समय हर बात में करेक्शन करते हैं? एक है बुद्धि की करेक्शन जिसको याद की यात्रा कहते हैं दूसरा है साकार कर्म में आते हुए, साकार परिवार व साकार सम्बन्ध के कनेक्शन में आना। दोनों ही कनेक्शन ठीक हों। साकार में कनेक्शन में आने में मर्यादापूर्वक हैं? जैसे रूहानी परिवार का कनेक्शन रूहानियत के बजाय देह-अभिमान का कनेक्शन है तो वह भी यथार्थ कनेक्शन नहीं हुआ।

जो करेक्शन और कनेक्शन करना जानते हैं, वह सदा रूहानी नशे में होंगे। उनका न्यारापन और प्यारापन का बैलेन्स होगा। देखो, सिर्फ बैलेन्स का खेल दिखाने के लिये कितनी कमाई का साधन बना है, वह है सर्कस। बैलेन्स को कमाल के रूप में दिखाते हैं। तो यहाँ भी अगर बैलेन्स होगा तो कमाल भी होगा और कमाई भी होगी। अगर ज़रा भी कम अथवा ज्यादा हो जाता है तो न कमाल होता है, न कमाई। जैसे कोई भी खाने की चीज़ बनाते हैं, अगर उसमें सब चीजों का बैलेन्स न हो तो कितनी भी अच्छी चीज़ हो पर उसमें टेस्ट नहीं आयेगा। तो **अपने जीवन को भी श्रेष्ठ और सफ़ल बनाने के लिये बैलेन्स रखो अर्थात् समानता रखो।**

दूसरी बात - जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, तो वैसे अपने शक्तिशाली रूप को बना सको। अगर परिस्थिति सामना करने की है, तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ। अगर परिस्थिति सहन करने की है, तो सहन शक्ति का स्वरूप हो जाओ। ऐसा अभ्यास हो। टीचर्स माना बैलेन्स। जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने की शक्ति हो। स्नेह की जगह अगर शक्ति को धारण करते हो और शक्ति की जगह अगर स्नेह को धारण किया तो इसको क्या कहेंगे? अर्थात् जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने की शक्ति नहीं है। तो सर्विस की रिजल्ट भी नहीं निकलती और सफ़ल भी नहीं होते हैं। **'अगर नम्बरवन टीचर बनना है तो कोई भी धारणा पहले स्वयं करो, फिर कहो। ऐसे नहीं कि खुद करो नहीं, केवल औरों को कहो।'** जो दूसरों को डायरेक्शन देते हो, वह पहले स्वयं में देखो कि वह आप में है? दूसरों को कहो कि सहनशील बनो और खुद न हो तो वह टीचर नहीं। टीचर माना शिक्षक अर्थात् शिक्षा देने वाला। **अगर स्वयं शिक्षा स्वरूप नहीं तो वह यथार्थ टीचर कहला नहीं सकते।** सदैव यह स्लोगन याद रखो - शिक्षक अर्थात् शिक्षा-स्वरूप और बैलेन्स रखने वाला। अब क्वॉलिटी की टीचर बनना है। क्वॉन्टिटी पर नज़र न हो। क्वॉलिटी ही

सबके कल्याण के निमित्त बन सकती है। तो अब टीचर की क्वॉन्टिटी नहीं बढ़ानी है लेकिन क्वॉलिटी बढ़ानी है। समझा!

(08.02.1976)

टीचर्स अर्थात् फ़रिश्ता। टीचर का काम है - पण्डा बन करके यात्रियों को ऊँची मंज़िल पर ले जाना। ऊँची मंज़िल पर कौन ले जा सकेगा? जो स्वयं फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाईट होगा। हल्का ही ऊँचा जा सकता है। भारी नीचे जाएगा। टीचर का काम है ऊँची मंज़िल पर ले जाना। तो खुद क्या करेंगे? फ़रिश्ता होंगे ना। अगर फ़रिश्ते नहीं तो खुद भी नीचे रहेंगे और दूसरों को भी नीचे लायेंगे। अपने को फ़रिश्ता अनुभव करती हो? बिल्कुल हल्का। देह का भी बोझ नहीं। मिट्टी बोझ वाली होती है ना। देहभान भी मिट्टी है। जब इसका भान है तो भारी रहेंगे। इससे परे हल्का अर्थात् फ़रिश्ता होंगे। तो देह के भान से भी हल्कापन। देह के भान से परे तो और सभी बातों से स्वत: ही परे हो जायेंगे। फ़रिश्ता अर्थात् बाप के साथ सभी रिश्ते हों। अपनी देह के साथ भी रिश्ता नहीं। बाप का दिया हुआ तन भी बाप को दे दिया था। अपनी वस्तु दूसरे को दे दी तो अपना रिश्ता खत्म हुआ। सब हिसाब-किताब बाप से, और किसी से नहीं। तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से बोलूं......... तो लेन-देन सब खाता बाप से हुआ ना? जब एक बाप से सब खाता हुआ तो और सभी खाते खत्म हो गए ना? **टीचर अर्थात् जिसके सब खाते बाप से अर्थात् सब रिश्ते बाप से।** कोई पिछला खाता नहीं, सब खत्म हो गया। इसको ही तुम्हीं से बोलूं...... तो लेन-देन सब खाता बाप से हुआ ना! जब एक बाप से सब खाता हुआ तो और सभी खाते खत्म हो गए ना? टीचर अर्थात् जिसके सब खाते बाप से अर्थात् सब रिश्ते बाप से। कोई पिछला खाता रह नहीं जाता। जब बाप के बने तो पिछला खाता सब खत्म हो गया। इसको ही कहा जाता है सम्पूर्ण बेगर। बेगर का कोई बैंक बैलेन्स नहीं होता। खाता नहीं, कोई रिश्ता नहीं। न

किसी व्यक्ति से, न किसी वैभव से - खाते समाप्त। पिछले कर्मों के खाते में कोई भी बैंक बैलेन्स नहीं होना चाहिए। ऐसी चेकिंग करनी है। ऐसे कई होते हैं कि मरने के बाद कोई सड़ा हुआ खाता रह जाता है तो पीछे वालों को तंग करता है। तो चेक करते हो कि सब खाते समाप्त हैं? स्वभाव, संस्कार, सम्पर्क, सब बातें, सब रिश्ते खत्म। फिर खाली हो जायेंगे ना। जब इतना हल्का बने तभी पण्डा बन औरों को ऊँचा उठा सकंगे। तो समझा, टीचर को क्या करना होता है? टीचर बनना सहज है या मुश्किल? टीचर बनना भी बाप समान बनना हुआ तो जो टीचर की सीट लेता है वह बाप समान बनता है। टीचर बनते हैं अर्थात् ज़िम्मेवारी का संकल्प लेते हैं। तो बाप भी इतना सहयोग देते हैं। जो जितनी ज़िम्मेवारी लेता, उतना ही बाप सहयोग देने का जिम्मेवार हैं। जब बाप ज़िम्मेवारी ले लेते तो मुश्किल हुआ या सहज? जब बाप को ज़िम्मेवारी दे दी, तो स्वयं नहीं उठानी चाहिए। **जिसके निमित्त बनते, उनकी ज़िम्मेवारी अपनी समझते हो। तो मुश्किल हो जाती है। ज़िम्मेवार बाप है न कि आप।** अपने-आप के ऊपर बोझ तो नहीं रख लेते? कइयों को बोझ उठाने की आदत होती है। कितना भी कहो फिर भी उठा लेते हैं। यह न हो जाय, ऐसा न हो जाय यह व्यर्थ का बोझ है, बोझ बाप के ऊपर छोड़ दो। बाप का बन बाप के ऊपर छोड़ने से सफ़लता भी ज्यादा, उन्नति भी ज्यादा और सहज हो जाएगा। टीचर्स तो बाप-दादा को प्रिय हैं, क्यों? फिर भी हिम्मत तो रखी है ना। बाप-दादा हिम्मत देख हर्षित होते, लेकिन हिम्मतहीन देख आश्चर्य भी खाते हैं। टीचर्स को 'क्यों' और 'क्या' के क्वेश्चन में नहीं जाना चाहिए। नहीं तो आपकी 'क्यू' (कतार) भी ऐसी हो जाएगी। **टीचर अर्थात् फुल स्टॉप की स्थिति में स्थित। क्वेश्चन वाले प्रजा में आ जाते हैं। फुल स्टॉप अर्थात् राजा।** क्वेश्चन वाले को कब अति-इन्द्रिय सुख नहीं हो सकता। इसलिए टीचर्स की विशेष धारणा ही 'फुल स्टॉप की स्टेज है'। टीचर्स अर्थात् इन्वेन्टर बुद्धि (आविष्कार), प्रोग्राम प्रमाण ही सिर्फ चलने वाले नहीं। इन्वेन्शन करने वाले। क्या ऐसी नई बात निकाले,

जो सहज और ज्यादा से ज्यादा को सन्देश पहुँच जाए। यह इन्वेन्शन हरेक को निकालनी है।

(11.01.1977)

टीचर्स अर्थात् सेवाधारी। **सेवा में सफ़लता का मुख्य साधन है - त्याग और तपस्या। दोनों में से अगर एक की भी कमी है तो सेवा की सफ़लता में भी इतने परसेन्ट कमी होती है।** त्याग अर्थात् मन्सा संकल्प से भी त्याग, सरकमस्टेंस (परिस्थिति) के कारण या मर्यादा के कारण मजबूरी से त्याग बाहर से कर भी लेंगे तो संकल्प से त्याग नहीं होगा। त्याग अर्थात् ज्ञान-स्वरूप से संकल्प से भी त्याग, मजबूरी से नहीं। ऐसे त्यागी और तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे - 'तपस्वी'। ऐसे त्याग तपस्या वाले ही सेवाधारी कहे जाते हैं। ऐसे सेवाधारी हो ना? **त्याग ही भाग्य है। बिना त्याग के भाग्य नहीं बन सकता।** इसको कहा जाता है टीचर। तो नाम और काम दोनों टीचर के हैं। केवल नाम टीचर का नहीं। टीचर अर्थात् पोजीशन नहीं, लेकिन सेवाधारी। टीचर्स अर्थात् सभी को पोजिशन दिलाने वाली, न कि पोजीशन समझ उसमें अपने को नामधारी टीचर समझने वाली। जैसे कहा जाता है देना, देना नहीं लेकिन लेना है - ऐसे ही टीचर अपने पोजिशन का त्याग करती है तो यही भाग्य लेना है।

(12.01.1977)

सभी टीचर्स अपने को जैसे बाप विश्व शिक्षक है वैसे स्वयं को भी विश्व के निमित्त शिक्षक समझती हैं अथवा हद के? टीचर्स के प्रति विशेष पुरुषार्थ का स्लोगन कौन-सा है? हर सेकेण्ड मन, वाणी और कर्म तीनों द्वारा साथ-साथ सर्विस करेंगे। अर्थात् एक सेकेण्ड में व हर सेकेण्ड में तीनों रूपों की सेवा में उपस्थित रहेंगे। जब टीचर्स इस स्लोगन को सदा प्रैक्टीकल में लाएं तब ही विश्व-

कल्याण कर सकेंगे। इतने बड़े विश्व का कल्याण करने के लिए एक ही समय पर जब तीनों ही रूपों से सेवा हो तब यह सेवा का कार्य समाप्त हो सकेगा। वाणी द्वारा वा मन्सा द्वारा अलग-अलग समय नहीं। एक ही समय तीनों रूपों से सेवा करने वाले विश्व-कल्याणकारी बन सकेंगे। तो यही चेक करो कि हर समय तीनों ही रूपों से सेवा होती है? बाप के साथ तीन सम्बन्ध हैं। बाप, शिक्षक और सतगुरु के स्वरूप से सेवा करते हैं तो निमित्त टीचर्स को एक ही समय में तीन रूपों से सेवा करनी है। तो मास्टर त्रिमूर्त्ति हो जायेंगे। समझा? जितना-जितना टीचर्स शक्ति सम्पन्न बनेंगी उतना ही सर्व आत्माओं के प्रति निमत्त बन सकेंगी। **निमित्त बनने वालों के ऊपर बहुत जिम्मेवारी होती है। निमित्त बनने वाले का एक सेकेण्ड में एक का पद्मगुणा बनना भी है, प्राप्ति का भी चान्स है और फिर अगर निमित्त बने हुए कोई ऐसा कर्म करते जिसको देख और सभी विचलित हों उसकी पद्मगुणा उल्टी प्राप्ति भी होती है। संकल्प से वृत्ति बनेगी और वृत्ति से वातावरण बनेगा। तो ऐसा कोई संकल्प व वृत्ति न हो जिससे वातावरण अशुद्ध बने। ऐसा कोई बोल न हो जिसको सुन कर कोई विचलित हो। क्योंकि सबका अटेंशन निमित्त बनी हुई टीचर्स के प्रति रहता है तो टीचर्स को डबल अटेंशन रखना पड़े।** सभी ऐसे ही डबल अटेंशन रखते हुए चल रहे हो ना? 'पहले सोचो फिर करो'। पहले करो फिर सोचो नहीं। नहीं तो टाईम और एनर्जी वेस्ट चली जाती है। टीचर्स को तो विशेष ख़ुशी होनी चाहिए क्योंकि टीचर्स को लिफ्ट है - एक बाप और सेवा में रहने की और कोई वातावरण नहीं है। तो इस लिफ्ट का लाभ उठाना चाहिए ना? तो सदा हर्षित हो ना? सदा हर्षित कौन रहता है? जो कहाँ भी आकर्षित न हो। अगर किसी भी तरफ चाहे प्रकृति, चाहे आत्माओं, चाहे आत्माओं के गुणों की तरफ़ आकर्षित होते हो तो हर्षित नहीं रह सकेंगे। सर्व आकर्षण से परे, सिवाए एक बाप के, ऐसी आत्मा ही सदा हर्षित रह सकती है।

(16.01.1977)

बाप-दादा को विशेष खुशी होती है। क्यों, जानते हो? आप समान शिक्षक हो ना। जैसे बाप विश्व का शिक्षक, सेवक है वैसे टीचर भी शिक्षक और सेवक हैं। तो समानता वालों को देखकर खुशी होती है। शिक्षक की स्थिति में तो समान हो। बिना सेवा के और कोई बात आकर्षित न करे। दिन-रात सेवा में लगी रहो। **अगर सेवा से फ्री (खाली) रहेंगे तो फिर और बातें भी आ जायेंगी।** खाली घर में ही बिच्छू, टिंडन आते हैं। खाली घर हो या पुराना घर हो। यहाँ भी ऐसे होता है। बुद्धि या तो खाली होती है या तो पुराने संस्कारों वाली होती है, तो व्यर्थ संकल्प रूपी बिच्छू, टिंडन पैदा हो जाते।

(1) टीचर अर्थात् सदा बिजी (व्यस्त) रहने वाली। कभी फुर्सत में रहने वाली नहीं। संकल्प, बोल, कर्म से भी फ्री रहने वाली नहीं।

(2) टीचर का अर्थ ही बाप समान अथवा बाप के समीप विजयी माला के मणके। टीचर का यही लक्ष्य है ना - 'विजयी माला के मणके' बनना।

(3) टीचर अर्थात् कभी हार, कभी जीत में आने वाले नहीं, लेकिन 'सदा विजयी'।

(4) टीचर अर्थात् सदा तिलकधारी, सदा सौभाग्यवती, सुहागवती। तिलक सुहाग की निशानी है ना। तो सदा सुहागवती अर्थात् बाप को सदा साथी बनाने वाली। सुहागवती अर्थात् तिलक वाली।

टीचर का स्थान है - दिल-तख्त। स्थान छोड़ेंगे तो दूसरे ले लेंगे। टीचर का आसन बाप का दिल-तख्त है। आसन छोड़ दिया तो त्याग, तपस्या खत्म। तो यह आसन कभी नहीं छोड़ना। जगह लेने वाले बहुत हैं। सभी को यही उमंग उत्साह होता है कि हम टीचर से आगे जायें। टीचर फिर उनसे भी आगे जाए तब तो दिल तख्त नशीन होगी? टीचर का छोटा-सा संसार है ना। टीचर का संसार एक बाप ही है। मात-पिता, बन्धु-सखा.....। तो संसार में क्या होता है? सर्व सम्बन्ध होता है, वैभव होता है। यहाँ सर्व सम्बन्ध की प्राप्ति बाप से है। है छोटा-सा संसार लेकिन सम्पन्न और शक्तिशाली है। इस छोटे से संसार में कोई अप्राप्त वस्तु

नहीं। सर्व सम्बन्ध बाप से। ऐसे नहीं पिता का सम्बन्ध है तो माता का नहीं, माता का है तो बन्धु का नहीं। अगर एक भी सम्बन्ध की प्राप्ति बाप से न होगी तो बुद्धि दूसरे तरफ़ जरूर जायेगी। बाप से सर्व सम्बन्धों का अनुभव होना चाहिए। नहीं तो दूसरा सम्बन्ध अपनी तरफ़ खींच लेगा। सारा संसार ही 'एक बाप' हो गया तो सब रूप हो गया ना। इसको कहा जाता है नम्बर वन टीचर। फ्लॉलेस (बेदाग) टीचर, योग्य टीचर, नामी-ग्रामी टीचर। **बाप तो सदा ऊँची नज़र से देखते हैं। अगर बाप कमी को देखे तो सदा के लिए उस कमी को अन्डर लाईन लग जाती है। बाप भाग्य-विधाता है ना। इसलिए बाप सदा श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं।** श्रेष्ठता के आगे, कमज़ोरी आप ही मन को खाती है। श्रेष्ठ बातें सुनने से कमज़ोरी स्पष्ट हो ही जाती है। इसलिए बाप सदैव श्रेष्ठता का वर्णन करते हैं जिससे कमज़ोरी स्वत: ही दिखाई दे। अगर कमज़ोरी को देखें तो लम्बी-चौड़ी वेद-शास्त्रों की खानियाँ बन जाएं।

सभी टीचर्स को विशेष एक बात का ध्यान रखना है - कभी भी, किसी में भी रॉयल रूप में भी झुकाव न हो, किसी भी आत्मा के गुणों की तरफ़, सेवा, सहयोग की तरफ़, बुद्धि की तरफ़, प्लानिंग (योजना) की तरफ़ झुकाव नहीं हो। उसी को अपना आधार बनाने से झुकाव होता है। **जब किसी आत्मा का आधार हो जाता है तो बाप का आधार स्वत: ही निकल जाता है; और अब आगे चलकर अल्प काल का आधार हिल जाता है तो भटक जाते हैं। इसलिए कभी भी किसी आत्मा के किसी विशेष प्रभाव के कारण प्रभावित होना, यह 'महान भूल' है। भूल नहीं महान भूल है। इसमें खुश न हो जाना कि सर्विस वृद्धि को पा रही है। यह अल्प काल का जलवा होता है। फ़ाउन्डेशन (नींव) हिला तो सर्विस हिली। इसलिए कभी भी कोई आत्मा को आधार न बनाओ। ऐसे नहीं कि इसके कारण सर्विस वृद्धि को नहीं पायेगी, उन्नति नहीं होगी। यह कारण नहीं कालापन है, जो स्वच्छ आत्मा को काला कर देता है। यह बड़े से बड़ा दाग़ है। किसी**

आत्मा को आधार बनाना - यह बड़े ते बड़ा फ्ला है। तो फ्लालेस नहीं बन सकेंगे। बाकी मेहनत बहुत करती हो। मेहनत की बाप-दादा मुबारक देते हैं। सुनाया न कि शास्त्रों की कहानियाँ भी बहुत होती हैं जिनका कोई फाउण्डेशन नहीं। इसलिए पहले सुनाया कि टीचर अर्थात् सदा सेवा में बिजी। संकल्प में भी बाप के साथ बिजी रहो तो किसी आत्मा में बिजी नहीं होंगे। जो बिजी होता है वह कहाँ झुकेगा नहीं। फ्री होने के बाद ही मनोरंजन के साधन, स्नेह, सहयोग की तरफ़ झुकाव होता है। जो बिजी होगा, उनको इन बातों के लिए फुर्सत ही नहीं। बाप-दादा टीचर्स को देख खुश होते हैं। हिम्मत, उमंग, उल्लास तो बहुत अच्छा है। कदम आगे बढ़ा रही हो लेकिन अपने कार्यों की कहानी का शास्त्र नहीं बनाना। कर्म की रेखा से श्रेष्ठ तकदीर बनानी है। ऐसी कहानी नहीं बनाना जिसका जन्म भी उल्टा तो कहानी भी उल्टी। स्टुडेंट (जिज्ञासु) को पढ़ाना भी खुद को पढ़ाना है। टीचर्स से रूह-रूहान करना बाप-दादा को भी अच्छा लगता है। फ़ालो करने वाले तथा समान वालों से ज्यादा स्नेह होता है। जिससे स्नेह होता है उसकी छोटी कमज़ोरी भी बड़ी लगती है। इसलिए इशारा देते हैं। हम कितने समीप हैं देखना है। तो अमृतवेले दर्पण स्पष्ट होता है। टीचर्स सैलवेशन (सहुलियत) देने वाली बन गई ना, लेने वाली नहीं। टीचर्स से पूछने की आवश्यकता नहीं कि खुश-राज़ी हो। सदा खुश रहो और सेवा में वृद्धि करती रहो। परन्तु जब बाहें लड़खड़ाती हैं तो यह सीन (दृश्य) भी अच्छा लगता है। एक अलंकार उठाती तो दूसरा छूटता है। कभी स्वदर्शन चक्र को ठीक करती तो शंख छूट जाता है, शंख पकड़ती तो कमल छूट जाता है। अब टीचर्स को शास्त्रों की कथा बन्द करनी है। हर संकल्प, हर सेकेण्ड में तकदीर बनाओ। कोई कथा सुनने वाली, सुनाने वाली और बनाने वाली भी होती है। जैसे व्यास की कमाल है, वैसे यहाँ भी कमाल करते हैं। जन्म देते, पालना करते परन्तु विनाश नहीं कर पाते। तो फिर पश्चात्ताप करते हैं और कहते हैं मदद करो।

(02.02.1977)

जो कुछ सुना है उन सबका सार अपने जीवन में ला रही हो ना? क्योंकि टीचर का अर्थ ही है 'राजयुक्त और सारयुक्त'। टीचर की विशेषता यह है - (1) जो विस्तार को सेकेण्ड में सार में लायें। जैसे इसेन्स (खुशबू) की एक बूंद होती है लेकिन वो बहुत कार्य कर लेती है, वैसे टीचर्स अर्थात् इसेंसफुल। अर्थ के विस्तार को सेकेण्ड में सार रूप में करने वाली और अन्य को कराने वाली। (2) टीचर्स भी पावर हाउस बाप के समान सब-स्टेशन हैं। तो जैसे पावर हाउस में सदा अटेंशन और चेकिंग रहती है कि कहीं भी फ्यूज न हो जाये। ऐसे टीचर्स को भी क्या चैकिंग करनी है? कभी भी कोई परिस्थिति में कनफ्यूज न हो जाएं। जैसे पॉवर हाउस की छोटी सी हलचल सारे एरिया की लाईट को हिला देती है। वैसे ही टीचर के कनफ्यूज होने से वातावरण में प्रभाव पड़ जाता है और वातावरण का प्रभाव आने वालों पर पड़ता है तो टीचर्स को अपने-आपको अनेक आत्माओं के चढ़ाने और डगमग करने के निमित्त समझना चाहिए। (3) टीचर्स अथक हो ना। छोटी-सी बातों में थकने वाली तो नहीं हो? पुरुषार्थ में अपने-आप से भी थकना होता है? कोई भी प्रकार के संस्कार या स्वभाव को परिवर्तन करने में दिल शिकस्त होना या अलबेलापन होना भी थकना है। यह तो होता ही रहता है, यह तो होगा ही, यह है अलबेलापन। बहुत मुश्किल है, कहाँ तक चलेंगे यह है दिल शिकस्त होना। तो पुरुषार्थ में अलबेलापन होना या दिल शिकस्त होना भी थकना है। (4) जिसमें परिस्थितियों को सामना करने की शक्ति है, वे सदा उमंग उत्साह में रहेंगे, कनफ्यूज नहीं होंगे। (5) टीचर्स हैं ही बाप के समान सेवाधारी, तो समान वाले हो ना? समानता की भी खुशी होती है। टीचर्स इस खुशी में रहती है कि बाप समान 'मास्टर शिक्षक' हैं, बाप समान निमित्त बने हुए हैं। बाप समान अनेक आत्माओं के कल्याण की जिम्मेवारी भी है तो बाप समान हैं। यह खुशी बहुत आगे बढ़ा सकती है। टीचर्स को देख बाप-दादा भी खुश होते हैं। समान को कहते हैं 'फ्रैन्डशिप ग्रुप' तो फ्रैन्डस का ग्रुप हो गया। (6) टीचर्स को सदा नया प्लान बनाना चाहिए। प्लानिंग बुद्धि हो और बहुत सहज प्लानिंग बुद्धि बन भी सकती हो। कैसे?

अमृतवेले प्लान बुद्धि हो तो बाप-दादा द्वारा प्लान टच होंगे। तो प्लानिंग बुद्धि बनते जायेंगे। साकार आधार लेती हो इसलिए प्लानिंग बुद्धि नही बनती। नहीं तो टीचर्स का सम्बन्ध फ्रैन्डशिप होने के कारण समीप का है। तो बहुत सहयोग ले सकती हो। जब बाप देखते हैं हद के आधार बना रखे हैं, तो बाप क्यों मदद करें? (7) टीचर्स की विशेषता क्या है? टीचर्स इन्वेंटर (आविष्कारक), क्रियेटर (रचयिता), प्लानिंग बुद्धि है; अनेक आत्माओं को उमंग उल्लास दिलाने वाली है, इन सब विशेषताओं को अब इमर्ज करो। तो हद की बातें मर्ज हो जायेंगी। समझा? (8) टीचर की विशेषता है अनुभवी मूर्त्त। बोलने वाली मूर्त्त नहीं, अनुभवी मूर्त्त। बोलना भी अनुभव के आधार पर। इतनी सब विशेषताओं से सम्पन्न नज़र से बाप-दादा देखते हैं। तो कितने महान हो गये! महानता को मेहमान समझ कर चलाना। महानता को अपनी प्रापर्टी नहीं समझ लेना। महानता को अपना समझ, बाप का नहीं समझा तो नुक्सान है। बाप द्वारा मिली हुई महानता है तो बाप को बीच में से नहीं भूलना।

(06.02.1977)

योग्य शिक्षक का हर कर्म रूपी बीज फलदायक होगा, निष्फल नहीं

टीचर्स अर्थात् शिक्षक है। शिक्षक का अर्थ क्या है? शिक्षक का यहाँ अर्थ है, 'शिक्षा स्वरूप'। बड़े से बड़ा शिक्षा देने का सहज साधन कौन-सा है? अनेक प्रकार के शिक्षा देने के साधन होते हैं ना। तो शिक्षा देने का सबसे सहज साधन कौन-सा है? स्वरूप द्वारा शिक्षा देना, मुख द्वारा नहीं। साकार बाप ने सबसे सहज साधन 'स्वरूप' द्वारा ही शिक्षा दी ना? सिर्फ बोल में नहीं, कर्म से। कहेंगे वह सीखेंगे नहीं। लेकिन 'जो करेंगे वह देख और भी करेंगे'। यह मंत्र है। तो सबसे सहज तरीका, स्वरूप द्वारा शिक्षा देना। किसको कितना भी समझाओ तुम आत्मा हो, तुम शान्त स्वरूप, ज्ञान-स्वरूप हो लेकिन वह समझेंगे तब तक नहीं, जब तक स्वयं उस स्वरूप में स्थित नहीं होंगे। ऐसे अनुभव की पढ़ाई पढ़ने वालों को कोई भी

हरा नहीं सकते। पढ़ाई इतनी अविनाशी हो जाती है। तो कैसे शिक्षा देती हो - वाणी से या स्वरूप से?

हर कदम द्वारा अनेक आत्माओं को शिक्षा देना - यह है योग्य टीचर। भाषण द्वारा व सप्ताह कोर्स द्वारा किसको शिक्षा-स्वरूप बनाना। ऐसे शिक्षक के हर बोल - वाक्य नहीं, लेकिन 'महावाक्य' कहे जाते हैं। क्योंकि हर बोल महान बनाने वाला है तो महावाक्य कहेंगे। हर कर्म अनेकों को श्रेष्ठ बनाने का फल निकालने वाला हो। कर्म को बीज कहा जाता है, और रिजल्ट को कर्म का फल कहा जाता है। ऐसे शिक्षक का कर्म रूपी बीज फलदायक होगा। बीज अगर पावरफुल होता है तो फल भी इतना अच्छा निकलता है। हर कर्म रूपी बीज फलदायक होगा, निष्फल नहीं। इसको कहा जाता है 'योग्य शिक्षक'। उनका हर संकल्प, **जैसे ब्रह्मा के संकल्प के लिए गायन है कि ब्रह्मा के एक संकल्प ने नई सृष्टि रच ली, वैसे ऐसी शिक्षक के संकल्प, नई सृष्टि के अधिकारी बनाने वाला है।** समझा? शिक्षक की परिभाषा यह है।

टीचर्स को एक 'लिफ्ट की गिफ्ट' भी है। कौन-सी? टीचर्स बनना अर्थात् पुराने सम्बन्ध से त्याग करना। इस त्याग के भाग्य के लिफ्ट की गिफ्ट टीचर को है, पहले त्याग तो कर दिया ना। पहला त्याग है सम्बन्ध का। वो तो कर लिया। आगे भी त्याग की लिफ्ट लम्बी है। लेकिन इस त्याग का, हिम्मत रखने का, सहयोगी बनने का संकल्प किया, यह 'लिफ्ट ही गिफ्ट' बन जाती है। लेकिन सम्पूर्ण त्याग कर दो तो बाप के लिए गिफ्ट, दुनिया के लिए लिफ्ट बन जाओ। ऐसी लिफ्ट बन जाओ जो बैठा और पहऊँचा। मेहनत नहीं करनी पड़े। टीचर्स को चान्स बहुत है, लेकिन लेने वाला लेवे। टीचर्स बनने के भाग्य का तो सब गायन करते हुए, इच्छा रखते हैं। इच्छा रखते हैं अर्थात् श्रेष्ठ भाग्य है ना। उसको सदा श्रेष्ठ रखना वह है हरेक का नम्बरवार। टीचर्स जितना चाहे उतना अपना भविष्य सहज उज्वल बना सकती है - लेकिन वह टीचर जो योग्य टीचर हो। थोड़े में खुश होने वाली टीचर तो नहीं हो ना? बाप-दादा तो टीचर्स को किस नज़र से देखते हैं?

हमजिन्स की नज़र से। क्योंकि बाप भी टीचर है ना। टीचर, टीचर को देखेंगे तो हमजिन्स की नज़र से देखेंगे। हमजिन्स को देख खुश होंगे। टीचर्स तो सदा सन्तुष्ट होंगी। पूछना अर्थात् हमजिन्स की इनसल्ट करना।

(18.04.1977)

टीचर्स को विशेष लिफ्ट है क्योंकि टीचर्स का काम ही है सर्व आत्माओं को मार्ग दर्शन कराना। तो दिन रात एक ही लगन में रहने वाले, एक की ही याद और एक ही कार्य - इससे एक रस स्थिति सहज ही बन जाती है। एक की लगन में रहने से सहज मंज़िल का अनुभव होता है। एक ही एक है तो सहज मार्ग हो गया ना। सेकेण्ड में स्वीच आन किया और मंज़िल पर पहुँचे। सोचा और स्वरूप हुआ यह है लिफ़्ट। टीचर्स को अपने भाग्य को देख सदा बाप के गुण गाने चाहिएं। वाह बाबा और वाह ड्रामा यही गीत सदा चलता रहे। इसी खुशी में चाहे तन का बन्धन हो चाहे मन का हो लेकिन कुछ नहीं लगेगा। सदा बिज़ी रहने से किसी भी प्रकार से माया का वार, वार नहीं कर सकता। माया की हार होगी वार नहीं हो सकता।

1. समीप आत्माओं के लिए पुरुषार्थ भी एक मनोरंजन का साधन -

ब्रह्मा बाप की जो पहली विशेषता है नष्टोमोहा जिसके आधार पर ही सदा स्मृति स्वरूप बने, तो ऐसे फ़ालो फ़ादर करते हो ? इसी विशेषता से समीप आत्मा बन जायेंगे। स्वयं से वा सर्व से नष्टोमोहा - इसलिए समीप आत्माओं को सहज ही सर्व प्राप्तियाँ होती हैं। पुरुषार्थ भी एक खेल अनुभव होता है, मुश्किल नहीं। पुरुषार्थ करना भी एक मनोरंजन है। वैसे कोई हिसाब करो और मनोरंजन रीति से हिसाब करो तो फ़र्क पड़ जाता है ना - तो समीप आत्मा को पुरुषार्थ मनोरंजन अनुभव होता। समीप आत्मा की मुख्य निशानी - आदि से अन्त तक मुश्किल का अनुभव न हो।

2. सफ़लता का आधार साक्षी और साथीपन का अनुभव - सदा अपने को बाप के साथी समझकर चलते हो। अगर साथीपन का अनुभव होगा तो

साक्षीपन का अनुभव होगा। क्योंकि बाप का साथ होने के कारण जैसे बाप साक्षी हो पार्ट बजाते हैं वैसे आप भी साथी होने के कारण साक्षी हो पार्ट बजायेंगे। तो दोनों ही अनुभव, अनुभव करते हो, **अकेले नहीं लेकिन सदा सर्वशक्तिवान का साथ है। जहाँ साथ वहाँ सफलता तो स्वतः ही हुई पड़ी है।** वैसे भी भक्ति मार्ग में यही पुकार देते हैं - कि थोड़े समय के साथ का अनुभव करा दो, झलक दिखा दो लेकिन अब क्या हुआ ? सर्व सम्बन्ध से साथी हो गये। झलक वा दर्शन अल्पकाल के लिए होता है लेकिन सम्बन्ध सदाकाल का होता है, तो अब बाप के समीप सम्बन्ध में आ गये कि अभी तक भी जिज्ञासु हो। जिज्ञासा तब तक होती जब तक प्राप्ति नहीं। अब जिज्ञासु नहीं अधिकारी हो, हर सेकेण्ड का साथ है, हर सेकेण्ड में सम्बन्ध के कारण समीप हैं। जीवन में साथी की तलाश करते हैं और साथी के आधार पर ही अपना जीवन बिताते हैं, अब कौन सा साथी बनाया है ? अविनाशी साथी। और कोई भी साथी समय पर वा सदा नहीं पहुँच सकता लेकिन बाप-दादा सदा और सेकेण्ड में पहुँच सकते। यह जन्म-जन्म का साथ है, भविष्य में भी बाप का तो साथ रहेगा ना। शिव बाप साक्षी हो जायेंगे और ब्रह्मा बाप साथी हो जायेंगे। अभी दोनों साथी हैं। ऐसे अनुभव करने वाले सदा खुश रहते हैं, जो पाना था वह पा लिया तो खुशी होगी ना - पा लिया है- बाकी है बाप समान स्वयं को बनाना, इसमें नम्बरवार हैं।

(07.12.1978)

टीचर्स तो बाप समान हैं ना, जैसे बाप शिक्षक है वैसे आप भी शिक्षक हो तो समानता हो गई ना! तो समान वाले को क्या कहा जाता है? फ्रैन्ड। टीचर भी बाप-दादा की फ्रैन्ड्स हैं, यह फ्रैन्ड्स का सम्बन्ध भी याद रहे तो सहजयोगी हो जायेंगे। फ्रैन्ड्स का नाता बहुत समीप का नाता है। फ्रैन्ड्स आपस में जितना स्पष्ट होते है उतना माँ बाप से भी नहीं होते। फ्रैन्ड्स का सम्बन्ध याद रहे तो तुम्हीं से

खाऊं, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खेलूँ यह अभ्यास सहज हो जायेगा। तो सभी फ्रैन्ड्स को मुबारक हो।

(21.12.1978)

जो स्नेह में सदा रहने वाली स्नेही आत्मायें हें, ऐसे स्नेही आत्माओं को बाप दादा भी सदा स्नेह का रिटर्न देते हैं - किस समय देते हैं? अमृतवेले विशेष। अमृतवेले सहज वरदान मिलता है। वैसे तो सारादिन अधिकार है फिर भी वह खास समय है वह बाप है। जैसे विशेष टाइम होता है ना कि इस टाइम पर यह चीज सस्ती मिलेगी, सीजन होती है ना अमृतवेला विशेष सीजन है इसलिए सहज प्राप्ती होती है, सभी टीचर्स निर्विघ्न हो ना योग का किला मजबूत करो, विशेष जब कोई विघ्न कहाँ आते हैं तो जैसे अन्तर्राष्ट्रीय योग रखते हो। वैसे हर मास संगठित रूप में चारों ओर विशेष टाइम पर एक साथ योग का प्रोग्राम रखो। पूरा ज़ोन का ज़ोन योगदान दे। जिससे किला मजबूत होगा कोई कार्य शुरू किया जाता है तो शूद्धि की विधियाँ की जाती है ना तो सर्व श्रेष्ठ आत्माओं का एक ही शुद्ध संकल्प हो विजयी, यह हो गई शुद्धि द्वारा विधि चारों ओर एक साथ किला मजबूत करो - तो विजयी हो जायेंगे।

(06.01.1979)

टीचर्स का आक्यूपेशन है सदा सन्तुष्टता की खान रहना और सर्व को सन्तुष्ट बनाना :- टीचर्स तो हैं ही सदा सन्तुष्ट। टीचर्स अर्थात् सर्व को संतुष्ट बनाने की सेवा पर उपस्थित। जितना स्वयं सम्पन्न होंगे उतना औरों को भी बना सकेंगे। टीचर्स की विशेषता ही है हर बात में सन्तुष्ट। सनतुष्ट भी तब रह सकेंगे जब सदा बाप के गुणों और कत्र्तव्य में समान बनेंगे। सदा यह चैक करो कि जो बाप का गुण वही मेरा है, जो बाप का कर्तव्य वही मेरा कर्तव्य है। ऐसे चैक कर चलने वाले सदा सन्तुष्ट रहते भी हैं और सर्व को भी बनाते हैं। टीचर्स अर्थात् सन्तुष्टता की

खान। सदा सम्पन्न, खान के समान अखुट हो। यही टीचर्स का अक्यूपेशन है।
(16.01.1979)

टीचर्स से बातचीत :- सेवा को भाग्य प्राप्त आत्मायें हो! कितनी वंचित आत्माओं को बाप का परिचय दे तृप्त आत्मा बनाने वाली हो! सेवा में विशेष रहमदिल का गुण याद रहता है? रहमदिल बाप के बच्चे रहमदिल बन कर सेवा करते तो सफलता बहुत मिलती है। तो सभी बाप समान रहमदिल हो, अन्जान आत्माओं के प्रति तरस पड़ता है? सदा सम्पन्न मूर्त बन वरदानी और महादानी बनो। कमजोर आत्माओं को शक्ति दे आगे बढ़ाओ। सम्पन्न मूर्त बन सेवा करो।
(03.02.1979)

सभी टीचर्स विशेष सेवाधारी अर्थात् बाप को अपनी वाणी द्वारा और कर्म द्वारा प्रत्यक्ष करना। प्रत्यक्ष करना ही विशेष सेवाधारियों का कर्त्तव्य है - अब तक जो किया वह यथाशक्ति नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार बहुत अच्छा किया लेकिन अब तक रिजल्ट में आत्माओं को यह अनुभव हो कि यह महान आत्मायें हैं, महान जीवन वाली है यह अनुभव कोई-कोई आत्माओं ने किया और वर्णन भी करते हैं लेकिन अब बाकी क्या रहा? बाप ने जीवन बनाकर बच्चों को आगे किया जो जीवन की महिमा करते रहते लेकिन अब बच्चों का कर्तव्य क्या हैं?

जो बाप बैकबोन है, गुप्तरूप में पार्ट बजा रहे हैं, बाप को प्रत्यक्ष करना है, सुनाने वालों को पहचानते हैं, लेकिन बनाने वाला अभी भी गुप्त है तो अब बनाने वाले को प्रत्यक्ष करना अर्थात विजय का झण्डा लहराना है। विशेष जिस समय स्टेज पर आते हो उस समय स्वयं भी बाप के स्नेह और प्राप्ति में लवलीन स्वरूप हो - जैसे लौकिक रीति से भीं कोई किसके स्नेह में लवलीन होता है तो चेहरे से, नयनों से, वाणी से अनुभव होता है कि यह लवलीन हैं - आशुक है - ऐसे जब स्टेज पर आते हो तो जितना अपने अन्दर बाप का स्नेह इमर्ज होगा उतना स्नेह

का बाण औरों को भी स्नेह में घायल कर देगा।

भाषण की लिंक सोचना, प्वाइन्टस दुहराना, यह स्वरूप नहीं हो लेकिन स्नेह और प्राप्ति का सम्पन्न स्वरूप हो - अथार्टी हो - जिस चीज़ की अथार्टी होते हैं उनको सोचना नहीं पड़ता है। सोचा हुआ ही होता है। स्टेज पर आने के पहले मनन करके बुद्धि में पहले से ही टापिक का स्पष्टीकरण कर लेना चाहिए। उस समय इस अटेन्शन में नहीं रहना चाहिए। टापिक तैयार होगी तो टापिक की भी अथार्टी हो बोलेंगे। प्वाइन्ट को ही सोचते रहेंगे तो अथार्टी अनुभव नहीं होगी। पहले स्नेह ओर प्राप्ति स्वरूप हो - दूसरा जब बोलना शुरू करते हो तो एक अन्दर की अथार्टी और बोल में पहले दिल की आवाज़ से बाप की महिमा हो - जैसे दिन है शिवरात्री का - तो शिवरात्री अर्थात् बाप को प्रत्यक्ष करने का दिन इसी को ही परमात्म-बाम्ब कहा जाता। जो अन्दर में समाया हुआ है वह लोगों को प्रत्यक्ष दिखाई दे। यह है बाम्ब का फटना। जैसे बाम्ब फटता है तो क्या करता है - सबको अग्नि में जला देता है तो यह परमात्म-बाम्ब अर्थात् स्नेह का बाम्ब, सम्बन्ध जोड़ने का बाम्ब - दिल के आवाज़ से महिमा करने का बाम्ब - सभी को लगन में मगन की आग में सभी को हिला दे। जब बाम्ब फटता है तो सब हिल जाते हैं ना। तो सबकी बुद्धि को हिलावे यह किसकी महिमा है! यह किसकी अथार्टी से बोल रहे हैं, यह क्या और किसका सन्देश दे रहे हैं - अथार्टी भी हो, मधुरता भी हो - शब्दों की मधुरता हो लेकिन अन्दर समाई हुई अथार्टी हो - शब्द भी रहमदिल की भावना के हों - स्पष्ट भी करते रहें लेकिन स्पष्ट करते हुए बाप की महिमा करते हुए सम्बन्ध भी जोड़ते जाएं। हम यह क्यों कहते, इससे क्या प्राप्ति होगा, हम लोगो का अनुभव क्या है। एक घड़ी की भी प्राप्ति क्या है। ऐसे बीच-बीच में निजी अनुभव का आवाज़ लगे - सिर्फ भाषण नहीं लगे - लगन में मगन मूर्त अनुभव हो - यह नवीनता है - लोग कहते हैं लेकिन स्वरूप नहीं बनते - आपका बोल और स्वरूप दोनों साथ-साथ हों - स्पष्ट भी हों, स्नेह भी हो, नम्रता भी, मधुरता भी और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप

को प्रत्यक्ष करना है। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों - दोनों बातों का बैलेन्स हो - जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं तो अथार्टी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। इसको कहा जाता है बाप की प्रत्यक्षता का साधन। जैसे झूठे शास्त्रों की अथार्टी वाले भी कितनी अथार्टी से बोलते हैं। जो बिल्कुल असत्य बात उसको कैसे सिद्ध कर बताते हैं। न सिर्फ सिद्ध करते हैं लेकिन मनवाते भी हैं, सतवचन महाराज कहलवाते भी हैं, जब वह झूठ की अथार्टी वाले भी इतना प्रभाव डाल सकते यह तो अनुभव के बोल है- प्राप्ति स्वरुप के बोल है-बाप से सम्बन्ध है उसकी बातें हैं, तो क्यों नहीं कहलवायेंगे वा मनवायेंगे। तो अब समझा क्या करना है -

परिचय को पूरा स्पष्ट करना है - एक प्वाइन्ट सुनाकर बाप के तरफ अटेन्शन खिंचवाओ, सारी प्वाइन्टस बोलकर बाप की महिमा के बोल, बोल करके बाप तरफ अटेन्शन खिंचवाओ, बार-बार पत्थर पर स्नेह का पानी डालते जाओ तब यह पत्थर पानी होगा।

और जितना हो सके साइलेन्स का प्रभाव हो - रूप रेखा ही अलौकिक हो -सिम्पुल स्वच्छ, रूहानियत वा प्यूरिटी के वायब्रेशन हों - सुनने वाली जो सहयोगी ब्राह्मण आत्मायें होती उन्हों में भी वायुमण्डल को बनाने का संकल्प हो - जैसे अगरबत्ती वायुमण्डल को परिवर्तन कर देती वैसे सब ब्राह्मण आत्माओं की वृत्ति रहम की वृति अगरबत्ती का काम करे - जो आने से ही उनको महसूस हो यह सभा कोई अलौकिक सभा है। अच्छा - स्नेह मिलन से स्नेह की झोली भरकर जावेंगे और फिर सबको स्नेह बाँट देंगे। बाप का स्नेह - ऐसा स्नेह स्वरूप हो जावेंगे जो सबको आपके चित्र, चलन से बाप का स्नेह नज़र आये। ऐसा मिलन मना रहे हो ना। स्नेह मिलन अर्थात दृढ़ संकल्प द्वारा स्वपरिवर्तन और सब के परिवर्तन सहयोगी बनना। यह है स्नेह मिलन की विशेषता। स्नेह मिलन अर्थात् प्रैक्टिकल संस्कार मिलन - जैसे मिलन में हाथ मिलते हैं ना - यह मिलन हैं संस्कार मिलन - अगर सबके संस्कार मिलकर बाप समान हो जाएं - एक ही सबके संस्कार हो जाएं

तो क्या होगा? एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जावेगी। यहाँ एक होना ही एक धर्म एक राज्य की दुनिया को लाने का आधार बनेगी। स्नेह मिलन अर्थात कम्पलेन खत्म और कम्पलीट होकर जाएं। उल्हने खत्म उल्लास में आ जायें - यह है स्नेह मिलन।

(05.02.1979)

टीचर्स के साथ - टीचर्स अर्थात् शिक्षक। बाप भी शिक्षक के रूप से पार्ट बजाते हैं। तो शिक्षक बाप समान मास्टर वर्ल्ड शिक्षक हुए। जैसे बाप विश्व का शिक्षक है, सिर्फ भारत का नहीं है या सिर्फ फारेन का नहीं, पूरे विश्व का है। ऐसे मास्टर शिक्षक अर्थात् बेहद के शिक्षक। तो जो बेहद के शिक्षक हैं उन्हों का नशा क्या होगा? बेहद का नशा, बेहद की खुशी, बेहद की प्राप्ति, बेहद की प्रालब्ध। तो ऐसी टीचर्स हो ना? क्योंकि जैसे बाप का टाइटिल मिला है तो टाइटिल के प्रमाण कर्तव्य और गुण भी वही होंगे ना। तो बेहद में रहती हो? स्थिति भी बेहद की। देह-भिमान हद की स्थिति हुई, देहीअभिमानी बनना यह है बेहद की स्थिति। देहाभिमान में आयेंगे तो अनेक प्रकार की हदें हैं - मैं फीमेल हूँ, यह भी हद है ना। इसी प्रकार देह में आने से अनेक कर्म के बन्धनों में हद में आना पड़ता। जब देही बन जाते हो तो ये सब बन्धन खत्म हो जाते हैं। तो स्थिति भी बेहद की अर्थात् देहीअभिमानी रहे।

टीचर्स अर्थात् बेहद में रहने वाली, टीचर्स अर्थात् बन्धनों से मुक्त रहने वाली। जैसे आप लोग भी कहते हो बन्धन मुक्त ही जीवनमुक्त....तो जो बेहद की स्थिति में रहने वाले होंगे वह बन्धन-मुक्त, जीवनमुक्त होंगे। भविष्य जीवनमुक्ति नहीं, अभी की जीवनमुक्ति। इस संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में रहते हुए वायुमण्डल, वायब्रेशन, तमोगुणी वृत्तियाँ, माया के वार, इन सबसे मुक्त। इसको कहा जाता है जीवनमुक्त। तो टीचर अर्थात् अभी के जीवनमुक्त। तो ऐसे हो? टीचर कि परिभाषा ही यह है। टीचर का टाइटिल कोई कम नहीं है।

टीचर बनना अर्थात् बाप समान बनना। टीचर बनना अर्थात बाप की गद्दीपर बैठना। तो जो जिसकी गद्दी पर, कुर्सी पर, सीट पर बैठेंगे, तो सीट का कर्तव्य वा सीट के क्वालिफिकेशन प्रेक्टिकल में लाने पड़ेंगे। तो टीचर्स का कितना महत्व है। नाम के साथ काम भी है। तो ऐसे हो? क्या समझती हो? टीचर्स को देखकर बाप को विशेष खुशी होती है क्योंकि टीचर्स हैं बाप की फ्रैन्डस। जब दो फ्रैन्डस आपस में मिलते हैं तो कितने खुश होते हैं तो टीचर्स हैं सबसे समीप फ्रैन्डस। तो खुशी होगी ना? फ्रैन्डस बनते ही तब हैं जब समान होते हैं। तो समान हो ना? जो इस समय समान बनते हैं वही भविष्य में भी ब्रह्मा बाप के साथ-साथ सर्व जीवन के विशेष पार्ट में भी साथ रहते हैं। जैसे फ्रैन्डस हर कार्य में सदा साथ-साथ रहते हैं ना। तो जो ऐसे समान टीचर बनते हैं वह शुरू से साथ पढ़ेंगे, साथ खेलेंगे और फिर साथ में ही राज्य करेंगे। तो ऐसे समान टीचर्स हो ना? वायदा भी है साथ जियेंगे, साथ मरेंगे...और साथ ही राज्य में आयेंगे। इतने तक वायदा है। तो ऐसे ही समान टीचर्स हो?

ऐसी समान टीचर्स की वर्तमान निशानी क्या होगी? सदा समान आत्मा इस समय स्वमान में होगी। समानता का स्वमान प्रेक्टिकल में दिखाई देगा। जैसे बाप सदा स्वमान में स्थित है इसी प्रकार समान आत्मायें भी स्वमान में होंगी। नीचे नहीं आयेंगी। हर कदम स्वमान का होगा। तो स्वमान को देखने से ही सबके मुख से निकलेगा कि यह तो स्वमानधारी बाप-समान है। स्वमान ही उनका सिंहासन होगा। भविष्य सिंहासन के पहले स्वमान के सिंहासन पर सदा कायम होंगी। सिंहासन से नीचे नहीं आयेंगी। ऐसी हो? बाप तो हरेक को इसी श्रेष्ठ नज़र से देखते हैं। अच्छा - सभी सन्तुष्ट हो? जहाँ भी हो वहाँ संतुष्ट हो? सदा सन्तुष्ट रहना, यह भी टीचर की विशेष क्वालिफिकेशन है। टीचर का मुख्य गुण ही है - सदा सन्तुष्ट रहना और सदा सन्तुष्ट करना। **अगर कोई कहे कि मैं तो सन्तुष्ट हूँ, दूसरी को सन्तुष्ट नहीं कर सकती तो यह भी टीचर की योग्यता के विरुद्ध है। टीचर का कर्तव्य है - सनतुष्ट करना।** अगर स्वयं नहीं कर सकती तो किसी के भी

सहयोग से करना जरूर है।

टीचर को तो सदा विघ्न-विनाशक बन करके अनेकों के विघ्न-विनाशक बनने का आधार बनने के निमित्त बनाया है। कोई समस्या ले करके आये और समाधान स्वरूप बन करके जाएं। ऐसी टीचर्स हो ना?

(12.11.1979)

टीचर्स अर्थात सदा अपने फीचर्स द्वारा बाप के गुण प्रत्यक्ष करने वाली। हर कर्म से, हर समय बाप के गुण अपने कर्म द्वारा प्रत्यक्ष करें - ऐसे ही हो ना। जो भी देखे वह यही कहे कि इनको सिखाने वाला उनसे परम शिक्षक कौन? आपको देखते ही बाप की याद आ जाए। आपका हर कर्म बाप की तरफ इशारा करने वाला हो। **टीचर अर्थात स्वयं और सर्व के प्रति विघ्नविनाशक। छोटी-छोटी बातों के पीछे समय न गँवाने वाली। ऐसी टीचर्स ही बाप को प्रत्यक्ष कर सकती हैं।**

(19.11.1979)

टीचर्स अर्थात् बाप समान सर्वश्रेष्ठ आत्मायें। टीचर्स को हर वर्ष कोई नया प्लैन बनाना चाहिए। सेवा के प्लैन तो स्टूडेन्ट्स भी बनाते हैं। लेकिन टीचर्स को विशेष क्या करना है? अब ऐसा अपना संगठन बनाओ जो सबके मुख से यह निकले कि यह अनेक होते भी एक हैं। जैसे यहाँ दीदी-दादी दो हैं लेकिन कहते हैं दोनो एक हैं तो यह प्रभाव पड़ता है ना। जब ये दो होते हुए भी एक-समान एक दूसरे को रिगार्ड देते, दो होते हुए एक दिखा रही हैं तो आप अनेक होते हुए एक का प्रमाण दे सकते हो। जैसे कहते हैं कि सब की वाणी एक ही होती है, जो एक बोलती वही सब बोलते हैं, ड्रैस भी एक जैसी, वाणी सबकी एक ही ज्ञान के पॉइन्ट्स की होती, भले सुनाने का ढंग अलग हो, सार एक ही होता है। वैसे ऐसा ग्रुप बनाओ जो सब कहें यह अनेक नहीं हैं, एक हैं। यही विशेषता है ना। तो

एक्ज़ैम्पल कोई निमित्त बनें जिसको फिर सब फालो करेंगे। इसमें जो ओटे सो अर्जुन। तो कौन अर्जुन बनेगा? जो अर्जुन बनेंगे उसे फर्स्ट प्राइज़ मिलेगी। सिर्फ एक बात का ध्यान देना पड़ेगा। कौन-सी बात? क्या करना पड़ेगा? **सिर्फ एक दूसरे को सहयोग दें, विशेषता देखते हुए, कमजोरियों को न देखना, न सुनना, यह अभ्यास पक्का करना पड़ेगा। देखते हुए भी कमज़ोरी को समाकर सहयोग देते रहें। तिरस्कार नहीं करें लेकिन तरस की भावना रखें। जैसे दु:खी आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनते हो वैसे कमजोरियों के उपर भी रहमदिल बनो।** अगर ऐसे रहमदिल बन गये तो क्या हो जायेगा? अनेक होते हुए भी एक बन जायेंगे। वैसे भी लौकिक में देखो - जो समझदार परिवार होते हैं, स्नेही परिवार होते हैं वह क्या करते हैं, एक दूसरे की कमज़ोरी की बात समाकर एक-दूसरे के सहयोगी बनकर बाहर अपना नाम बाला करते हैं। अगर कोई परिवार में गरीब होता है तो उसको मदद देकर के भरपूर कर देते हैं। यह भी परिवार है। अगर कोई संस्कार के वश हैं, तो क्या करना चाहिए। सहयोग देकर, हिम्मत बढ़ाकर के हुल्लास में लाते हुए उसको अपना साथी बनाना चाहिए फिर देखो अनेक होते भी एक हो जायेंगे। यह करना मुश्किल है क्या? जब वरदानी मूर्त हो तो वरदानी कभी किसी की कमज़ोरी नहीं देखते। वरदानी सदा सबके उपर रहमदिल होते है। ऐसे कर के दिखाओ। तो क्या करेंगे? ऐसा कोई आत्मिक बाम्ब लगाके दिखाओ। टिचर्स का कर्त्तव्य ही यह है। जैसे बाप कमज़ोरी दिल पर नहीं रखते लेकिन दिलाराम बनकर दिल को आराम देते हैं तो टीचर्स अर्थात बाप समान। **किसी की कमज़ोरी तो देखो ही नहीं। दिल पर धारण नहीं करो लेकिन हरेक की दिल को दिलाराम समान आराम दो। तो सब आपके गुणगान करेंगे।** साथी हों, चाहे प्रजा हो, हर आत्मा के मुख से दुआयें निकलें। आपके लिए आशीर्वाद निकले कि यह सदा स्नेही और सहयोगी आत्मा है, यह बाप-समान रहमदिल, दिलाराम की बच्ची दिलाराम है। तब कहेंगे योग्य टीचर। अगर टीचर ही कमी देखें तो स्टूडेन्ट और टीचर में अन्तर ही क्या हुआ?

टीचर तो बाप के गद्दी नशीन हैं। साथ में बाप की गद्दी पर विराजमान हो ना। सबसे समीप तो साथी ही बैठेंगे ना। टीचर अर्थात गद्दीनशीन। तो ऐसी कमाल करके दिखाओ। समझा टीचर किसको कहते हैं? इसमें कोई भी प्राईज़ ले सकता है। टीचर के मुख से कभी भी किसी की कमज़ोरी वर्णन नही होनी चाहिए, विशेषता ही वर्णन हो। टीचर का अर्थ ही है बाप-समान हिम्मतहीन की लाठी बनने वाली। समझा, टीचर किसको कहते हैं? विस्तार तो अच्छा बना रही हो। अब संगठन का सार बनाना है।

(28.11.1979)

टीचर्स का महत्व तब है जब सदा मन, वाणी, कर्म, सम्पर्क में महानता दिखायें क्योंकि टीचर्स को महान बनने के साधन मिले हुए हैं। वातावरण, संग, शुद्ध भोजन, सेवा, सम्पर्क और सम्बन्ध, सब महान बनने के साधन हैं। जो प्रवृत्ति में रहते हैं उनको रहते हुए न्यारा रहना पड़ता है लेकिन टीचर तो हैं ही न्यारी। न्यारा रहने का अभ्यास करने की जरूरत नहीं। कमाल उनकी है जो हंस और बगुले इकट्ठे रहते हैं और फिर न्यारे रहते हैं। उस हिसाब से देखो तो टीचर का कितना भाग्य मिला हुआ है। टीचर के लिए पुरुषार्थ सहज है। ऐसे अनुभव करते हो या मुश्किल लगता है? टीचर को अगर कहीं भी मुश्किल लगती है तो उसका एक ही कारण है वह कौन-सी है? टीचर अगर सारा समय अपने को बिज़ी रखें तो कभी भी मुश्किल न हो।

बिज़ी कैसे रहें?

कर्मणा और वाचा सर्विस तो करते हो लेकिन मन्सा की दिनचर्या भी सेट करो। 1. मन्सा भी बिज़ी रहें तो मायाजीत सहज बन सकते हो। अगर अपने को फ्री रखते तो फ्री देख माया भी आती है। बिज़ी रहो तो माया भी किनारा सहज ही कर ले। अपने को बिज़ी करना नहीं आता है, मन्सा का चार्ट बनाना नहीं आता है तभी माया आती है या मुश्किल लगता है? 2. बिज़ी रखने के लिए जितना पढ़ाई

की तरफ अटेन्शन होगा तो अपने आपको बिज़ी रख सकेंगे। **पढ़ाई से दिल की प्रीति होनी चाहिए जिसका दिल से पढ़ाई से प्यार होगा वह सदा स्वयं और औरों को भी बिज़ी रख सकता है।** अगर ऊपर का कभी-कभी का प्यार होगा तो स्वयं भी कभी बिज़ी कभी फ्री, उनको भी बिज़ी नहीं रख सकेंगे। इसलिए सदा बिज़ी रहकर स्वयं भी विघ्न-विनाशक और दूसरों को भी विघ्न-विनाशक बनाओ। 3. प्लानिंग बुद्धि बनो। पहले स्वयं का प्लान फिर सेवा का। प्लानिग बुद्धि सदा बिज़ी रहेंगे। डायरेक्शन पर चलने वाली बुद्धि कभी फ्री कभी बिज़ी रहेंगे। बाबा का डायरेक्शन ही मिला हुआ है प्लानिंग बुद्धि बनो। स्व का और औरों का प्लान बनाओ। ऐसे प्लानिंग बुद्धि हो या बना-बनाया प्लान मिलेगा तो करेंगे। **पहले स्वयं के टीचर फिर औरों के। टीचर स्टूडेन्ट को प्लान बनाकर देती हैं, ऐसे स्व का टीचर बनो फिर औरों का बनो।**

अच्छा - सभी अपनी-अपनी लगन प्रमाण पुरूषार्थ में आगे बढ़ रही हो ना? चढ़ती कला है ना? टीचर को तो सब फालो करने वाले होते हैं ना। फालो फादर तो हैं लेकिन फिर भी निमित्त टीचर को सब देखते हैं। निमित्त बने हुए में बाप को देखते हैं। अगर देखने वाला आइना ही खराब होगा तो बाप भी क्या स्पष्ट दिखाई देगा। आइना अगर स्पष्ट और पावरफुल है तो कोई भी चीज़ को स्पष्ट और सहज देख और अनुभव कर सकते हैं। ऐसे स्पष्ट और पावरफुल आइना हो जो कोई भी सामने आए और बाप का स्पष्ट अनुभव कर सके?

(03.12.1979)

टीचर्स तो सदा चढ़ती कला का अनुभव करती चल रही हो ना? टीचर्स की विशेषता - अनुभवी मूर्त बनना। टीचर अर्थात सुनाने वाली नहीं लेकिन टीचर अर्थात् कहने के साथ अनुभव कराने वाली। तो सुनाना और स्वरूप में अनुभव कराना - यह है टीचर्स की विशेषता। सुनाने वाले या भाषण करने वाले, क्लासेंज़ कराने वाले तो द्वापर से बहुत बड़े-बड़े नामीग्रामी बने लेकिन यहाँ ज्ञान-मार्ग में

नामीग्रामी कौन बनता है? भाषण वाले? जो सुनाने के साथ-साथ अनुभव करायें। **टीचर्स को विशेष अटेन्शन में यही सेवा हो कि मुझे, सदा जहाँ भी हैं वहाँ का और उसके साथ बेहद का वायुमण्डल वायब्रेशन्स सदा शुद्ध बनाना है।** जैसे कोई हद की खुशबु वातावरण को कितना बदल लेती है, ऐसे टीचर्स के गुणों की धारणा की खुशबु, शक्ति की खुशबु वायुमण्डल व वायब्रेशन्स को सदा शकतिशाली बनाये। **टीचर कभी यह नहीं कह सकती कि वायुमण्डल ऐसा है, इनके वायब्रेशन्स के कारण मेरा पुरूषार्थ भी ऐसा हो गया। टीचर्स अर्थात परिवर्तन करने वाली, न कि स्वयं परिवर्तन होने वाली।** जो परिवर्तन करने वाला होता है वह कभी किसी के प्रभाव में स्वयं परिवर्तित नहीं होता है। तो टीचर्स की विशेषता वायुमण्डल को पावरफुल बनाना, कमज़ोरों को स्वयं शक्तिशाली बन शक्ति का सहयोग देने वाली। दिलशिकस्त का उमंग हुल्लास बढ़ाने वाली। तो ऐसे टीचर्स हो ना? यह है टीचर्स का कर्तव्य वा डियूटी। ऐसे स्वयं सम्पन्न हो जो औरों को भी सम्पन्न बना सकें। अगर कोई भी शक्ति की कमी होगी तो दूसरे भी उसी बात में कमज़ोर होंगे क्योंकि निमित्त हैं ना। टीचर्स को सदा अलर्ट और एवररेडी होना चाहिए। स्थूल वा सूक्ष्म आलस्य का नाम-मात्र भी न हो। पुरूषार्थ का भी आलस्य होता है और स्थूल कर्म में भी आलस्य होता है। पुरूषार्थ में दिलशिकस्त होते हैं तो अलस्य आ जाता हैं। क्या करें, इतना ही हो सकता है, ज्यादा नहीं हो सकता। हिम्मत नहीं है, चल तो रहे हैं, कर तो रहे हैं। पुरूषार्थ की थकावट भी आलस्य की निशानी हैं। आलस्य वाले जल्दी थकते हैं, उमंग वाले अथक होते हैं। तो टीचर्स अर्थात् न स्वयं पुरूषार्थ में थकने वाली न औरों को पुरूषार्थ में थकने दें। तो ऑलराउन्डर भी हों और अलर्ट भी हों।

हर कार्य में सम्पन्न। कभी-कभी टीचर्स समझती हैं कि क्लास कराना, इन्टरनल कार्य करना हमारा काम है और स्थूल सेवा, वह दूसरों का काम है, लेकिन नहीं। स्थूल कार्य भी इन्टरनल कार्य की सबजेक्ट है। यह भी पढ़ाई की सबजेक्ट है, तो इसको हल्की बात नहीं

समझो। अगर कर्मणा में मार्क्स कम होंगी तो भी पास विद ऑनर नहीं बन सकेंगी। बैलेन्स होना चाहिए। इसको सेवा न समझना यह भी राँग हैं। इन्टरनल सेवा का यह भी एक भाग है। अगर प्यार से योगयुक्त होकर भोजन न बनाओ तो अन्न का मन पर प्रभाव कैसे होगा। स्थूल कार्य नहीं करेंगे तो कर्मणा की मार्क्स कैसे जमा होगी। तो टीचर्स अर्थात स्पीकर नहीं, क्लास कराने वाली, कोर्स कराने वाली नहीं, जैसा समय जैसी सबजेक्ट उसमें ऐसे ही रूचि पूर्वक सेवा में सफलता प्राप्त करें, इसको कहा जाता है - ऑलराउन्डर। ऐसे हो ना कि इन्टरनल वाली और हैं, एक्सटर्नल वालीं और हैं। दोनों का ही आपस में सम्बन्ध है।

टीचर्स को त्याग और तपस्या तो सदा ही याद हैं ना? **किसी भी व्यक्ति या वैभव के आकर्षण में न आयें। नहीं तो यह भी एक बन्धन हो जाता है कर्मातीत बनने में।** तो टीचर्स अपने आपके पुरूषार्थ में सन्तुष्ट है? चढ़ती कला की महसूसता होती है? सबसे सन्तुष्ट हो सभी? अपने पुरूषार्थ से, सेवा से फिर साथियों में, सबसे सन्तुष्ट? सबके सर्टीफिकेट होने चाहिए ना? तो सभी सर्टीफिकेट हैं। क्या समझती हो? अगर आप सच्चाई से और सफाई से सनतुष्ट हैं तो बाप भी सन्तुष्ट है। एक होता है वैसे ही कहना कि सन्तुष्ट हैं, एक होता है सच्चाई-सफाई से कहना कि सन्तुष्ट हैं। सदा सन्तुष्ट! यहाँ आई हो, कोई भी कमी हो तो अपने प्रति या सेवा के प्रति, तो जो निमित्त बने हुए हैं उनसे लेन-देन करना। आगे के लिए चढ़ती कला करके ही जाना। कमी को भरने और स्वयं को हल्का करने के लिए ही तो आते हो। कोई भी छोटी-सी बात भी हो जो पुरूषार्थ की स्पीड में रूकावट डालने के निमित्त हो तो उसको खत्म करके जाना।

(10.12.1979)

टीचर्स का अर्थ ही है - बाप-समान अपने संकल्प, बोल और हर कर्म द्वारा अनेकों का परिवर्तन करने वाली। सिर्फ बोल से नहीं लेकिन संकल्प से भी

सेवाधारी, कर्म से भी सेवाधारी। जो तीनों ही सेवा में सफलतामूर्त होते हैं, वही पास विद आनर बन जाते हैं। तीनों में मार्क्स समान हों। तो ऐसे ही पास विद आनर होने वाली टीचर्स हो ना? पास होने वाले तो बहुत होंगे लेकिन पास विद आनर विशेष ही होंगे। तो क्या लक्ष्य रखा है? रोज़ अपनी दिनचर्या को चेक करो कि आज सारे दिन में तीनों सेवाओं का बैलेन्स रहा। बैलेन्स रखने से सर्वगुणों की अनुभूति करते रहेंगे। चलते-फिरते स्वयं को और सर्व को सर्वगुणों का अनुभव करा सकेंगे। सब कहेंगे, ये गुणदान करती हैं क्योंकि दिव्यगुणों का श्रृंगार स्पष्ट दिखाई देगा। तभी तो अन्त में 'देवी जी', 'देवी जी' कहकर नमस्कार करेंगे और यही अन्त के संस्कार द्वापर से देवी की पूजा के रूप में चलेंगे। तो ऐसे हो ना? एक-दूसरे को बाप के गुणों का वा स्वयं की धारणा के गुणों का सहयोग देते हुए गुणमूर्त बनाना, यह सबसे बड़े-ते-बड़ी सेवा है। गुणों का भी दान है। जैसे ज्ञान का दान है वैसे गुणों का भी दान है।

अभी एक-एक को 8-8, 10-10 सेन्टर सम्भालने पड़ेंगे - तब कहेंगे सर्विस हुई। अभी एक-एक सेन्टर 4-5 सम्भालते हैं फिर एक-एक को अनेकों की सम्भाल करनी पड़ेगी। अभी सर्विस को ओर आगे बढ़ाओ।

(15.12.1979)

टीचर्स का विशेष पुरूषार्थ किस बात का होना चाहिए? सर्विसएबुल बच्चों का महीन पुरूषार्थ क्या है? महीन पुरूषार्थ है - संकल्प की भी चैंकिग। संकल्प में याद और सेवा का बैलेन्स रहा! हर संकल्प पावरफुल रहा। **सर्विसएबुल बच्चों के संकल्प कभी भी व्यर्थ नहीं होने चाहिए क्योंकि आप विश्व कल्याणकारी हो, विश्व की स्टेज पर एक्ट करने वाले हो। आपको सारी विश्व कॉपी करती है। अगर आपका एक संकल्प भी व्यर्थ हुआ तो सभी उसको कॉपी करने वाले हैं। अपने प्रति नहीं किया लेकिन अनेकों के प्रति निमित्त बन गए।** जैसे आपको सेवा के लिफ्ट की गिफ्ट मिलती है,

अनेकों की सेवा का शेयर मिल जाता है। वैसे ही अगर कोई ऐसा कार्य करते हो तो अनेकों को व्यर्थ सिखाने के निमित्त भी बन जाते हो। इसलिए अब व्यर्थ का खाता समाप्त। जैसे आजकल साइन्स के साधनों द्वारा मन की एकाग्रता को चैक करते हैं ना। लण्डन वा अन्य स्थानों पर किया ना - ये हैं साइन्स के साधन। लेकिन आपको हर कदम में अपनी चैकिंग के साधन साथ-साथ रखने चाहिए। जैसे वह चैकिंग के औज़ार साथ में रखते हैं और चैक करते समय ऊपर डालते हैं। सर्विसएबुल बच्चों को हर समय चैकिंग का साधन साथ रखना चाहिए। तो टीचर्स बनना कोई छौटी-सी बात नहीं है, नाम ही नहीं है लेकिन नाम के साथ काम भी है। **(19.12.1979)**

टीचर्स अर्थात बाप समान निरन्तर सेवाधारी। हर संकल्प और बोल द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा के निमित्त। विशेष सेवा है एक ही समय तीनों प्रकार के इकट्ठी सेवा। वाचा के साथ-साथ मन्सा की भी सेवा साथ में हो और कर्मणा अर्थात सम्पर्क, संग से संग के आधार पर भी रंग लगाने की सेवा, बोल द्वारा भी सेवा और संकल्प द्वारा भी सेवा। तो वर्तमान समय एक-एक सेवा अलग-अलग करने का समय नहीं है। बेहद की सेवा की रफतार एक ही समय तीनों प्रकार की सेवा इकट्ठी हो, इसको कहा जाता है - तेज़ रफतार से बेहद की तीव्रगति वाली सेवा। तीव्रगति से बेहद के सेवाधारी बनो। सिर्फ अपना हद का स्थान नहीं लेकिन **जैसे बाप एक स्थान पर रहते भी बेहद की सेवा करते हैं ऐसे निमित्त मात्र एक स्थान है लेकिन अपने को बेहद की सेवा के निमित्त समझ विश्व की आत्मायें सदा इमर्ज रूप में रहें, तब विश्वकल्याणकारी कहलायें जायेंगे। नहीं तो देश-कल्याणकारी व सेन्टर-कल्याणकारी हो जायेंगे।** जब हरेक इतना-इतना बेहद के विश्व-कल्याणकारी बनेंगे तब विश्व की आत्मायें अपने अधिकार को प्राप्त कर सकेंगी। नहीं तो थोड़े समय में कैसे पहुँचेगे? 2-4 तो नहीं है सारी विश्व है। तो निमित्त बनी हुई आत्माओं को संगठित रूप में बेहद की

सेवा का रूप इमर्ज होना चाहिए। जैसे अपने स्थान का ख्याल रहता है, प्लैन बनाते हो, प्रैक्टिकल में लाते हो, उन्नति का ही ख्याल चलता है ऐसे बेहद की सर्व आत्माओं के प्रति सदा उन्नति का संकल्प इमर्ज रूप में हो तब परिवर्तन होगा।

विश्व-कल्याणकारी के ऊपर कितना कार्य है, स्वप्न में भी फ्री नहीं हो सकते। स्वप्न में भी सेवा ही दिखाई दे, इसको कहा जाता है फुल बिज़ी। क्योंकि सारे दिन का आधार स्वप्न होता है। जो दिन-रात सेवा में बिज़ी रहते है, उनका स्वप्न भी सेवा के अर्थ होगा। स्वप्न में भी कई नई-नई बातें, सेवा के प्लैन व तरीके दिखाई दे सकते हैं। तो इतना बिज़ी रहते हो? व्यर्थ संकल्पों से तो मुक्त हो ना? जितना बिज़ी होंगे, उतना अपने पुरूषार्थ के व्यर्थ से और औरों को भी व्यर्थ से बचा सकेंगे। हर समय चेकिंग हो कि समर्थ है या व्यर्थ। अगर ज़रा भी व्यर्थ का अनुभव हो तो उसी समय परिवर्तन करो। निमित्त बने हुए को देख औरों में भी समर्थ के संकल्प स्वत: ही भरते जायेंगे। समझा?

बेहद के विश्व की आत्मायें सदैव इमर्ज होनी चाहिए। जब आप लोग अभी इमर्ज करो तो उन आत्माओं को भी संकल्प उत्पन्न हो कि हम भी अपना भविष्य बनायें। आपके संकल्प से उनको संकल्प इमर्ज होगा। विश्व-कल्याणकारी का अर्थ ही है विश्व के आधारमूर्त ज़रा भी अलबेलापन विश्व को अलबेला बना देगा। इतना अटेन्शन रहे।

(26.12.1979)

टीचर्स तो है ही सदा भरपूर आत्मायें। ड्रामा अनुसार निमित्त बने हो, अच्छी मेहनत कर रहे हो और आगे भी करते ही रहेंगे। रिजल्ट अच्छी है। और भी अच्छी होगी। समय समीप आने के कारण जल्दी-जल्दी सेवा का विस्तार बढ़ता ही जायेगा। क्योंकि संगम पर ही त्रेता के अन्त तक की प्रजा, रायल फैमली और साथ-साथ कलियुग के अन्त तक की अपने धर्म की आत्मायें तैयार करनी है। विदेश के सभी स्थान पिकनिक के स्थान बनेंगे लेकिन ब्राह्मण आत्मायें तो

राजाई घराने में आयेंगी, वहाँ राजाई नहीं करनी है, राजाई तो यहाँ करेंगे। सब अच्छी सेवा कर रहे हो लेकिन अभी और भी सेवा में, मन्सा सेवा पावरफुल कैसे हो इसका विशेष प्लैन बनाओ। वाचा के साथ-साथ मंसा सेवा भी बहुत दूर तक कार्य कर सकती है। ऐसे अनुभव होगा। जैस आजकल फलाईग सासर देखते हैं वैसे आप सबका फरिश्ता स्वरूप चारों ओर देखने में आयेगा और आवाज निकलेगा कि यह कौन हैं जो चक्र लगाते हैं। इस पर भी रिसर्च करेंगे। लेकिन आप सबका साक्षात्कार ऊपर से नीचे आते ही हो जायेगा और समझेंगे यह वही ब्रहमाकुमार कुमारियाँ हैं जो फरिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं। अभी यह धूम मचाओ। **अन्तः वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। ऐसा समय आयेगा जो प्लेन भी नहीं मिल सकेगा।** ऐसा समय नाजुक होगा तो आप लोग पहले पहुँच जायेंगे। अन्त: वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास जरूरी है। ऐसा अभ्यास करो जैसे प्रैक्टिकल में सब देखकर मिलकर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें - हाँ यह हमारे पास वहीं फरिश्ता आया था। फिर ढूंढने निकलेंगे फरिश्तों को। अगर इतने सब फरिश्ते चक्र लगायें तो क्या हो जाये? ऑटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा। तो अभी साकारी के साथ-साथ आकारी सेवा भी जरूर चाहिए। अच्छा - अभी अमृतबेले शरीर से डिटैच हो कर चक्र लगाओ।

(13.03.1981)

टीचर्स ने आप समान कितनी टीचर्स तैयार की हैं? बड़े तो बड़े छोटे समान बाप हैं। जब हैण्डस तैयार हो जायेंगे तो सेवा के बिना रह न सकेंगे। फिर सेवा स्वत: ही बढ़ेगी। बापदादा के एडवांस में जो उच्चारे हुए महावाक्य हैं वह फिर प्रैक्टिकल हो जायेंगे। अभी कहाँ तक पहुँचे हो? जैसे नक्शे में हरेक स्टेट भी बिन्दी माफिक दिखाते हैं। वैसे सेवा में कहाँ तक पहुँचे हो। अभी तो बहुत सेवा पड़ी हुई है। अभी बहुत-बहुत बढ़ाते जाओ। कितने वर्ष पहले के बोल अभी सुन

रहे हो। **बाप की यही आश है कि एक-एक अनेक सेन्टर सम्भालें। तब कहेंगे नम्बर वन टीचर। जब कलियुगी प्राइम मिनिस्टर एक दिन में कितने चक्र लगाते, तो संगमयुगी टीचर्स को कितने चक्र लगाने चाहिए। तब कहेंगे चक्रवर्ती राजा।** तो क्या करना पड़ेगा? प्लैन बनाओ। विदेश की सेवा में इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती, भारत में बहुत मेहनत लगती है। विदेश की धरनी फिर भी सुनी सुनाई बातों से साफ है। भारत में यह भी मेहनत करनी पड़ती है। दूसरी बात - विदेशी आत्मायें अभी सब कुछ देखकर थक गई हैं, और भारत वालों ने देखना शुरू किया है। भारत वालों के अन्दर अभी इच्छा उत्पन्न हुई है, और उन्हों की पूरी हो गई है। इसलिए भारत की सेवा से विदेश की सेवा इजी है। लकी हो। जल्दी प्रत्यक्षफल निकाल सकते हो।

(15.03.1981)

टीचर्स के साथ - यह लण्डन की सेवा श्रृंगार है। जैसे लण्डन के म्यूजियम में रानी का श्रृंगार रखा है ना। वैसे बापदादा के भी म्यूजियम में बापदादा की सेवा के श्रृंगार हो। सदा महान और सदा निर्माण। यही विशेषता स्वयं को भी महान बनाती है और सेवा को भी महान बनाती हैं। संस्कार मिलाने में तो होशियार हो ना? जैसे स्थूल में अगर किसको हाथ पाँव चलाने नहीं आते तो दूसरे साथी क्या करते? हाथ में हाथ मिलाकर साथ दे करके उनको सिखा देते हैं। तो आप भी क्या करती हो? आगे बढ़ सहयोगी बन सहयोग का हाथ दे संस्कार मिलाने की डान्स सिखाती हो न। इसमें तो नम्बरवन हो ना;इसी विशेषता के आधार पर, जो सबसे ज्यादा संस्कार मिलाने की डान्स करता, बाप का सहयोगी बनता वही फर्स्ट जन्म में श्रीकृष्ण के साथ हाथ मिलाकर डान्स करेगा। डान्स करनी है ना? **संस्कारों की रास मिलाने का सबसे सहज तरीका है - 'स्वयं नम्रचित बन जाओ और दूसरे को श्रेष्ठ सीट दे दो'। उनको सीट पर बिठायेंगे तो वह आपको स्वत: ही उतरकर बिठा देंगे।** अगर आप बैठने की कोशिश करेंगे तो

वह बैठने नहीं देगा। लेकिन आप उसे बिठायेंगे तो वह आपेही उतरकर आपको बिठायेगा। तो बिठाना ही बैठना हो जायेगा। 'पहले आप' का पाठ पक्का हो। फिर संस्कार सहज ही मिल जायेंगे। सीट भी मिल जायेगी, रास भी हो जायेगी। और भविष्य में भी रास करने का चान्स मिल जायेगा तो कितनी सहज बात हैं।

(18.03.1981)

टीचर्स ने भी मेहनत की है। टीचर बनना अर्थात् सेवा के बन्धन में बांधना। लेकिन नाम सेवा है प्राप्ति बड़ी हैं। क्योंकि पुण्य आत्मा बनते हो ना। टीचर का अर्थ ही है महापुण्य आत्मा बनना। पुण्य का फल तो भक्ति में भी मिलता है। और यहाँ प्रत्यक्ष फल मिलता है। जितनी सेवा करते उतना हुल्लास हिम्मत, उमंग रहता। और ज्ञान के मुख्य राज अन्दर ही अन्दर स्पष्ट होते जाते। तो सेवाधारी बनना अर्थात् प्राप्ति स्वरूप बनना। इसलिए सब फालो करते हैं कि हम भी सेवाधारी बनें।

सिर्फ टीचर कहते हैं तो कभी टीचर का थोड़ा सा रोब भी आ जाता है। लेकिन हम मास्टर शिक्षक हैं। मास्टर कहने से बाप स्वत: याद आता है। बनाने वाले की याद आने से स्वयं स्वत: ही 'निमित्त' हूँ यह स्मृति में आ जाता है। विशेष स्मृति यह रखो कि हम पुण्य आत्मा है। पुण्य का खाता जमा करने का और कराना। यह है विशेष सेवा। पाप का खाता रावण ने जमा कराया और पुण्य का खाता बाप निमित्त शिक्षकों के द्वारा कराते। तो पुण्य करना और कराना, पुण्य आत्मा कभी पाप का एक परसेन्ट, संकल्प मात्र भी नहीं कर सकती। पाप का संकल्प भी आया तो पुण्य आत्मा नहीं। मास्टर शिक्षक का अर्थ ही है पुण्य का खाता जमा करने और कराने वाले। शिक्षक का बापदादा विशेष 'समान फ्रैन्डस' का रूप देखते। फ्रैन्डस तब बनते जब समानता होती। संस्कार मिलन होता। जो निमित्त बनते है उनके हर संकल्प में, बोल में, कर्म में बाप ही दिखाई दे। जो भी देखें तो उनके मुख से यही निकले कि यह तो 'बाप समान' है। जो कहावत है 'बड़े

ते बड़े छोटे सुभान अल्ला'। ऐसे अनुभव करें। बाप तो बाप है लेकिन बच्चे सुभान अल्ला। यह कहावत प्रैक्टिकल अनुभव करेंगे।

(27.03.1981)

टीचर्स का वास्तविक स्वरूप है ही - निरंतर सेवाधारी। यह तो अच्छी तरह से जानते हो। और सेवाधारी की विशेषता क्या होती है? सेवाधारी सफल किस बात से बनते हैं? सेवा में सदा खोया हुआ रहे, ऐसे सेवाधारी की विशेषता यह है जो **मैं सेवा कर रही हूँ, मैंने सेवा की, इस सेवा का भाव का भी 'त्याग' हो। जिसको आप लोग कहते हो 'त्याग का भी त्याग'।** मैंने सेवा की, तो सेवा सफल नहीं होती। मैंने नहीं की लेकिन मैं करनहार हूँ, करावनहार बाप है। तो बाप की महिमा आयेगी। जहाँ मैं सेवाधारी हूँ, मैंने किया, मैं करूँगी, तो यह मैं-पन सेवाधारी के हिसाब से भी 'मैं-पन' जो आता है, वह सेवा की सफलता नहीं होने देता। क्योंकि सेवा में मैं-पन जब मिक्स हो जाता है तो स्वार्थ भरी सेवा हो जाती है, त्याग वाली नहीं। दुनिया में भी दो प्रकार के सेवाधारी होते हैं - एक स्वार्थ के हिसाब से सेवाधारी, दूसरे स्नेह के हिसाब से त्यागमूर्त सेवाधारी। तो कौन से सेवाधारी हो! जैसे सुनाया ना - मैं-पन बाबा के लव में लीन हो गया हो, इसको कहा जाता है - 'सच्चे सेवाधारी'। **मैं और तू की भाषा ही खत्म। कराने वाला बाबा, हम निमित्त हैं।** कोई भी निमित्त बन जाए। मैं-पन जब आता है तो मैं-पन क्या होता है? मैं मैं कौन करता है? (बकरी)। मैं मैं कहने से मोहताजी आ जाती है। जैसे बकरी की गर्दन सदा झुकी हुई रहती है और शेर की गर्दन सदाऊपर रहती है, तो जहाँ मैं पन आ जाता है वहाँ किसी न किसी कामना के कारण झुक जाते हैं। सदा नशे में सिर ऊंचा नहीं रहता। काई न कोई विघ्न के कारण सिर बकरी के समान नीचे रहता। गृहस्थी जीवन भी बकरी समान जीवन है, क्योंकि झुकते हैं ना। निर्माणता से झुकना वह अलग चीज है, वह माया नहीं झुकाती है, यह तो माया बकरी बना देती है। जबरदस्ती सिर नीचे करा देती, आँखें

नीचे करा देती। सेवा में मैं-पन का मिक्स होना अर्थात् मोहताज बनना। फिर चाहे किसी व्यक्ति के मोहताज हों, पार्ट के मोहताज हों, वस्तु के हों या वायुमण्डल के हों, किसी न किसी के मोहताज बन जाते हैं। अपने संस्कारों के भी मोहताज बन जाते हैं। मोहताज अर्थात् परवश। जो मोहताज होता है वह परवश ही होता है। सेवाधारी में यह संस्कार हो ही नहीं सकते।

सेवाधारी चैलेन्ज करने वाला होता है। चैलेन्ज हमेशा सिर ऊंचा करके करेंगे, गलती होगी तो ऐसे नीचे झुककर बोलेंगे। सेवाधारी अर्थात् चैलेन्ज करने वाला, माया को भी और विश्व की आत्माओं को भी बाप का चैलेन्ज देने वाला। चैलेन्ज भी वह दे सकते है जिन्होंने स्वंय अपने पुराने संस्कारों को चैलेन्ज दी है। पहले अपने संस्कारों को चैलेन्ज देना फिर जनरल विघ्न जो आते हैं उनको चैलेन्ज देना है। विघ्न कभी भी ऐसे सेवाधारी को रोक नहीं सकते। चैलेन्ज करने वाला माया के पहाड़ के रूप को सेकेण्ड में राई बना देगा। आप लोग भी ड्रामा करते हो ना - माया वाला, उसमें क्या कहते हो? पहाड़ को राई बना देंगे।

तो सच्चे सेवाधारी अर्थात् बाप समान। क्योंकि बाप पहले पहले अपने को क्या कहते?- मैं वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ। सेवाधारी बनना अर्थात् बाप समान बनना। एक जन्म की सेवा अनेक जन्मों के ताज और तख्तधारी बना देती है। संगमयुग सेवा का युग है ना। वह भी कितना समय? संगमयुग की आयु वैसे भी छोटी है और उसमें भी हरेक को सेवा का चाँस कितना थोड़ा टाइम मिलता। अच्छा समझो किसी ने 50-60 वर्ष की सेवा की, तो 5000 वर्ष में से 60 भी कम कर दो, बाकी तो सब प्रालब्ध है। 60 वर्ष की सेवा बाकी सब मेवा। क्योंकि संगमयुग के पुरुषार्थ के अनुसार पूज्य बनेंगे। पूज्य के हिसाब से नम्बरवार पुजारी बनेंगे। पुजारी भी नम्बरवन बनेंगे। पुजारी भी नम्बरवन बनते हो। फिर लास्ट जन्म भी देखो कितना अच्छा रहा। जो अच्छे पुरुषार्थी है उनका लास्ट जन्म भी इतना अच्छा रहा तो आगे क्या होगा। यह तो सुख के हिसाब से दुख कहा जाता है। जैसे कोई साहुकार हो और थोड़ा गरीब बन जाए तो कहने में तो आता है ना। कोई बड़े आदमी को थोड़ा

आधा डिग्री भी बुखार हो तो कहेंगे फलाने को बुखार आ गया लेकिन अगर गरीब को 5 डिग्री भी ज्यादा बुखार हो जाए तो कोई पूछता भी नहीं। तो आप भी इतने दुखी होते नहीं हो लेकिन अति सुखी के हिसाब से दुखी कहा जाता है। लास्ट जन्म में भी भिखारी तो नहीं बने ना। दर दर दो रोटी माँगने वाले तो नहीं बने। इसलिए कहा, पुरुषार्थ का समय बहुत थोड़ा है और प्रारब्ध का समय बहुत बड़ा है। प्रालब्ध कितनी श्रेष्ठ है और कितने समय के लिए यह स्मृति में रहे तो क्या स्टेज हो जायेगी? श्रेष्ठ हो जायेगी ना। तो सेवाधारी बनना अर्थात् पूरे कल्प मेवे खाने के अधिकारी बनना। यह कभी नहीं सोचो कि क्या संगमयुग सारा सेवा ही करते रहेंगे? जब मेवा खायेंगे तब कहेंगे क्या कि सारा कल्प मेवा ही खाते रहेंगे। अभी तो याद है ना कि मिलेगा। एक का लाख गुणा जो बनता है तो हिसाब भी होगा ना! सेवाधारी बनना अर्थात् सारे कल्प के लिए सदा सुखी बनना। कम भाग्य नहीं टीचर्स कहो या सेवाधारी कहो क्योंकि मेहनत का हजार गुणा फल मिलता है। और वह भी मेहनत क्या है? यहाँ भी स्टूडेन्ट के लिए तो दीदी दादी बन जाती हो। टाइटल तो मिल जाता है ना। 10 वर्ष का स्टूडेन्ट भी दो वर्ष की आने वाली जो टीचर बनती उसको दीदी दादी कहने लगते। यहाँ भी ऊंची स्टेज पर तो देखते हैं ना। रिगार्ड तो देते हैं ना। अगर सच्चे सेवाधारी हैं तो यहाँ भी रिगार्ड मिलने के योग्य बन जाते। अगर मिक्स है तो आज दीदी दादी कहेंगे कल सुना भी देंगे। सेवा मिक्स है तो रिगार्ड भी मिक्स ही मिक्स है, इसलिए सेवाधारी अर्थात् बाप समान। सेवाधारी अर्थात् बाप के कदम के ऊपर कदम रखने वाले, जरा भी आगे पीछे नहीं। चाहे मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, चाहे सम्पर्क सबमें फुट स्टैप लेने वाले। एकदम पाँव के ऊपर पाँव रखने वाले इसको कहा जाता है - फुट स्टैप लेने वाले। क्या समझते हो? ऐसा ही ग्रुप है ना? टीचर्स तो सदा सहजयोगी है ना। टीचर्स मेहनत का अनुभव करेंगे तो स्टूडेन्ट का क्या हाल होगा!

(03.04.1981)

टीचर्स के साथः- बापदादा सर्व निमित्त बने हुए सेवाधारियों को किस रूप में देखना चाहते हैं? यह जानते हो। बापदादा सर्व सेवाधारियों को सदा अपने समान जैसे बाप कर्तव्य के कारण अवतरित होते हैं वैसे हर सेवाधारी सेवा के प्रति अवतरित होने वाले सब अवतार बन जाएँ। **एक अवतार ड्रामा अनुसार सृष्टि पर आता तो कितना परिवर्तन कर लेता। वह भी आत्मिक शक्ति वाले और यह इतने परमात्म शक्ति स्वरूप चारों ओर अवतार अवतरित हो जाएँ तो क्या हो जायेगा?** सहज परिवर्तन हो जायेगा। जैसे बाप लोन लेता है, बंधन में नही आता, जब चाहे आये जब चाहे चलें जायें, निर्बन्धन है। ऐसे सब सेवाधारी शरीर के संस्कारों के, स्वभाव के बन्धनों से मुक्त जब चाहें जैसे चाहें वैसा संस्कार अपना बना सकें। जैसे देह को चलाने चाहें वैसे चला सकें। जैसा स्वभाव बनाने चाहे वैसा बना सकें। ऐसा नहीं कि मेरा स्वभाव ही ऐसा है क्या करूँ। मेरा संस्कार, मेरा बंधन ऐसा है नहीं। लेकिन ऐसे निर्बन्धन जैसे बाप निर्बन्धन है। कई सोचते हैं, हम तो जन्म-मरण के चक्कर के कारण शरीर के बन्धन में है। लेकिन यह बंधन है क्या। अब तो शरीर आपका है ही नहीं। फिर बंधन आपका कहाँ से आया जब मरजीवा बन गये तो शरीर किसका हुआ? तन-मन-धन तीनों अर्पण किया है या सिर्फ दो को अर्पण किया, एक को नहीं। जब मेरा तन ही नहीं, मेरा मन ही नहीं तो बंधन हो सकता है। यह भी कमजोरी के बोल हैं - क्या करें जन्म जन्म के संस्कार हैं, शरीर का हिसाब किताब है। लेकिन अब पुराने जन्म का पुराना खाता संगमयुग पर समाप्त हुआ। नया शुरू किया। अभी उधर का पुराना रजिस्टर समाप्त हुआ। नया शुरू किया। अभी उधर का पुराना रजिस्टर समाप्त हो गया या अभी तक सम्हाल कर रखा है? खत्म नहीं किया है क्या तो समझा बापदादा क्या देखना चाहते हैं।

इतने सब अवतार प्रकट हो जाएँ तो सृष्टि पर हलचल मच जायेगी ना। अवतार अर्थात् ऊपर से आने वाली आत्मा। मूलवतन की स्थिति में स्थित हो ऊपर से नीचे आओ। नीचे से ऊपर नहीं जाओ। है ही परमधाम निवासी आत्मा,

सतोप्रधान आत्मा। अपने आदि अनादि स्वरूप में रहो। अन्त की स्मृति में नहीं रहो अनादि आदि फिर क्या हो जायेगा? स्वंय भी निर्बन्धन और जिन्हों की सेवा के निमित्त बने हो वह भी निर्बन्धन हो जायेंगे। नहीं तो वह भी कोई न कोई बंधन में बंध जाते हैं। स्वयं निर्बन्धन अवतरित हुई आत्मा समझ कर कर्म करो, तो और भी आपको फालो करेंगे। **जैसे साकार बाप को देखा, क्या याद रहा? बाप के साथ मैं भी कर्मातीत स्थिति में हूँ या देवताई बचपन रूप में। अनादि आदि रूप सदास्मृति में रहा तो फालो फादर।** टीचर्स से पूछने की जरूरत ही नहीं कि सन्तुष्ट हो। टीचर से पूछना माना टीचर की इनसल्ट करना। इसलिए बापदादा इनसल्ट तो नहीं कर सकते। बाप समान निमित्त हो। निमित्त का अर्थ ही है सदा करनकरावहार के स्मृति स्वरूप। यही स्मृति समर्थ स्मृति है। करनहार हूँ लेकिन करनकरावहार के आधार पर करनहार हूँ। निमित्त हूँ लेकिन निमित्त बनाने वाले को भूलना नहीं। मैं-पन नहीं, सदा बापदादा ही मुख में, मन में, कर्म में रहे - यही पाठ पक्का है ना।

(13.04.1981)

टीचर्स के साथ :- यह सेवाधारी ग्रुप है। टीचर्स नहीं 'सेवा धारी'। बाप भी सबसे पहले सेवाधारी बन करके आते हैं। सबसे बडे ते बड़े टाइटल बाप अपने ऊपर वर्ल्ड सवेन्ट का ही रखते हैं। तो जैसे बाप का टाइटल है वैसे बच्चों का भी। सेवाधारी समझने से स्वतः ही निर्विध्न हो जाते। क्योंकि सेवाधारी अर्थात् त्यागी और तपस्वी। जहाँ त्याग और तपस्या है वहाँ भाग्य तो उनके आगे दासी के समान आता ही है। तो **सभी सेवाधारी हो ना। टीचर बनकर नहीं रहना, सेवाधारी बनकर रहना। नहीं तो क्या होता है, अगर आप अपने को टीचर समझेंगी तो आने वाले थोड़ा भी आगे बढ़ेगे तो वे भी अपने को टीचर समझने लगेंगे। टीचर समझने से सूक्ष्म यह कामना उत्पन्न होती कि कोई गद्दी मिले, कोई स्थान मिले। यह भी माया का बहुत बड़ा विघ्न है। टीचर हूँ**

तो सीट चाहिए, मान चाहिए, शान चाहिए। सेवाधारी देने वाले होते, लेने वाले नहीं। तो जैसे आप निमित्त आत्मायें होगी वैसे और भी आपको देखकर सेवाधारी सदा रहेंगे। फिर चारों ओर त्याग तपस्या का वातावरण रहेगा। जहाँ त्याग और तपस्या का वातावरण है वहाँ सदा विघ्नविनाशक की स्टेज है। तो सभी सेवाधारी हो ना! टीचर कहने से स्टूडेन्ट कहते हम भी कम नहीं, सेवाधारी कहने से सब नम्बरवन भी हैं तो एक दो से कम भी हैं। तो नाम भी अपना सेवाधारी समझो और चलो। सारे विघ्नों की जड़ है अपने को टीचर समझकर स्टेज लेना। फिर फालों टीचर करते हैं, फालों फादर नहीं करते।

वृद्धि को तो पा ही रहे हो, अभी वृद्धि के साथ विधि पूर्वक वृद्धि को पाते चलो। विधि कम होती है तो वृद्धि में विघ्न ज्यादा होते। तो विधि सम्पन्न वृद्धि को पाने वाले बनो। मेहनत अच्छी कर रहे हो।

(04.10.1981)

टीचर्स के साथ :- सेवाधारी की विशेषता ही है - 'त्याग और तपस्या'। जहाँ त्याग और तपस्या है वहाँ सेवाधारी की सदा सफलता है। सेवाधारी अर्थात् जिसका एक बाप के सिवाए ओर कोई नहीं। एक बाप ही सारा संसार है। जब संसार ही बाप हो गया तो और क्या चाहिए। सिवाए बाप के और काइ दिखाई न दे। चलते-फिरते खाते-पीते एक बाप और दूसरा न कोई। यही स्मृति में रखना अर्थात् सफलता मूर्त बनना। सफलता कम होती तो चेक करो- जरूर बापदादा के साथ कोई दूसरा बीच में आ गया है। सफलतामूर्त की निशनी एक बाप में सारा संसार।

(14.10.1981)

टीचर्स के साथ:- सभी बापदादा की विशेष सहयोगी आत्मायें हो। सहयोगी वही बन सकता है जो स्नेही है। जहाँ स्नेह होगा वहाँ सहयोग देने के सिवाए रह नहीं

सकेंगे। तो सेवाधारी अर्थात् स्नेही और सहयोगी। साथ रहने वाले, साथ देने वाले और साथ चलने वाले। यही विशेषता स्नेही, सहयोगी आत्माओं की है। तो यही देखो - साथ रहने वाले, साथ देने वाले और फिर है लास्ट में साथ चलने वाले। तो तीनों में एवररेडी। साथ रहना और देना अभी है, चलना पीछे है। जब दोनों ही बातें ठीक हो जायेंगी तो तीसरे की डेट भी आ जायेगी। आप सब निमित्त आत्मायें हो ना। जितना आप लोग साथ देंगे और साथ रहेंगे उतना आपको देखकर औरों को भी उंमग उत्साह स्वत: बढेंगा। एक आप नहीं, एक आप अनेकों के निमित्त हो। मैं नहीं लेकिन बाप ने निमित्त बनाया है। मैं-पन तो समाप्त हो गया ना। मैं के बजाए मेरा बाबा, मैंने किया, मैंने कहा, यह नहीं, बाबा ने कराया, बाबा ने किया, फिर देखो सफलता सहज हो जायेगी। **आपके मुख से बाबा-बाबा जितना निकलेगा उतना अनेकों को बाबा का बना सकेंगे।** सबके मुख से यही निकले कि इनकी तात और बात में बाबा-ही-बाबा है तब औरों को भी तात लग जायेगी। जो बात तात अर्थात् लगन में होगी वही तात वही बात होगी। बापदादा छोटी-छोटी कुमारियों की हिम्मत औरा त्याग देखकर हर्षित होते हैं। बड़ों ने तो चखकर फिर त्याग किया है, वह कोई बड़ी बात नहीं। चखकर देखा और फिरि छोड़ा। लेकिन इन्होंनें तो पहले ही समझ का काम कर लिया है। जितनी छोटी उतनी बड़ी समझदार।

(24.10.1981)

टीचर्स के साथ:- सच्चे सेवाधारी कहो वा रूहानी सेवाधारी कहो। रूहानी सेवाधारी अर्थात् सच्चे सेवाधारी। तो गुजरात के रूहानी सेवाधारियों की विशेषता क्या है? (एवररेडी है) ऐवररेडी स्थूल सेवा में तो हैं क्योंकि सेवा के जो भिन्न-भिन्न साधन हैं उसमें जहाँ बुलावा होता है वहाँ पहुँचने वाले हैं। लेकिन मंसा से भी जो संकल्प धारण करने चाहो उसमें भी सदा एवररेडी हो? जो सोचो वह करो, उसी समय। इसको कहा जाता है एवररेडी। मंसा से भी एवररेडी, संस्कार परिवर्तन में

भी एवररेडी। रूहानी सम्बन्ध और सम्पर्क निभाने में भी एवररेडी। तो ऐसे एवररेडी हो या टाइम लगता है? संस्कार मिटाने में वा संस्कार मिलाने में टाइम लगता है? इसमें भी एवररेडी बनो। क्योंकि गुजरात की रास मशहूर है। वह रास तो बहुत अच्छी करते हो, लेकिन रास मिलाना, बाप से संस्कार मिलाना यह है बाप के संस्कारों से रास मिलाने की रास। एक है रास करना, एक है रास मिलाना। जैसे रास करने में होशियार हो वैसे बाप से संस्कार मिलाने में, आपस में श्रेष्ठ संस्कार मिलाने में होशियार हो? संस्कार मिलाना यही बड़े ते बड़ी रास है1 तो ऐसी रास करते हो ना? आज सब यही संकल्प करो कि सदा संस्कारों की रास मिलाते चलेंगे।

आज के दिन लक्ष्मी के साथ आपका भी पूजन होता है। माँ के साथ बच्चों का भी होता है। किस रूप में होता है? लक्ष्मी के साथ गणेश की भी पूजा करते हैं। गणेश बच्चा है ना। तो सिर्फ लक्ष्मी की पूजा नहीं लेकिन आप सब गणेश अर्थात् बुद्धिवान हो। तीनों कालों के नालेजफुल, इसको कहा जाता है गणेश अर्थात् बुद्धिवान, समझदार। और गणेश को ही 'विघ्नविनाशक' कहते हैं। तो जो तीनों लोक और त्रिमूर्ति के नालेजफुल हैं वही विघ्नविनाशक हैं। तो नालेजफुल भी हो और विघ्नविनाशक भी हो, इसलिए पूजा होती है। तो आज आपके पूजा का दिन है। आप सबका दिन है ना। तो सदा किसी भी परिस्थिति में विघ्न रूप न बन विघ्नविनाशक बनो। अगर और कोई विघ्न रूप बने तो आप विघ्नविनाशक बन जाओ तो विघ्न खत्म हो जायेंगे। ऐसा वातावरण है, ऐसी परिस्थिति है इसलिए यह करना पड़ा, यह बोल विघ्न विनाशक के नहीं। विघ्नविनाशक वातावरण, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले। ऐसे विघ्न विनाशक हो? गुजरात विघ्न विनाशक हो गया तो फिर कोई भी विघ्न की बातचीत ही नहीं होगी ना। नाम निशान भी नहीं। जब आपकी रचना, हद का सूर्य अंधकार को समाप्त कर सकता है तो आप बेहद के मास्टर ज्ञान सूर्य क्या यह नहीं समाप्त कर सकते हो?

(27.10.1981)

टीचर्स के साथ :-सेवाधारी अमृतवेले से लेकर रात तक सेवा की स्टेज पर हो। अगर आराम भी करते हो तो भी स्टेज पर हो, स्टेज पर भी सोने का पार्ट बजाते हैं ना, सबकी नजर होती है कैसे सोये हुये है?इसी रीति सेवाधारी अर्थात् 24 घण्टे स्टेज पर पार्ट बजाने वाले। तो हर कदम, हर सेकण्ड सारी विश्व के आगे है सेवाधारी सदा हीरो पार्टधारी समझ करके चलें, सेंटर पर नहीं बैठे हो लेकिन स्टेज पर बैठे हो, विश्व की स्टेज पर। तो इतना अटेन्शन रहने से हर संकल्प और कर्म स्वत: ही श्रेष्ठ होंगे ना! नैचुरल अटेन्शन होगा। अटेन्शन देना नहीं पड़ेगा लेकिन रहेगा ही क्योंकि स्टेज पर हो ना। और सदा अपने को पूज्य आत्मा समझो तो पूज्य आत्मा अर्थात् पावन आत्मा। कल्प-कल्प पूज्य हैं। पूज्य समझने से संकल्प और स्वप्न भी सदा पावन होंगे। तो ऐसा नशा रहता है।

(08.11.1981)

टीचर्स के साथ-सभी रुहानी सेवाधारी हो- रुहानी सेवाधारी का अर्थ ही है रुहानी खज़ानों से सम्पन्न। तब ही रुहानी सेवाधारी बन सकते हो। सेवाधारी अर्थात् देने वाला। सेवा द्वारा सुख देने वाला इसको कहते हैं- 'सेवाधारी'। तो देने वाला जरुर स्वयं सम्पन्न होगा तब तो औरों को दे सकेगा! तो सेवाधारी अर्थात् मास्टर सुख दाता, मास्टर शान्ति दाता, मास्टर ज्ञान दाता। दाता सदा सम्पन्न मूर्त होते हैं। जैसे स्वयं होंगे वैसे औरों को बनायेंगे। अगर स्वयं में किसी भी शक्ति की कमी है तो औरों को भी सर्व शक्तिवान नहीं बना सकते हैं। रुहानी सेवाधारी अर्थात् सर्वशक्तिवान। रुहानी सेवाधारी अर्थात् एवररेडी और आलराउन्डर। आलराउन्ड सेवाधारी ही सच्चे सेवाधारी हैं। तो सच्चे सेवाधारी के सर्व लक्षण अपने में अनुभव करते हो? जो सम्पन्न होंगे वह सदा सन्तुष्ट होंगे और सर्व को सन्तुष्ट करेंगे। किसी भी प्रकार की अप्राप्ति असन्तुष्टता पैदा करती है। सर्व प्राप्ति हैं तो सदा सन्तुष्ट। सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, उसकी विधि है सम्पन्न और दाता। दोनों बातें चाहिए। कोई सम्पन्न हो लेकिन दाता न हो तो भी सन्तुष्ट नहीं कर

सकते। तो दाता भी और सम्पन्न भी।

यह खुशी तो सभी को है ना कि हम विशेष आत्मायें हैं? सारे विश्व में से कितनी थोड़ी सी आत्मायें सदा बाप की सेवा में तत्पर रहने वाली, निमित्त बनती हैं। तो जो कोटो में कोई, कोई में कोई आत्मायें निमित्त बनती हैं उसमें हमारा ही पार्ट है, हमारा नाम है यह कितनी बड़ी खुशी है। कोटों में कोई...यह हमारा गायन है, यह रुहानी नशा रहता है? रुहानी नशा सदा जितना ऊंचा उतना नम्र बनायेगा। देहभान का नशा होगा थोड़ा लेकिन घमण्ड से, अभिमान से ऊंचा समझेंगे। सच्चे नशे में रहने वाले 'सदा नम्रचित्त' होंगे। नम्रता से ही सबको अपने आगे झुकायेंगे। सुखदाता, नम्रचित् आत्मा बन सकती है। अभिमान नम्रचित् बनने नहीं देता। नम्रचित् नहीं तो सेवा हो नहीं सकती। तो सेवाधारी की विशेषता सदा नम्रचित् स्वयं झुका हुआ होगा तब औरों को झुका सकेगा। तो रुहानी सेवाधारी! रुहानी शब्द सदा याद रखो। चलते फिरते, बोलते ...कर्म में रुहानियत दिखाई दे। साधारणता नहीं, रुहानियत।

सन्तुष्ट आत्मा को ही सेवाधारी का टाइटल मिल सकता है। सन्तुष्ट नहीं तो सेवा लेंगे। तो सेवा लेने वाले हो या सेवा करने वाले हो? रुहानी सेवाधारी लेने वाले नहीं, आज यह हुआ, कल यह हुआ... ऐसी बातों के पीछे समय गंवाकर सेवा तो नहीं लेते हो! यह सब बचपन ही बातें हैं। अब बचपन समाप्त हुआ। अभी जो लिया उसका रिटर्न करना है। अभी कोई भी कचहरी न होनी चाहिए। बड़ों का एक्स्ट्रा समय नहीं लेना है। किस्से कहानियां समाप्त। अगर अभी तक भी सेवा लेने वाले हो तो आज से समाप्त कर देना। बिन्दी लगा देना। बीती सो बीती, बिन्दी लग गई ना। तो समाप्ति की बिन्दी लगाकर जाना। बिन्दी लगाकर सदा सन्तुष्ट रहना और सबको सन्तुष्ट करना, यही पाठ सदा याद रखना।

(11.11.1981)

टीचर्स के साथ - बाप समान रुहानी सेवाधारी। तो सेवाधारियों को कौन सी सौगात चाहिए? जब एक दो में समान मिलते हैं तो एक दो को सौगात देते हैं ना। तो सेवाधारी हैं ही बाप समान। तो बाप क्या सौगात देगा? वा आप देंगे? ज्ञान तो बहुत सुना है। मुरली भी सुनी। अभी बाकी क्या रह गया? सेवाधारी बापदादा के अति समीप आत्मायें हो समीप आत्माओं को बापदादा कौन-सी सौगात देंगे? सेवाधारियों को आज बापदादा विशेष एक गोल्डन वर्शन्स की सौगात देते हैं। वह क्या है? 'सदा हर दिन स्व उत्साह और सर्व को भी उत्साह दिलाने का उत्सव मनाओ।' यह है सेवाधारियों के लिए स्नेह की सौगात। इसी सौगात को फिर मुरली में स्पष्ट करेंगे लेकिन सौगात तो छोटी अच्छी होती है। तो आज मुरली नहीं चलायेंगे लेकिन सार रुप में सुना रहे हैं कि उत्साह में रहने और उत्साह दिलाने का उत्सव मनाओ। इससे क्या होगा? जो मेहनत करनी पड़ती है वह खत्म हो जायेगी। संस्कार मिलाने की, संस्कार मिटाने की मेहनत से छूट जायेंगे। जैसे जब कोई विशेष उत्सव मनाते हो तो उसमें तन का रोग, धन की कमी, सम्बन्ध सम्पर्क की खिटपिट सब भूल जाता है। ऐसे अगर यह उत्सव सदा मनाओ तो सारी समस्यायें खत्म हो जायेंगी। फिर समय भी नहीं देना पड़ेगा, शक्तियां भी नहीं लगानी पड़ेंगी। सदा ऐसे अनुभव करेंगे जैसे सभी फरिश्ते बनकर चल रहे हैं। वैसे भी कहावत है फरिश्तों के पैर धरनी पर नहीं होते। खुशी में जो नाचता रहता है उसके लिए भी कहते हो कि यह तो उड़ता रहता है, इसके पांव धरनी पर नहीं हैं। तो सब उड़ने वाले फरिश्ते बन जायेंगे। इसलिए रुहानी सेवाधरी अब यह सेवा करो। कोर्स देना, दिलाना, प्रदर्शनी करना-कराना, मेले करना-कराना, यह बहुत मेहनत की। अभी इस मेहनत को सहज करने का साधन यह है (जो ऊपर सुनाया) इससे घर बैठे अनुभव करेंगे जैसे शमा के ऊपर परवाने स्वत: ही भागते हुए आ रहे हैं। आखिर भी यह मेहनत कब तक करेंगे, यह साधन भी तो परिवर्तन होंगे ना। तो कम खर्च वाला नशीन, वा कम मेहनत सफलता ज्यादा उसका साधन है-यह सौगात। फिर आपको मेला नहीं करना पड़ेगा लेकिन मेला करने वाले और अनेक निमित्त बन

जायेंगे। आपको निमन्त्रण देकर बुलायेंगे। जैसे अभी भी भाषण के लिए बनी बनाई स्टेज पर बुलाते हैं ना। वैसे मेले आदि की फिर इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। अभी आप सब दीदी-दादियों को उद्घाटन के लिए बुलाते हो फिर आप भी दीदी-दादीयाँ हो जायेंगी, उद्घाटन करने वाली दर्शनीय मूर्त हो जायेंगी। तो यह अच्छा है ना। अभी तक भी लगाओ टेन्ट, गाइड बुलाओ, लगाने वालों को बुलाओ... यही मेहनत करनी है! अच्छा-अभी तो सौगात मिल गई ना? अभी देंगी क्या यही संकल्प करो कि 'न कभी उत्साह कम करेंगे और न दूसरों का उत्साह कम होने देंगे।' यही देना है। कुछ भी हो जाय, जैसे स्थूल व्रत रखते हैं, तो उसमें भी भूख और प्यास लगती है लेकिन लगते हुए भी व्रत नहीं छोड़ते, चाहे बेहोश भी क्यों न हो जायें। तो आप भी व्रत लो-कोई भी समस्या आ जाए, कोई उत्साह को मिटाने वाला आ जाए लेकिन न उत्साह छोड़ेंगे, न औरों में कम करायेंगे। बढ़ेंगे और बढ़ायेंगे। तो सदा ही उत्सव होंगे, सदा मेले होगे, सदा सेमीनार होंगे, सदा इन्टरनेशनल कानफ्रैन्स होगी अच्छा-मिली भी सौगात, ले भी ली और क्या चाहिए।

(18.11.1981)

टीचर्स को डबल चांस मिला है। डबल इसीलिए मिल रहा है कि अनेंकों को बाटेंगी। क्योंकि **शिक्षक अर्थात् सदा औरों की सेवा के लिए जीने वाली।** शिक्षक की जीवन सदा औरों को सिखाने के लिए होती है। स्व के प्रति नहीं लेकिन सेवा के प्रति। जब मास्टर शिक्षक वा सच्चेधारी यह लक्ष्य रखते हैं कि हमारा हर सैकण्ड और हर संकल्प दूसरों को पढ़ाने के लिए है तो ऐसा मास्टर शिक्षक वा सेवाधारी सदा सफलता मूर्त होते हैं। जीना ही सेवा है, चलना ही सेवा है, बोलना, सोचना अब सेवा के लिए। हर नस-नस में सेवा का उमंग और उत्साह भरा हुआ हो। जैसे नसों में खून चलता है तो जीवन है। ऐसे सेवाधारी अर्थात् हर नस यानी हर संकल्प, हर सैकण्ड में सेवा के उमंग उत्साह का खून भरा हुआ हो।

ऐसे ही सेवाधारी हो ना? गुडनाइट करें तो भी सेवा, गुड मार्निंग करें तो भी सेवा। उसमें स्व की सेवा स्वतः समाई हुइ है। तो इसको कहा जाता है सच्चे सेवाधारी। सेवाधारी के स्वप्न भी कौन से होंगे? सेवा के। स्वप्न में भी सेवा करते रहेंगे। ऐसे ही हो ना?

सेवाधारियों को लिफ्ट भी बहुत बड़ी है। अनेक दुनिया के बन्धनों से मुक्त हो। यहाँ ही जीवनमुक्त स्थिति की प्राप्ति है। सेवाधारी का अर्थ ही है बन्धन मुक्त जीवनमुक्त। कितने हद की जिम्मेवारियों से छूटे हुए हो। और अलौकिक जिम्मेवारी भी बाप की है, इससे भी छूटे हुए हो। सिर्फ सेवा किया-आगे चलो। जिम्मेवारी का बोझ नहीं है। क्या किसी के ऊपर कोई बोझ है? सेन्टर का बोझ है क्या? सेन्टर को चलाने का बोझ नहीं है, यह फिकर नहीं रहता है कि जिज्ञासू कैसे आवें (रहता है) तो बोझ हुआ ना!

सफलता भी तब होगी जब यह समझो कि मैं बढ़ाने वाली नहीं हूँ लेकिन बाप की याद से स्वतः बढ़गी। मैं बढ़ाने वाली हूँ, तो बढ़ नहीं सकती। बाप को बोझ दे देंगे तो बढ़ती रहेगी। इसलिए इससे भी निश्फुरने रहना। जितना स्वयं हल्के होगे उतना सेवा और स्वयं सदा ऊपर चढ़ती रहेंगी अर्थात् उन्नति को पाती रहेंगी। जब मै-पन आता है तो बोझ हो जाता है और नीचे आ जाते हो। इसलिए इस बोझ से भी निश्चिन्त। सिर्फ याद के नशे में सदा रहो। बाप के साथ कम्बाइन्ड सदा रहो तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड हो गया वहाँ सेवा क्या है? स्वतः हुई पड़ी है। अनुभवी हो ना?

तो शिक्षक अर्थात् सेवाधरी को यह भी लिफ्ट हो गई ना। याद में रहो और उड़ते रहो। सेवा के निमित्त हैं। करावनहार करा रहा है तो हल्के भी रहेंगे और सफलतामूर्त भी रहेंगे। क्योंकि जहां बाप है वहाँ सफलता है ही। अच्छा-

बापदादा अपनी हमजिन्स को देखकर खुश होते हैं। मास्टर भग्यविधाता हो। भाग्यविधाता को याद कर अनेंको के भाग्य के तकदीर की लकीर खींचने

वाले हो। सन्तुष्ट तो सदा हो ही। पूछने की जरुरत है क्या? मास्टर शिक्षक से पूछना यह भी इनसल्ट हो जायेगी ना! सदा सन्तुष्ट हो और सदा रहेंगी।

(23.11.1981)

सभी ने सेवा का सबूत अपने-अपने शक्ति प्रमाण दिया है और देते रहेंगे? सेवाधारी अर्थात् हर सेकण्ड, हर श्वांस, हर संकल्प में विश्व की स्टेज पर पार्ट बजाने वाले। तो सदा स्वयं को विश्व की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं, यह समझकर चलते रहो। यह भी ड्रामा में चांस मिला है। तो दूसरे के निमित्त बनने से स्वयं स्वत: ही उसी बातों के अटेन्शन में रहते। इसलिए सदा अपने को बापदादा के साथी हैं, सेवा पर उपस्थित हैं, इस स्मृति में रहकर हर कार्य करते रहना। सदा आगे बढ़ते चलेंगे और बढ़ाते चलेंगे। हिम्मत अच्छी रखी है, मदद भी बाप की मिल रही है और मिलती रहेगी। निमित्त शिक्षक बनना वा रूहानी सेवाधारी बनना अर्थात् फादर को फालो करना। इसलिए बाप समान बाप के सिकीलधे। बापदादा भी सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। सभी सदा अपने को निमित्त समझकर चलना और नम्रचित्त होकर चलना। जितना निमित्त और नम्रचित्त होकर चलेंगे उतनी सेवा में सहज वृद्धि होगी। **कभी भी मैंने किया, मैं टीचर हूँ, यह 'मैं' का भाव नहीं रखना। इसको कहा जाता है सर्विस करने के बजाए सर्विस मे रुकती कला आने का आधार। चलते-चलते कभी सर्विस कम हो जाती है या ढीली होती है, उसका कारण विशेष यही होता है जो निमित्त के बजाए मैं-पन आ जाता है और इसके कारण ही सर्विस ढीली हो जाती है, फिर अपनी खुशी और अपना नशा ही गुम हो जाता है। तो कभी भी न स्वयं इस स्मृति से दूर होना, न औरों को बाप से वर्सा लेने से वंचित करना।** दूसरी बात कि सदा यह स्लोगन याद रखना - कि स्व परिवर्तन से किसी भी परिवार की आत्मा को भी बदलना है और विश्व को भी बदलना है। स्व परिवर्तन के ऊपर विशेष अटेन्शन। तो सेवा स्वत: ही वृद्धि को

पायेगी। घटने का कारण भी समझा और बढ़ाने का आधार भी समझा। तो सदा खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे और औरों को भी खुशी में लाते रहेंगे। समझा!

तो नम्बरवन योग्य टीचर वा नम्बरवन सेवाधारियों की लाइन में आ जायेंगे। तो डबल विदेशी सभी नम्बरवन टीचर हो ना! मेहनत अच्छी कर रहे हो और मुहब्बत भी अच्छी है। सबूत भी लाया है। हरेक बच्चा सेवाधारी अर्थात् टीचर है। चाहें सेवाकेन्द्र पर रहे, चाहें जहाँ भी रहे लेकिन सेवाधारी हैं। क्योंकि ब्राह्मणों का आक्यूपेशन ही है - 'सेवाधारी'। किसको सेवा का क्या पार्ट मिला है, किसको क्या... कोई को लाने की सेवा करनी है, कोई को सुनाने की, कोई को भोग बनाने की तो कोई को भोग लगाने की... सब सेवाधारी हैं। बापदादा सभी को सेवाधारी ही समझते हैं।

(20.01.1982)

टीचर्स के लिए सेवास्थान कौन-सा है? टीचर्स सदा विश्व की स्टेज पर हैं। आपका सेवास्थान है - विश्व स्टेज। तो स्टेज पर समझने से हर कर्म अटेन्शन से करेंगे। जब कोई प्रोग्राम करते हो तो स्टेज पर बैठते समय कितना अटेन्शन रहता है। अलबेला नहीं होते। तो टीचर्स बनना अर्थात् विश्व की स्टेज पर रहना। सेन्टर पर दो बहनें रहती हों, लेकिन दो नहीं, विश्व के आगे हो।

(12.03.1982)

टीचर्स के साथ- सेवाधारी आत्माओं का सदा एक ही लक्ष्य रहता है कि बाप समान बनना है? क्योंकि बाप समान सीट पर सेट हो। जैसे बाप शिक्षक बन, शिक्षा देने के निमित्त बनते हैं वैसे सेवाधारी आत्मायें बाप समान कर्त्तव्य पर स्थित हो। तो जैसे बाप के गुण वैसे निमित्त बने हुए सेवाधारी के गुण। तो सदा पहले यह चेक करो - कि जो भी बोल बोलते हैं यह बाप समान हैं? जो भी संकल्प करते हैं यह बाप समान है! अगर नहीं तो चेक करके चेन्ज कर लो। कर्म में नहीं जाओ।

ऐसे चेक करने के बाद प्रैक्टिकल में लाने से क्या होगा? जैसे बाप सदा सेवाधारी होते हुए सर्व का प्यारा और सर्व से न्यारा है, ऐसे सेवा करते सर्व के रूहानी प्यारे भी रहेंगे और साथ-साथ सर्व से न्यारे भी रहेंगे! बाप की मुख्य विशेषता ही है - 'जितना प्यारा उतना न्यारा'। ऐसे बाप समान सेवा में प्यारे और बुद्धियोग से सदा एक बाप के प्यारे सर्व से न्यारे। इसको कहा जाता है - 'बाप समान सेवाधारी'। तो शिक्षक बनना अर्थात् बाप की विशेष इस विशेषता को फालो करना। सेवा में तो सभी बहुत अच्छी मेहनत करते हो लेकिन कहाँ न्यारा बनना है और कहाँ प्यारा बनना है - इसके ऊपर विशेष अटेन्शन। **अगर प्यार से सेवा न करो तो भी ठीक नहीं और प्यार में फँसकर सेवा करो तो भी ठीक नहीं। तो प्यार से सेवा करनी है लेकिन न्यारी स्थिति में स्थित होकर करनी है तब सेवा में सफलता होगी। अगर मेहनत के हिसाब से सफलता कम मिलती है तो ज़रूर प्यारे और न्यारे बनने के बैलेन्स में कमी है।** इसलिए सेवाधारी अर्थात् बाप का प्यारा और दुनिया से न्यारा। यही सबसे अच्छी स्थिति है। इसी को ही 'कमल पुष्प समान' जीवन कहा जाता है। इसलिए शक्तियों को कमल आसन भी देते हैं! कमल पुष्प पर विराजमान दिखाते हैं। क्योंकि कमल समान न्यारे और प्यारे हैं। तो सभी सेवाधारी कमल आसन पर विराजमान हो ना? आसन अर्थात् स्थिति। स्थिति को ही आसन का रूप दिया है। बाकी कमल पर कोई बैठा हुआ तो नहीं है ना? तो सदा कमल आसन पर बैठो। कभी कमल कीचड़ में न चला जाए इसका सदा ध्यान रहे!

(08.04.1982)

टीचर्स के साथः- सेवाधारियों को सदा बुद्धि में क्या याद रहता है? सिर्फ सेवा या याद और सेवा? जब याद और सेवा दोनों का बैलेन्स होगा तो वृद्धि स्वतः होती रहेगी। वृद्धि का सहज उपाय ही है - 'बैलेन्स'। वर्तमान समय के हिसाब से सर्व आत्माओं को सबसे ज्यादा शान्ति की चाहना है, तो जहाँ भी देखो सर्विस वृद्धि

को नहीं पाती, वैसे की वैसे रह जाती - वहाँ अपने सेवाकेन्द्र के वातावरण को ऐसा बनाओ जैसे 'शान्ति-कुण्ड' हो। एक कमरा विशेष इस वायुमण्डल और रूपरेखा का बनाओ जैसे बाबा का कमरा बनाते हो ऐसे ढंग से बनाओ जो घमसान के बीच में शान्ति का कोना दिखाई दे। ऐसा वायुमण्डल बनाने से, शान्ति की अनुभूति कराने से वृद्धि सहज हो जायेगी। म्यूजियम ठीक है लेकिन यह सुनने और देखने का साधन है। सुनने और जानने वालों के लिए म्यूज़ियम ठीक है लेकिन जो सुन-सुन करके थक गये हैं उन्हों के लिए शान्ति का स्थान बनाओ। मैजारटी अभी यही कहते हैं कि आपका सब कुछ सुन लिया, सब देख लिया। लेकिन 'पा लिया है' - ऐसा कोई नहीं कहता। अनुभव किया, पाया यह अभी नहीं कहते हैं। तो अनुभव कराने का साधन है - याद में बिठाओ, शान्ति का अनुभव कराओ। दो मिनट भी शान्ति का अनुभव कर लें तो छोड़ नहीं सकते। तो दोनों ही साधन बनाने चाहिए। सिर्फ म्यूज़ियम नहीं लेकिन 'शान्ति-कुण्ड' का स्थान भी। जैसे आबू में म्यूज़ियम भी अच्छा है लेकिन शान्ति का स्थान भी आकर्षण वाला है। अगर चित्रों द्वारा नहीं भी समझते तो 'दो घड़ी' याद में बिठाने से इम्प्रेशन बदल जाता है। इच्छा बदल जाती है। समझते हैं कि कुछ मिल सकता है। प्राप्ति हो सकती है। जहाँ पाने की इच्छा उत्पन्न होती वहाँ आने के लिए भी कदम उठना सहज हो जाता। तो ऐसे वृद्धि के साधन अपनाओ।

बाकी सेवाधारी जब स्व से और सर्व से सन्तुष्ट होते हैं तो सेवा का, सहयोग का उमंग उत्साह स्वतः होता है। कहना कराना नहीं पड़ता, सन्तुष्टता सहज ही उमंग उल्लास में लाती है। सेवाधारी का विशेष यही लक्ष्य हो कि सन्तुष्ट रहना है और करना है।

(16.04.1982)

टीचर्स के साथ- अपने को सदा सेवाधारी समझकर सेवा पर उपस्थित रहते हो ना? सेवा की सफलता का आधार, सेवाधारी के लिए विशेष क्या है?

जानते हो? सेवाधारी सदा यही चाहते हैं कि सफलता हो लेकिन सफल होने का अधार क्या है? आजकल विशेष किस बात पर अटेन्शन दिला रहे हैं? (त्याग पर) बिना त्याग और तपस्या के सफलता नहीं। तो सेवाधारी अर्थात् त्याग मूर्त और तपस्वी मूर्त। तपस्या क्या है? एक बाप दूसरा न कोई यह है हर समय की तपस्या। और त्याग कौनसा है? उस पर तो बहुत सुनाया है लेकिन सार रूप में सेवाधारी का त्याग - जैसा समय, जैसी समस्यायें हो, जैसे व्यक्ति हों वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इजी रहें। जैसी परिस्थिति हो अर्थात् कहाँ अपने नाम का त्याग करना पड़े, कहाँ संस्कारों का, कहाँ व्यर्थ संकल्पों का, कहाँ स्थूल अल्पकाल के साधनों का... तो उस परिस्थिति और समय अनुसार अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना सकें, कैसा भी त्याग उसके लिए करना पड़े तो कर लें, अपने को मोल्ड कर लें, इसको कहा जाता है - 'त्याग मूर्त'। त्याग, तपस्या फिर सेवा। त्याग और तपस्या ही सेवा की सफलता का आधार है। तो ऐसे त्यागी जो त्याग का भी अभिमान न आये कि मैंने त्याग किया। अगर यह संकल्प भी आता तो यह भी त्याग नहीं हुआ।

सेवाधारी अर्थात् बड़ों के डायरेक्शन को फौरन अमल में लाने वाले। लोक संग्रह अर्थ कोई डायरेक्शन मिलता है तो भी सिद्ध नहीं करना चाहिए कि मैं राइट हूँ। भल राइट हो लेकिन लोकसंग्रह अर्थ निमित्त आत्माओं का डायरेक्शन मिलता है तो सदा - 'जी हाँ', 'जी हाज़िर', करना यही सेवाधारियों की विशेषता है, यह झुकना नहीं है, नीचे होना नहीं है लेकिन फिर भी ऊँचा जाना है। कभी-कभी कोई समझते हैं अगर मैंने किया तो मैं नीचे हो जाऊँगी, मेरा नाम कम हो जायेगा, मेरी पर्सनैलिटी कम हो जायेगी, लेकिन नहीं। मानना अर्थात् माननीय बनना, बड़ों को मान देना अर्थात् स्वमान लेना। तो ऐसे सेवाधारी हो जो अपने मान शान का भी त्याग कर दो। अल्पकाल का मान और शान क्या करेंगे। आज्ञाकारी बनना ही सदाकाल का मान और शान

लेना है। तो अविनाशी लेना है या अभी-अभी का लेना है? तो सेवाधारी अर्थात् इन सब बातों के त्याग में सदा एवररेडी। बड़ों ने कहा और किया। ऐसे विशेष सेवाधारी, सर्व के और बाप के प्रिय होते हैं। झुकना अर्थात् सफलता या फलदायक बनना। यह झुकना छोटा बनना नहीं है लेकिन सफलता के फल सम्पन्न बनना है। उस समय भल ऐसे लगता है कि मेरा नाम नीचे जा रहा है, वह बड़ा बन गया, मैं छोटी बन गई। मेरे को नीचे किया गया उसको ऊपर किया गया। लेकिन होता सेकण्ड का खेल है। सेकण्ड में हार हो जाती और सेकण्ड में जीत हो जाती। सेकण्ड की हार सदा की हार है जो चन्द्रवंशी कमानधारी बना देती है और सेकण्ड की जीत सदा की खुशी प्राप्त कराती जिसकी निशानी श्रीकृष्ण को मुरली बजाते हुए दिखाया है। तो कहाँ चन्द्रवंशी कमानधारी और कहाँ मुरली बजाने वाले! 'तो सेकण्ड की बात नहीं है लेकिन सेकण्ड का आधार सदा पर है'। तो इस राज़ को समझते हुए सदा आगे चलते चलो। ब्रह्माबाप को देखा - ब्रह्मा बाप ने अपने को कितना नीचे किया - इतना निर्मान होकर सेवाधारी बना जो बच्चों के पाँव दबाने के लिए भी तैयार। बच्चे मेरे से आगे हैं, बच्चे मेरे से भी अच्छा भाषण कर सकते हैं। 'पहले मैं' कभी नहीं कहा। आगे बच्चे, पहले बच्चे, बड़े बच्चे कहा, तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है, ऊँचा जाना है। तो इसको कहा जाता है - 'सच्चे नम्बरवन योग्य सेवाधारी'। लक्ष्य तो सभी का ऐसा ही है ना! गुजरात से बहुत सेवाधारी निकले हैं लेकिन गुजरात की नदियाँ गुजरात में ही बह रही हैं, गुजरात कल्याणकारी नहीं, विश्व-कल्याणकारी बनो। सदा एवररेडी रहो। आज कोई भी डायरेक्शन मिले - बोलो, 'हाँ जी'। क्या होगा कैसे होगा - ट्रस्टी को क्या, कैसे का क्या सोचना। अपनी आफर सदा करो तो सदा उपराम रहेंगे। लगाव झुकाव से किनारा हो जायेगा। आज यहाँ हैं कल कहाँ भी चले जायें तो उपराम हो जायेंगे। अगर समझते, यहाँ ही रहना है तो फिर थोड़ा बनाना है, बनना है... यह रहेगा। आज यहाँ कल वहाँ। पंछी है आज एक डाल पर, कल दूसरी डाल पर तो स्थिति उपराम रहेगी, तो मन की स्थिति सदा उपराम चाहिए। चाहे कहाँ 20 वर्ष भी रहो

लेकिन स्वयं सदा एवररेडी! स्वयं नहीं सोचो कि कैसे होगा! - इसको कहा जाता है महात्यागी।

(26.04.1982)

विदेशी टीचर्स से :- निमित्त शिक्षक को देख बापदादा अति हर्षित हो रहे हैं। कितनी लगन से, स्नेह से अपने अपने स्थान पर रहते सभी सदा शक्ति स्वरूप स्थिति में स्थित हो सर्व शक्तियों का अनुभव कराते रहते हैं! अभी साधारण नारी वा कुमारी का रूप नहीं लेकिन सर्व श्रेष्ठ सेवाधारी आत्मायें! बापदादा शोकेस के शोपीस हो। आप सबको देख सर्व आत्मायें बाप को पहचानती हैं। हरेक निमित्त शिक्षक के ऊपर विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी है। बेहद के सेवाधारी हो - ऐसे अपने को समझती हो? एक एरिया के कल्याणकारी तो नहीं समझती? चाहे एक स्थान पर बैठे हो लेकिन हो तो 'लाइट हाउस' ना। चारों ओर लाइट देने वाले। तो छोटा सा बल्ब बनकर एक ही स्थान पर रोशनी देते या लाइट हाउस बन विश्व को रोशनी देते? लाइट हो, सर्चलाइट हो या लाइट हाउस हो? हिम्मत तो बहुत अच्छी रखी है। बहुत अच्छा कर रहे हो और आगे भी अच्छे ते अच्छा करते रहो। टीचर्स तो सदा मायाजीत है ना? अगर टीचर्स के पास माया आयेगी तो स्टूडेन्ट का क्या हाल होगा? आपके पास यदि एक बार माया आयेगी तो उनके पास 10 बार आयेगी। इसलिए टीचर्स के पास माया नमस्ते करने आवे, वैसे नहीं।

निमित्त शिक्षक का स्वरूप - सदा हर्षित, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान - ऐसी सीट पर सदा सेट रहो। **टीचर्स के रहने का स्थान ही 'ऊँची स्थिति' है। सेन्टर पर नहीं रहती हो लेकिन ऊँची स्टेज पर रहती हो।** ऊँची स्टेज अर्थात् दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती। नीचे उतरे तो माया आयेगी। पाण्डव भी बापदादा के सहयोगी राइट हैण्ड हो ना! गद्दी सम्भालने वाले को राइट हैण्ड कहा जाता है। सभी पाण्डव विजयी हो ना! अभी तक माया से बहुत समय खेल खेला।

अभी विदाई दो। आज से सदा के लिए विदाई की बधाई मनाना। बहुत अच्छा चान्स मिला है और चान्स ले भी रहे हो।

(31.12.1982)

टीचर्स के साथ :- विश्व के शोकेस में विशेष शोपीस हो ना। सबकी नजर निमित्त बने हुएसेवाधारी कहो, शिक्षक कहो, उन्हीं पर ही रहती है। सदा स्टेज पर हो। कितनी बड़ी स्टेज है। और कितने देखने वाले हैं। सभी आप निमित्त आत्माओं से प्राप्ति की भावना रखते हैं। सदा यह स्मृति में रहता है? सेन्टर पर रहती हो वा स्टेज पर रहती हो? सदा बेहद की अनेक आत्माओं के बीच बड़े ते बड़ी स्टेज पर हो। इसलिए सदा दाता के बच्चे देते रहो और सर्व की भावनायें सर्व की आशायें पूण करते रहो। महादानी और वरदानी बनो, यही आपका स्वरूप है। इस स्मृति से हर संकल्प, बोल और कर्म हीरो पार्ट के समान हो क्योंकि विश्व की आत्मायें देख रही हैं। सदा स्टेज पर ही रहना, नीचे नहीं आना। निमित्त सेवाधारियों को बापदादा अपना फ्रैन्डस समझते हैं। क्योंकि बाप भी शिक्षक है तो बाप समान निमित्त बनने वाले फ्रैन्डस हुए ना। तो इतनी समीप की आत्मायें हो। ऐसे सदा अपने को बाप के साथ वा समीप अनुभव करती हो? जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है। ऐसे अनुभव होता है? जो निमित्त बने हुए हैं उन्हीं को बापदादा एकस्ट्रा सहयोग देते हैं। इसीलिए बड़े फखुर से बाबा कहो, बुलाओ, तो हाजिर हो जायेंगे। बापदादा तो ओबीडियन्ट हैं ना।

(11.01.1983)

(सभी टीचर्स नीचे हाल में मुरली सुन रही थीं) बापदादा के साथ निमित्त सेवाधारी कहो, निमित्त शिक्षक कहो तो आज साथियों का ग्रुप भी आया हुआ है ना। छोटे तो और ही अतिप्रिय होते हैं। नीचे होते भी सब ऊपर ही बैठे हैं। बापदादा छोटे वा बड़े लेकिन हिम्मत रखने वाले सेवा के क्षेत्र में स्वयं को सदा बिजी रखने

वाले सेवाधारियों को बहुत बहुत यादप्यार दे रहे हैं। इसलिए त्यागी बन अनेकों के भाग्य बनाने के निमित्त बनाने वाले सेवाधारियों को बापदादा त्याग की विशेष आत्मायें देख रहे हैं। ऐसी विशेष आत्माओं को विशेष रूप से बधाई के साथ-साथ यादप्यार। डबल कमाल कौन सी है? एक तो बाप को जानने की कमाल की। दूरदेश, धर्म का पर्दा रीति रसम, खान-पान सबकी भिन्नता के पर्दे के बीच रहते हुए भी बाप को जान लिया। इसलिए डबल कमाल। पर्दे के अन्दर छिप गये थे। सेवा के लिए अब जन्म लिया है। भूल नहीं की लेकिन ड्रामा अनुसार सेवा के निमित्त चारों ओर बिखर गये थे। नहीं तो इतनी विदेशों में सेवा कैसे होती। सिर्फ सेवा के कारण अपना थोड़े समय का नाम मात्र हिसाब किताब जोड़ा, इसलिए डबल कमाल दिखाने वाले सदा बाप के स्नेह के चात्रक, सदा दिल से 'मेरा बाबा' के गीत गाने वाले, 'जाना है, जाना है', 12 मास इसी धुन में रहने वाले, ऐसे हिम्मत कर बाप दादा के मददगार बनने वाले बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

(15.01.1983)

टीचर्स अर्थात् सेवाधारी। सेवाधारी अर्थात् त्यागमूर्त्त और तपस्या मूर्त्त। जहाँ त्याग, तपस्या नहीं वहाँ सफलता नहीं। त्याग और तपस्या दोनों के सहयोग से सेवा में सदा सफलता मिलती है। तपस्या है ही - 'एक बाप दूसरा न कोई'। यह है निरन्तर की तपस्या। तो जो भी आये वह कुमारी नहीं देखे लेकिन तपस्वी कुमारी देखे। जिस स्थान पर रहते हो वह तपस्या-कुण्ड अनुभव हो। अच्छा स्थान है, पवित्र स्थान है, यह भी ठीक लेकिन 'तपस्या कुण्ड' अनुभव हो। तपस्या कुण्ड में जो भी आयेगा वह स्वयं भी तपस्वी हो जायेगा। तो तपस्या के प्रैक्टिकल स्वरूप में जाओ। तब जयजयकार होगी। तपस्या के आगे झुकेंगे। ब्रह्माकुमार के आगे महिमा करते हैं, तपस्वी कुमार के आगे झुकेंगे। तपस्या कुण्ड बनाओ फिर देखो कितने परवाने आपेही आ जाते हैं। तपस्या भी ज्योति है, ज्योति पर परवाने आपेही आयेंगे। सेवाधारी बनने का भाग्य बन चुका अब तपस्वी कुमारी का नम्बर लो।

सदा शान्ति का दान देने वाली महादानी आत्मायें बनो। बापदादा वर्तमान समय मंसा सेवा के ऊपर विशेष अटेन्शन दिलाते हैं। वाचा की सेवा से इतनी शक्तिशाली आत्मायें नहीं निकलती हैं लेकिन मंसा सेवा से शक्तिशाली आत्मायें प्रत्यक्ष होंगी। वाणी तो चलती रहती है लेकिन अभी एडीशन चाहिए - शुद्ध संकल्प के सेवा की। तो स्वरूप बन करके स्वरूप बनाने की सेवा करो, अभी इसी की आवश्यकता है। अभी सबका अटेन्शन इस पाईंट पर हो। इसी से नाम बाला होगा। अनुभवी मूर्त्त अनुभव करा सकेंगे। इसी पर विशेष अटेन्शन देते रहो। इसी से मेहनत कम सफलता ज़्यादा होगी। मंसा धरनी को परिवर्तन कर देती है। सदा इसी प्रकार से वृद्धि करते रहो। अभी यही विधि है वृद्धि करने की।

(13.04.1983)

टीचर्स के साथ :- सेवाधारियों की विशेषता क्या है? सेवाधारी अर्थात् आँख खुले और सदा बाप के साथ बाप के समान स्थिति का अनुभव करे। अमृतवेले के महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी। विशेष सेवाधारी की महिमा है - जो विशेष वरदान के समय को जानें और विशेष वरदानों का अनुभव करें। अगर अनुभव नहीं तो साधारण सेवाधारी हुए, विशेष नहीं। विशेष सेवाधारी बनना है तो यह विशेष अधिकार लेकर विशेष बन सकते हो। जिसको अमृतवेले का, संकल्प का, समय का और सेवा का महत्व है ऐसे सर्व महत्व को जानने वाले विशेष सेवाधारी होते हैं। तो इस महत्व को जान महान बनना है। इसी महत्व को जान स्वयं भी महान बनो और औरों को भी महत्व बतलाकर, अनुभव कराकर महान बनाओ।

(19.04.1983)

टीचर्स के साथ :- सभी निमित्त सेवाधारी, अपने को निमित्त समझकर चलते हो? निमित्त समझने वाले सदा हल्के और सदा सफलतामूर्त होते हैं। जितना

हल्के होंगे उतना सफलता जरूर होगी। कभी सेवा कम होती कभी ज़्यादा तो बोझ तो नहीं लगता है ना। भारी तो नहीं होते, क्या होगा, कैसे होगा। कराने वाला करा रहा है और मैं सिर्फ निमित्त बन कार्य कर रही हूँ - यही सेवाधारी की विशेषता है। सदा स्व के पुरुषार्थ से और सेवा से सन्तुष्ट रहो तब ही जिन्हों के निमित्त बनते हैं उन्हों में सन्तुष्टता होगी। सदा सन्तुष्ट रहना और दूसरों को रखना यही विशेषता है।

(09.05.1983)

टीचर्स के साथ :- निमित्त सेवाधारी! निमित्त कहने से सहज ही याद आ जाता कि किसने निमित्त बनाया है। कभी भी सेवाधारी शब्द कहो तो उसके आगे निमित्त ज़रूर कहो। दूसरा निमित्त समझने से स्वत: ही निर्मान बन जायेंगे। और जो जितना निर्मान होगा उतना फलदायक होगा। निर्मान बनना अर्थात् फल स्वरूप बनना।

वर्तमान समय के हिसाब से सेवाधारी की सेवा कौन सी है? सर्व को हल्के बनाने की सेवा। उड़ती कला में ले जाने की सेवा। उड़ती कला में तब ले जायेंगे जब हल्के होंगे। सर्व प्रकार के बोझ स्वयं के भी हल्के और सर्व के भी बोझ हल्के करने वाले। जिन आत्माओं के निमित्त सेवाधारी बने हैं उन्हों को मंजिल पर तो पहुँचना है ना! अटकाना वा फँसाना नहीं है लेकिन हल्के बन हल्के बनाना है। हल्के बनेंगे तो मंजिल पर स्वत: पहुँच जायेंगे। सेवाधारियों की वर्तमान समय यही सेवा है। उड़ते रहो उड़ाते रहो। सभी को सेवा की लाटरी मिली है, इसी लाटरी को सदा कार्य में लगाते रहो। हर सेकेण्ड में श्वासों श्वास सेवा चलती रहे। इसी में सदा बिजी रहो।

(11.05.1983)

टीचर्स के साथ :- सदा यही स्मृति में रहता है ना कि हम निमित्त सेवाधारी हैं। करावनहार निमित्त बनाए करा रहा है। तो करावनहार जिम्मेवार हुआ ना।

निमित्त बनने वाले सदा हल्के। डायरेक्शन मिला, कार्य किया और सदा हल्के रहे। ऐसे कहते हो या कभी सेवा का बोझ अनुभव होता है? क्योंकि अगर बोझ होगा तो सफलता नहीं होगी। बोझ समझने से कोई भी कर्म यथार्थ नहीं होगा। स्थूल में भी जब कोई कार्य का बोझ पड़ जाता है तो कुछ तोडेंगे, कुछ फोडेंगे, कुछ मन मुटाव होगा, डिस्टर्ब होंगे। कार्य भी सफल नहीं होगा। ऐसे यह अलौकिक कार्य भी बोझ समझकर किया तो यथार्थ नहीं होगा। सफल नहीं हो सकेंगे। फिर बोझ बढ़ता जाता है। तो संगम-युग का जो श्रेष्ठ भाग्य है हल्के हो उड़ने का, वह ले नहीं सकेंगे। फिर संगमयुगी ब्राह्मण बन किया क्या! इसलिए सदा हल्के बन निमित्त समझते हुए हर कार्य करना - इसी को ही सफलतामूर्त कहा जाता है। जैसे आजकल के जमाने में पैर के नीचे पहिये लगाकर दौड़ते हैं, वह कितने हल्के होते हैं। उनकी रफ्तार तेज हो जाती है। तो जब बाप चला रहा है, तो श्रीमत के पहिये लग गये ना। श्रीमत के पहिये लगने से स्वतः ही पुरुषार्थ की रफ़्तार तेज़ हो जायेगी। सदा ऐसे सेवाधारी बनकर चलो। जरा भी बोझ महसूस नहीं करो। करावनहार जब बाप है तो बोझ क्यों? इसी स्मृति से सदा उड़ती कला में जाते रहो। बस सदा उड़ते चलो। इसको कहा जाता है - नम्बरवन योग्य सेवाधारी। बस, बाबा-बाबा और बाबा। हर सेकेण्ड यह अनहद साज बजता रहे। बस, बाबा और मैं, सदा ऐसे समाये रहो तो तीसरा बीच में आ नहीं सकता। जहाँ सदा समाये होंगे, दोनो राज़ी होंगे तो बीच में कोई नहीं आयेगा। इसको ही कहा जाता है - श्रेष्ठ सेवाधारी। ऐसे हो? दूसरा कुछ नहीं देखो, कुछ नहीं सुनो। सुनने से भी प्रभाव पड़ता। बस बाबा और मैं, सदा मौज मनाओ। मेहनत तो बहुत की, अभी मौज मनाने का समय है। एक गीत भी है ना मौजें ही मौजें... उठो, चलो, सेवा करो, सोओ सब मौज में। खूब नाचो, गाओ, खुशी में रहो। सेवा भी खुशी-खुशी से नाचते-नाचते करो। ऐसे नहीं लुढ़ते लमते गिरते चढ़ते करो। संगम पर सर्व सम्बन्ध की मौजें हैं। तो खूब मौज मनाओ। सदा मौजों के ही नज़ारों में रहो।

(17.05.1983)

टीचर्स से - बापदादा का टीचर्स से विशेष प्यार है क्योंकि समान हैं। बाप भी टीचर और आप मास्टर टीचर। वैसे भी समान प्यारे लगते हैं। बहुत अच्छा उमंग उत्साह से सेवा में आगे बढ़ रही हो। सभी चक्रवर्ती हो। चक्र लगाते अनेक आत्माओं के सम्बन्ध में आए, अनेक आत्माओं को समीप लाने का कार्य कर रही हो।बापदादा खुश हैं। ऐसा लगता है ना कि बापदादा हमारे पर खुश हैं, या समझती हो कि अभी थोड़ा सा कुछ करना है। खुश हैं और भी खुश करना है। मेहनत अच्छी करती हो, मेहनत मुहब्बत से करती हो इसलिए मेहनत नहीं लगती। बापदादा सर्विसएबुल बच्चों को सदा ही सिर का ताज कहते हैं। सिरताज हो। बापदादा बच्चों के उमंग-उत्साह को देख और आगे उमंग-उत्साह बढ़ाने का सहयोग देते हैं। एक कदम बच्चों का, पदम कदम बाप के। जहाँ हिम्मत है वहाँ उल्लास की प्राप्ति स्वत: होती है। हिम्मत है तो बाप की मदद है, इसलिए बेपरवाह बादशाह हो सेवा करते चलो। सफलता मिलती रहेगी।

(22.01.1984)

दादी जी तथा अन्य बड़ी बहनों से:- जैसे बाप सदा बच्चों का उमंग उत्साह बढ़ाते रहते वैसे फालो फादर करने वाले बच्चे हैं। विशेष सभी टीचर्स को देश-विदेश से जो भी आई, सबको बापदादा सेवा की मुबारक देते हैं। हरेक अपने को नाम सहित बाप के याद और प्यार के अधिकारी समझकर अपने आपको ही प्यार कर लेना। एक-एक के गुण गायें तो कितने के गुण गायें। सभी ने बहुत मेहनत की है। अगले वर्ष से अभी उन्नति को प्राप्त किया है और आगे भी इससे ज्यादा से ज्यादा स्वयं और सेवा से उन्नति को पाते रहेंगे। समझा - ऐसे नहीं समझना हमको बापदादा नहीं कहा, सभी को कह रहे हैं। भक्त बाप का नाम लेने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं, सोचते हैं बाप का नाम मुख पर रहे लेकिन बाप के मुख पर किसका नाम रहता? आप बच्चों का नाम बाप के मुख पर है समझा।

(18.02.1984)

टीचर्स के साथ:- सदा सेवाधारी आत्माओं का यह संगठन है ना। सदा अपने को बेहद के विश्व सेवाधारी समझते हो? हद के सेवाधारी तो नहीं हो ना। सब बेहद के हो? किसी को भी किसी स्थान से किसी भी स्थान पर भेज दें तो तैयार हो? सभी उड़ते पंछी हो? अपने देह के भान की डाली से भी उड़ते पंछी हो या देह के भान की डाली कभी-कभी अपने तरफ खींचती है? सबसे ज्यादा अपने तरफ आकर्षित करने वाले डाली यह देह का भान है। जरा भी पुराने संस्कार, स्वभाव अपने तरफ आकर्षित करते माना देह का भान है। मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरा संस्कार ऐसा है, मेरी रहन-सहन ऐसी है, मेरी आदत ऐसी है, यह सब देह भान की निशानी है। तो इस डाली से उड़ते पंछी हो? इसको ही कहा जाता है कर्मातीत स्थिति। कोई भी बन्धन नहीं। कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो लेकिन कर्म के बन्धन से न्यारे। तो देह के कर्म, जैसे किसका नेचर होता है - आराम से रहना, आराम से समय पर खाना, चलना यह भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है। इस कर्म के बन्धन अर्थात् आदत से भी परे। क्योंकि निमित्त हो ना।

जब आप सभी निमित्त आत्मायें कर्म के बन्धनों से देह के संस्कार स्वभाव से न्यारे नहीं होंगे तो औरों को कैसे करेंगे! जैसे शरीर की बीमारी कर्म का भोग है, इसी रीति से अगर कोई भी कर्म का बन्धन अपने तरफ खींचता है तो यह भी कर्म का भोग विघ्न डालता है। जैसे शारीरिक व्याधि कर्म भोग अपनी तरफ बार-बार खींचता है, दर्द होता है तो खींचता है ना। तो कहते हो क्या करें, वैसे तो ठीक है लेकिन कर्मभोग कड़ा है। ऐसे कोई भी विशेष पुराना संस्कार वा स्वभाव वा आदत अपने तरफ खींचती है तो वह भी कर्म भोग हो गया। कर्मभोग कोई भी कर्मयोगी बना नहीं सकेगा। तो इससे भी पार। क्यों? सभी नम्बरवन जाने वाली आत्मायें हो ना। वन नम्बर का अर्थ ही है - हर बात में विन करने वाली। कोई भी कमी नहीं। टीचर्स का अर्थ ही है सदा अपनी मूर्त द्वारा कर्मातीत ब्रह्मा बाप और न्यारे तथा प्यारे शिव बाप की अनुभूति कराने वाले। तो यह विशेषता है ना। फ्रैन्डस हो ना

आप! फ्रैन्डस कैसे बनते हैं? बिना समान के फ्रैन्डस नहीं बन सकते। तो आप सब बाप के फैन्डस हो, गाडली फ्रैन्डस हो। समान होना ही फैन्डशिप है। बाप के कदम पर कदम रखने वाले। क्योंकि फ्रैन्डस भी हो और फिर माशूक के आशिक भी हो। तो आशिक सदा माशूक के पांव के ऊपर पांव रखते हैं। यह रसम है ना। जब शादी होती है तो क्या कराते हैं! यही कराते हैं ना। तो यह सिस्टम भी कहाँ से बनी? आप लोगों से बनी है। आपका है बुद्धि रुपी पांव और उन्होंने स्थूल पांव समझ लिया है। हर सम्बन्ध से विशेषता का सम्बन्ध निभाने वाली निमित्त आत्मायें हो?

बापदादा तो डबल विदेशी वा डबल विदेश के स्थान पर निमित्त बनी हुई टीचर्स की बहुत महिमा करते हैं। ऐसे ही नहीं महिमा करते हैं लेकिन मुहब्बत से विशेष मेहनत भी करते हो। मेहनत तो बहुत करनी पड़ती है लेकिन मुहब्बत से मेहनत महसूस नहीं होती। देखो, कितने दूर-दूर से ग्रुप तैयार करके लाते हैं तो बापदादा बच्चों की मेहनत पर बलिहार जाते हैं। एक विशेषता डबल फारेन के निमित्त सेवाधारियों की बहुत अच्छी है। जानते हो कौन-सी विशेषता है? (अनेक विशेषतायें निकली) जो भी बातें निकाली वह स्वयं में चेक करके कम हो तो भर लेना। क्योंकि बातें तो बहुत अच्छी-अच्छी निकाली हैं। बापदादा सुना रहे हैं - एक विशेषता डबल विदेशी सेवाधारियों में देखी कि जो बापदादा डायरेक्शन देते हैं- यह करके लाना, वह प्रैक्टिकल में लाने के लिए हमेशा कितना भी प्रयत्न करना पड़े लेकिन प्रैक्टिल में लाना ही है, यह लक्ष्य प्रैक्टिकल अच्छा है। जैसे बापदादा ने कहा कि ग्रुप लाने हैं तो ग्रुप्स भी ला रहे हैं।

बापदादा ने कहा वी.आई.पीज की सर्विस करनी है, पहले कितना मुश्किल कहते थे, बहुत मुश्किल- लेकिन हिम्मत रखी, करना ही है तो अभी देखो 2 साल से ग्रुप्स आ रहे हैं ना। कहते थे लण्डन से वी.आई.पी. आना बहुत मुश्किल है। लेकिन अभी देखो प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाया ना। इस बारी तो भारत वालों ने भी राष्ट्रपति को लाकर दिखाया। लेकिन फिर भी डबल विदेशियों का यह उमंग -

डायरेक्शन मिला और करना ही है यह लगन अच्छी है। प्रैक्टिकल रिजल्ट देख बापदादा विशेषता का गायन करते हैं। सेन्टर खोलते हो वह तो पुरानी बात हो गई। वह तो खालते ही रहेंगे। क्योंकि वहाँ साधन बहुत सहज हैं। यहाँ से वहाँ जा करके खोल सकते हो, यह भारत में साधन नहीं है। इसलिए सेन्टर खोलना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन ऐसे अच्छे-अच्छे वारिस क्वालिटी तैयार करना। एक है वारिस क्वालिटी तैयार करना और दूसरा है बुलन्द आवाज वाले तैयार करना। दोनों ही आवश्यक हैं। वारिस क्वालिटी जो आप जैसे ही सेवा के उमंग-उत्साह में तन-मन-धन सहित रहते हुए भी सरेन्डर बुद्धि हो, इसको कहते हैं - वारिस क्वालिटी। तो वारिस क्वालिटी भी निकालनी है। इसके ऊपर भी विशेष अटेन्शन। हरेक सेवाकेन्द्र में ऐसे वारिस क्वालिटी हों तो सेवाकेन्द्र सबसे नम्बरवन में जाता है।

एक है सेवा में सहयोगी होना, दूसरे हैं पूरा ही सरेन्डर होना। ऐसे वारिस कितने हैं? हरेक सेवाकेन्द्र पर ऐसे वारिस हैं। गाडली स्टूडेन्ट बनाना, सेवा में सहयोगी बनना वह लिस्ट तो लम्बी होती है लेकिन वारिस कोई-कोई होते हैं। जिसको जिस समय जो डायरेक्शन मिले, जो श्रीमत मिले उसी प्रमाण चलता रहे। तो दोनों ही लक्ष्य रखो, वह भी बनाना है और वह भी बनाना है। ऐसा वारिस क्वालिटी वाला एक अनेक सेन्टर खोलने के निमित्त बन सकता है। यह भी लक्ष्य से प्रैक्टिकल होता रहेगा। विशेषता तो अपनी समझी ना। अच्छा-

सन्तुष्ट तो हैं ही - या पूछना पड़े। है ही सन्तुष्ट करने वाले। तो जो सन्तुष्ट करने वाला होगा वह स्वयं तो होगा ना। कभी सर्विस थोड़ी कम देख करके हलचल में तो नहीं आते हो? कोई सेवाकेन्द्र पर विघ्न आता है तो विघ्न में घबराते हो? समझो बड़े ते बड़ा विघ्न आ गया - कोई अच्छा अनन्य एन्टी हो जाता है और डिस्टर्ब करता है आपकी सेवा में तो फिर घबरायेंगे? एक होता है उसके प्रति कल्याण के भाव से तरस रखना वह दूसरी बात है लेकिन स्वयं की स्थिति नीचे-ऊपर हो या व्यर्थ संकल्प चले इसको कहते हैं हलचल में आना। तो संकल्प की सृष्टि भी नहीं रचें। यह संकल्प भी हिला न सकें! इसको कहते हैं - अचल अडोल

स्थिति। ऐसे भी नहीं कि अलबेले हो जाएं कि नथिंगन्यू। सेवा भी करें, उसके प्रति रहमदिल भी बनें लेकिन हलचल में नहीं आयें। तो न अलबेले, न फीलिंग में आने वाले। दोनों ही हैं। सदा ही किसी भी वातावरण में, वायुमण्डल में हो लेकिन ऐसे अचल अडोल। कभी कोई निमित्त बने हुए राय देते हैं, उनमें कनफ्यूज होते हो? यह क्यों कहते या यह कैसे होगा! कभी-कभी थोड़ा-सा कनफ्यूज होने का वायब्रेशन आता है। क्योंकि जो निमित्त बने हुए हैं वह अनुभवी हो चुके हैं, और जो प्रैक्टिकल में चलने वाले हैं - कोई नये हैं, कोई थोड़े पुराने भी हैं लेकिन जिस समय जो बात उसके सामने आती है, तो बात के कारण इतनी क्लीयर बुद्धि आदि मध्य अन्त को नहीं जान सकती है। सिर्फ़ वर्तमान को जान सकती है। इसलिए सिर्फ़ वर्तमान देख करके, आदि मध्य उस समय क्लीयर नहीं होता तो कनफ्यूज हो जाते हैं। कभी भी कोई डायरेक्शन अगर नहीं भी स्पष्ट हो तो कनफ्यूज कभी नहीं होना। धैर्य से कहो इसको समझने की कोशिश करेंगे। थोड़ा टाइम दो उसको। उसी समय कनफ्यूज होकर यह नहीं, वह नहीं, ऐसे नहीं करो। क्योंकि डबल विदेशी फ्री माइन्ड ज्यादा हैं इसलिए न भी फ्री माइन्ड से कह देते हैं। इसलिए थोड़ा-सा जो भी बात मिलती है - उसको गम्भीरता से पहले सोचो, उसमें कोई न कोई रहस्य अवश्य छिपा होता है। उससे पूछ सकते हो - इसका रहस्य क्या है? इससे क्या फायदा होगा? हमें और स्पष्ट समझाओ। यह कह सकते हो। लेकिन कभी भी डायरेक्शन को रिफ्यूज नहीं करो। रिफ्यूज करते हो इसलिए कनफ्यूज होते हो। यह थोड़ा विशेष अटेन्शन डबल विदेशी बच्चों को देते हैं। नहीं तो क्या होगा जैसे आप निमित्त बने हुए, बहनों के डायरेक्शन को जानने का प्रयन्त नहीं करेंगे और हलचल में आ जायेंगे तो आपको देखकर जिन्हों के निमित्त आप बने हो, उन्हों में यह संस्कार भर जायेंगे। फिर कभी कोई रुसेगा, कभी कोई रुसेगा। फिर सेन्टर पर यही खेल चलेगा। समझा!

दूसरी बात:- कभी भी अपने को अभी हम दूसरे धर्म के यहाँ आये हैं, यह टीचर्स में संकल्प नहीं होना चाहिए। यह नयों की बातें हैं। आप तो पुराने हो तभी

निमित्त भी बने हो। हम दूसरे धर्म के इस धर्म में आये हैं, नहीं। इसी धर्म के थे और इसी धर्म में आये हैं। हम और यह अलग हैं, यह संकल्प स्वप्न में भी नहीं। भारत अलग है, विदेश अलग है - नहीं। यह संकल्प एकमत को दो मत कर देगा। फिर हम और तुम हो गया ना। जहाँ हम और तुम हो गया वहाँ क्या होगा? खिटपिट होगी ना। इसलिए एक हैं। डबल विदेशी, बापदादा निशानी के लिए कहते हैं, बाकी ऐसे नहीं अलग हो। ऐसे नहीं समझना कि हम डबल विदेशी हैं तो अलग हैं, देश वाले अलग हैं। नहीं। जब ब्राह्मण जन्म हुआ तो ब्राह्मण जन्म से ही कौन हुए? ब्राह्मण एक धर्म के हैं, विदेशी देशी उसमें नहीं होते। हम सब एक ब्राह्मण धर्म के हैं, ब्राह्मण जीवन के हैं और एक ही बात की सेवा के निमित्त हैं। कभी यह भाषा भी यूज नहीं करना कि हमारा विचार ऐसे हैं, आप इन्डिया वालों का ऐसे है, यह भाषा रांग है। गलती से भी ऐसे शब्द नहीं बोलना। विचार भिन्न-भिन्न तो भारत वालों का भी हो सकता है, यह दूसरी बात है। बाकी भारत और विदेश, यह फ़र्क कभी नहीं करना। हम विदेशियों का ऐसे ही चलता है, यह नहीं। हमारे स्वभाव ऐसे हैं, हमारी नेचर ऐसे है, यह नहीं। ऐसे कभी भी नहीं सोचना। बाप एक है और एक के ही सब हैं। **यह निमित्त टीचर्स जैसी भाषा बोलेंगे वैसे और भी बोलेंगे। इसलिए बहुत युक्तियुक्त एक-एक शब्द बोलना। योगयुक्त और युक्तियुक्त दोनों ही साथ-साथ चलें।** कोई योग में बहुत आगे जाने का करते लेकिन कर्म में युक्तियुक्त नहीं होते। दोनों का बैलेन्स हो। योगयुक्त की निशानी है ही - युक्तियुक्त।

(24.02.1984)

टीचर्स तो सन्तुष्ट हो गये ना। सभी को अपना पूरा हिस्सा मिला ना। निमित्त बनी हुई विशेष आत्मायें हैं। बापदादा भी विशेष आत्माओं का विशेष रिगार्ड रखते हैं। फिर भी सेवा के साथी हैं ना। ऐसे तो सभी साथी हैं फ़िर भी निमित्त को निमित्त समझने में ही सेवा की सफ़लता है। ऐसे तो सर्विस में कई बच्चे बहुत तीव्र उमंग

उत्साह में बढ़ते रहते हैं फ़िर भी **निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को रिगार्ड देना अर्थात् बाप को रिगार्ड देना है और बाप द्वारा रिगार्ड के रिटर्न में दिल का स्नेह लेना है।** समझा! टीचर्स को रिगार्ड नहीं देते हो लेकिन बाप से दिल के स्नेह का रिटर्न लेते हो।

(26.02.1984)

टीचर्स से:- टीचर्स तो हैं ही उड़ती कला वाली! निमित्त बना - यही उड़ती कला का साधन है। तो निमित्त बने हो अर्थात् ड्रामा अनुसार उड़ती कला का साधन मिला हुआ है। इसी विधि द्वारा सदा सिद्धि को पाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हो। निमित्त बनना ही लिफ्ट है। तो लिफ्ट द्वारा सेकण्ड में पहुँचने वाले उड़ती कला वाले हुए। चढ़ती कला वाले नहीं। हिलने वाले नहीं लेकिन हिलाने से बचाने वाले। आग की सेक में आने वाले नहीं लेकिन आग बुझाने वाले। तो निमित्त की विधि से सिद्धि को प्राप्त करो। टीचर्स का अर्थ ही है - 'निमित्त भाव'। यह निमित्त भाव ही सर्व फ़ल की प्राप्ति स्वत: कराता है।

(02.04.1984)

टीचर्स से:- सदा हर कदम में सफलता अनुभव करने वाली हो ना! अनुभवी आत्मायें हो ना! अनुभव ही सबसे बड़ी अथार्टी है। अनुभव की अथार्टी वाले हर कदम में हर कार्य में सफल हैं ही। सेवा के निमित्त बनने का चांस मिलना भी एक विशेषता की निशानी है। जो चांस मिलता है उसी को आगे बढ़ाते रहो। सदा निमित्त बन आगे बढ़ने और बढ़ाने वाली हैं। यह 'निमित्त-भाव' ही सफलता को प्राप्त कराता है। निमित्त और निर्माण की विशेषता को सदा साथ रखो। यही विशेषता सदा विशेष बनायेगी। निमित्त बनने का पार्ट स्वयं को भी लिफ्ट देता है। औरों के निमित्त बनना अर्थात् स्वयं सम्पन्न बनना। दृढ़ता से सफलता को प्राप्त करते चलो। सफलता ही है, इसी दृढ़ता से सफलता स्वयं आगे जायेगी।

जंन्मते ही सेवाधारी बनने का गोल्डन चांस मिला है तो बड़े ते बड़ी चांसलर बन गई ना। बचपन से ही सेवाधारी की तकदीर लेकर आई हो। तकदीर जगाकर आई हो। कितनी आत्माओं की श्रेष्ठ तकदीर बनाने के कर्तव्य के निमित्त बन गई! तो सदा याद रहे - वाह मेरे श्रेष्ठ तकदीर की श्रेष्ठ लकीर! बाप मिला, सेवा मिली, सेवास्थान मिला और सेवा के साथ-साथ सर्व आत्माओं का श्रेष्ठ परिवार मिला। क्या नहीं मिला! राज्य भाग्य सब मिल गया। यह खुशी सदा रहे। विधि द्वारा सदा वृद्धि को पाते रहो। निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि होती रहेगी।

(10.04.1984)

टीचर्स से:- सदा याद और सेवा का बैलेन्स रखने वाली और सदा बाप की ब्लैसिंग लेने वाली। जहाँ बैलेन्स हैं वहाँ बाप द्वारा स्वत: ही आशीर्वाद तो क्या वरदान प्राप्त होते हैं। जहाँ बैलेन्स नहीं वहाँ वरदान भी नहीं। और जहाँ वरदान नहीं होगा वहाँ मेहनत करनी पड़ेगी। वरदान प्राप्त हो रहे हैं अर्थात् सर्व प्राप्तियाँ सहज हो रही हैं। ऐसे वरदानों को प्राप्त करने वाले सेवाधारी हो ना! सदा एक बाप, एकरस स्थिति और एक मत होकर के चलने वाले। ऐसा ग्रुप है ना। जहाँ एकमत हैं वहाँ सदा ही सफलता है। तो सदा हर कदम में बाप वरदाता द्वारा वरदान प्राप्त करने वाले। ऐसे सच्चे सेवाधारी। सदा अपने को डबल लाइट समझकर सेवा करते रहो। जितना हल्के उतना सेवा में हल्कापन। और जितना सेवा में हल्कापन आयेगा उतना सभी सहज उड़ेंगे-उड़ायेंगे। डबल लाइट बन सेवा करना, याद में रहकर सेवा करना-यही सफलता का आधार है। उस सेवा का प्रत्यक्ष फल मिलता ही है।

(26.04.1984)

सभी टीचर्स हैं ही 'ज्वाला स्वरूप'। इस ज्वाला-स्वरूप के द्वारा अनेक आत्माओं की निर्बलता को दूर करने वाली। टीचर्स अर्थात् शिव शक्ति-कम्बाइन्ड रहने वाली। शिव के बिना शक्ति नहीं, शक्ति के बिना शिव नहीं। हर सेकण्ड, हर श्वास 'बाप और आप' कम्बाइन्ड। तो ऐसे शिव-शक्ति स्वरूप निमित्त आत्मायें हो ना! **कोई भी समय साधारण याद न हो।** क्योंकि स्टेज पर हैं ना! तो स्टेज पर हर समय कैसे बैठते हैं? कैसे कार्य करते हैं? अलर्ट होकर करेंगे ना! साधारण एक्टिविटी नहीं करेंगे। सदा अलर्ट होकर हर काम करेंगे। सेवाकेन्द्र स्टेज है, घर नहीं है, स्टेज है। स्टेज पर सदा अटेन्शन रहता है और घर में अलबेले हो जाते हैं। तो यह सेवाकेन्द्र सेवा की स्टेज है। इसलिए सदा ज्वाला-स्वरूप, शक्ति-स्वरूप। स्नेही भी हैं लेकिन स्नेह अकेला नहीं। स्नेह के साथ शक्ति रूप भी हो। अगर अकेला स्नेही रूप है, शक्ति रूप नहीं है तो कभी भी धोखा मिल सकता है। इसलिए स्नेही और शक्ति रूप दोनों कम्बाइन्ड। दोनों का बैलेन्स। इसको कहा जाता है-नम्बरवन योग्य टीचर। तो सदा इस स्मृति में रहने वाले विजयी हैं ही। विजय होगी या नहीं, यह नहीं। हैं ही। विजय ऐसी आत्माओं को जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त है। विजय के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती लेकिन विजय स्वयं माला बन गले में पिरोये, इसको कहा जाता है - 'विजयी रत्न'। तो सभी ऐसे विजयी रतन बन आगे बढ़ो और औरों को आगे बढ़ाओ। सभी सन्तुष्ट और खुश हैं ना! सेवा में सन्तुष्ट, स्व से सन्तुष्ट और आने वाले परिवार से सन्तुष्ट। तीनों ही सन्तुष्टता, इसको कहते हैं -सन्तुष्ट आत्मा। टीचर का अर्थ ही है-मास्टर दाता बन सहयोग देने वाली। ड्रामा में टीचर बनना यह भी एक गोल्डन चान्स है। इसी गोल्डन चांस को कामय रखते उड़ते रहो और उड़ाते रहो।

(21.11.1984)

टीचर्स बहनों से :- सेवाधारी हैं, टीचर्स नहीं। सेवा में त्याग, तपस्या समाई हुई है। सेवाधारी बनना माना खान के अधिकारी बनना। सेवा ऐसी चीज है जिससे

हर सेकण्ड में भरपूर ही भरपूर। इतने भरपूर हो जाते जो आधाकल्प खाते ही रहेंगे। मेहनत की जरूरत नहीं - ऐसे सेवाधारी। वह भी रूहानी सेवाधारी - रूह की स्थिति में स्थित हो रूह की सेवा करने वाले इसको कहते हैं रूहानी सेवाधारी। ऐसे रूहानी सेवाधारियों को बापदादा सदा 'रूहानी गुलाब' का टाइटल देते हैं। तो सभी रूहानी गुलाब हो जो कभी भी मुरझाने वाले नहीं! सदा अपनी रूहानियत की खुशबू से सभी को रिफ्रेश करने वाले।

सेवाधारी बनना भी बहुत श्रेष्ठ भाग्य है। सेवाधारी अर्थात् बाप समान। जैसे बाप सेवाधारी है वैसे आप भी निमित्त सेवाधारी हैं। बाप बेहद का शिक्षक है आप भी निमित्त शिक्षक हो। तो बाप समान बनने का भाग्य प्राप्त है। सदा इसी श्रेष्ठ भाग्य द्वारा औरों को भी अविनाशी भाग्य का वरदान दिलाते रहो। सारे विश्व में ऐसा श्रेष्ठ भाग्य बहुत थोड़ी आत्माओं का है। इस विशेष भाग्य को स्मृति में रखते समर्थ बन समर्थ बनाते रहो। उड़ाते रहो। सदा स्व को आगे बढ़ाते औरों को भी आगे बढ़ाओ।

(10.12.1984)

टीचर्स के साथ - टीचर्स अर्थात् बाप समान। जैसे बाप वैसे निमित्त सेवाधारी। बाप भी निमित्त है तो सेवाधारी भी निमित्त आत्मायें हैं। निमित्त समझने से स्वत: ही बाप समान बनने का संस्कार प्रैक्टिकल में आता है। अगर निमित्त नहीं समझते तो बापसमान नहीं बन सकते। तो एक निमित्त, दूसरा सदा न्यारा और प्यारा। यह बाप की विशेषता है। प्यारा भी बनता और न्यारा भी रहता। न्यारा बनकर प्यारा बनता है। तो बाप समान अर्थात् अति न्यारे और अति प्यारे। औरों से न्यारे और बाप से प्यारे। यह समानता है। बाप की यही दो विशेषताएँ हैं। तो बाप समान सेवाधारी भी ऐसे हैं। इसी विशेषता को सदा स्मृति में रखते हुए सहज आगे बढ़ती जायेंगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेंगी। जहाँ निमित्त हैं वहाँ सफलता है ही। वहाँ मेरा-पन आ नहीं सकता। जहाँ मेरा-पन है वहाँ सफलता नहीं। **'निमित्त भाव**

सफलता की चाबी है'। जब हद का लौकिक मेरा-पन छोड़ दिया तो फिर और मेरा कहाँ से आया। मेरा के बजाए 'बाबा- बाबा' कहने से सदा सेफ हो जाते। मेरा सेन्टर नहीं बाबा का सेन्टर। मेरा जिज्ञासु नहीं - बाबा का। मेरा खत्म होकर तेरा बन जाता। तेरा कहना अर्थात् उड़ना। तो निमित्त शिक्षक अर्थात् उड़ती कला के एक्जैम्पल। जैसे आप उड़ती कला के एक्जैम्पुल बनते वैसे दूसरे भी बनते हैं। न चाहते भी जिसके निमित्त बनते हो उनमें वह वायब्रेशन स्वत: आ जाते है। तो निमित्त शिक्षक, सेवाधारी सदा न्यारे हैं, सदा प्यारे हैं। कभी भी कोई पेपर आवे तो उसमें पास होने वाले हैं। निश्चयबुद्धि विजयी हैं।

सभी रूहानी गुलाब हो ना। मोतिया हो या गुलाब? जैसे गुलाब का पुष्प सब पुष्पों में से श्रेष्ठ गाया जाता है ऐसे रूहानी गुलाब अर्थात् श्रेष्ठ आत्मायें। रूहानी गुलाब सदा रूहानियत में रहने वाला, सदा रुहानी नशे में रहने वाला। सदा रुहानी सेवा में रहने वाला - ऐसे रूहानी गुलाब हो। आजकल के समय प्रमाण रूहानियत की आवश्यकता है। रूहानियत न होने के कारण ही यह सब लड़ाई झगड़े हैं। तो रूहानी गुलाब बन रूहानियत की खुशबू फैलाने वाले। यही ब्राह्मण जीवन का आक्यूपेशन है। सदा इसी आक्यूपेशन में बिजी रहो।

(19.12.1984)

टीचर्स के साथ मुलाकात - सेवाधारी सेवा करने से स्वयं भी शक्तिशाली बनते हैं और दूसरों में भी शक्ति भरने के निमित्त बनते हैं। सच्ची रूहानी सेवा सदा स्व उन्नति और औरों की उन्नति के निमित्त बनाती है। दूसरे की सेवा करने से पहले अपनी सेवा करनी होती। दूसरे को सुनाना अर्थात् पहले खुद सुनते, पहले अपने कानों में जायेगा ना। सुनाना नहीं होता, सुनना होता है। तो सेवा से डबल फायदा होता है। अपने को भी और दूसरों को भी। सेवा में बिज़ी रहना अर्थात् सहज मायाजीत बनना। बिज़ी नहीं रहते तब माया आती है। सेवाधारी अर्थात् सदा

बिज़ी रहने वाली। सेवाधारियों को कभी फुर्सत ही नहीं होती। जब फुर्सत ही नहीं तो माया कैसे आयेगी। सेवाधारी बनना अर्थात् सहज विजयी बनना। सेवाधारी माला में सहज आ सकते हैं। क्योंकि सहज विजयी हैं। तो विजयी विजय माला में आयेंगे। सेवाधारी का अर्थ है ताजा मेवा खाने वाले। ताजा फल खाने वाले बहुत हेल्दी होंगे। डाक्टर भी कहते हैं ताजा फल ताजी सब्जियाँ खाओ। तो सेवा करना माना विटमिन्स मिलना। ऐसे सेवाधारी हो ना! कितना महत्व है सेवा का। अभी इसी बातों को चेक करना। ऐसी सेवा की अनुभूति हो रही है। कितना भी कोई उलझन में हो - सेवा खुशी में नचाने वाली है। कितना भी कोई बीमार हो सेवा तन्दरुस्त करने वाली है। ऐसे नहीं सेवा करते-करते बीमार हो गये। नहीं। बीमार को तन्दरुस्त बनाने वाली सेवा है। ऐसे अनुभव हो। ऐसे विशेष सेवाधारी विशेष आत्मायें हो। बापदादा सेवाधारियों को सदा श्रेष्ठ सम्बन्ध से देखते हैं क्योंकि सेवा के लिए त्यागी तपस्वी तो बने हैं ना। त्याग और तपस्या को देख बापदादा सदा खुश है।

सभी सेवाधारी अर्थात् सदा सेवा के निमित्त बनी हुई आत्मायें। सदा अपने को निमित्त समझ सेवा में आगे बढ़ते रहो। मैं सेवाधारी हूँ, यह मैं-पन तो नहीं आता है ना। बाप करावनहार है, मैं निमित्त हूँ। कराने वाला करा रहा है। चलाने वाला चला रहा है - इस श्रेष्ठ भावना से सदा न्यारे और प्यारे रहेंगे। अगर मैं करने वाली हूँ तो न्यारे और प्यारे नहीं। तो सदा न्यारे और सदा प्यारे बनने का सहज साधन है करावनहार करा रहा है, इस स्मृति में रहना। इससे सफलता भी ज्यादा और सेवा भी सहज। मेहनत नहीं लगती। कभी मैं-पन के चक्र में आने वाली नहीं। हर बात में बाबा-बाबा कहा तो सफ़लता है। ऐसे सेवाधारी सदा आगे बढ़ते भी हैं और औरों को भी आगे बढ़ाते हैं। नहीं तो स्वयं भी कभी उड़ती कला कभी चढ़ती कला, कभी चलती कला। बदलते रहेंगे और दूसरे को भी शक्तिशाली नहीं बना सकेंगे। सदा बाबा-बाबा कहने वाले भी नहीं लेकिन करके दिखाने वाले। ऐसे सेवाधारी सदा बापदादा के समीप हैं। सदा विघ्न विनाशक हैं।

टीचर्स अर्थात् सदा सम्पन्न। तो सम्पन्नता की अनुभूति करने वाली हो ना! स्वयं सर्व खज़ानों से सम्पन्न होंगे तब दूसरों की सेवा कर सकेंगे। अपने में सम्पन्नता नहीं तो दूसरे को क्या देंगे। सेवाधारी का अर्थ ही है सर्व खज़ानों से सम्पन्न। सदा भरपूरता का नशा और खुशी। कोई एक भी खज़ाने की कमी नहीं। शक्ति है, गुण नहीं। गुण हैं शक्ति नहीं - ऐसा नहीं, सर्व खज़ाने से सम्पन्न। जिस शक्ति का जिस समय आह्वान करें, शक्ति स्वरूप बन जाएँ - इसको कहा जाता है - सम्पन्नता। ऐसे हो? जो याद और सेवा के बैलेंस में रहता है, कभी याद ज्यादा हो कभी सेवा ज्यादा हो - नहीं, दोनों समान हों, बैलेंस में रहने वाले हो, वही सम्पन्नता की ब्लैसिंग के अधिकारी होते हैं। ऐसे सेवाधारी हो, क्या लक्ष्य रखती हो? सर्व खज़ानों में सम्पन्न, एक भी गुण कम हुआ तो सम्पन्न नहीं। एक शक्ति भी कम हुई तो भी सम्पन्न नहीं कहेंगे। सदा सम्पन्न और सर्व में सम्पन्नता दोनों ही हो। ऐसे को कहा जाता है - योग्य सेवाधारी। समझा। हर कदम में सम्पन्नता। ऐसे अनुभवी आत्मा अनुभव की अथार्टी है। सदा बाप के साथ का अनुभव हो!

(07.01.1985)

सेवाधारी (टीचर्स) बहिनों से:- सेवाधारी अर्थात् सदा सेवा की मौज में रहने वाले। सदा स्वयं को मौजों की जीवन में अनुभव करने वाले। सेवाधारी जीवन माना मौजों की जीवन। तो ऐसे सदा याद और सेवा की मौज में रहने वाले हो ना! याद की भी मौज है और सेवा की भी मौज है। जीवन भी मौज की और युग भी मौजों का। जो सदा मौज में रहने वाले हैं उसको देख और भी अपने जीवन में मौज का अनुभव करते हैं। कितने भी कोई मूँझे हुए आवें लेकिन जो स्वयं मौज में रहते वह दूसरों को भी मूंझ से छुड़ाए मौज में ले आयेंगे। ऐसे सेवाधारी जो मौज में रहते वह सदा तन-मन से तन्दरूस्त रहते हैं। मौज में रहने वाले सदा उड़ते रहते क्योंकि खुशी रहती है। वैसे भी कहा जाता यह तो खुशी में नाचता रहता है। चल रहा है, नहीं, नाच रहा है। नाचना माना ऊँचा उठना। ऊँचे पाँव होंगे तब नाचेंगे ना! तो मौजों

में रहने वाले अर्थात् खुशी में रहने वाले। सेवाधारी बनना अर्थात् वरदाता से विशेष वरदान लेना। सेवाधारी को विशेष वरदान है, एक अपना अटेन्शन दूसरा वरदान, डबल लिफ़्ट है। सेवाधारी बनना अर्थात् सदा मुक्त आत्मा बनना, जीवनमुक्त अनुभव करना।

सभी सेवाधारी सदा सफ़लता स्वरूप हो? सफ़लता जन्म सिद्ध अधिकार है। अधिकार सदा सहज मिलता है। मेहनत नहीं लगती। तो अधिकार के रूप में सफ़लता अनुभव करने वाले हो। सफ़लता हुई पड़ी है यह निश्चय और नशा रहे। स.फलता होगी या नहीं ऐसा संकल्प तो नहीं चलता है? जब अधिकार है तो अधिकारी को अधिकार न मिले यह हो नहीं सकता। निश्चय है तो विजय हुई पड़ी है। सेवाधारी की यही परिभाषा है। जो परिभाषा है वही प्रैक्टिकल है। सेवाधारी अर्थात् सहज सफ़लता का अनुभव करने वाले।

(30.01.1985)

विदेशी टीचर्स भाई-बहिनों सेः- यह कौन-सा ग्रुप है? (सेवाधारियों का, राइटहैंण्डस का) आज बापदादा अपने फ्रैण्डस से मिलने आये हैं। फ्रैण्डस का नाता रमणीक है। जैसे बाप सदा बच्चों के स्नेह में समाये हुए हैं वैसे बच्चे भी बाप के स्नेह में समाये हुए हैं। तो यह लवलीन ग्रुप है। खाते-पीते, चलते कहाँ लीन रहते हो? लव में ही रहते हो ना! यह लवलीन रहने की स्थिति सदा हर बात में सहज ही बाप समान बना देती है। क्योंकि बाप के लव में लीन हैं तो संग का रंग लगेगा ना। मेहनत वा मुश्किल से छूटने का सहज साधन है - लवलीन रहना। यह लवलीन अवस्था लकी है, इसके अन्दर माया नहीं आ सकती है। तो बापदादा के अति स्नेही, समीप, समान ग्रुप है। आपके संकल्प और बाप के संकल्प में अन्तर नहीं है। ऐसे समीप हो ना? तब तो बाप समान विश्व-कल्याणकारी बन सकते हो। जो बाप का संकल्प वह बच्चों का। जो बाप के बोल वह बच्चों के। तो हर कर्म आपके क्या बन जाएँ? (आइना) तो हर कर्म ऐसा आइना हो जिसमें बाप दिखाई

दे। ऐसा ग्रुप है ना! जैसे कई आइने होते हैं, दुनिया में भी ऐसे आइने बनाते हैं जिसमें बड़े से छोटा, छोटे से बड़ा दिखाई पड़ता है। तो आपका हर कर्म रूपी दर्पण क्या दिखायेगा? डबल दिखाई दे - आप और बाप। आपमें बाप दिखाई दे। आप, बाप के साथ दिखाई दो। जैसे ब्रह्मा बाप में सदा डबल दिखाई देता था ना। ऐसे आप हरेक में सदा बाप दिखाई दे तो डबल दिखाई दिया ना। ऐसे आइने हो? सेवाधारी विशेष किस सेवा के निमित हो! बाप को प्रत्यक्ष करने की ही विशेष सेवा है। तो अपने हर कर्म, बोल, संकल्प द्वारा बाप को दिखाना। इसी कार्य में सदा रहते हो ना! कभी भी कोई आत्मा अगर आत्मा को देखती है कि यह बहुत अच्छा बोलती, यह बहुत अच्छी सेवा करती, यह बहुत अच्छी दृष्टि देती। तो यह भी बाप को नहीं देखा आत्मा को देखा। यह भी रांग हो जाता है। **आपको देखकर मुख से यह निकले - 'बाबा'! तभी कहेंगे पावरफुल दर्पण हो।** अकेली आत्मा नहीं दिखाई दे, बाप दिखाई दे। इसी को कहा जाता है यथार्थ सेवाधारी। समझा! जितना आपके हर संकल्प में, बोल में 'बाबा-बाबा' होगा उतना औरों को आप से 'बाबा' दिखाई देगा। जैसे आजकल के साइंस के साधनों से आगे जो पहली चीज़ दिखाते वह गुम हो जाती और दूसरी दिखाई देती। ऐसे आपके साइलेन्स की शक्ति आपको देखते हुए आपको गुम कर दे। बाप को प्रत्यक्ष कर दे। ऐसी शक्तिशाली सेवा हो। बाप से संबंध जोड़ने से आत्मायें सदा शक्तिशाली बन जाती हैं। अगर आत्मा से संबंध जुट जाता तो सदा के लिए शक्तिशाली नहीं बन सकते। समझा। सेवाधारियों की विशेष सेवा क्या है? अपने द्वारा बाप को दिखाना। आपको देखें और 'बाबा-बाबा' के गीत गाने शुरू कर दें। ऐसी सेवा करते हो ना! अच्छा -

(21.02.1985)

आप लोग कितना मौज में रहते हो। बेफ़िकर बादशाह! बिन कौड़ी बादशाह! बेगमपुर के बादशाह! ऐसी मौज में कोई रह न सके। दुनिया के साहूकार से साहूकार हो वा दुनिया में नामीग्रामी कोई व्यक्ति हो, बहुत ही शास्त्रवादी हो,

वेदों के पाठ पढ़ने वाले हो, नौधा भक्त हो, नम्बरवन साइन्सदान हो, कोई भी आक्यूपेशन वाले हो लेकिन ऐसी मौज की जीवन नहीं हो सकती। जिसमें मेहनत नहीं। मुहब्बत ही मुहब्बत है। चिंता नहीं। लेकिन शुभचिन्तक है, शुभचिन्तन है। ऐसी मौज की जीवन सारे विश्व में चक्कर लगाओ, अगर कोई मिले तो ले आओ। इसलिए गीत गाते हो ना। मधुबन में, बाप के संसार में मौजें ही मौजें हैं। खाओ तो भी मौज, सोओ तो भी मौज। गोली लेकर सोने की ज़रूरत नहीं। बाप के साथ सो जाओ तो गोली नहीं लेनी पड़ेगी। अकेले सोते हो तो कहते हाय ब्लडप्रेशर है, दर्द है। तब गोली लेनी पड़ती। बाप साथ हो, बस बाबा आपके साथ सो रहे हैं, यह है गोली। ऐसा भी फ़िर समय आयेगा जैसे आदि में दवाईयाँ नहीं चलती थी। याद है ना। शुरू में कितनी समय दवाईयाँ नहीं थी। हाँ, थोड़ा मलाई मक्खन खा लिया। दवाई नहीं खाते थे। तो जैसे आदि में प्रैक्टिस कराई है ना। थे तो पुराने शरीर। अन्त में फ़िर वह आदि वाले दिन रिपीट होंगे। साक्षात्कार भी सब बहुत विचित्र करते रहेंगे। बहुतों की इच्छा है ना - एक बार साक्षात्कार हो जाए। **लास्ट तक जो पक्के होंगे उन्हों को साक्षात्कार होंगे फ़िर वही संगठन की भट्ठी होगी। सेवा पूरी हो जायेगी। अभी सेवा के कारण जहाँ तहाँ बिखर गये हो! फिर नदियाँ सब सागर में समा जायेंगी। लेकिन समय नाजुक होगा। साधन होते हुए भी काम नहीं करेंगे। इसलिए बुद्धि की लाइन बहुत क्लीयर चाहिए। जो टच हो जाए कि अभी क्या करना है। एक सेकण्ड भी देरी की तो गये। जैसे वह भी अगर बटन दबाने में एक सेकण्ड भी देरी की तो क्या रिजल्ट होगी? यह भी अगर एक सेकण्ड टचिंग होने में देरी हुई तो फ़िर पहुँचना मुश्किल होगा। वह लोग भी कितना अटेन्शन से बैठे रहते हैं। तो यह बुद्धि की टचिंग।** जैसे शुरू में घर बैठे आवाज़ आया, बुलावा हुआ कि आओ, पहुँचो। अभी निकलो। और फौरन निकल पड़े। ऐसे ही अन्त में भी बाप का आवाज़ पहुँचेगा। जैसे साकार में सभी बच्चों को बुलाया। ऐसे आकार रूप में सभी बच्चों को - 'आओ-आओ' का आह्वान करेंगे। सब आना

और साथ जाना। ऐसे सदा अपनी बुद्धि क्लीयर हो और कहाँ अटेन्शन गया तो बाप का आवाज़, बाप का आह्वान मिस हो जायेगा। यह सब होना ही है।

टीचर्स सोच रहीं हैं - हम तो पहुँच जायेंगे। यह भी हो सकता है कि आपको वहाँ ही बाप डायरेक्शन दें। वहाँ कोई विशेष कार्य हो। वहाँ कोई औरों को शक्ति देनी हो। साथ ले जाना हो। यह भी होगा लेकिन बाप के डायरेक्शन प्रमाण रहें। मनमत से नहीं। लगाव से नहीं। हाय मेरा सेन्टर; यह याद न आये। फलाना जिज्ञासु भी साथ ले जाऊँ, यह अनन्य है, मददगार है। ऐसा भी नहीं। किसी के लिए भी अगर रुके तो रह जायेंगे। ऐसे तैयार हो ना! इसको कहते हैं एवररेडी। सदा ही सब कुछ समेटा हुआ हो। उस समय समेटने का संकल्प नहीं आवे। यह कर लूँ, यह कर लूँ। साकार में याद है ना - जो सर्विसएबुल बच्चे थे उन्हों की स्थूल बैग बैगेज सदा तैयार होती थी। ट्रेन पहुँचने में 5 मिनट हैं और डायरेक्शन मिलता था कि जाओ। तो बैग बैगेज तैयार रहते थे। एक स्टेशन पहले ट्रेन पहुँच गई है - और वह जा रहे हैं। ऐसे भी अनुभव किया ना। यह भी मन की स्थिति में बैग बैगेज तैयार हो। बाप ने बुलाया और बच्चे जी हाज़िर हो जाएँ। इसको कहते हैं एवररेडी।

(06.03.1985)

सेवाधारी (टीचर्स) बहिनों सेः- सेवाधारी अर्थात् त्यागी तपस्वी आत्मायें। सेवा का फल तो सदा मिलता ही है लेकिन त्याग और तपस्या से सदा ही आगे बढ़ती रहेंगी। सदा अपने को विशेष आत्मायें समझ कर विशेष सेवा का सबूत देना है। यही लक्ष्य रखो। जितना लक्ष्य मज़बूत होगा उतनी बिल्डिंग भी अच्छी बनेगी। तो सदा सेवाधारी समझ आगे बढ़ो। जैसे बाप ने आपको चुना वैसे आप फ़िर प्रजा को चुनो। स्वयं सदा निर्विघ्न बन सेवा को भी निर्विघ्न बनाते चलो। सेवा तो सभी करते हैं लेकिन निर्विघ्न सेवा हो, इसी में नम्बर मिलते हैं। **जहाँ भी रहते हो वहाँ हर स्टूडेन्ट निर्विघ्न हो, विघ्नों की लहर न हो। शक्तिशाली वातावरण**

हो। इसको कहते हैं - निर्विघ्न आत्मा। यही लक्ष्य रखो - ऐसा याद का वातावरण हो जो विघ्न आ न सके। किला होता है तो दुश्मन आ नहीं सकता। तो निर्विघ्न बन निर्विघ्न सेवाधारी बनो।

(20.11.1985)

सेवाधारी (टीचर्स) बहिनों सेः- सेवाधारी अर्थात् अपनी शक्तियों द्वारा औरों को भी शक्तिशाली बनाने वाले। सेवाधारी की विशेषता यही है। निर्बल में बल भरने के निमित्त बनना, यही सच्ची सेवा है। ऐसी सेवा का पार्ट मिलना भी हीरो पार्ट है। तो हीरो पार्टधारी कितने नशे में रहती हो? सेवा के पार्ट से जितना अपने को नम्बर आगे बढ़ाने चाहो बढ़ा सकती हो। क्योंकि सेवा आगे बढ़ने का साधन है। सेवा में बिजी रहने से स्वत: ही सब बातों से किनारा हो जाता है। हर एक सेवा स्थान स्टेज है, जिस स्टेज पर हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है। साधन तो बहुत हैं लेकिन सदा साधना में शक्ति होनी चाहिए। अगर बिना शक्ति के साधन यूज़ करते हैं तो जो सेवा की रिजल्ट निकलनी चाहिए वह नहीं निकलती है। पुराने समय में जो वीर लोग होते थे वह सदैव अपने शस्त्रों को देवताओं के आगे अर्पण कर उसमें शक्ति भरकर फ़िर यूज़ करते थे। तो आप सभी भी कोई भी साधन जब यूज़ करते हो तो उसे यूज़ करने के पहले उसे विधिपूर्वक कार्य में लगाते हो? अभी जो भी साधन कार्य में लगाते हो उससे थोड़े समय के लिए लोग आकर्षित होते हैं। सदाकाल के लिए प्रभावित नहीं होते। क्योंकि इतनी शक्तिशाली आत्मायें जो शक्ति द्वारा परिवर्तन कर दिखायें, वह नम्बरवार हैं। सेवा तो सभी करते हो, सभी का नाम है टीचर्स। सेवाधारी हो या टीचर हो लेकिन सेवा में अन्तर क्या है? प्रोग्राम भी एक ही बनाते हो, प्लैन भी एक जैसा करते हो। रीति रसम भी एक जैसी बनती है फिर भी सफलता में अन्तर पड़ जाता है, उसका कारण क्या? शक्ति की कमी। तो साधन में शक्ति भरी। जैसे तलवार में अगर जौहर नहीं हो तो तलवार, तलवार का काम नहीं देती। ऐसे साधन हैं तलवार लेकिन उसमें शक्ति का जौहर चाहिए।

वह जितना अपने में भरते जायेंगे उतना सेवा में स्वतः ही सफ़लता मिलेगी। तो शक्तिशाली सेवाधारी बनो। सदा विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त होना यह भी कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन शक्तिशाली आत्मायें वृद्धि को प्राप्त हों - इसका विशेष अटेन्शन। क्वालिटी निकालो। क्वान्टिटी तो और भी ज़्यादा आयेगी। क्वालिटी के ऊपर अटेन्शन। नम्बर क्वालिटी पर मिलेगा। क्वान्टिटी पर नहीं। एक क्वालिटी वाला 100 क्वान्टिटी के बराबर है। क्वालिटी वाली सेवा - इसको कहा जाता है - शक्तिशाली सेवा।

(27.11.1985)

टीचर्स के साथः- सभी स्वयं को कौन-सी मणि समझते हो? (सन्तुष्टमणि) आज के समय में विशेष सन्तुष्टता की ही आवश्यकता है। पूजा भी ज़्यादा किस देवी की होती है? सन्तोषी की। और सन्तोषी को राजी करना ही सहज होता है। संतोषी सन्तुष्ट जल्दी हो जाती है। संतोषी की पूजा क्यों होती है? क्योंकि आज के समय में टेन्शन बहुत है, परेशानियाँ बहुत हैं, इस कारण असन्तुष्टता बढ़ती जा रही है। इसलिए सन्तुष्ट रहने का साधन सभी सोचते हैं। लेकिन कर नहीं सकते। तो ऐसे समय पर आप सभी सन्तुष्टमणियाँ बन सन्तुष्टता की रोशनी दो। अपने सन्तुष्टता की रोशनी से औरों को भी सन्तुष्ट बनाओ। पहले स्वं से स्वयं सन्तुष्ट रहो फ़िर सेवा में सन्तुष्ट रहो, फ़िर सम्बन्ध में सन्तुष्ट रहो तब ही सन्तुष्टमणि कहलायेंगे। सन्तुष्टता के भी तीन सर्टिफ़िकेट चाहिए। अपने आप से, सेवा से, फ़िर साथियों से। यह तीनों सर्टिफ़िकेट लिए हैं ना! अच्छा है, फ़िर भी दुनिया की हलचल से निकल अचल घर में पहुँच गई। यह बाप के स्थान 'अचल घर' हैं। तो अचल घर में पहुँचना यह भी बड़े भाग्य की निशानी है। त्याग किया तो अचलघर पहुँची। भाग्यवान बन गई लेकिन भाग्य की लकीर और भी जितनी लम्बी खींचने चाहो उतनी खींच सकते हो। लिस्ट में तो आ गई - 'भाग्यवान की'। क्योंकि भगवान की बन गई तो

भाग्यवान हो गई। और सबसे किनारा कर एक को अपना बनाया - तो भाग्यवान हो गई। बापदादा बच्चों की इस हिम्मत को देख खुश हैं। कुछ भी हो फ़िर भी त्याग और सेवा की हिम्मत में श्रेष्ठ हो। छोटे हो या नये हो लेकिन बापदादा त्याग और हिम्मत की मुबारक देते हैं। उसी रिगार्ड से बापदादा देखते हैं। निमित्त बनने का भी महत्व है। इसी महत्व से सदा आगे बढ़ाते हुए विश्व में महान आत्मायें बन प्रसिद्ध हो जायेंगी। तो अपनी महानता को तो जानती हो ना! जितने महान उतने निर्मान। जैसे फलदायक वृक्ष की निशानी है - झुकना। ऐसे जो निर्मान हैं वही प्रत्यक्ष फल खाने वाले हैं। संगमयुग की विशेषता ही यह है।

(23.12.1985)

टीचर्स सदा स्वस्थिति से स्वयं भी आगे बढ़ने वाली और दूसरों को भी आगे बढ़ाने वाली, बढ़ना है और बढ़ाना है - यही टीचर्स का विशेष लक्ष्य है। और लक्षण भी हैं। सदा बाप समान मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा बन आगे बढ़ते और बढ़ाते चलो। त्याग से भाग्य प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा हो सदा त्याग ही भाग्य है। श्रेष्ठ भाग्य, श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ फल.. सदा इस प्रत्यक्ष फल से स्वयं और दूसरों को उड़ाते चलो। अपने को हर कर्म में निमित्त समझना यही श्रेष्ठ बनने का सहज साधन है। सेवाधारी बनना यह भी संगमयुग पर विशेष भाग्य की निशानी है। सेवा करना अर्थात् जन्म-जन्म के लिए सम्पन्न बनना। क्योंकि सेवा से जमा होता है और जमा हुआ अनेक जन्म खाते रहेंगे। अगर सेवा में जमा हो रहा है, यह स्मृति रहे तो सदा खुशी में रहेंगे। और खुशी के कारण कभी थकेंगे नहीं। सेवा अथक बनाने वाली है। खुशी का अनुभव कराने वाली है।

सेवाधारी अर्थात् बाप समान। तो समानता को चेक करते बाप समान बन औरों को भी बाप समान बनाते चलो। सेन्टर के वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने के लिए एक दो चक्र लगाते हुए शक्तिशाली याद की अनुभूतियों का प्रोग्राम

बनाओ। शक्तिशाली वातावरण कई बातों से स्वत: दूर कर देता है। अभी स्वयं क्वालिटी वाले बन, क्वालिटी वाले बनाते चलो।

(25.12.1985)

टीचर्स से- निमित्त सेवाधारी बनने में विशेष भाग्य की प्राप्ति का अनुभव करती हो? सेवा के निमित्त बनना अर्थात् गोल्डन चांस मिलना। क्योंकि सेवाधारी को स्वत: ही याद और सेवा के सिवाए और कुछ रहता नहीं। अगर सच्चे सेवाधारी है तो दिन रात सेवा में बिजी होने के कारण सहज ही उन्नति का अनुभव करते हैं। यह मायाजीत बनने की एकस्ट्रा लिफ्ट है। तो निमित्त सेवाधारी जितना आगे बढ़ने चाहें उतना सहज आगे बढ़ सकते हैं। यह विशेष वरदान है। तो जो एकस्ट्रा लिफ्ट वा गोल्डन चांस मिला है उससे लाभ लिया है? सेवाधारी स्वत: ही सेवा का मेवा खाने वाली आत्मा बन जाते हैं। क्योंकि सेवा का प्रत्यक्षफल अभी मिलता है। अच्छी हिम्मत रखी है। हिम्मत वाली आत्माओं पर बापदादा की मदद का हाथ सदा है। इसी मदद से आगे बढ़ रही हो और बढ़ती रहना। यही बाप की मदद का हाथ सदा के लिए आशीर्वाद बन जाता है। बापदादा सेवाधारियों को देख विशेष खुश होते हैं क्योंकि बाप समान कार्य में निमित्त बनें हुए हो। सदा आप समान शिक्षकों की वृद्धि करते चलो। सदा नया उमंग नया उत्साह स्वयं में धारण करो और दूसरों को भी दिखाओ। आपका उमंग देखकर स्वत: सेवा होती रहे। हर समय कोई सेवा की नवीनता का प्लैन बनाते रहो। ऐसा प्लैन हो जो विहंग मार्ग की सेवा का विशेष साधन हो। अभी ऐसी कोई कमाल करके दिखाओ। जब स्वयं निर्विघ्न हो, अचल हो तो सेवा में नवीनता सहज दिखा सकते हो। जितना योगयुक्त बनेंगे उतनी नवीनता टच होगी। ऐसा करना है और याद के बल से सफलता मिल जायेगी। तो विशेष कोई कार्य करके दिखाओ।

(01.01.1986)

टीचर्स से- नई दुनिया बनाने का ठेका उठाया है ना! तो सदा नई दुनिया बनाने के लिए उमंग, नया उत्साह सदा रहता है कि विशेष मौके पर उमंग आता है, कभी-कभी के उमंग उत्साह से नई दुनिया नहीं स्थापन होती। सदा उमंग उत्साह वाले ही नई दुनिया बनाने के निमित्त बनते हैं। जितना नई दुनिया के नजदीक आते जायेंगे उतना ही नई दुनिया की विशेष वस्तुओं का विस्तार होता रहेगा। नई दुनिया में आने वाले भी आप हो तो बनाने वाले भी आप हो। तो बनाने में शक्तियाँ भी लगती है, समय भी लगता है लेकिन जो शक्तिशाली आत्मायें हैं वह सदा विघ्नों को समाप्त कर आगे बढ़ते रहते है। तो ऐसे नई दुनिया के फाउण्डेशन हो। अगर फाउण्डेशन कच्चा होगा तो बिल्डिग का क्या होगा! तो नई दुनिया बनाने की ड्यूटी वाले जो हैं उन्हों को मेहनत कर फाउण्डेशन पक्का बनाना है। ऐसा पक्का बनाओ जो 21 जन्म तक बिल्डिग सदा चलती रहे। तो अपनी 21 जन्मों की बिल्डिग तैयार की है ना!

बाप के दिलतख्तनशीन आत्मायें हैं, ऐसा अनुभव करते हो? इस समय दिलतख्तनशीन हैं फिर होंगे विश्व के राज्य के तख्तनशीन। दिलतख्तनशीन वही बनते जिनके दिल में एक बाप की याद समाई रहती है। जैसे बाप की दिल में सदा बच्चे समाये हुए हैं ऐसे बच्चों की दिल में बाप की याद समाई हो। अगर ज़रा भी किसी और की याद आयी तो बाप की याद नहीं रुकती। दिलतख्तनशीन अर्थात् बाप की याद सदा और स्वत: रहे। बाप के सिवाए और है ही क्या! तो तख्तनशीन हैं - इसी नशे और खुशी में रहो।

(08.01.1986)

सेवाधारी-टीचर्स बहनों से :- सेवाधारी अर्थात् सदा निमित्त- निमित्त भाव-सेवा में स्वत: ही सफलता दिलाता है। निमित्त भाव नहीं तो सफलता नहीं। सदा बाप के थे, बाप के हैं और बाप के ही रहेंगे - ऐसी प्रतिज्ञा कर ली है ना? सेवाधारी अर्थात् हर कदम बाप के कदम पर रखने वाली। इसको कहते हैं -

फ़ालो फ़ादर करने वाले। हर कदम श्रेष्ठ मत पर श्रेष्ठ बनाने वाले सेवाधारी हो ना। सेवा में सफलता प्राप्त करना यही सेवाधारी का श्रेष्ठ लक्ष्य है। तो सभी श्रेष्ठ लक्ष्य रखने वाले हो ना। जितना सेवा में वा स्व में व्यर्थ समाप्त हो जाता है उतना ही स्व और सेवा समर्थ बनती है। तो व्यर्थ को खत्म करना सदा समर्थ बनना। यही सेवाधारियों की विशेषता है। जितना स्वयं निमित्त बनी हुई आत्मायें शक्तिशाली होंगी उतनी सेवा भी शक्तिशाली होगी। सेवाधारी का अर्थ ही है - सेवा में सदा उमंग उत्साह लाना। स्वयं उमंग उत्साह में रहने वाले ही औरों को उमंग उत्साह दिला सकते हैं। तो सदा प्रत्यक्ष रूप में उमंग उत्साह दिखाई दे। ऐसे नहीं कि मैं अन्दर में तो रहती हूँ लेकिन बाहर नहीं दिखाई देता। गुप्त पुरुषार्थ और चीज है लेकिन उमंग उत्साह छिप नहीं सकता है। चेहरे पर सदा उमंग उत्साह की झलक स्वत: दिखाई देगी। बोले, न बोले लेकिन चेहरा ही बोलेगा, झलक बोलेगी। ऐसे सेवाधारी हो?

सेवा का गोल्डन चांस यह भी श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है। सेवाधारी बनने का भाग्य तो प्राप्त हो गया। अभी सेवाधारी नम्बरवन हैं या नम्बर टू हैं यह भी भाग्य बनाना और देखना है। सिर्फ एक भाग्य नहीं लेकिन भाग्य पर भाग्य की प्राप्ति। जितने भाग्य प्राप्त करते जाते उतना नम्बर स्वत: ही आगे बढ़ता जाता है। इसको कहते हैं - 'पद्मापद्म भाग्यवान'। एक सबजेक्ट में नहीं सब सबजेक्ट में सफलता स्वरूप। अच्छा -

सबसे ज़्यादा खुशी किसको है - बाप को है या आपको? क्यों नहीं कहते हो कि मेरे को है। द्वापर से भक्ति में पुकारा और अब प्राप्त कर लिया तो कितनी खुशी होगी! 63 जन्म प्राप्त करने की इच्छा रखी और 63 जन्मों की इच्छा पूर्ण हो गई तो कितनी खुशी होगी! किसी भी चीज़ की इच्छा पूर्ण होती है तो खुशी होती है ना। यह खुशी ही विश्व को खुशी दिलाने वाली है। आप खुश होते हो तो सारी विश्व खुश हो जाती है। ऐसी खुशी मिली है ना! जब आप बदलते हो तो दुनिया भी बदल जाती है। और ऐसी बदलती है जिसमें दु:ख और अशान्ति का नामो-निशान नहीं।

तो सदा खुशी में नाचते रहो। सदा अपने श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा करते चलो। सभी को खुशी का खज़ाना बाँटो। आज के संसार में खुशी नहीं है। सब खुशी के भिखारी हैं, उन्हें खुशी से भरपूर बनाओ। सदा इसी सेवा से आगे बढ़ते रहो। जो आत्मायें दिलशिकस्त बन गई हैं उन्हों में उमंग उत्साह लाते रहो। कुछ कर सकते नहीं, हो नहीं सकता... ऐसे दिलशिकस्त हैं और आप विजयी बन विजयी बनाने का उमंग उत्साह बढ़ाने वाले हो। सदा विजय की स्मृति का तिलक लगा रहे। तिलकधारी भी हैं और स्वराज्य अधिकारी भी हैं - इसी स्मृति में सदा रहो।

(15.01.1986)

'सिल्वर जुबली में आई हुई टीचर्स बहनों के प्रति अव्यक्त महावाक्य'

सभी ने सिल्वर जुबली मनाई! बनना तो गोल्डन एजड है, सिल्वर तो नहीं बनना है ना! गोल्डन एजड बनने के लिए इस वर्ष क्या प्लैन बनाया है? सेवा का प्लैन तो बनाते ही हो लेकिन स्व-परिवर्तन और बेहद का परिवर्तन - उसके लिए क्या प्लैन बनाया है? यह तो अपने-अपने स्थान का प्लैन बनाते हो, यह करेंगे। लेकिन आदि निमित्त हो तो बेहद के प्लैन वाले हो। ऐसे बुद्धि में इमर्ज होता है कि हमें इतने सारे विश्व का कल्याण करना है, यह इमर्ज होता है? या समझते हो कि यह तो जिनका काम है वही जानें! कभी बेहद का ख्याल आता है या अपने ही स्थानों का ख्याल रहता है? नाम ही है विश्व-कल्याणकारी, फलाने स्थान के कल्याणकारी तो नहीं कहते। लेकिन बेहद सेवा का क्या संकल्प चलता है? बेहद के मालिक बनना हैं ना, स्टेट के मालिक तो नहीं बनना है। सेवाधारी निमित्त आत्माओं में जब यह लहर पैदा हो तब वह लहर औरों में भी पैदा होगी। अगर आप लोगों में यह लहर नहीं होगी तो दूसरों में आ नहीं सकती। तो सदा बेहद के अधिकारी समझ, बेहद का प्लैन बनाओ। पहली मुख्य बात है -किसी भी प्रकार के हद के बन्धन में बंधे हुए तो नहीं हैं ना! बन्धन मुक्त ही बेहद की सेवा में सफल होंगे। यहाँ ही यह प्रत्यक्ष होता जा रहा है और होता रहेगा। तो इस वर्ष में क्या

विशेषता दिखायेंगे? दृढ़ संकल्प तो हर वर्ष करते हो। जब भी कोई ऐसा चांस बनता है उसमें भी दृढ़ संकल्प तो करते भी हो, कराते भी हो। तो दृढ़ संकल्प लेना भी कामन हो गया है। कहने में दृढ़ संकल्प आता है लेकिन होता है - संकल्प। अगर दृढ़ होता तो दुबारा नहीं लेना पड़ता। 'दृढ़ संकल्प' यह शब्द कामन हो गया है। अभी कोई भी काम करते है तो कहते ऐसे ही हैं कि हाँ, दृढ़ संकल्प करते हैं लेकिन ऐसा कोई नया साधन निकालो जिससे सोचना और करना समान हो। प्लैन और प्रैक्टिकल दोनों साथ हों। प्लैन तो बहुत हैं लेकिन प्रैक्टिकल में समस्यायें भी आती हैं, मेहनत भी लगती है, सामना करना भी पड़ता है, यह तो होगा और होता ही रहेगा। लेकिन जब लक्ष्य है तो प्रैक्टिकल में सदा आगे बढ़ते रहेंगे। अभी ऐसा प्लैन बनाओ जो कुछ नवीनता दिखाई दे। नहीं तो हर वर्ष इकट्ठे होते हो, कहते हो वैसे का वैसा ही है। एक दो को वैसा ही देखते। मनपसन्द नहीं होता। जितना चाहते हैं उतना नहीं होता। वह कैसे हो? इसके लिए - 'ओटे सो अर्जुन'। एक भी निमित्त बन जाता है तो औरों में भी उमंग उत्साह तो आता ही है। तो इतने सभी इकट्ठे हुए हो, ऐसा कोई प्लैन प्रैक्टिकल का बनाओ। थ्योरी के भी पेपर्स होते हैं, प्रैक्टिकल के भी होते हैं। यह तो है कि जो आदि से निमित्त बने हैं उन्हों का भाग्य तो श्रेष्ठ है ही। अभी नया क्या करेंगे?

जैसे गोल्डन जुबली के निमित्त आत्माओं का स्नेह का संगठन दिखाई देता है और उस स्नेह के संगठन ने प्रत्यक्षफल दिखाया - सेवा की वृद्धि, सेवा में सफलता। ऐसे ही ऐसा संगठन बनाओ जो किले के रूप में हो। जैसे गोल्डन जुबली वाली निमित्त दीदियाँ, दादियाँ जो भी हैं उन्होंने जब स्नेह और संगठन की शक्ति का प्रत्यक्षफल दिखाया तो आप भी प्रत्यक्षफल दिखाओ। तो एक दो के समीप आने के लिए समान बनना पड़ेगा। संस्कार भिन्न-भिन्न तो हैं भी और रहेंगे भी। अभी जगदम्बा को देखो और ब्रह्मा को देखो - संस्कार भिन्न-भिन्न ही रहे। अभी जो भी निमित्त दीदी-दादियाँ हैं, संस्कार एक जैसे तो नहीं लेकिन संस्कार मिलाना - यह है स्नेह का सबूत। यह नहीं सोचो कि संस्कार मिलें तो संगठन हो, यह नहीं।

संस्कार मिलाने से संगठन मजबूत बन ही जाता है। अच्छा - यह भी हो ही जायेगा। सेवा एक है लेकिन निमित्त बनना, निमित्त भाव में चलना - यही विशेषता है। यही तो हद निकलनी है ना? इसके लिए सोचा? तो सबको चेन्ज करें। एक सेन्टर वाले दूसरे सेन्टरों में जाने चाहिए। सभी तैयार हो? आर्डर निकलेगा। आपका तो हैंडसअप हैं ना? बदलने में फायदा भी है। इस वर्ष यह नई बात करें ना। नष्टोमोहा तो होना ही पड़ेगा। जब त्यागी तपस्वी बन गये तो यह क्या है? त्याग ही भाग्य है। तो भाग्य के आगे यह क्या त्याग है! आफर करने वालों को आफरीन मिल जाती है। तो सभी बहादुर हो! बदली माना बदली। कोई को भी कर सकते हैं। हिम्मत है तो क्या बड़ी बात है। अच्छा तो इस वर्ष यह नवीनता करेंगे। पसन्द हैं ना! जिन्होंने एवररेडी का पाठ आदि से पढ़ा हुआ है उनमें यह भी अन्दर ही अन्दर बल भरा हुआ होता है। **कोई भी आज्ञा पालन करने का बल स्वत: ही मिलता है** तो सदा आज्ञाकारी बनने का बल मिला हुआ है, अच्छा - सदा श्रेष्ठ भाग्य है और भाग्य के कारण सहयोग प्राप्त होता ही रहेगा। समझा!

(18.01.1986)

विदेश सेवा पर उपस्थित टीचर्स प्रतिः- निमित्त सेवाधारी बच्चों को बापदादा सदा 'समान भव' के वरदान से आगे बढ़ाते रहते हैं। बापदादा सभी पाण्डव चाहे शक्तियाँ, जो भी सेवा के लिए निमित्त हैं, उन सबको विशेष 'पद्मापद्म भाग्यवान श्रेष्ठ आत्मायें' समझते हैं। सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी और शक्ति, यह विशेष अनुभव तो करते ही हैं। अभी जितना स्वयं शक्तिशाली लाइट हाउस, माइट हाउस बन सेवा करेंगे उतना जल्दी चारों ओर प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे। हर एक निमित्त सेवाधारी को विशेष सेवा की सफलता के लिए दो बातें ध्यान में रखनी हैं - एक बात- सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी का, हर स्थान से यह विशेषता दिखाई दे। दूसरा - सदा हर निमित्त सेवाधारियों को पहले स्वयं को यह दो सर्टीफिकेट देने हैं। एक 'एकता', दूसरा 'सन्तुष्टता'। **संस्कार भिन्न-भिन्न होते**

ही हैं और होंगे भी लेकिन संस्कारों को टकराना या किनारा करके स्वयं को सेफ रखना - यह अपने ऊपर है। कुछ भी हो जाता है तो अगर कोई का संस्कार ऐसा है तो दूसरा ताली नहीं बजावे। चाहे वह बदलते है या नहीं बदलते है लेकिन आप तो बदल सकते हो ना? अगर हरेक अपने को चेन्ज करे, समाने की शक्ति धारण करे तो दूसरे का संस्कार भी अवश्य शीतल हो जायेगा। तो सदा एक दो में स्नेह की भावना से, श्रेष्ठता की भावना से सम्पर्क में आओ, क्योंकि निमित्त सेवाधारी - बाप के सूरत का दर्पण हैं। तो जो आपकी प्रैक्टिकल जीवन है वही बाप के सूरत का दर्पण हो जाता है। इसलिए सदा ऐसे जीवन रूपी दर्पण हो - जिसमें बाप - जो है जैसा है वैसा दिखाई दे। बाकी मेहनत बहुत अच्छी करते हो, हिम्मत भी अच्छी है। सेवा की वृद्धि उमंग भी बहुत अच्छा है। इसलिए विस्तार को प्राप्त कर रहे हो। सेवा तो अच्छी है, अभी सिर्फ बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए प्रत्यक्ष जीवन का प्रमाण सदा दिखाओ। जो सभी एक ही आवाज से बोलें कि यह ज्ञान की धारणाओं में तो एक हैं लेकिन संस्कार मिलाने में भी नम्बरवन हैं। ऐसे भी नहीं कि यह इन्डिया की टीचर अलग हैं, फारेन की टीचर अलग हैं। सभी एक हैं। यह तो सिर्फ सेवा के निमित्त बनें हुए हैं, स्थापना में सहयोगी बनें हैं और अभी भी सहयोग दे रहें हैं, इसलिए स्वतः ही सबमें विशेष पार्ट बजाना पड़ता है। वैसे **बापदादा व निमित्त आत्माओं के पास विदेशी वा देशी में कोई अन्तर नहीं है। जहाँ जिसकी सेवा की विशेषता है, फिर चाहे कोई भी हो, वहाँ उसकी विशेषता से लाभ लेना होता है। बाकी एक दो को रिगार्ड देना यह भी ब्राह्मण कुल की मर्यादा है। स्नेह लेना और रिगार्ड देना। विशेषता को महत्व दिया जाता है, न कि व्यक्ति को।** बापदादा के लिए और ही जो पीछे-पीछे आते हैं वह विशेष स्नेह के पात्र हैं। जैसे छोटे बच्चे होते हैं तो उनको एक्स्ट्रा प्यार दिया जाता है। आप तो छोटे नहीं हो, बड़े हो फिर भी बापदादा के पास सेवाधारियों के लिए सदा रिगार्ड है, क्योंकि साथी हैं ना! अगर आप लोग सेवा के निमित्त नहीं बनते तो बाप को कौन जानता!

बापदादा - आप राइट हैण्डस के बिना स्थापना नहीं कर सकते। इसलिए तो देखो दूर-दूर से चुनकर राइट हैण्ड बना लिए। इसीलिए ब्रह्मा की भुजायें बहुत गाई हुई हैं। तो आप सब राइट हैण्डस हो ना? लेफ्ट हैण्ड तो नहीं! लेफ्ट हैण्ड वह जिसको बापदादा कहते हैं पछड़माल। राइटहैण्ड अर्थात् सदा राइटियस कार्य करने वाले, सदा अपने राइट अधिकार के रूहानी नशे में रहने वाले। ऐसे हो ना? चाहे कुछ भी हो बापदादा को पसन्द हो, बस इसी खुशी में रहो। अच्छा - बापदादा देखते हैं छोटी छोटियों ने कमाल अच्छी की है। स्थिति में बड़ी हो, स्थिति में छोटी नहीं हो। फिर भी त्याग तो कम नहीं किया है! त्याग की मुबारक। इसलिए बापदादा डबल विदेशी, डबल भाग्यवान, डबल ताजधारी सब डबल कहते हैं। तो सर्टीफिकेट भी डबल है ना। अच्छा - डबल विदेशी 108 की माला में कितने आयेंगे? सब आयेंगे तो डबल माला करनी पड़ेगी। एक युगल दाने के बजाए सभी युगल दाने बनाने पड़ेंगे। यह तो भक्ति के 108 हैं, आप तैयार हो जाओ तो बापदादा युगल दानों की माला बनायेंगे। यह लिमिट 108 ही फिक्स नहीं हैं और बढ़ सकते हैं। यह तो सिर्फ नम्बर दिखाये हैं। इसलिए 108 की हद नहीं रखो - रेस करो। वह भक्ति की माला यह प्रैक्टिकल की माला है। अभी यह वर्ष मेकप करने को दिया है इसलिए लगाओ जम्प। माला के नम्बर बदली हो सकते हैं, इसकी कोई बात नहीं। अच्छा - अभी यह रिकार्ड दिखाओ कि पूरा एक साल कोई भी समस्या स्वरूप नहीं बनेंगे, समाधान स्वरूप रहेंगे। फिर भट्ठियाँ करायेंगे, समस्या में समय नहीं देंगे। भारत में पहले जब सेवा शुरू हुई तो परखने में, सेट करने में टाइम लगा। अभी समझ गये हैं तो सहज हो गया है। जब भी कोई परिस्थिति आती है तो उस समय बुद्धि की लाइन क्लीयर चाहिए तो टचिंग होगी कि किस विधि से इसको ठीक करें। सिर्फ उस समय स्वयं घबरा नहीं जाओ। स्वयं शक्ति रूप में रहो तो दूसरा स्वत: ही हल्का हो जायेगा। उसका वार नहीं हो सकेगा। सदा ही सेफ रहेंगे। फिर भी एक दो में नजदीक हो, जो अनुभवी हैं उनसे राय सलाह भी कर सकते हो। **एक बात ज़रूर करो - जो भी सेन्टर पर रहते हो वह आपस में सारे दिन में**

एक टाइम लेन-देन ज़रूर करो। नहीं तो एक, एक तरफ रहता है दूसरा दूसरे तरफ। उससे परिवार के प्यार की महसूसता नहीं आती है। और स्वयं में वह स्नेह की शक्ति नहीं होगी तो दूसरों को भी बाप के स्नेही नहीं बना सकेंगे। इसलिए एक दो को ज़रूर पूछो क्या है - कैसे हो? कोई बीमार है, कोई मन की तकलीफ है, कोई शरीर की तकलीफ है तो पूंछने से वह समझेंगे कि हमारा भी कोई है। कोई भी सेवा का प्लैन भी बनाते हो तो दोनों तीनों मिलकर, चाहे छोटी भी हो, तो भी उससे 'हाँ जी' करायेंगे तो वह भी खुश हो जायेगी। वह भी समझेगी की इसमें मेरा हाथ है, और विशेष जो सर्विसएबुल सलाह देने वाले हैं उन्हों की भी मीटिंग ज़रूर करनी चाहिए, क्योंकि उनके सहयोग के बिना आप भी क्या कर सकेंगे? स्नेह और शक्ति का बैलेन्स रखते हुए हैन्डिल करो और आगे बढ़ो।

(31.03.1986)

आज टीचर्स आगे बैठी हैं। टीचर्स भी ठेकेदार हैं। कान्ट्रैक्ट (ठेका) लिया है ना। स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करना ही है। ऐसा बड़े-ते-बड़ा कान्ट्रैक्ट (ठेका) लिया है ना! जैसे दुनिया वाले कहते आप मरे मर गई दुनिया, आप नहीं मरे तो दुनिया भी नहीं मरी! ऐसे ही स्व-परिवर्तन ही विश्व-परिवर्तन है। बिना स्व-परिवर्तन के कोई भी आत्मा प्रति कितनी भी मेहनत करो - परिवर्तन नहीं हो सकता। आजकल के समय में सिर्फ सुनने से नहीं बदलते लेकिन देखने से बदलते हैं। मधुबन-भूमि में कैसी भी आत्मा क्यों बदल जाती है! सुनाते तो सेन्टर पर भी हो लेकिन यहाँ आने से स्वयं देखते हैं, स्वयं देखने के कारण बदल जाते हैं। कई बन्धन वाली माताओं के भी युगल उन्हों के जीवन के परिवर्तन को देख कर बदल जाते हैं। ज्ञान सुनाने की कोशिश करेंगे तो नहीं सुनेंगे। लेकिन देखने से वह प्रभाव उन्हों को भी परिवर्तन कर देता। इसलिए कहा - आज की दुनिया देखना चाहती

है। तो टीचर्स का यही विशेष कर्त्तव्य है - करके दिखाना अर्थात् बदल करके दिखाना। समझा।

(15.11.1989)

टीचर्स ने सुना! सच्चा साहेब मेरे ऊपर कितना राज़ी है, इसका राज़ तो सुना ना! राज़ सुनने से सभी टीचर्स राज़युक्त बनी वा दिल में आता है कि इस भाग्य की मेरे में कमी है? कभी धन की खींचातान में, कभी जन की खींचातान में - ऐसी जीवन का अनुभव तो नहीं करती हो ना! सुनाया था एक ही स्लोगन विशेष निमित्त टीचर्स प्रति, लेकिन है सभी के प्रति। हर बात में बाप की श्रीमत प्रमाण 'जी हज़ूर-जी हज़ूर' करते रहो। बच्चों का 'जी हज़ूर' करना और बाप का बच्चों के आगे 'हाज़िर हज़ूर' होना। जब हज़ूर हाज़िर हो गया तो किसी भी बात की कमी नहीं रहेगी, सदा सम्पन्न हो जायेंगे। दाता और भाग्यविधाता - दोनों की प्राप्तियों के भाग्य का सितारा मस्तक पर चमकने लगेगा। टीचर्स को तो ड्रामा अनुसार बहुत भाग्य मिला हुआ है। सारा दिन सिवाए बाप और सेवा के और काम ही क्या है! धंधा ही यह है। प्रवृत्ति वालों को तो कितना निभाना पड़ता है। आप लोगों को तो एक ही काम है, कई बातों से स्वतंत्र पंछी हो। समझते हो अपने भाग्य को? कोई सोने का पिंजरा, हीरों का पिंजरा तो नहीं बना देते? बनाते भी खुद हैं, फँसते भी खुद हैं। बाप ने तो स्वतंत्र पंछी बनाया, उड़ता पंछी बनाया। बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो। समझा? हरेक को भाग्य की विशेषता अवश्य मिली हुई है। प्रवृत्ति मार्ग वालों की विशेषता अपनी, टीचर्स की विशेषता अपनी, गीता-पाठशाला वालों की विशेषता अपनी - भिन्न-भिन्न विशेषताओं से सभी विशेष आत्मायें हो। लेकिन सेवाकेन्द्र पर रहने वाली निमित्त टीचर्स को बहुत अच्छा चांस है।

(19.11.1989)

टीचर्स का तो काम ही है - 'सेवा'। टीचर्स का महत्त्व ही सेवा है। अगर सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिखाई देता है तो उनको योग्य टीचर की लिस्ट में गिनती नहीं किया जाता। टीचर की महानता सेवा हुई ना। तो सेवा का महीन रूप सुनाया। मुख की सेवा तो करते रहते हो लेकिन मुख और मन की शुभभावना की सेवा साथ-साथ हो। बोल और भावना डबल काम करेंगे। इस सूक्ष्म सेवा का अभ्यास बहुतकाल अर्थात् अभी से चाहिए। क्योंकि आगे चलकर सेवा की रूपरेखा बदलनी ही है। फ़िर उस समय सूक्ष्म सेवा में अपने को बिज़ी नहीं कर सकेंगे, बाहर की परिस्थितियाँ बुद्धि को आकर्षित कर लेंगी। रिज़ल्ट क्या होगी? याद और सेवा का बैलेंस नहीं रख सकेंगे। इसलिए अभी से अपने मन-बुद्धि के सेवा की लाइन को चेक करो। टीचर्स को चेक करना आता है ना। टीचर्स औरों को सिखाती हैं, तो ज़रूर स्वयं जानती हैं तब तो सिखाती हैं ना। अभी योग्य टीचर्स हो ना! योग्य टीचर की विशेषता यह है - जो निरन्तर चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सेवा में सदा बिज़ी रहे। तो और बातों से स्वतः ही खाली हो जायेंगे।

(27.11.1989)

टीचर्स क्या समझती हैं? निभाने वालों की लिस्ट में हो ना। टीचर्स को बापदादा सदा साथी शिक्षक कहते हैं। तो साथी की विशेषता क्या होती है? साथी समान होता है। बाप कभी बदलता है क्या? टीचर्स भी वायदे और फ़ायदा - दोनों का बैलेंस रखने वाली हैं। वायदे बहुत और फ़ायदा कम हो - यह बैलेंस नहीं होता। जो दोनों का बैलेंस रखते हैं उसको वरदाता बाप द्वारा यह वरदान वा ब्लैसिंग मिलती है। वह सदा दृढ़ संकल्प से कर्म में सफलतामूर्त बनते हैं। साथी शिक्षक का यही विशेष कर्म है। संकल्प और कर्म समान हों। संकल्प श्रेष्ठ और कर्म साधारण हो जाए - इसको समानता नहीं कहेंगे। तो सदा टीचर्स अपने को 'साथी शिक्षक' अर्थात् 'शिक्षक बाप समान' - इस स्मृति में समर्थ बन चलो। बापदादा को टीचर्स की हिम्मत पर खुशी होती है। हिम्मत रख सेवा के निमित्त तो बन गये हैं ना।

लेकिन अभी सदा यह स्लोगन याद रखो - 'हिम्मते टीचर, समान शिक्षक बाप'। यह कभी नहीं भूलना। तो स्वत: ही समान बनने वाला लक्ष्य - 'बापदादा' आपके सामने रहेगा अर्थात् साथ रहेगा।

(01.12.1989)

टीचर्स को आगे बैठने का भाग्य मिला है। क्योंकि पण्डा बनकर आती हैं तो मेहनत बहुत करती हैं। एक को सुखधाम से बुलायेंगे तो दूसरे को विशाल भवन से बुलायेंगे। एक्सरसाइज़ अच्छी हो जाती है। सेंटर पर तो पैदल करती नहीं हो। जब शुरू में सेवा आरम्भ की तो पैदल जाती थी ना। आपकी बड़ी दादियां भी पैदल जाती थीं। सामान का थैला हाथ में उठाया और पैदल चली। आजकल तो आप सब बने - बनाये पर आये हो। तो लक्की हो ना। बने-बनाये सेंटर मिल गये हैं। अपने मकान हो गये हैं। पहले तो जमुनाघाट पर रही थीं। एक ही कमरा - रात को सोने का, दिन को सेवा का होता था। लेकिन खुशी-खुशी से जो त्याग किया उसी के भाग्य का फल अभी खा रही हो। आप फल खाने के टाइम पर आई हो। बोया इन्होंने, खा आप रही हो। फल खाना तो बहुत सहज है ना। अब ऐसे फल स्वरूप क्वालिटी निकालो। समझा? क्वांटिटी (संख्या) तो है ही और यह भी चाहिए। नौ लाख तक जाना है तो क्वांटिटी और क्वालिटी - दोनों चाहिए। लेकिन 16,000 की पक्की माला तो तैयार करो। अभी क्वालिटी की सेवा पर विशेष अण्डरलाइन करो।

हर ग्रुप में टीचर्स भी आती, कुमारियां भी आती हैं। लेकिन निकलती नहीं हैं। मधुबन अच्छा लगता है, बाप से प्यार भी है। लेकिन समर्पण होना सोचना है। जो स्वयं ऑफ़र करता है वह निर्विघ्न चलता है और जो कहने से चलता वह रुकता है फिर चलता हैं। वह बार-बार आपको ही कहेंगे - हमने तो पहले ही कहा था सरेण्डर नहीं होना चाहिए। कोई-कोई सोचती हैं - इससे तो बाहर रहकर सेवा

करें तो अच्छा है। लेकिन बाहर रह कर सेवा करना और त्याग करके सेवा करना इसमें अंतर ज़रूर है। जो समर्पण के महत्त्व को जानते हैं वह सदा ही अपने को कई बातों से किनारे हो आराम से आ गये हैं, कई मेहनत से छूट गये। तो टीचर्स अपने महत्त्व को अच्छी रीति जानती हो ना? नौकरी और यह सेवा - दोनों काम करने वाले अच्छे वा एक काम करने वाले अच्छे? उन्हों को फिर भी डबल पार्ट बजाना पड़ता है। भल निर्बन्धन हैं फिर भी डबल पार्ट तो है ना। आपका तो एक ही पार्ट है। प्रवृत्ति वालों को तीन पार्ट बजाना पड़ता - एक पढ़ाई का, दूसरा सेवा का और साथ-साथ प्रवृत्ति को पालने का। आप तो सब बातों से छूट गई।

(05.12.1989)

सभी टीचर्स का बाप से कितना प्यार है! बाप सदा टीचर्स को अपने सेवा के समीप साथी समझते हैं। तो पहले फ़ालो टीचर्स करेंगी ना! इसमें सदा यही लक्ष्य रखो कि 'पहले मैं'। ईर्ष्या में पहले मैं नहीं, वह नुक्शान करती है। शब्द वही है 'पहले मैं' लेकिन एक है ईर्ष्यावश पहले मैं। तो इससे पहले के बजाय कहाँ लास्ट पहुँच जाता, फ़र्स्ट से लास्ट आ जाता और फ़ालो फ़ादर में 'पहले मैं' कहा और किया तो फ़र्स्ट के साथ में आप भी फ़र्स्ट हो जायेंगे। ब्रह्मा फ़र्स्ट हैं ना! तो सदा यह लक्ष्य रखो कि टीचर्स अर्थात् फ़ालो फ़ादर और नम्बरवन फ़ालो फ़ादर। जैसे ब्रह्मा नम्बरवन बना तो फ़ालो करने वाले भी नम्बरवन का लक्ष्य रखो। टीचर्स सभी ऐसे पक्की हैं ना, हिम्मत है फ़ालो करने की? क्योंकि टीचर्स अर्थात् निमित्त बनने वाली, अनेक आत्माओं के निमित्त हो। तो निमित्त बनने वालों के ऊपर कितनी ज़िम्मेवारी है! जैसे ब्रह्मा बाप निमित्त रहे ना। तो ब्रह्मा बाप को देखकर के कितने ब्राह्मण तैयार हुये! ऐसे ही **टीचर्स कोई भी कार्य करती हो - चाहे खाना बना रही हो, चाहे सफाई कर रही हो लेकिन हर कर्म करते यह स्मृति रहे कि मैं निमित्त हूँ - अनेक आत्माओं के प्रति, 'जो' और 'जैसा' मैं करूँगी - मुझ निमित्त आत्मा को देख और भी करेंगे। इसलिए बापदादा सदैव**

कहते हैं एक तरफ़ है भाषण करना और दूसरे तरफ़ है बर्तन मांजना। दोनों ही काम में योगयुक्त, युक्तियुक्त। काम कैसा भी हो लेकिन स्थिति सदा ही योगयुक्त और युक्तियुक्त हो। ऐसे नहीं भाषण कर रहे हैं तब तो योगयुक्त रहें और बर्तन मांजना अर्थात् साधारण काम कर रहे हैं तो स्थिति भी साधारण हो जाए। हर समय फ़ालो फ़ादर। सुना!

आगे बैठती हो ना तो बैठने में आगे कितना अच्छा लगता है। और सदा आगे बढ़ने में कितना अच्छा लगेगा! जब भी कोई ऐसा कड़ा संस्कार पीछे करने की कोशिश करे तो यह सीन याद करना। जब आगे बैठना अच्छा लगता तो आगे बढ़ने में क्यों पीछे रहे? मधुबन में पहुँच जाना और अपने को हिम्मत उमंग में लाना। क्योंकि पीछे रहने वाले तो बहुत आयेंगे पीछे, आप लोग भी पीछे रह जायेंगे तो फिर पीछे वालों को आगे करना पड़ेगा। इसलिए सदा यही स्मृति रखो कि हम आगे रहने वाले हैं। पीछे रहना अर्थात् प्रजा बनना। प्रजा तो नहीं बनना है ना! प्रजा-योगी तो नहीं, राजयोगी हो ना! तो फ़ालो फादर।

(09.12.1989)

सभी टीचर्स की परमानेंट एड्रेस कौनसी है? मधुबन है ना। वह दुकान हैं, यह घर है। ज़्यादा क्या याद रहता है - घर या दुकान? कोई-कोई को दुकान ज्यादा याद रहती है। सोयेंगे तो भी दुकान याद आयेगी। आप लोग जहाँ चाहो बुद्धि को स्थित कर सकते हो। सेवाकेंद्र पर रहते भी मधुबन निवासी बन सकते और मधुबन में रहते भी सेवाधारी बन सकते हो, यह अभ्यास है ना। सेकण्ड में सोचा और स्थित हुआ, यह है टीचर्स की स्थिति की विशेषता। बुद्धि भी समर्पित है ना या सिर्फ सेवा के लिए समर्पित हो? समर्पित बुद्धि अर्थात् जहाँ चाहें, जब चाहें वहाँ स्थित हो जाएँ। यह विशेषता की निशानी है। बुद्धि सहित समर्पित - ऐसे हो ना या बुद्धि से आधी समर्पित हैं और शरीर से सारी हैं?

कोई-कोई टीचर्स भी चाहती हैं - योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानी

होने बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि **लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे।** उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं। ब्रह्मा बाप ने अंतिम स्टेज यही बनाई ना - बिल्कुल निराकारी। सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे। इसलिए यह अभ्यास करो - जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो, नहीं तो धोखा मिल जायेगा। ऐसे नहीं सोचो - सेवा का ही तो संकल्प आया, खराब संकल्प विकल्प तो नहीं आया। लेकिन कण्ट्रोलिंग पावर तो नहीं हुई ना। कण्ट्रोलिंग पावर नहीं तो रूलिंग पावर आ नहीं सकती, फिर रूलर बन नहीं सकेंगे। तो अभ्यास करो। अभी से बहुत काल का अभ्यास चाहिए। इसको हल्का नहीं छोड़ो। तो सुना, टीचर्स को क्या अभ्यास करना है? तब कहेंगे - टीचर्स बाप को फ़ालो करने वाली हैं। सदा ब्रह्मा बाप को सामने रखो और तीन वरदान याद रखो और फ़ालो करो। यह तो सहज है ना। यह अन्तिम वरदान बहुत शक्तिशाली है। इन तीन वरदानों को अगर सदा स्मृति में रखते प्रैक्टिकल में आओ तो बाप के दिलतख्त और राज्य-तख्त के अधिकारी ज़रूर बनेंगे।

(13.12.1989)

सभी टीचर्स आर्टिस्ट हो। चित्र बनाना आता है? अपना श्रेष्ठ चरित्र का चित्र बनाना आता है ना! तो बड़े-ते-बड़े चित्रकार वही हैं जो हर कदम में चरित्र का चित्र बनाते रहते हैं। इसी चरित्र का चित्र बनाने कारण ही आपके जड़ चित्र आधाकल्प चलते हैं। तो टीचर्स अर्थात् बड़े-ते-बड़े चित्रकार। अपना भी चित्र बनाते और अन्य आत्माओं को भी चित्रकार बना देते हो। औरों के भी श्रेष्ठ चरित्र बनाने के निमित्त टीचर्स हो। इसी में ही बिज़ी रहते हो ना। फुल बिज़ी रहो। एक सेकण्ड भी मन-बुद्धि को फुर्सत में रखा तो व्यर्थ संकल्प अपनी तरफ़ आकर्षित कर लेंगे। सुनाया ना कि सेवा का प्रत्यक्षफल सदा प्राप्त हो - यही निशानी है सदा

आज्ञाकारी आत्मा की। कभी सेवा का फल प्रत्यक्ष मिलता और कभी नहीं मिलता, इसका कारण? कोई-न-कोई अवज्ञा होती है। टीचर्स अर्थात् अमृतवेले से लेकर रात तक हर आज्ञा के कदम-पर-कदम रखने वाली। ऐसी टीचर्स हो वा कभी-कभी अलबेला-पन आ जाता है? अलबेला नहीं बनना। ज़िम्मेवारी के ताजधारी हो। कभी ताज भारी लगता है तो उतार देते हैं। आप उतारने वाले तो नहीं हो ना। सदा आज्ञाकारी माना सदा ज़िम्मेवारी के ताजधारी। टीचर्स तो सब हैं लेकिन इसको कहते हैं - योग्य टीचर, योगी टीचर।

टीचर्स कभी कम्पलेन नहीं कर सकती। औरों को कम्पलीट करने वाली हो, कम्पलेन करने वाली नहीं। कभी ऐसे पत्र तो नहीं लिखती हो ना - क्या करें, हो गया, होना तो नहीं चाहिए। वह तो समाप्त हो गया ना। सुनाया था - पत्र लिखो ज़रूर, मधुबन में पत्र ज़रूर भेजो परंतु 'मैं सदा ओ.के. हूँ' - बस, यह दो लाइन लिखो। पढ़ने वालों को भी टाइम नहीं। फिर कम्पलेन करते कि पत्र का उत्तर नहीं आया। वास्तव में आप सबके पत्रों का उत्तर बापदादा रोज की मुरली में देता ही है। आप लिखेंगे ओ.के. और बापदादा ओ.के. के रिटर्न में कहते - 'यादप्यार और नमस्ते'। तो यह रेसपान्ड हुआ ना। समय को भी बचाना है ना। सेवा समाचार भी शार्ट में लिखो। तो समय की भी एकॉनामी, कागज़ की भी एकॉनामी, पोस्ट की भी एकॉनामी। हो। एकॉनामी क्या हो सकती है। पत्र 3 पेज़ में भी लिखा जा सकता है। कोई को विस्तार से लिखने का डायरेक्शन मिलता है तो भल लिखो लेकिन दो लाइन में अपनी ग़लती की क्षमा ले सकते हो। छिपाओ नहीं, लेकिन शार्ट में लिखो। कितने पत्र लिखते हैं, जिनका कोई सार नहीं होता। बाप को कहो - मेरा यह काम कर ले, मेरे को ठीक कर दे, मेरा धंधा ठीक कर दे, मेरी पत्नी को ठीक कर दे .... ऐसे पत्र एक बार नहीं 10 बार भेजते हैं। तो अब एकॉनामी के अवतार बनो और बनाओ।

(17.12.1989)

टीचर्स ने भक्ति की है? कितने जन्म भक्ति की है? इस जन्म में तो नहीं की है ना! आपकी भक्ति पहले जन्म में पूरी हो गई। कब से फिर भक्ति शुरू की? किसके साथ शुरू की? ब्रह्मा बाप के साथ-साथ आपने भी भक्ति की है। कौन-से मंदिर में की? तो भक्ति की भी आदि आत्माएं हो और ज्ञान-मार्ग की भी आदि आत्माएं हो। आदि की भक्ति में अव्यभिचारी भक्ति होने कारण भक्ति का आनन्द, सुख उस समय के प्रमाण कम नहीं हुआ। वह सुख और आनन्द भी अपने स्थान पर श्रेष्ठ रहा।

भक्त-माला में आप हो? जब भक्ति आपने शुरू की तो भक्त-माला में नहीं हो? डबल फॉरेनर्स भक्त-माला में थे? भक्त बने या भक्त-माला में थे? अभी सब सोच रहे हैं कि हम थे वा नहीं थे! विजय माला में भी थे, भक्त-माला में भी थे? पुजारी तो बने लेकिन भक्त-माला में थे? भक्त-माला अलग है। आप तो ज्ञानी सो भक्त बने। वह हैं ही भक्त। तो भक्त-माला और ज्ञानियों की माला में अंतर है। ज्ञानियों की माला है - 'विजय माला'। और जो सिर्फ भक्त हैं, ऐसे नौधा भक्त जो भक्ति के बिना और बात सुनना ही नहीं चाहते, भक्ति को ही श्रेष्ठ समझते हैं। तो भक्त-माला अलग है, ज्ञान माला अलग है। भक्ति ज़रूर की लेकिन भक्त-माला में नहीं कहेंगे। क्योंकि भक्ति का पार्ट बजाने के बाद आप सबको ज्ञान में आना है। वह नौधा भक्त हैं और आप नौधा ज्ञानी हो। आत्मा में संस्कारों का अंतर है। भक्त माना सदा मंगता के संस्कार होंगे। मैं नीच हूँ, बाप ऊँचा है - यह संस्कार होंगे। वह रॉयल भिखारी हैं और आप आत्माओं में अधिकारीपन के संस्कार हैं। इसलिए परिचय मिलते ही अधिकारी बन गये। समझा? भक्तों को भी कोई जगह दो ना। दोनों में आप आयेंगे क्या? उन्हों का भी आधाकल्प है, आपका भी आधाकल्प है। उन्हों को भी गायन-माला में आना ही है। फिर भी दुनिया वालों से तो अच्छे हैं। और तरफ़ तो बुद्धि नहीं है, बाप की तरफ़ ही है। शुद्ध तो रहते हैं। पवित्रता का फल मिलता है - 'गायन योग्य होने का'। आपकी पूजा होगी। उन्हों की पूजा नहीं होती, सिर्फ स्टेच्यू बनाके रखते हैं गायन

के लिए। मीरा का कभी मंदिर नहीं होगा। देवताओं मिसल मीरा की पूजा नहीं होती, सिर्फ गायन है। अभी लास्ट जन्म में चाहे किसी को भी पूज लेवें। धरनी को भी पूजें तो वृक्ष को भी पूजें। लेकिन नियम प्रमाण उन्हों का सिर्फ गायन होता है, पूजन नहीं। आप पूज्य बनते हो। तो आप पूजनीय आत्माएं हो- यह नशा सदा स्मृति में रखो। पूज्य आत्मा कभी कोई अपवित्र संकल्प को टच भी नहीं कर सकती। ऐसे पूज्य बने हो!

(21.12.1989)

सभी टीचर्स ने बड़ा दिन मनाया कि रोज़ मनाती हो? बड़ा बाप है और बड़े आप भी हो इसलिए जो दुनिया वालों के बड़े दिन हैं उसको महत्व देते हैं। इसमें भी आप बड़े, छोटे भाइयों को उत्साह दिलाते हो। सभी टीचर्स बेफिक्र बादशाह हो? बादशाह अर्थात् सदा निश्चय और नशे में स्थित रहने वाले क्योंकि निश्चय विजयी बनाता है और नशा खुशी में सदा ऊँचा उड़ाता है। तो बेफिक्र बादशाह ही होंगे ना! कोई फिक्र है क्या? सेवा कैसे बढ़ेगी, अच्छे-अच्छे जिज्ञासु पता नहीं कब आयेंगे, कब तक सेवा करनी पड़ेगी - यह सोचते तो नहीं हो? **असोच बनने से ही सेवा बढ़ेगी, सोचने से नहीं बढ़ेगी। असोच बन बुद्धि को फ्री रखेंगे तब बाप की शक्ति मदद के रूप में अनुभव करेंगे। सोचने में ही बुद्धि बिज़ी रखेंगे तो बाप की टचिंग, बाप की शक्ति ग्रहण नहीं कर सकेंगे। बाबा और हम - कम्बाइण्ड हैं, करावनहार और करने के निमित्त मैं आत्मा। इसको कहते हैं - 'असोच अर्थात् एक की याद'।** शुभचिंतन में रहने वाले को कभी चिंता नहीं होती। जहाँ चिंता है वहाँ शुभचिंतन नहीं और जहाँ शुभचिंतन है वहाँ चिंता नहीं।

(25.12.1989)

पहले निमित्त तो टीचर्स हैं। फ़ालो फ़ादर करेंगी ना। सेवा का विस्तार भल कितना भी बढ़ाओ लेकिन विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास कम न हो, विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन 'न्यारे-पन' को नहीं भूलो। वाणी द्वारा भी कहाँ तक सेवा करेंगे, कितने की करेंगे! अब तो रूहानी वायब्रेशन, अशरीरीपन की स्थिति के वायब्रेशन, न्यारे और प्यारे-पन के शक्तिशाली वायब्रेशन वायुमण्डल में फैलाओ। सेवा की तीव्रगति का साधन भी यही है। दूसरों की सेवा करने के पहले स्वयं इस विधि में सम्पन्न होंगे तब सेवा की सिद्धि को प्राप्त करेंगे। अब वाणी में आना सहज हो गया है और दिल से भी करते हो क्योंकि अभ्यास पक्का हो गया है। ऐसे यह अभ्यास भी नेचुरल हो जायेगा। इस नेचुरल अभ्यास से ही नेचर बदली होगी। चाहे मनुष्य आत्माओं की नेचर, चाहे प्रकृति (नेचर)। समझा? मुश्किल तो नहीं लगता है ना! बड़े ते बड़े बाप के बच्चे हैं और बड़े-ते-बड़ी प्राप्ति के अधिकारी हैं, तो उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं। अटेन्शन रखना तो आता है ना कि टेन्शन रखना आता है। निज़ी संस्कार अटेन्शन के हैं। जब टेन्शन रखना आता है तो अटेन्शन रखना क्या बड़ी बात है? टेन्शन रखने में तो आदती हो गये ना। अटेन्शन का भी टेन्शन नहीं रखो लेकिन नेचुरल अटेन्शन हो। कई ऐसा भी करते हैं - अटेन्शन को टेन्शन में बदल देते, इसलिए होता है। अटेन्शन को अटेन्शन के रूप में करो, बदली नहीं करो। **ओरीज़नल अभ्यास आत्मा को न्यारे होने का है। न्यारी थी, न्यारी है, फिर न्यारी बनेगी। सिर्फ अटैचमेंट न्यारा बनने नहीं देता है। वैसे आत्मा की ओरीज़नल नेचर शरीर से न्यारे रहने की है, अलग है। शरीर आत्मा नहीं, आत्मा शरीर नहीं। तो न्यारे हुए ना। सिर्फ 63 जन्मों से अटैचमेंट की आदत पड़ गई है। ओरीज़नल तो ओरीज़नल ही होता है।**

(29.12.1989)

सभी टीचर्स तो स्मृति-स्वरूप हैं ना! चारों ही सबजेक्ट में स्मृति-स्वरूप। मेहनत का काम तो नहीं है ना! टीचर्स का अर्थ ही है अपने स्मृति-स्वरूप फीचर्स से औरों को भी स्मृति स्वरूप बनाना। आपके फीचर्स ही औरों को स्मृति दिलायें कि मैं आत्मा हूँ, मस्तक में देखें ही चमकती हुई आत्मा वा चमकती हुई मणी। जैसे सांप की मणी देख करके सांप की तरफ कोई का ध्यान नहीं जायेगा, मणि के तरफ जायेगा। ऐसे अविनाशी चमकती हुई मणि को देख देहभान स्मृति में नहीं आये, अटेन्शन स्वत: ही आत्मा की तरफ जाये। टीचर्स इसी सेवा के निमित्त हो। विस्मृति वालों को स्मृति दिलाना-यही सेवा है। समर्थ तो हो या कभी-कभी घबराती हो? अगर टीचर्स घबरा जायेंगी तो स्टूडेन्ट क्या होंगे? टीचर्स अर्थात् सदा नेचुरल, निरन्तर स्मृति-स्वरूप सो समर्थ स्वरूप। जैसे ब्रह्मा बाप फ्रन्ट में रहा तो टीचर्स भी आगे हो ना। निमित्त माना आगे। जैसे सेवा प्रति समर्पण होने में हिम्मत रखी, समर्थ बनी। तो यह स्मृति क्या है, यह तो त्याग का भाग्य है। त्याग कर लिया, अभी भाग्य की क्या बड़ी बात है! त्याग तो किया लेकिन त्याग, त्याग नहीं है क्योंकि प्राप्ति बहुत ज्यादा है। त्याग क्या किया? सिर्फ सफेद साड़ी पहनी, वह तो और भी ब्युटीफुल बन गई हो, फरिश्ते, परियां बन गई हो और क्या चाहिए! बाकी खाना-पीना छोड़ा...वह तो आजकल डॉक्टर्स भी कहते हैं-ज्यादा नहीं खाओ, कम खाओ, सादा खाओ। आजकल तो डॉक्टर्स भी खाने नहीं देते। बाकी क्या छोड़ा? गहना पहनना छोड़ा...आजकल तो गहनों के पीछे चोर लगते हैं। अच्छा किया जो छोड़ दिया, समझदारी का काम किया। इसलिए त्याग का पदम गुणा भाग्य मिल गया।

(02.01.1990)

टीचर्स को चेक करना आता है ना! टीचर्स को विशेष समर्पित होने का भाग्य मिला हुआ है। चाहे प्रवृत्ति वाले भी मन से समर्पित हैं फिर भी टीचर्स का विशेष भाग्य है। काम ही 'याद और सेवा' का है। चाहे खाना बनाती या कपड़े

धुलाई करती - वह भी यज्ञ सेवा है। वह भी अलौकिक जीवन प्रति सेवा करती हो। प्रवृत्ति वालों को दोनों तरफ निभाना पड़ता है। आपको तो एक ही काम है ना, डबल तो नहीं है? जो सच्चाई और सफाई से बाप और सेवा में सदा लगे रहते हैं, उन्हें कोई और मेहनत करने की आवश्यक्ता नहीं पड़ती है। सुनाया था कि योग्य टीचर का भण्डारा और भण्डारी सदा भरपूर रहेगा। फिक्र नहीं करना पड़ेगा- अगला मास कैसे चलेगा, मेला कैसे होगा, सेवा के साथ-साथ साधन स्वतः प्राप्त होंगे। **रुहानी आकर्षण सेवा और सेवाकेन्द्र स्वतः ही बढ़ाती रहती है। जब ज्यादा सोचते हो कि जिज्ञासु कयों नहीं बढ़ते, ठहरते क्यों नहीं, चले क्यों जाते... तो जिज्ञासू नहीं ठहरते। योगयुक्त होकर रुहानियत से आह्वान करते हो तो जिज्ञासू स्वतः ही बढ़ते हैं।** ऐसे होता है ना? तो मन सदा हल्का रखो, किसी प्रकार का बोझ नहीं रहे। किसी भी प्रकार का बोझ है चाहे अपना, चाहे सेवा का, चाहे सेवा साथियों का तो उड़ने नहीं देगा-सेवा भी ऊंची नहीं उठेगी। इसलिए सदा दिल साफ और मुराद हांसिल करते रहो। प्राप्तियाँ आपके सामने स्वत: ही आयेंगी। क्या सुना? सर्व रुहानी प्राप्तियाँ हैं ही ब्राह्मणों के लिए तो कहाँ जायेंगी! अधिकार ही बाप लोगों का है। अधिकार कोई छीन नहीं सकता।

(06.01.1990)

टीचर्स तो कर्मों की लीला को अच्छी रीति जान गई है ना। टीचर्स सारा दिन क्या गीत गाती है कि 'वाह मेरे श्रेष्ठ कर्मों की लीला' कर्मों की गहन गति की लीला नहीं, श्रेष्ठ कर्मो की लीला। दुनिया वाले तो हर कर्म में, हर कदम में कर्मो को ही कूटते रहते हैं कि 'हाय मेरे कर्म!' आप कहेंगे - 'वाह श्रेष्ठ कर्म'! अब यह आगे बढ़ो कि सदा 'वाह श्रेष्ठ कर्म' हो, साधारण कर्म नहीं। कर्मों को कूटना तो खत्म हो गया लेकिन श्रेष्ठ कर्म हो इसमें अंडरलाइन करना। अगर मिक्स कर्म है - साधारण भी हैं, श्रेष्ठ भी है तो सफलता भी मिक्स हो जाती है। अभी विशेष

अटेन्शन यह देना है कि साधरणता को विशेषता में परिवर्तन करो। इस पर भी कभी सुनायेंगे कि बापदादा हर एक की रोज़ की दिनचर्या में क्या-क्या देखते हैं। साधारणता कितनी हैं और विशेषता कितनी - यह रिजल्ट देखते रहते हैं।

बापदादा के पास देखने के साधन इतने हैं जो एक ही समय देश-विदेश के सभी बच्चों को देख सकते हैं। अलग-अलग देखने की आवश्यक्ता नहीं, 5 मिनट में सबका पता लग जाता। बच्चों के 'वाह-वाह' के गीत भी गाते हैं, साथ-साथ समान बनने की एम से चेक भी करते हैं। सुनाया था ना कि बाप के स्नेह वा बाप की पहचान - इसमें तो सब पास हो और कभी-कभी तो कमाल के काम भी करते हो। अच्छी कमाल है, न कि धमाल वाली कमाल। कोई-कोई बच्चे धमाल की भी कमाल करते हैं ना! होती धमाल है लेकिन कहते हैं - यह तो हमारी कमाल है। इसलिए बापदादा कहते - परखने की शक्ति को बढ़ाओ। अपने कर्मों को भी परख सकेंगे और दूसरों के कर्मों को भी यथार्थ परख सकेंगे। उल्टे को सुल्टा नहीं कहेंगे। यह परखने की शक्ति की कमी है। और **सदा एक बात याद रखो सबके लिए कह रहे हैं - कभी भी कोई ऐसा व्यर्थ वा साधारण कर्म करते हो और अपने-आपको पहचान नहीं सकते हो कि यह राइट है वा रांग है, तो जब ऐसी परिस्थिति आती है, वशीभूत हो जाते हैं उस समय ऐसी परिस्थिति में सिद्धि को प्राप्त करने की श्रेष्ठ विधि क्या है? क्योंकि उस समय अपनी बुद्धि तो वशीभूत है। राइट को भी रांग समझते हो, रांग को रांग नहीं समझते हो, राइट समझते हो। फिर जिद्द करेंगे या सिद्ध करेंगे। यह निशानी है वशीभूत बुद्धि की। ऐसे समय पर सदैव एक बापदादा की श्रेष्ठ मत याद रखो कि जिन्हों को बाप ने निमित्त बनाया है वह निमित्त आत्माएं जो डायरेक्शन देती है, उसको महत्व देना चाहिए। उस समय यह नहीं सोचों की निमित्त बने हुए शायद कोई के कहने से कह रहे हैं। इसमें धोखा खा लेते हो। निमित्त बने हुए श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा जो शिक्षा वा डॉयरेक्शन मिलते हैं। उसको उस समय महत्व देने से अगर**

कोई बुरी बात भी होगी तो आप जिम्मेवार नहीं। जैसे ब्रह्मा बाप के लिए सदा कहते हैं कि अगर ब्रह्मा द्वारा कोई गलती भी होगी तो वह गलती भी बदल के आपके प्रति सही हो जायेगी। तो ऐसे निमित्त बनी हुई आत्माओं प्रति कभी भी यह व्यर्थ संकल्प नहीं उठना चाहिए। मानो कोई ऐसा फैसला भी दे देते हैं जो आपको ठीक नहीं लगता है। लेकिन आप उसमें जिम्मेवार नहीं हैं। आपका पाप नहीं बनेगा। आपका काम ठीक हो जायेगा। क्योंकि बाप बैठा है। बाप, पाप को बदल लेगा। यह गुह्य रहस्य है। गुप्त मशीनरी है। इसलिए निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ डॉयरेक्शन को महत्व से कार्य में लगाओ। इसमें आपका फायदा है, नुकसान भी बदलकर फायदे में हो जायेगा। यह बाप की गारंटी है। समझा? इसलिए सुनाया कि कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है। बाप जिम्मेवार है। जिनको निमित्त बनाया है उसका भी जिम्मेवार बाप है। आपके पाप को बदलने का भी जिम्मेवार है। ऐसे ही निमित्त नहीं बनाया है, सोच-समझ के ड्रामा के ला-मुजीब निमित्त बनाया गया है। समझा!

टीचर्स को अच्छा लगता है ना। इनमें फायदा है, बोझा हल्का हो गया। कोई भी बात आयेगी तो कहेंगे- निमत्त बने हुए बड़े जाने। हल्के हो गये ना। लेकिन सिर्फ कहने मात्र नहीं, समझने-मात्र, स्नहे-मात्र, स्वमान-मात्र हो। इन गुह्य बातों को बाप जाने और जो समझादार बच्चे हैं वह जाने। **निमित्त बनी हुई आत्माओं के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना। निमित्त बाप ने बनाया है ना। बाप से ज्यादा आपको परखने की शक्ति है?**

बापदादा का अति स्नेह सभी बच्चों से है। ऐसे नहीं कि निमित्त बने हुए से ही प्यार है। दूसरों से नहीं है। यह भी प्यार के कारण ही डॉयरेक्शन देते हैं। प्यार नहीं होता तो कहते हैं- जैसे चल रहे हैं, चलते रहें। जब इतनी हिम्मत रखी है और ब्राह्मण-जीवन में चल रहे हो, उड़ रहे हो तो छोटी-सी कमजोरी भी क्यों रह जाए? यह है प्यार। प्यार वाले की कमी कभी नहीं देखी जाती है। यह है प्यार की

निशानी। जिससे दिल का सच्चा प्यार होता है उसकी कमी को हमेशा अपनी कमी समझता है।

कोई भी कार्य करो तो कभी भी कोई हलचल के वातावरण के प्रभाव में नहीं आओ। अपना प्रभाव डालो तो वह आपके प्रभाव में आ जायेंगे और दिल से यही निकलेगा कि 'सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। हिम्मत का बहुत महत्व है। कभी किसी बात में घबराओं नहीं। हजार भुजाओं वाले आप भी हो। बाप की हजार भुजायें आपकी भी तो हुई ना। अच्छा-

बॉम्बे सायन सेन्टर की टीचर्स तथा भाईयों को देख बापदादा बोलेः- यह सब कार्य समाप्त कर पहूँचे हैं। पास होके आये हो कि पास -विद-ऑनर होके आये हो? अच्छा पार्ट बजाया। यह भी स्नेह का रिटर्न आत्मा को प्राप्त होता ही है। जिसको स्नेह मिला है वह समय पर स्नेह का रिटर्न जरुर करता है। कई आत्माओं की इस समय के पार्ट में भी आवश्यक्ता है और नई दुनिया के आदि में भी आवश्यक्ता है। तो क्या करेंगे? ड्रामा तो चलना ही है ना! इसलिए जो भी गये हैं वा जा रहें हैं- विशेष आत्माओं की आदि में भी आवश्यक्ता है। यह नया चैप्टर (पाठ) शुरु करेंगे ना। योगबल की पैदाइश का नया चैप्टर शुरु करने के लिए कौनसी आत्मायें चाहिए? योगी आत्माएं चाहिए ना! निमित्त बहाना कोई भी बन जाता है, लेकिन चुक्तू भी होना है और सेवा भी होनी है। अभी यह नहीं सोचना कि कृष्ण को जन्म कौन देगा, राधे को कौन जन्म देगा। **इस विस्तार में नहीं जाना। यह कोई टॉपिक नहीं है। इसलिए कहा कि कर्मों की लीला 'वाह-वाह' है बाकी जन्म कोई भी दे- इनमें नहीं जाना। आपको जाना है यह सोचना है?**

(10.01.1990)

टीचर्स तो हैं ही समझदार। तब तो भाग्य मिला है ना। निमित्त बनने का भाग्य - इसका महत्व अभी कभी-कभी साधारण लगता है, लेकिन यह भाग्य

समय पर अति श्रेष्ठ अनुभव करेंगे। किसने निमित्त बनाया, किसने मुझ आत्मा को इस योग्य चुना - यह स्मृति ही स्वत: श्रेष्ठ बना देती है। **'बनाने वाला कौन'! - अगर इस स्मृति में रहो तो बहुत सहज निरन्तर योगी बन जायेंगे।** सदा दिल में, बनाने वाले बाप के गुणों के गीत गाते रहो तो निरन्तर योगी हो जायेंगे। यह कम बात नहीं है! सारे विश्व की कोटों की कोट आत्माओं में से कितनी निमित्त टीचर्स बनी हो! ब्राह्मण परिवार में भी टीचर्स कितनी हैं! तो कोई-में-कोई हो गई ना! टीचर अर्थात् सदा भगवान और भाग्य के गीत गाती रहें। बापदादा को टीचर्स पर नाज़ होता है लेकिन राजयुक्त टीचर्स पर नाज़ होता है।

(14.01.1990)

यह सब टीचर्स अव्यक्त रचना है - मैजारिटी। साकार की पालना लेने वाली टीचर्स बहुत थोड़ी है। फास्ट गति से पैदा हुई हो। क्योंकि संकल्प की गति सबसे फास्ट है। आदि रत्न है मुख-वंशावली, और आप हो संकल्प की व्रशावली। इसलिए ब्रह्मा की दो रचना गाई हुई हैं। एक मुख-वंशावली, एक संकल्प द्वारा सृष्टि रची। हो तो ब्रह्मा की रचना, तब तो ब्रह्माकुमार ब्रह्मा कमारी कहलाते हो। शिवकुमारी तो नहीं कहलाते हो ना। डबल फारेनर्स भी सब संकल्प की रचना है। ऐसे तीव्रगति से सब टीचर्स आगे बढ़ रही हो? जब रचना ही तीव्रगति की हो तो पुरूषार्थ भी तीव्रगति से होना चाहिए। सदा यह चेक करो कि सदा तीव्र पुरूषार्थी हूँ वा कभी-कभी हूँ? समझा! अब 'क्या', 'क्यों' का गीत खत्म करो। 'वाह-वाह' के गीत गाओ।

(18.01.1990)

टीचर्स सभी बड़ी दिल वाली हो ना! बेहद के बड़े-ते-बड़े कार्य अर्थ ही निमित्त हो। यह तो नहीं कहते हो ना - हम फलाने एरिया के कल्याणकारी है या

फलाने देश के कल्याणकारी हैं? विश्व-कल्याणकारी हो ना। इतने बड़े कार्य के लिए दिल भी बड़ी चाहिए ना? बड़ी अर्थात् बेहद। वा टीचर्स कहेंगी कि हमको तो हदें बनाकर दी गई हैं? हदें भी क्यों बनाई गई हैं, कारण? छोटी दिल। कितना भी एरिया बनाकर दें लेकिन आप सदा बेहद का भाव रखो, दिल में हद नहीं रखो। स्थान की हद का प्रभाव दिल पर नहीं होना चाहिए। अगर दिल में हद का प्रभाव है तो बेहद का बाप हद की दिल में नही रह सकता। बड़ा बाबा है तो दिल बड़ी चाहिए ना। कभी ब्रह्मा बाप ने मधुबन में रहते यह संकल्प किया कि मेरा तो सिर्फ मधुबन है, बाकी पंजाब, यू.पी., कर्नाटक आदि बच्चों का है? ब्रह्मा बाप से तो सबको प्यार है ना। प्यार का अर्थ है - बाप को फालो करना।

सभी टीचर्स फालो फादर करने वाली हो या मेरा सेंटर, मेरे जिज्ञासू, मेरी मदोंगरी और स्टूडेन्ट भी समझते - मेरी टीचर है? फालो फादर अर्थात् मेरे को तेरे में समाना, हद को बेहद में समाना। अभी इस कदम-पर-कदम रखने की आवश्यक्ता है। सबके संकल्प, बोल, सेवा की विधि बेहद की अनुभव हो। कहते हो ना - अभी क्या करना है इस वर्ष। तो स्व-परिवर्तन के लिए हर एक को सर्व वंश सहित समाप्त करो। जिसको भी देखो वा जो भी आपको देखे - बेहद के बादशाह का नशा अनुभव हो। हद की दिल वाले बेहद के बादशाह बन नहीं सकते। **ऐसे नहीं समझना कि जितने सेंटर्स खोलते वा जितनी ज्यादा सेवा करते हो इतना बड़ा राजा बनेंगे। इस पर स्वर्ग की प्राइज नहीं मिलनी है। सेवा भी हो, सेंटर्स भी हों लेकिन हद का नाम-निशान न हो। उसको नंबरवार विश्व के राज्य का तख्त प्राप्त होगा।** इसलिए अभी-अभी थोड़े समय के लिए अपनी दिल खुश करने नहीं बैठना। बेहद की खुशबू वाला समान और समीप अब भी है और 21 जन्म भी ब्रह्मा बाप के समीप होगा। तो एसी प्राइज चाहिए या अभी की? बहुत सेंटर्स हैं, बहुत जिज्ञासू हैं... इस बहुत-बहुत में नहीं जाना। बड़ी दिल को अपनाओ। सुना, इस वर्ष क्या करना है? इस वर्ष स्वप्न में भी किसके हद का

संस्कार उत्पन्न न हो। हिम्मत है ना? एक-दो को फालो नहीं करना, बाप को फालो करना।

(22.01.1990)

टीचर्स तो बाप समान मास्टर शिक्षक हो गई ना! टीचर अर्थात हर संकल्प, बोल और हर सेकण्ड सेवा में उपस्थित - ऐसे सेवाधारी को ही बापदादा टीचर कहते हैं। हर समय तो वाणी द्वारा सेवा नहीं कर सकते हो। थक जायेंगे ना। लेकिन अपने फीचर्स द्वारा हर समय सेवा कर सकते हो। इसमें थकावाट की बात नहीं है। यह तो कर सकते हैं ना, **टीचर्स बोलने की सेवा तो यथाशक्ति समय प्रमाण ही करेंगे लेकिन फरिश्ता फ्यूचर के फीचर्स हों।** संगमुयग का फ्यूचर फरिश्ता है, वह फीचर्स में दिखाई दे तो कितनी अच्छी सेवा होगी? जब जड़-चित्र फीचर्स द्वारा अंतिम जनम तक भी सेवा कर रहे हैं, तो आप चैतन्य श्रेष्ठ आत्माएं अपने फीचर्स द्वारा सेवा सहज कर सकते हो। आपके फीचर्स में सदा सुख की, शान्ति की, खुशी की झलक हो। कैसी भी दु:खी, अशान्त आत्मा, परेशान आत्मा आपके फीचर्स द्वारा अपना श्रेष्ठ फ्यूचर बना सकती है। ऐसा अनुभव है ना। अमृतवेले अपने फीचर्स को चेक करो। जैसे शरीर के फीचर्स को चेक करते हो ना, वैसे फरिश्ते फीचर्स में खुशी का, शान्ति का, सुख का श्रृंगार ठीक है - यह चेक करो तो स्वत: और सहज सेवा होती रहेगी। सहज लगता है ना टीचर्स को? यह तो 12 घंटा ही सेवा कर सकते हो। यह वाणी की सेवा तो दो-चार घंटा ही करेंगे। प्लैनिंग का काम, भाषण का काम करेंगे तो थक जायेंगे। इसमें तो थकने की बात ही नहीं। नैचुरल हैं ना। वैसे अनुभवी सभी हो लेकिन... बापदादा ने देखा फॉरेन में कुत्ते और बिल्ली बहुत पालते हैं। ऐसे खिलौने भी यही लाते हैं। तो अनुभव बहुत अच्छा करते हो लेकिन कभी कुत्ता आ जाता, कभी कोई बिल्ली आ जाती है। उसको निकालने में टाइम लगा देते हो। लेकिन आज सुनाया ना कि माया आपकी सफलता की माला बन जायेगी। सभी निमित्त सेवाधारी के गले में

माला पड़ी हुई है। सफलता की माला है वा कभी-कभी गले में माला होते भी दिखाई नहीं देती है? बाहर ढूंढते रहते कि सफलता मिले। जैसे रानी की कहानी सुनाते हैं ना - गले में हार होते हुए भी बाहर ढूंढती रही। ऐसे तो नहीं करते हो ना। सफलता हर ब्राह्मण-आत्मा का अधिकार है। सभी टीचर्स सफलतामूर्त हो ना, कि पुरुषार्थीमूर्त, मेहनतमूर्त हो? पुरुषार्थ भी सहज पुरुषार्थ, मेहनत वाला नहीं। यथार्थ पुरुषार्थ की परिभाषा ही है कि नैचुरल अटेन्शन। कई कहते हैं- अटेन्शन रखना है ना। लेकिन अटेन्शन ,टेन्शन में बदल जाती है, यह पता नहीं पड़ता। नैचुरल अटेन्शन अर्थात् यथार्थ पुरुषार्थी।

टीचर्स से बापदादा का प्यार है, इसलिए मेहनत करने नहीं देते हैं। दिल का प्यार तो यही होता है ना। अच्छा, फिर दूसरी बार सुनायेंगे कि और क्या-क्या देखा! थोड़ा-थोड़ा सुनायेंगे। सबके अंदर अपना चित्र तो आ रहा है।

(01.03.1990)

टीचर्स माया के नॉलेजफुल हो? सिर्फ नॉलेज नहीं लेकिन नॉलेजफुल हो? बाप को पहचान लिया - सिर्फ यह नहीं सोचो, माया को भी पहचानना है। अभी बंधन में बंध गई हो वा कठिन लगता है? मीठा बंधन लगता या थोड़ा मुश्किल बंधन लगता? सोचते हो - यहाँ तो बहुत मरना पड़ेगा, बाप के बन गये अब फिर यह करना है, यह करना है, कहां तक करेंगे! अगर यह पता होता तो आते ही नहीं - ऐसा सोच चलता है? जहां प्यार है वहां कोई मुश्किल नहीं। पतंगा भी शमा पर कुर्बान हो जाता है। तो आप श्रेष्ठ आत्माएं परमात्म-प्यार के पीछे मुश्किल अनुभव कर सकती हो क्या? जब परवाना कुर्बान हो सकता है तो आप क्या नहीं कर सकती? जिस घड़ी मुश्किल अनुभव होता है तो जरुर प्यार की परसेन्टेज में अन्तर आ जाता है, इसलिए कुछ समय मुश्किल लगता है। अगर होवे ही मुश्किल तो सदा मुश्किल लगना चाहिए, कभी-कभी क्यों मुश्किल लगता? परमात्मा और आपके बीच में कोई बात आ जाती है, इसलिए मुश्किल हो जाता है और

परसेन्टेज में फर्क पड़ जाता है। वह बीच से निकाल दो तो फिर सहज हो जाए।

बापदादा सदा कहते हैं टीचर्स अर्थात् सदा स्वयं हिम्मत में रहने वाली और दूसरों को हिम्मत देने के निमित्त बनने वाली। नहीं तो टीचर बनी क्यों? टीचर माना ही स्टूडेन्ट के निमित्त हैं। कमजोर को हिम्मत दे आगे बढ़ाने की सेवा के निमित्त हो। **सफल टीचर की पहली निशानी यह होगी - वह कभी हिम्मतहीन नहीं बनेंगी।** जो खुद हिम्मत में रहता है वह दूसरे को भी हिम्मत जरुर देता है। खुद में ही हिम्मत कम होगी तो दूसरे को भी नहीं दे सकेंगे। अच्छा!

(07.03.1990)

बापदादा सभी टीचर्स की निमित्त बनने की हिम्मत देख खुश है। हिम्मत रख निमित्त तो बन ही जाते हो ना। टीचर निमित्त बनना अर्थात बेहद की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाना। जैसे हद की स्टेज पर हीरो पार्टधारी आत्मा की तरफ सबका विशेष अटेन्शन होता है, ऐसे जिन आत्मओं के निमित्त् बनते हो विशेष वह और जनरल सर्व आत्माएं आप निमित्त बनी टीचर्स को उसी दृष्टि से देखते हैं। सभी का विशेष अटेन्शन होता है ना! तो टीचर्स को अपने में भी विशेष अटेन्शन रखना पड़े। क्योंकि सेवा में हीरो पार्टधारी बनना अर्थात् हीरो बनना। दुआयें भी टीचर्स को ज्यादा मिलती हैं। जितनी दुआयें मिलती हैं, उतना अपने ऊपर ध्यान देना आवश्यक है। यह भी ड्रामा अनुसार विशेष भाग्य है। तो **सदा इस प्राप्त हुए भाग्य को बढ़ाते चलो। सौ से हजार, हजार से लाख, लाख से करोड़, करोड़ से पद्म, पद्म से भी पद्मापद्म, सदा इस भाग्य को बढ़ाते चलना है। इसको कहते हैं -योग्य आदर्श टीचर।** बापदादा निमित्त बने हुए बच्चों को सिमरण जरुर करते हैं और सदा अमृतवेले 'वाह बच्चे वाह' यह दुआयें देते हैं। सुना सेवाधारियों ने। टीचर्स माना नम्बरवन सेवाधारी।

(13.03.1990)

सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ती कला की ओर जाओ। ठहरती कला में नहीं आओ। न गिरती कला, न ठहरती कला, सदा उड़ती कला हो। सभी टीचर्स कौन-सी कला वाली हो? टीचर अर्थात् सेवा के निमित्त। चाहे स्व सेवा हो, चाहे विश्व की सेवा हो लेकिन सदा सेवा में तत्पर रहना - यही टीचर्स की विशेषता है। अपने मन-बुद्धि और शरीर द्वारा सदा बिजी रहने वाले, कभी शरीर द्वारा कर्म करते हो तो मन-बुद्धि को फ्री रख देते हो। मन-बुद्धि को फ्री रखना माना माया को वेलकल करना। जिसको वैलकम करेंगे वह तो जरुर बैठ जायेगी ना। फिर कहते हो बापदादा माया को भगाओ। बुलाते आप हो और भगाये बापदादा! तो **टीचर वा नंबरवन गॉडली स्टूडेंट की विशेषता है - मन-बुद्धि, शरीर से अपने को बिजी रखना।** विशेष निमित्त् बने हुए सेवाधारी को यह अंडरलाइन करनी चाहिए तो सहज ही अथक बन जायेंगे।

(19.03.1990)

टीचर क्या करेंगी? वैराग्य वृत्ति धारण करेंगी ना? किनारा छोड़ेंगी? कि उस समय कहेंगी कि करने तो चाहते हैं लेकिन कैसे करें? करके दिखलाने वाले हो कि सुनाने वाले हो? जो भी चारों ओर के बच्चे आये हुए हैं सब बच्चों को बापदादा साकार रूप में देखने से हर्षित हो रहे हैं। हिम्मत रखी है और मदद बाप की सदा है ही। इसलिए सदैव हिम्मत से मदद के अधिकार को अनुभव करते सहज उड़ते चलो। बाप मदद देते हैं लेकिन लेने वाले लेवे। दाता देता है लेकिन लेने वाले यथा शक्ति बन जाते हैं। तो यथा शक्ति नहीं बनना। सदा सर्वशक्तिवान बनना। तो पीछे आने वाले भी आगे नम्बर ले लेंगे। समझा। सर्वशक्तियों के अधिकार को पूरा प्राप्त करो।

(13.12.1990)

तपस्या वर्ष में यह संकल्प करो कि सारा दिन संकल्प द्वारा, बोल द्वारा, कर्म द्वारा पुण्य आत्मा बन पुण्य करेंगे, और पुण्य की निशानी बताई कि पुण्य का प्रत्यक्षफल है हर आत्मा की दुआएं। हर संकल्प में पुण्य जमा हो। बोल में दुआएं जमा हो। सम्बन्ध-सम्पर्क से दिल से सहयोग की शुक्रिया निकले - इसको कहते हैं तपस्या। ऐसी तपस्या विश्व परिवर्तन का आधार बनेगी। ऐसी रिजल्ट पर प्राइज मिलेगी। फिर कहानी नहीं सुनाना कि ऐसा हो गया..! वैसे पहला नम्बर प्राइज़ सभी टीचर्स को लेना चाहिए और साथ में मधुबन निवासियों को लेना चाहिए। क्योंकि मधुबन की लहर, निमित्त टीचर्स की लहर प्रवृत्ति वालों तक, गॉडली स्टूडेन्ट्स तक सहज पहुँची है।

(10.04.1991)

जो भी जहाँ से भी आये हो इस समय सभी मधुबन निवासी हो। या अपने को महाराष्ट्र निवासी, उड़ीसा निवासी... समझते हो? ओरिजनल तो मधुबन निवासी हो। यह सेवा अर्थ भिन्न-भिन्न स्थान पर गये हो, ब्राह्मण अर्थात् मधुबन निवासी। सेवा स्थान पर गये हो इसीलिए सेवा स्थान को मेरा यही स्थान है - यह कभी भी नहीं समझना। कई बच्चे ऐसे कहते हैं, इसको चेंज करो तो कहते हैं नहीं, हमको पंजाब में वा उड़ीसा में ही भेजो। तो ओरिजनल पंजाब, उड़ीसा के हो वा मधुबन के हो । फिर क्यों कहते हो हम पंजाब के हैं तो पंजाब में ही भेजो, गुजरात के हैं तो गुजरात में ही भेजो? चेंज होने में तैयार हो? टीचर्स सभी तैयार हो? किसी को कहाँ भी चेंज करें, तैयार हैं? देखो, दादी सभी को सर्टीफिकेट ना का दे रही है। अच्छा यह भी अप्रैल में करेंगे। जो चेंज होने के लिए तैयार हों वही मिलने आवें। सेन्टर पर जाकर सोचेंगे यदि नहीं रहेंगे कि इसका क्या होगा, मेरा क्या होगा..? थोड़ा बहुत कुछ किनारा भी करेंगी। बापदादा से तपस्या की प्राइज़ लेने चाहते हो और बापदादा को तपस्या की प्राइज़ देने भी चाहते हो, या सिर्फ लेने चाहते हो? सभी सेन्टर से सरेन्डर होकर आना। नये मकान में आसक्ति है क्या? मेहनत

करके बनाया है ना, जहाँ मेरापन है वहाँ तपस्या किसको कहा जायेगा? तपस्या अर्थात् तेरा और तपस्या भंग होना माना मेरा। समझा - ये तो सब छोटी-छोटी टीचर्स हैं कहेंगी हर्जा नहीं यहाँ से वहाँ हो जायेंगी। बड़ों को थोड़ा सोचना पड़ता। अच्छा - जो सेन्टर पर आने वाले हैं वो भी सोचते होंगे हमारी टीचर चली जायेगी, आप सभी भी एवररेडी हो? कोई भी कहाँ भी चली जाये। वा कहेंगे हमको तो यही टीचर चाहिए? जो समझते हैं कि कोई भी टीचर मिले उसमें राज़ी हैं वह हाथ उठावें। कोई भी टीचर मिले बापदादा जिम्मेवार है, दादी दीदी जिम्मेवार है, वह हाथ उठायें। अभी ये टी.वी. में तो निकाला है ना। सभी के फोटो टी.वी. में निकाल लो फिर देखेंगे। अन्तिम पेपर का क्वेश्चन ही यह आना है - नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। तो अन्तिम पेपर के लिए तो सभी तैयार होना ही है । रिहर्सल करेंगे ना, ज़ोन हेड को भी चेंज करेंगे। पाण्डवों को भी चेंज करेंगे। आपका है ही क्या? बापदादा ने दिया और बापदादा ने लिया। अच्छा- सभी एवररेडी हैं इसलिए अभी सिर्फ हाथ उठाने की मुबारक हो।

(04.12.1991)

बापदादा को एक बात पर बड़ी हंसी आती है। वर्तमान समय कई बच्चों के समाचार आते हैं? बाप को भी चैलेन्ज कर रहे हैं कि बापदादा ने कहा है ना कि टीचर्स को चेन्ज करेंगे अभी देखेंगे बाबा क्या करता है? जो कहा है वह करता है या नहीं करता है। बाप ने कहा है तो बाप पर है। बाप करे या न करे। या ऐसे चैलेन्ज करनी है कि कहा है तो करना ही है। **बाप को जो करना है वह न किसके कहने से करेंगे। वा किसके ना कहने से नहीं करेंगे।** लेकिन बाप को भी चैलेन्ज के बहुत अच्छे पत्र आते हैं। जो टीचर्स से नाराज है उन्हों को यह चांस बड़ा मिल गया है। **कल्याणकारी बाप हर कार्य में जो भी करेगा वह कल्याणकारी ही होता है।** यह भूल जाते हैं फिर डायरेक्शन के पत्र लिख रहे हैं कि आप जरुर करना, बाप के भी शिक्षक बहुत बन गये ना तो बाप अपने

ऐसे बच्चों को भी मुबारक देते हैं। लेकिन **सदा संयम में स्वयं को आगे बढ़ाते चलो। सभ्यता पूर्वक बोल, सभ्यता पूर्वक चलन, इसमें ही सफलता होती है। अगर सत्यता है और सभ्यता नहीं है तो सफलता नहीं मिलती है।** और सफलता नहीं मिलती तो और जोश में आते हैं। और जब जोश में कोई होश नीं रहता। क्या कर रहे हैं, क्या कह रहे हैं वह भी होश नहीं आता और जब होश नहीं होता तो माया को चांस मिल जाता है बेहोश करने का। इसलिए अगर कोई असत्य बात देखते भी हो, सुनते भी हो तो असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ। कई कहते हैं कि यह पाप कर्म है ना पाप कर्म देखा नहीं जाता और स्वयं वायुमण्डल में असत्यता की बातें फैलाना यह क्या है? इसको क्या कहेंगे? पुण्य कर रहे हैं ना वे, असत्य देखा वा सुना, फिर भी परिवार है, लौकिक परिवार में भी अगर कोई ऐसी बात देखी जाती है, सुनी जाती है तो क्या किया जाता है?फैलाया जाता है? अखबार में डाला जाता है? कि कान में सुना और दिल में छिपाया। तो यह भी व्यर्थ बातों का फैलाव करना यह भी पाप का अंश है। यह छोटे-छोटे पाप जो होते हैं वह अपनी उड़ती कला के अनुभव को समाप्त कर देते हैं। क्योंकि सबसे भारी ते भारी है पाप। अगर पाप का अंश भी है तो उड़ेगा कैसे? बोझ वाला उड़ेगा? आजकल बहुत रॉयल भाषा में फैलाव करते हैं। कहते हैं यह नया समाचार लाया हूँ। आप तो बहुत बुद्धू हो आपको कोई समाचार का पता नहीं पड़ता। हम देखो नॉलेजफुल हैं कितने समाचार का पता है। **ऐसे समाचार सुनने वालों के ऊपर भी पाप और सुनाने वाले के ऊपर और ज्यादा पाप।** इसीलिए तपस्या वर्ष में यह सूक्ष्म पापों का बोझ समाप्त करो तब समान बन सकेंगे। नहीं तो सोचते हैं कि हमने तो कोई गलती की नहीं लेकिन यह रॉयल गलती बहुत करते हैं। इसको रॉयल समझते हैं। मैंने सुना तो ऐसे ही सुना दिया। भाव कोई नहीं था मेरा। लेकनि रिजल्ट क्या है। फैलाना अर्थात् बोझ के अधिकारी बनना। तो आजकल यह भी एक रिवाज हो गया है। आपस में मिलेंगे ना तो पहले तो समाचार सुनायेंगे, नये नये समाचार। कहेंगे किसको सुनाना नहीं सिर्फ आपको ही सुना रहे हैं। लेकिन बाप ने

तो सुना। रजिस्टर में दाग तो हुआ या नहीं? इसलिए इस बात का भी अटेन्शन अन्डरलाइन करो। ऐसे नहीं समझो कि बापदादा को पता हीं नहीं पड़ता। दादियाँ तो कोने में बैठी हैं उनको क्या पता। **दादियों को नहीं पता लेकिन आपके रजिस्टर में आटोमेटिक नोट हो जाता है।** जब आजकल के कम्प्युटर में सारा रिकार्ड भर जाता है तो क्या आपके रजिस्टर में आटोमेटिक यह रिकार्ड भर नहीं जायेगा। दादियाँ नहीं देखती, और नहीं देखते लेकिन रजिस्टर देख रहा है। तो ऐसा परिवर्तन करो। क्योंकि बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि तपस्या पॉवरफुल न होने का कारण क्या है? सदा विजयी बनने में विघ्न रुप क्या है? इन विघ्नों को स्वयं से समाप्त करो। दूसरा बदले तो मैं बदलूं, इनको चेंज करो तो हम चेंज होंगे, यह भाषा यथार्थ है? बड़ों के आगे बात रखना इसके लिए सबको हक है लेकिन सत्यता और सभ्यता पूर्वक।

(15.04.1992)

टीचर्स का अर्थ ही है अपने फीचर्स से सबको फरिश्ते के फीचर्स अनुभव कराने वाली। ऐसी टीचर्स हो? साधारण रूप नहीं दिखाई दे, सदा फरिश्ता रूप दिखाई दे। क्योंकि टीचर्स निमित्त हो ना। तो जो निमित्त बनते हैं वो जो स्वयं अनुभव करते हैं वह औरों को कराते हैं। यह भी भाग्य है जो निमित्त बने हो। अभी इसी भाग्य को स्वयं अनुभव में बढ़ाओ और दूसरों को अनुभव कराओ। सबसे विशेष बात अनुभवी-मूर्त बनो।

(03.10.1992)

सभी कार्य अच्छे चल रहे हैं ना? अच्छे उमंग-उत्साह से कार्य हो रहा है। करावनहार करा रहे हैं और निमित्त बन करने वाले कर रहे हैं। ऐसे अनुभव होता है ना? सर्व के सहयोग की अंगुली से हर कार्य सहज और सफल होता है। कैसे हो रहा है - ये जादू लगता है ना। दुनिया वाले तो देखते और सोचते रह जाते हैं। और

आप निमित्त आत्मायें सदा आगे बढ़ते जायेंगे। क्योंकि बेफ़िक्र बादशाह हो। दुनिया वालों को तो हर क़दम में चिन्ता है और आप सबके हर संकल्प में परमात्म चिन्तन है इसलिये बेफ़िक्र हैं। बेफ़िक्र हैं ना? अच्छा है, अविनाशी सम्बन्ध है। अच्छा, तो सब ठीक चल रहा है और चलना ही है। निश्चय है और निश्चिन्त हैं। क्या होगा, कैसे होगा-यह चिन्ता नहीं है।

टीचर्स को कोई चिन्ता है? सेन्टर्स कैसे बढ़ेंगे-यह चिन्ता है? सेवा कैसे बढ़ेगी-यह चिन्ता है? नहीं है? बेफ़िक्र हो? चिन्तन करना अलग चीज़ है, चिन्ता करना अलग चीज़ है। सेवा बढ़ाने का चिन्तन अर्थात् प्लैन भले बनाओ। लेकिन चिन्ता से कभी सफलता नहीं होगी। चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है इसलिये सब सहज होना ही है, सिर्फ़ निमित्त बन संकल्प, तन, मन, धन सफल करते चलो। जिस समय जो कार्य होता है वो कार्य हमारा कार्य है। जब हमारा कार्य है, मेरा कार्य है तो जहाँ मेरापन होता है वहाँ सब कुछ स्वत: ही लग जाता है। तो अभी ब्राह्मण परिवार का विशेष कार्य कौन-सा है? टीचर्स बताओ। ब्राह्मण परिवार का अभी विशेष कार्य कौन सा है, किसमें सफल करेंगे? (ज्ञान सरोवर में) सरोवर में सब स्वाहा करेंगे। परिवार में जो विशेष कार्य होता है तो सबका अटेन्शन कहाँ होता है? उसी विशेष कार्य के तरफ़ अटेन्शन होता है। ब्राह्मण परिवार में बड़े से बड़ा कार्य वर्तमान समय यही है ना। हर समय का अपना-अपना है, वर्तमान समय देश-विदेश सर्व ब्राह्मण परिवार का सहयोग इस विशेष कार्य में है ना कि अपने-अपने सेन्टर में है? जितना बड़ा कार्य उतनी बड़ा दिल। और जितनी बड़ा दिल होता है ना उतनी स्वत: ही सम्पन्नता होती है। अगर छोटा दिल होता है तो जो आना होता है वह भी रुक जाता है, जो होना होता है वह भी रुक जाता है। और बड़े दिल से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। मधुबन का ज्ञान सरोवर है वा आपका है? किसका है? मधुबन का है ना? गुजरात का तो नहीं है, मधुबन का है? महाराष्ट्र का है? विदेश का है? सभी का है। बेहद की सेवा का

बेहद का स्थान अनेक आत्माओं को बेहद का वर्सा दिलाने वाला है। ठीक है ना।

(18.11.1993)

साक्षी होकर खेल देखो तो वो अपने विधि का और वो अपने विधि का। सहज नष्टोमोहा होना यह बहुत काल के योग के विधि की सिद्धि है। तो नष्टोमोहा, सहज मृत्यु का खेल देखा। इस खेल का क्या रहस्य देखा? देह के स्मृति से भी उपराम। चाहे व्याधि द्वारा, चाहे विधि द्वारा - और कोई भी आकर्षण अन्त समय आकर्षित नहीं करे। इसको कहा जाता है सहज चोला बदली करना। तो क्या करना है? **नष्टोमोहा, सेन्टर भी याद नहीं आये। (टीचर्स को देखते हुए) ऐसे नहीं कोई जिज्ञासू याद आ जाये, कोई सेन्टर की वस्तु याद आ जाये, कुछ किनारे किया हुआ याद आ जाये ...। सबसे न्यारे और बाप के प्यारे। पहले से ही किनारे छुटे हुए हों। कोई किनारे को सहारा नहीं बनाना है। सिवाए मंज़िल के और कोई लगाव नहीं हो।**

(25.11.1993)

(टीचर्स से) फ़ालो भी करती हो ना। कई सोचते हैं बाप तो बाप है, कैसे समान बन सकते हैं? लेकिन जो निमित्त आत्मायें हैं वो तो आपके हमजिन्स हैं ना? तो जब वो बन सकती हैं तो आप नहीं बन सकते? तो लक्ष्य सभी का सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने का है। अगर हाथ उठवायेंगे कि 16 कला बनना है या 14 कला तो किसमें उठायेंगे? 16 कला। तो 16 कला का अर्थ क्या है? सम्पूर्ण ना। जब लक्ष्य ही ऐसा है तो बनना ही है। मुश्किल है नहीं, बनना ही है। छोटी-छोटी बातों में घबराओ नहीं। मूर्ति बन रहे हो तो कुछ तो हेमर लगेंगे ना, नहीं तो ऐसे कैसे मूर्ति बनेंगे! जो जितना आगे होता है उसको तूफ़ान भी सबसे ज्यादा क्रॉस करने होते हैं लेकिन वो तूफ़ान उन्हों को तूफ़ान नहीं लगता, तोहफ़ा लगता है। ये तूफ़ान भी गिफ्ट बन जाती है अनुभवी बनने की, तो तोहफ़ा बन गया ना। तो गिफ्ट लेना

अच्छा लगता है या मुश्किल लगता है? तो ये भी लेना है, देना नहीं है। देना मुश्किल होता है, लेना तो सहज होता है।

ये नहीं सोचो-मेरा ही पार्ट है क्या, सब विघ्नों के अनुभव मेरे पास ही आने है क्या! वेलकम करो-आओ। ये गिफ्ट है। ज्यादा में ज्यादा गिफ्ट मिलती है, इसमें क्या? ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर से ही तो उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं। आप लोग तो अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यु। खेल लगता है। देखते रहते हो और मुस्कराते रहते हो, दुआयें देते रहते हो। टीचर्स बहादुर हो या कभी-कभी घबराती हो? ये तो सोचा ही नहीं था, ऐसे होगा, पहले पता होता तो सोच लेते....। डबल फ़ॉरेनर्स समझते हो इतना तो सोचा ही नहीं था कि ब्राह्मण बनने में भी ऐसा होता है? सोच-समझकर आये हो ना या अभी सोचना पड़ रहा है? अच्छा!

कितना भी कोई कैसा भी हो लेकिन बापदादा अच्छाई को ही देखते हैं। इसलिये बापदादा सभी को अच्छा ही कहेंगे, बुरा नहीं कहेंगे। चाहे 9 बुराई हों और एक अच्छाई हो तो भी बाप क्या कहेगा? अच्छे हैं या कहेंगे कि ये तो बहुत खराब है, ये तो बड़ा कमज़ोर है? अच्छा। ये बड़ा ग्रुप हो गया है। (21 देशों के लोग आये हैं) अच्छा है, हाउसफुल हो तब तो दूसरा बनें। अगर फुल नहीं होगा तो बनने की मार्जिन नहीं होगी। आवश्यकता ही साधन को सामने लाती है।

(23.12.1993)

बापदादा अभी ऐसा ग्रुप चाहता है जो सदा मन्सा में, वाणी में, बोल में, सम्पर्क में जो ओटे सो अर्जुन। मैं अर्जुन हूँ। मैं जो करुँगा, ('मैं' बॉडी कॉन्सेस का नहीं, मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ) मुझे देख और करेंगे। तो जो ओटे सो अर्जुन। जो गाया हुआ है, अव्वल नम्बर अर्थात् अर्जुन, अलौकिक जन। ऐसा ग्रुप बापदादा देखना चाहते हैं। बातों को नहीं देखें, दूसरों को नहीं देखें, दूसरे का व्यर्थ नहीं सुनें। बस, अलौकिक जन। संकल्प, बोल और कर्म सबमें अलौकिक, दिव्यता की झलक

हो। इसको कहा जाता है अर्जुन, अलौकिक जन। ऐसा ग्रुप इस वर्ष में तैयार होगा कि दूसरे वर्ष में तैयार होगा? जो इस ग्रुप में आना चाहते हैं वह हाथ उठाओ। मुझे बनना है, मैं अर्जुन हूँ। फिर कोई ऐसा समाचार नहीं आवे-क्या करें.. हो जाता है.. सरकमस्टांश ऐसे हैं.. मदद नहीं मिलती है.. दुआयें नहीं मिलती हैं.. सहारा नहीं मिलता.. जिन्हों को कुछ समय चाहिये वो हाथ उठाओ। एक-दो मास चाहिये वा एक वर्ष चाहिये। जो भी ग्रुप आवे उनसे पूछना फिर रिज़ल्ट सुनाना। टीचर्स तो पहले। क्योंकि जो निमित्त बनते हैं उनका सूक्ष्म वायुमण्डल, वायब्रेशन्स जरूर जाता है। पद्‌मगुणा पुण्य भी मिलता है और पद्‌म गुणा निमित्त भी बनते हैं। और शब्द तो नहीं बोलेंगे ना। टीचर बनना बहुत अच्छा है, गद्दी तो मिल जाती है ना! दीदी-दीदी का टाइटल मिल जाता है ना। लेकिन ज़िम्मेदारी भी फिर इतनी है। इस वर्ष में कुछ नवीनता दिखाओ। यह नहीं सोचो-हाथ तो अनेक बार उठा चुके हैं, प्रतिज्ञा भी बहुत वर्ष कर चुके हैं, ऐसे संकल्प न सूक्ष्म में आये, न औरों के प्रति आये। ये संकल्प भी ढीला करता है। ये तो चलता ही आता है, ये तो होता ही रहता है... ये वायब्रेशन भी कमज़ोर बनाता है। दृढ़ संकल्प करो तो दृढ़ता सफलता को अवश्य लाती है। कमज़ोर संकल्प नहीं उत्पन्न करो। उनको पालने में बहुत टाइम व्यर्थ जाता है। उत्पत्ति बहुत जल्दी होती है। एक सेकण्ड में सौ पैदा हो जाते हैं। और पालना करने में कितना समय लगता है! मिटाने में मेहनत भी लगती, समय भी लगता और बापदादा के वरदान व दुआओं से भी वंचित रह जाते। सर्व की शुभ भावनाओं की दुआओं से भी वंचित हो जाते हैं। शुद्ध संकल्प का बंधन, घेराव, ऐसा बांधो सबके लिये, चाहे कोई थोड़ा कमजोर भी हो, उनके लिये भी ये शुद्ध संकल्पों का घेराव एक छत्रछाया बन जाये, सेफ्टी का साधन बन जाये, किला बन जाये। शुद्ध संकल्प की शक्ति को अभी कम पहचाना है। एक शुद्ध वा श्रेष्ठ शक्तिशाली संकल्प क्या कमाल कर सकता है-इसकी अनुभूति इस वर्ष में करके देखो। पहले अभ्यास में युद्ध होगी, व्यर्थ संकल्प शुद्ध संकल्प को कट

करेगा। जैसे कौरव-पाण्डव के तीर दिखाते हैं ना, तीर, तीर को रास्ते में ही ख़त्म कर देता है तो संकल्प, संकल्प को ख़त्म करने की कोशिश करता है, करेगा लेकिन दृढ़ संकल्प वाले का साथी बाप है। विजय का तिलक सदा है ही है। अब इसको इमर्ज करो तो व्यर्थ स्वत: ही मर्ज हो जायेगा। व्यर्थ को समय देते हो। कट नहीं करते हो लेकिन उसके रंग में रंग जाते हो। सेकण्ड से भी कम समय में कट करो। शुद्ध संकल्प से समाप्त करो। तो सर्व के शुभ संकल्पों का वायुमण्डल का घेराव कमाल करके दिखायेगा। **पहले से ही यह नहीं सोचो कि होता तो है नहीं, करते तो बहुत हैं, सुनते तो बहुत हैं, अच्छा भी बहुत लगता है, लेकिन होता नहीं है। यह भी व्यर्थ वायुमण्डल कमज़ोर बनाता हैं। होना ही है-दृढ़ता रखो, उड़ान करो। क्या नहीं कर सकते हो! लेकिन पहले स्व के ऊपर अटेन्शन।** स्व का अटेन्शन ही टेन्शन ख़त्म करेगा। समझा क्या करना है? कोई कहे यह तो होता ही रहता है, पहले भी प्रतिज्ञा की थी-यह नहीं सुनो। इसमें कमज़ोरों को साथ नहीं देना, साथी बनाना। अगर कोई ऐसा-वैसा बोलता है तो एक-दो में कहते हैं ना शुभ बोलो, शुभ सोचो, शुभ करो।

(14.04.1994)

टीचर्स:- सभी टीचर्स तो सदा ही ज्ञान स्वरूप, स्मृति स्वरूप हैं ही। क्योंकि जैसे बाप शिक्षक बनकर आते हैं तो बाप समान निमित्त शिक्षक हो। बाप जैसे नहीं हो, लेकिन निमित्त शिक्षक हो। तो टीचर्स की विशेषता निमित्त भाव और निर्मान भाव। **सफल टीचर वही बनती है जिसका निर्मल स्वभाव हो।** अभी निर्मल स्वभाव के ऊपर विशेष अण्डरलाइन करो। कुछ भी हो जाए लेकिन अपना स्वभाव सदा निर्मल रहे। यही निर्मल स्वभाव निर्मानिता की निशानी है। तो अण्डरलाइन करो 'निर्मल स्वभाव'। बिल्कुल शीतल। शीतलता का गायन शीतला देवी है। तो निर्मल स्वभाव अर्थात् शीतल स्वभाव। बात जोश दिलाने की हो लेकिन आप

निर्मल हो तब कहेंगे सफल टीचर। तो बापदादा फिर भी अण्डरलाइन करा रहा है किस पर? निर्मल स्वभाव। समझा?

(26.11.1994)

टीचर्स - जैसे टीचर्स का टाइटल है, तो जैसा टाइटल है वैसे विशेष बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाने में टाइट रहना। हल्के नहीं होना। क्योंकि निमित्त टीचर्स का वायुमण्डल अनेकों तक पहुँचता है। तो टीचर्स अभी ये कमाल करके दिखायें। जैसे परिवर्तन में आज्ञाकारी तो बने। आज्ञाकारी बनने का, हाँ जी करने का एक पाठ तो पक्का कर लिया। लेकिन दूसरा पाठ बेहद के वैराग्य वृत्ति का, अभी ये पाठ पक्का करके दिखाओ। क्योंकि निमित्त हो ना। तो निमित्त आत्मायें ही निर्मान बन निर्माण का कर्तव्य बहुत सहज कर सकती हैं। अभी ये वर्ष तो पूरा हो ही रहा है। लेकिन नये वर्ष में इस नवीनता की झलक बापदादा भी देखेंगे। सेवा की, सेन्टर खोले, बहुत बढ़ाया, आई.पीज भी आ गये, वी.आई.पीज भी आ गये, ये तो होता ही रहता है लेकिन सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी। समझा? बापदादा तो चार्ट देखते ही हैं ना? फिर भी सेवा के निमित्त हो-ये श्रेष्ठ भाग्य कम नहीं है! ये भी विशेष वर्सा है। तो इस विशेष वर्से के भाग्य के अधिकारी बने हो। समझा?

(05.12.1994)

टीचर्स - देखो, टीचर्स नहीं होती तो आप लोग कैसे आते? टीचर्स का महत्व है ना! फिर भी निमित्त टीचर्स तो हैं। आप सभी को पाठ पक्का कराने वाले निमित्त हैं ना? उमंग-उत्साह बढ़ाने वाले निमित्त टीचर्स हैं। टीचर्स का विशेष कार्य ही है उमंग-उत्साह के पंख लगाए, स्वयं भी उड़ने वाले और दूसरों को भी उड़ाने वाले। योग्य टीचर्स की विशेषता ही यह है कि आने वाले हर स्टूडेण्ट सदा ही

सहज पुरुषार्थ द्वारा आगे से आगे उड़ते रहेंगे। वैसे टीचर्स का भाग्य ब्राह्मण परिवार में एक्स्ट्रा भी है। क्योंकि निमित्त बनना ये एक एक्स्ट्रा लिफ्ट है। सेवा के अधिकारी बनना - ये एक्स्ट्रा अधिकार अन्दर बहुत मदद करता है। तो टीचर्स को बापदादा सदा निमित्त और समान सेवाधारी समझते हैं। जो बाप का कार्य वो निमित्त टीचर्स का कार्य। तो बापदादा सदा टीचर्स को समान स्वरूप से देखते हैं। इतना स्नेह और इतना रिगार्ड बाप सदा देते हैं और उसी नज़र से देखते हैं कि ये समान सेवाधारी हैं। टीचर्स के बिना तो काम नहीं चलेगा ना! आप लोगों को ठप्पा तो टीचर्स का लगाना पड़ता है ना? अगर टीचर्स आपके फॉर्म पर ठप्पा नहीं लगायेंगी तो कैसे आयेंगे?

(14.12.1994)

टीचर्स से - टीचर्स को विशेष बापदादा मुबारक दे रहे हैं। क्योंकि हर वर्ष सेवा की रिज़ल्ट में टीचर्स ने मेहनत अच्छी की है। इसलिये प्रत्यक्षफल बाप की दुआएं हैं। समझा! टीचर्स से पूछने की आवश्यकता नहीं है कि खुश हैं? खुश हैं और खुश बनाने के निमित्त हैं। तो जो औरों को खुश बनाते हैं वो स्वयं तो जरूर होंगे। टीचर का अर्थ ही अचल-अमर। तो अमर भी हैं और अचल भी हैं। ऐसे है! कि कभी-कभी खुशी थोड़ी कम होती है? नहीं, हो ही नहीं सकती। इतना निश्चय है।

(26.02.1995)

(टीचर्स ट्रेनिंग का प्रोग्राम चल रहा है) प्रोग्राम अच्छा चला? प्रोग्राम तो अच्छा रहा और प्रोग्रेस क्या रही? क्योंकि टीचर्स निमित्त हैं। अगर निमित्त टीचर्स सदा शक्तिशाली हैं तो आने वाले भी सहज शक्तिशाली बनते हैं। अगर टीचर्स हलचल में आती हैं, तो चाहे कोई देखे, नहीं देखे, सुने, नहीं सुने, लेकिन टीचर्स का वायब्रेशन ऑटोमेटिक जाता है। आप देखेंगे जैसी टीचर होगी वैसी विशेषता

स्टूडेन्ट में भी होगी। अगर कोई रमणीक टीचर है तो स्टूडेन्ट भी रमणीक होंगे, अगर टीचर ऑफिशल है तो स्टूडेन्ट भी आफिशल होंगे, योग की इन्ट्रेस्ट ज्यादा है तो स्टूडेन्ट भी ऐसे होंगे, अगर कल्चरल प्रोग्राम करने वाली है तो स्टूडेन्ट भी ऐसे होंगे। तो टीचर्स विशेष आधार है। तो टीचर्स के फीचर्स काम करते हैं। बोले, नहीं बोले, लेकिन उसके फीचर्स बोलते हैं, छिप नहीं सकते। तो टीचर्स को समझना है कि हम फाउन्डेशन हैं, निमित्त हैं। फाउण्डेशन वैसे तो बापदादा है लेकिन सेवा प्रति निमित्त हैं। तो निमित्त भाव, करनकरावनहार की स्मृति-ये टीचर्स को सदा ही सहज आगे बढ़ाती है। तो टीचर्स माना सिर्फ मुख से सेवा करने वाले नहीं, टीचर्स अर्थात् अपने फीचर्स से भी सेवा करें। ऐसे दिव्य फीचर्स, मुस्कराते हुए फीचर्स, अचल-अडोल के फीचर्स वो सेवा करते हैं। तो सिर्फ ये नहीं देखो-कोर्स तो अच्छा करा लिया, सप्ताह कोर्स भी करा लिया, पॉजिटिव का भी करा लिया और भी सारे पाठ पढ़ा लिये लेकिन फीचर्स से सेवा की? फीचर्स से सेवा अर्थात् प्रैक्टिकल लाइफ में बल देना। तो प्रैक्टिकल लाइफ का बल दिया या सिर्फ पाठ पढ़ाया? तो डबल सेवाधारी बनना अर्थात् नम्बरवन टीचर बनना।

(25.03.1995)

टीचर्स को विशेष ये लक्ष्य रखना है कि सदा हर परिस्थिति में, परिस्थिति बदले लेकिन स्थिति नहीं बदले। स्थिति सदा खजानों से सम्पन्न हो और सन्तुष्ट रहे। परिस्थिति आयेगी और चली जायेगी। लेकिन परिस्थिति की क्या शक्ति है जो आपकी सन्तुष्टता को ले जाये। तो परिस्थिति का खेल भले देखो लेकिन साक्षीपन, सन्तुष्टता की सीट पर बैठकर देखो। तो टीचर्स अर्थात् सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट। टीचर्स का टाइटल है सन्तुष्टमणियाँ। ऐसे हैं ना? सदा सन्तुष्टमणि।

(06.04.1995)

टीचर्स को भी मिलने का चांस मिलता है। बापदादा को टीचर्स वैसे बहुत प्यारी लगती हैं। इसमें तो ताली बजा दी लेकिन वैसे के पीछे ऐसे भी है। वैसे तो टीचर्स को बापदादा एकदम समान दृष्टि से देखते हैं कि ये बाप समान हैं, निमित्त हैं लेकिन जब ऐसी-वैसी उल्टी डांस कर देती हैं, जो मन को नहीं भाती है, कभी-कभी ऐसी डांस करते हैं तो सब कहते हैं बन्द करो, बन्द करो। तो **जब टीचर्स ऐसा कुछ करती हैं तो बापदादा की, खास ब्रह्मा बाबा की आंखे नीचे हो जाती हैं। इतना टीचर्स को अटेन्शन रखना चाहिए।** टाइटल तो टीचर्स को बहुत अच्छा है, बैज भी बहुत जल्दी पहन लेते हो। लेकिन टीचर का अर्थ ही है बाप समान। विशेष ब्रह्मा बाबा टीचर्स को दिल से प्यार करते हैं लेकिन कभी-कभी दृष्टि नीचे भी करनी पड़ती है। तो ऐसे नहीं करना। बाकी अच्छा है, तामिलनाडु ने विस्तार अच्छा किया है और एक विशेषता ये भी है कि हैण्ड्स भी अपने निकालते जाते और सेवा भी बढ़ाते जाते। तो ये भी अच्छी बात है। हैण्ड्स तैयार भी करना और सेवा भी बढ़ाना - दोनों ही करना।

टीचर्स तो बहुत हैं। अभी ये भी एक्जैम्पुल दिखायेंगे। देखो कितना अच्छा रत्न निकला और एडवांस पार्टी में भी अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। तो करेंगे ना! खिटखिट नहीं होनी चाहिए। खिटखिट खत्म। विजय का झण्डा हर सेवाकेन्द्र पर लहराये। ये नहीं बापदादा सुने कि फलाने सेन्टर पर खिटखिट है इसलिए फलानी दादी को भेजो। ये नहीं होना चाहिए। ऐसे थोड़ा-थोड़ा बीच-बीच में खेल करते हैं। अभी खत्म। पहले टीचर्स खत्म करेंगी तभी वायब्रेशन्स फैलेगा। ये सूक्ष्म वायब्रेशन्स है। आप समझेंगे एक ने किया ना, सभी को क्या पता? लेकिन वायब्रेशन ऐसी चीज है जो न पता होते भी...। मैंने सिर्फ किया, नहीं। मैंने सभी बाबा के सेवाकेन्द्रों का वायब्रेशन खराब किया। इतनी जिम्मेवारी हर एक टीचर के ऊपर है। बैज पहनना तो बहुत अच्छा है। अच्छा भी लगता है। सभी एक जैसा बैज पहन कर बैठती हैं तो अच्छा लगता है लेकिन बैज की लाज रखना।

(07.11.1995)

अच्छा, जितने भी आये हैं, सबका नाम रजिस्टर में तो है ही। रजिस्टर में अपना नाम पक्का कराया है या थोड़ा-थोड़ा कच्चा है? अच्छा, जो भी नये जहाँ से भी आये हैं, टीचर्स के पास तो लिस्ट है ही और प्रेजेन्ट मार्क भी डालते हैं या नहीं डालते? कौन-सा सेन्टर है जहाँ प्रेजेन्ट मार्क नहीं पड़ती हो, कोई सेन्टर है? टीचर सच बताओ। कभी नींद आ जाती होगी, कभी बीमार हो गये, कभी क्लास में पहुँच नहीं सके, तो रोज़ की प्रेजेन्ट मार्क पड़ती है? जो टीचर्स कहती हैं रोज का रजिस्टर और प्रेजेन्ट मार्क है वो हाथ उठाओ। अच्छा, रेग्युलर है या कभी-कभी? कि दो-तीन दिन मिस हो जाता है? सब टीचर्स पास हैं तो ताली बजाओ। तो अभी क्या करना - जो भी आप नये लाये हैं, चाहे भाई, चाहे बहनें, उनका तीन-चार मास के बाद, क्योंकि पहले थोड़ा नशा रहता है, पीछे धीरे-धीरे कम होता है, तो चार मास के बाद जितने नये आये, उतने कायम हैं या चक्कर लगाने गये हैं कहाँ? यह रिजल्ट लिखना। क्योंकि कई चक्कर लगाने भी जाते हैं। दो साल की माया की यात्रा करके फिर यहाँ पहुँचते हैं। तो रिज़ल्ट में सिर्फ यह दो शब्द लिखना कि 60 आये और 60 ही हैं। या 60 आये 40 हैं। सिर्फ ये दो अक्षर विशेष रतनमोहिनी के नाम से अलग लिखना।

(25.11.1995)

बापदादा को तो दिल होती है टीचर्स ऐसे रिफ्रेश हो जायें, शक्तिशाली बन जायें जो किसी भी सेन्टर पर कोई भी जाये तो एक आत्मा भी कमज़ोर नहीं दिखाई दे। निर्विघ्न सेवाकेन्द्र, उसको ही मार्क्स मिलती हैं। बापदादा इसमें खुश नहीं होते कि इस ज़ोन में हज़ार सेन्टर हैं, हज़ार गीता पाठशालायें हैं। बापदादा खुश होते हैं जिस ज़ोन में कोई खिटखिट नहीं हो, कोई कम्पलेन्ट नहीं हो। क्योंकि वास्तव में मानो टीचर मेहनत कर रही है और खिटखिट भी हो रही है, वातावरण वैसे का वैसा है तो क्या वो सेवा है? कि झमेला है? तो आये किसलिए? ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारियां किसलिए बनें? झमेले के लिए? अगर झमेले ही चाहिये तो

दुनिया में बहुत जगह है। बापदादा वहाँ का एड्रेस भी दे सकते हैं। लेकिन ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ बनना माना मिलन मेला मनाना, न कि झमेला। देखो अभी आये हो तो किस लक्ष्य से आये हो? झमेले के लिए आये हो? मिलन मनाने आये हो तो अच्छा लगता है ना! तो कभी भी, कोई भी स्टूडेन्ट हो वा टीचर हो, हैं तो सभी स्टूडेन्ट-कभी भी झमेला नहीं करो। झमेला करना अर्थात् क्या कहें! बापदादा को कहना भी अच्छा नहीं लगता। इसलिए चाहे टीचर, चाहे मधुबन, चाहे मधुबन के उप सेवाकेन्द्र, गीतापाठशालायें या आपके ज़ोन के उपसेवाकेन्द्र या केन्द्र, जो भी अपने को ब्राह्मण आत्मा कहलाते हैं, नहीं तो अपने को ब्राह्मण नहीं कहलाओ, क्षत्रिय कहलाओ, ब्राह्मण नाम को खराब नहीं करो। ब्राह्मण माना विजयी। अगर झमेला करते हैं तो क्षत्रिय है, न कि ब्राह्मण।

(दादियां बापदादा के सामने बैठी हैं) टीचर्स को अच्छा चांस मिल जाता है। मेहनत भी करती हैं, यहाँ थकावट उतर जाती है। यहाँ रि-फ्रेश होते हो या यहाँ भी पार्टी की चिन्ता रहती है? वैसे तो मधुबन की दिनचर्या ऐसी सेट है जो टाइम भी नहीं है। बिज़ी रहने चाहे, क्लासेस का लाभ उठाना चाहे तो स्टूडेण्ट को फुर्सत मिलती है? मधुबन में फ्री होते हो? पाण्डवों से पूछते हैं कि क्लासेस में बिज़ी रहते हो, क्या होता है? मधुबन में यहाँ वहाँ की बातें करने का फ्री टाइम मिलता है? क्लासेस में बिज़ी रहते हो? सभी क्लासेस अटेण्ड करते हो? **क्लासेस ज़रूर अटेण्ड करना चाहिये क्योंकि हर एक रत्न में बापदादा वा ड्रामानुसार कोई न कोई विशेषता भरी हुई है।** तो क्लास कोई भी करावे। ऐसे नहीं फलाने का क्लास है तो सभी भागो और कोई दूसरे का है तो आधा घूमना...। कोई भी क्लास कराता है उसमें विशेषता होती है। और आप लोगों के पास सभी तो पहुँच भी नहीं सकते। यहीं मिलते हैं। तो जिन्हों ने सभी क्लास अटेण्ड किये हैं, एक भी मिस नहीं किया है, वह हाथ उठाओ। अच्छा, टीचर्स अपने काम उतारती हैं। आप एक तो ऑफिशल राउण्ड लगाने जाते हो वो तो अच्छी बात है, लेकिन क्लास के टाइम जो क्लास छोड़ करके और कहाँ घूमने गये हैं वो हाथ उठाओ। तो अभी

ऐसे नहीं करना। क्लास की कई बातें समय पर बरोबर काम में आयेंगी। अभी सुनते हो, तो समझते हो बहुत सुन लिया। लेकिन कोई-कोई पॉइन्ट ऐसे टाइम में काम पर आती हैं जो आप अन्दर ही अन्दर शुक्रिया मानेंगे, इसलिए बिजी रहो। मधुबन माना पढ़ाई में बिज़ी। बाकी खाओ पियो मौज करो, वो भले करो लेकिन टाइम पर। अच्छा है, नयों-नयों को तो नई बातें मिलती हैं। पढ़ाई में अटेन्शन बहुत ज़रूरी है। पढ़ाई माना सिर्फ सुनना नहीं। पढ़ाई का अर्थ है सुनना और करना। अच्छा, सब खुशहाल तो हैं ही। बेहाल नहीं, खुशहाल हो।

(04.12.1995)

टीचर्स क्या समझती हो? आगे बैठती हो तो नम्बर भी आगे लेना है ना! कम नहीं रह जाना। नशा रखो कि हम पूर्वज भी हैं और पूज्य भी हैं। तो जितने बड़े, उतनी बड़ी जिम्मेवारी है। बड़ा बनना सिर्फ खुश होने वाली बात नहीं है। नाम बड़ा तो काम भी बड़ा। सभी टीचर्स खुश हो? या कोई-कोई इच्छा अभी भी मन में है? कोई भी इच्छा होगी तो अच्छा बनने नहीं देगी। या इच्छा पूर्ण करो या अच्छा बनो। आपके हाथ में है। और देखा जाता है कि ये इच्छा ऐसी चीज़ है जैसे धूप में आप चलते हो तो आपकी परछाई आगे जाती है और आप उसको पकड़ने की कोशिश करो, तो पकड़ी जायेगी? और आप पीठ करके आ जाओ तो वो परछाई कहाँ जायेगी? आपके पीछे-पीछे आयेगी। तो इच्छा अपने तरफ आकर्षित कर रुलाने वाली है और इच्छा को छोड़ दो तो इच्छा आपके पीछे-पीछे आयेगी। मांगने वाला कभी भी सम्पन्न नहीं बन सकता। और कुछ नहीं मांगते हो लेकिन रॉयल मांग तो बहुत है। जानते हो ना-रॉयल मांग क्या है? अल्पकाल का कुछ नाम मिल जाये, कुछ शान मिल जाये, कभी हमारा भी नाम विशेष आत्माओं में आ जाये, हम भी बड़े भाइयों में गिने जायें, हम भी बड़ी बहनों में गिने जायें, आखिर हमको भी तो चांस मिलना चाहिए। लेकिन जब तक मंगता हो तब तक कभी खुशी के खज़ाने से सम्पन्न नहीं हो सकते। ये मांग के पीछे या कोई भी हद

की इच्छाओं के पीछे भागना ऐसे ही समझो जैसे मृगतृष्णा है। इससे सदा ही बचकर रहो। छोटा रहना कोई खराब बात नहीं है। छोटे शुभान अल्लाह हैं। क्योंकि बापदादा के दिल पर नम्बर आगे हैं। अल्पकाल की इच्छा का अनुभव करके देखा होगा, तो रुलाती है या हंसाती है? रुलाती है ना! तो रावण की आज्ञा है रुलाओ, आप तो बाप के हो ना तो बाप हंसाने वाला है या रुलाने वाला?

(13.12.1995)

कृष्णा अय्यर छोटा माइक तो है ही, आदि से अन्त तक सेवा में सहयोगी है और रहेगा। अच्छा है। जैसे कृष्णा अय्यर है, मद्रास का गवर्नर है ऐसे निकालो। और ऐसों का संगठन करो फिर देखो आप आराम से बैठे रहेंगे और वो आवाज़ फैलाते रहेंगे। जैसे आजकल की जो नई-नई टीचर्स आती हैं ना वो देखती हैं कि पुरानी दादियाँ तो बड़े आराम से रहती हैं और हम लोगों को भाग-दौड़ कराती हैं। तो आप लोगों को तैयार किया ना तो वो आराम से बैठी हैं। तो आप भी ऐसे तैयार करो जो आप आराम से बैठो।

(22.12.1995)

टीचर्स सेः- आप लोग डबल साथी हो बड़े जो निमित्त हैं उन्हों के भी साथी और बाप के भी। तो डबल साथी बन रहने का पार्ट बजाया तो साथी होकर रहना ये बड़े मजे की जीवन है। खाओ-पियो, सेवा करो और नाचो। जिम्मेवारी होते भी जिम्मेवारी से फ्री। वैसे मेहनत तो सेकेण्ड ग्रुप ही करता है। तो बापदादा खुश होते हैं - हिम्मत से आगे बढ़ रहे हो और बढ़ा रहे हो। तो एक-एक की विशेषता बहुत अच्छी है, नाम बड़ों का काम आपका। अगर आपको आगे नहीं रखें तो काम ही नहीं चले।

(10.03.1996)

दूसरे तरफ विनाश का समय आपका इन्तजार कर रहा है, आप इन्तजार नहीं करो वह कर रहा है। समय तो आपकी रचना है, आप आर्डर करो तो वह तो सदा तैयार है। तो अभी अपने को अचल-अडोल बनाने की, बनने की तैयारी करो। जो भी आपके सम्पर्क-सम्बन्ध में आते हैं, मानों टीचर्स हैं या निमित्त बड़े भाई या बहनें हैं, उन्हों को अपने सम्बन्ध-सम्पर्क वाले ग्रुप को इस वर्ष में ऐसा तैयार करना है जो हर एक के मुख से निकले कि हम अनुभवी मूर्त हैं। चाहे सेन्टर पर साथी हैं, चाहे प्रवृत्ति में रहने वाले हैं, लेकिन हर एक के सहयोग से, वृत्ति से ऐसा ग्रुप तैयार करो जो कोई के भी मुख से, कोई की भी वृत्ति से ऐसा अनुभव नहीं हो कि यह अनुभवी मूर्त बनने वाली है, बनी नहीं है। समझा। ऐसे नहीं समझना कि जो सेन्टर्स के बड़े हैं, वह बने, हम तो बने नहीं। सबकी अंगुली चाहिए। चाहे भण्डारे का कार्य करने वाले भी हैं लेकिन सभी जिम्मेवार हैं।

टीचर्स समझती हैं ना कि और संख्या मिलनी चाहिए। टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स को तो चांस अच्छा मिल जाता है एक ग्रुप में आते तो दूसरे में भी आ जाते। अभी सभी टीचर्स क्या करेंगी? रिजल्ट देंगी ना? सेन्टर को तैयार करेंगी? जो समझती हैं हो सकता है, वह हाथ उठाओ। सभी निमित्त हैं, चाहे छोटी सी कुमारी रहती है, कुमार रहते हैं, भाई रहते हैं, सब जिम्मेवार हैं। एक साल दिया है, एक मास नहीं दिया है, एक साल दिया है। मधुबन भी तैयार होगा ना। मधुबन वाले हाथ उठाओ। तो पहला एक्जैम्पल कौन बनेगा? मधुबन या सभी साथ बनेंगे? बापदादा ने देखा है कि मधुबन को कापी करना सबको आता है। चाहे अच्छी बात हो, चाहे कोई भी बात हो लेकिन मधुबन को कापी करना बहुत सहज आता है। और एक स्लोगन बन गया है - मधुबन में भी तो होता है! अभी इस वर्ष में यह स्लोगन नहीं कहना, इस वर्ष का स्लोगन है, मुझे करना है। यह भी होता है, यह भी होता है, नहीं। करना ही है। मुझे करना है। अर्जुन मैं हूँ। दूसरा अर्जुन नहीं है, जिसको देखना है। मैं अर्जुन हूँ, मैं निमित्त हूँ।

(31.12.1996)

आज टीचर्स भी आई है ना। हाथ उठाओ टीचर्स। जो खास प्रोग्राम प्रमाण भट्ठी में आई हैं वह हाथ उठाओ। विशेष टीचर्स प्रति, बापदादा सदा खुश होते हैं कि चाहे बड़ी, चाहे छोटी लेकिन अपने जीवन के लिए फैंसला करने में बहुत ही अच्छे अपने जज बने हैं, जो फट से अपने जीवन का फैंसला किया कि मुझे यही सेवा की जीवन व्यतीत करनी है। यह वायदा सभी टीचर्स ने किया है ना? या कभी-कभी सोचती हैं कि सोचा नहीं था ऐसा होगा, पहले पता होता तो नहीं करते। ऐसे तो नहीं सोचते? यहाँ एक गीत बजाते हो, बाहर का है या आप लोगों का है, एक गीत बजाते हो उसमें बाप को कहते हो - आपके फूलों से भी प्यार तो कांटों से भी प्यार। यह गाती हो? यह मन में धारणा है? कांटों से प्यार है तो कांटे तो चुभते भी हैं ना। अगर कांटे को प्यार से सम्भाल से उठाओ तो कांटे भी प्यारे लगते हैं और अलबेले पन में कांटे को हाथ लगाओ तो नाराजगी का खून भी निकलता है। तो ऐसे तो नहीं हो ना? आप तो प्यार करने वाले हो ना। छोटी-छोटी बातें, छोटे-छोटे कांटे हैं। लेकिन आपको तो कांटों से भी प्यार है क्योंकि कांटे अर्थात् छोटी-छोटी बातें अनुभवी बहुत बनाती हैं।

बापदादा को इस ग्रुप से जो अभी आये हैं और आने वाले भी हैं, उनसे बड़ों से भी ज्यादा प्यार है। क्यों प्यार है? क्योंकि नाम छोटी है लेकिन सेवा बड़ी करते हो। देखो, प्रदर्शनी कौन समझाते हैं, बड़े समझाते हैं या आप समझाती हो? कोर्स कौन कराता है, भाषण अच्छे-अच्छे कौन करता है? आप लोग ही तो करते हो। तो बापदादा, नाम छोटे है लेकिन सेवा में आपको बड़ों से भी बड़े समझते हैं। सिर्फ घबराना नहीं, घबराना काम कमजोरों का। आप तो बहुत बहादुर हो, महावीर हो, इसीलिए घबराओ नहीं। दिल छोटी कभी नहीं करो, बड़ी दिल। बड़े बाप के बच्चे हैं ना। छोटे बाप के बच्चे हैं क्या! तो छोटी दिल नहीं। न छोटी दिल करो न छोटी-छोटी बातों में घबराओ। सदा यह स्लोगन याद रखो कि देखने में छोटे हैं लेकिन काम बड़ा करके दिखायेंगे। बड़ों के सहयोगी बनेंगे। बड़ों को आंख नहीं दिखायेंगे लेकिन सहयोगी बन विश्व में नाम बाला करेंगे। ऐसी टीचर्स

हैं? जो समझती हैं ऐसा ही करते हैं और करेंगे - वह हाथ उठाओ। यह तो बहुत हैं बहादुर। हाथ उठाना बहुत सहज है, देखना! फिर भी बापदादा आपके भाग्य पर खुश होते हैं। आपका भी बाप से बहुत प्यार है ना! तो बाप का भी आपसे बहुत प्यार है, सिर्फ छोटी दिल नहीं करना। कोमल नहीं बनना, महावीर बनना। कभी भी चेहरे पर कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह न हो। निर्माणता अलग चीज है, कोमलता अलग चीज है। निर्माण भले बनो, कोमल नहीं बनो। कोमल कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे लगाओ पानी और बह जाये उसको कहते हैं कोमल। तो कोमल नहीं बनना, कमाल करके दिखाना। बातें तो बड़ों के सामने भी आती हैं, आपके सामने भी आती हैं लेकिन आप और ही ऐसे समझो कि हम एक्जैम्पल बनकर दिखायेंगे। हम ज्ञान और योग में आगे हैं और रहेंगे। बातों की परवाह नहीं करो। कभी भी हर्षितमुख चेहरा बदलना नहीं चाहिए। सदा मन, तन मुस्कराता रहे। समझा! कमाल करके दिखायेंगी? कभी भी मन मुरझाये नहीं, मुस्कराता रहे। हो सकता है?

टीचर्स बोलो-हाँ जी? हाँ जी बोल रही हो या ना जी? मन से बोल रही हो या मुख से? देखो, बापदादा ने विशेष मिलने के लिए प्रोग्राम रखा। तो सदा मुस्कराते रहना तभी आपके पूज्य स्वरूप में यादगार बन जायेगा। सब खुश हैं? बापदादा मिला, बातें की? अभी जो भट्ठी हो उसमें इस ग्रुप की सभी टीचर्स नम्बरवन हो, सेकण्ड नम्बर नहीं हो, सेकण्ड ग्रुप का नाम है, आप सेकण्ड नहीं हो। तो जो सेकण्ड ग्रुप आया है वह सब बात में नम्बरवन हो।

टीचर्स सिकीलधी हैं ना? सेवा तो बहुत करती हैं ना, दिन रात लगी हुई तो हैं। ऐसे ही जो भी यहाँ शान्तिवन में वा मधुबन में, ज्ञान सरोवर में, हॉस्पिटल में, संगम भवन में सेवा पर हैं, सभी तरफ के सेवाधारियों को बापदादा प्यार की मसाज़ कर रहे हैं। जो भी जहाँ सेवा कर रहे हैं, वह सभी अपने को प्यार की मसाज़ अनुभव करना। नाम कितनों का लेंगे। देखो आप सबकी सेवा है। आप आये तो सेवाधारियों को सेवा का भाग्य दिया। तो पहले तो आप हो। अगर आने वाले आते

नहीं तो सेवाधारी किसकी सेवा करते। तो महत्व तो आपका भी है ना!

(03.04.1997)

अच्छा - सिल्वर जुबली वाला ग्रुप क्या करेगा? यह तो हैं ही निमित्त टीचर्स। तो यह सिल्वर जुबली मनाने वाला ग्रुप सदा अपने उत्साह के फीचर्स, हर्षित, खुश रहने के फीचर्स द्वारा अनेक आत्माओं को हर्षायेंगे। टीचर्स का काम ही है, रोता कोई आवे और नाचता जावे। परेशान कोई आवे और अपनी शान में स्थिति हो जाए। परेशान का अर्थ ही है, शान से परे हो जाता है। तो टीचर्स का काम है परेशान को शान में स्थित करना। यह है सिल्वर जुबली मनाने वालों की सेवा। ऐसे नहीं खुद ही परेशान हो। कई ऐसे जिज्ञासु कहते भी हैं कि बाहर से परेशान होकर आते हैं और कभी-कभी कोई-कोई सब नहीं हैं, कोई-कोई टीचर ही परेशान होती हैं, तो हमको क्या शान में स्थित करेंगी। लेकिन नहीं, टीचर्स अर्थात् सदा अपने फीचर्स द्वारा हर आत्मा की सेवा करे। बोलने का टाइम नहीं हो, कोई हर्जा नहीं। एक सेकण्ड में अपने हर्षित दिल से, हर्षित मन से परमात्म स्नेह से (आत्मा का स्नेह नहीं) परमात्म स्नेह द्वारा, दृष्टि द्वारा उसको भी हर्षित बना दे। टीचर्स अगर कभी परेशान होते भी हो गलती से, होना नहीं चाहिए लेकिन गलती से हो भी जाते हो तो फौरन बापदादा से कनेक्शन जोड़कर, रूहरिहान करके उसी समय अपने को ठीक करो। यहाँ बापदादा से कनेक्शन करने का ड्रामा दिखाया ना? (कल बम्बई के छोटे बच्चों ने बापदादा से रूहरिहान का एक ड्रामा किया था) तो आप बापदादा से कनेक्शन नहीं कर सकते हो क्या? आपके पास वायरलेस सेट नहीं है क्या? आजकल तो सेटेलाइट है ना, वह तो फौरन हो जाता है। तो टीचर्स के पास है? सबके पास है सिर्फ समय पर यूज़ करो। समय पर सिर्फ स्मृति का स्विच आन करो बस। फिर देखो सेकण्ड में परिवर्तन होता है या नहीं। जिस समय कोई ऐसी बात हो तो यह ड्रामा याद करना। लगाना कनेक्शन। तो समझा सिल्वर जुबली वालों को क्या करना है? बापदादा को तो टीचर्स सबसे ज्यादा याद

रहती हैं। क्यों? जो भी सेवा के निमित्त हैं तो ब्रह्मा बाप की भुजाएं बनकर निमित्त हैं। तो बाप समान सेवा में हैं ना। इसलिए ऐसे निमित्त सेवाधारी बापदादा को सदा याद हैं। ऐसे नहीं समझना कि जिन्हों की गोल्डन जुबली हुई वह याद हैं, आप नहीं। पहले आप। छोटों के ऊपर और ही ज्यादा स्नेह होता है। इसलिए अभी मुझे बदलना है, मुझे बिगड़ी को बनाना है, दूसरा बिगाड़े, मेरा काम है बनाना। यह शिकायत नहीं, यह बिगाड़ते हैं ना, यह करते हैं ना। नहीं। वह बिगाड़ने में होशियार हैं, आप अपने काम में होशियार हो। बिगाड़ने वाला होशियार, बनाने वाला कम क्यों? आप होशियार हो जाओ, बिगाड़ने वाला क्या भी करे। तो बिगड़ी को बनाने वाले बाप समान आप आत्मायें हो। यह काम करेंगे तो हाथ हिलाओ। करेंगे, पक्का? या वहाँ जाकर कहेंगे दादी क्या करें? शिकायत तो नहीं करेंगे? आज सब शिकायत का फाइल यहाँ शान्तिवन के डायमण्ड हाल में खत्म करके जाओ। हर्षित रहना है और हर्षित बनाना है। ठीक है ना? सिल्वर जुबली वालों से मिले ना? अब शिकायत तो नहीं होगी ना, हमसे तो मिले नहीं? आज दो ग्रुप हैं। लेकिन बाप को पाण्डव भी प्यारे हैं तो टीचर्स भी प्यारी हैं। तो क्या समझती हो? हो सकता है? कांध हिलाओ। पाण्डव हो सकता है कि होना ही है? क्या कहेंगे, हुआ ही पड़ा है? एक एक कांध हिलाओ। यही कहो हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा। बापदादा की आशाओं के सितारे आप बच्चे हो। तो आप नहीं करेंगे तो कौन करेगा?

(14.12.1997)

आज विशेष टीचर्स का संगठन इक्ट्ठा हुआ है। सेवा का रिटर्न यह उत्सव रखा जाता है। बापदादा खुश होते हैं कि बच्चों को सेवा का फल मिल रहा है वा मना रहे हैं, खा रहे हैं। सेवा में नम्बरवार सफल रहे हैं और रहते रहेंगे। बापदादा बच्चों के 40 साल की सेवा देख हर्षित होते हैं। हाथ उठाओ जो फंक्शन के लिए आये हैं। बड़ा ग्रुप है। 40 वर्ष भी सेवा में अमर भव के वरदानी रहे हैं इसकी

मुबारक हो। आपके संगठन को देख सब बहुत खुश होंगे कि 40 वर्ष सेवा में अमर रहना - यह भी कमाल है। डायमण्ड जुबली हुई, सिल्वर जुबली हुई और यह कौन सी जुबली है? यह विशेष जुबली है। ज्यादा मेहनत इस ग्रुप ने ही की है। यह ग्रुप जैसे बॉर्डर में मिलेट्री जाती है ना और कमान्डर तो पीछे रहते हैं लेकिन बॉर्डर पर महारथी ही जाते हैं। तो सेवा के बॉर्डर में यह ग्रुप रहा है। बापदादा समान सेवाधारी ग्रुप को देख खुश होते हैं। बॉर्डर पर जाने वाले पक्के होते हैं। बहुत अनुभव होते हैं ना। सामना करने की शक्ति ज्यादा होती है। हर ग्रुप की विशेषता अपनी-अपनी है। तो डायमण्ड जुबली वाले स्थापना के निमित्त बनें, गोल्डन जुबली वाले सेवा में आदि रत्न निमित्त बनें। सिल्वर जुबली वाले राइट हैण्ड बन आगे बढ़े और बढ़ाया। और यह विशेष ग्रुप सेवा के सर्व प्रकारों के अनुभवी मूर्त हैं। ज्यादा अनुभव इस ग्रुप को है। मेहनत भी की है लेकिन मोहब्बत में मेहनत की है। इसलिए बापदादा इस ग्रुप को विशेष सेवाधारी, सफलतामूर्त ग्रुप कहते हैं। जो नये-नये आते हैं उनकी पालना के निमित्त आधारमूर्त यह ग्रुप है। इस ग्रुप को एक बात कहें ? सुनने के लिए तैयार हो? आर्डर करेंगे। आर्डर करें? एवररेडी ग्रुप है ना?

बापदादा को विशेष सेवा में सफलता स्वरूप आत्माओं को देख यह संकल्प आता है कि सेन्टर तो अच्छे जमा दिये हैं। जमा दिये हैं ना या हिलने वाले हैं? अभी इस ग्रुप में से बेहद की सेवा के लिए कोई रत्न निकलने चाहिए। एवररेडी हैं या सेन्टर छोड़ना मुश्किल है? मुश्किल है या सहज है? अभी हाथ उठाओ। आप निकलेंगे तो सेन्टर हिलेंगे क्या? यह भी पक्का हो ना। आप कहो हम तो तैयार हैं सेन्टर हिले या नहीं, हमारा क्या जाता। ऐसा नहीं। बापदादा फिर भी 6 मास का टाइम देते हैं, अपने सेन्टर्स पर ऐसा राइट हैण्ड बनाओ जो आप चक्रवर्ती बन सको; क्योंकि बापदादा देखते हैं - चक्रवर्ती बनकर सेवा करने वालों से एक ही जगह पर बैठकर सेवा करने वालों का नम्बर थोड़ा पीछे हो जाता है। वह चक्रवर्ती नम्बरवन राजा बन सकते हैं। और यह ग्रुप ऐसा है जो नम्बर आगे ले

सकते हैं। तो नम्बर लेंगे? फिर दादी आर्डर करेगी, एवररेडी। (दादी से) आर्डर करेंगी ना? आपको हैण्डस चाहिए ना? कभी-कभी दादी रूहरिहान करती है - मददगार चाहिए। तो कौन यह फरमाइस पूरी करेंगे? आप लोग ही कर सकते हैं। बापदादा उम्मींदवार आत्मायें समझते हैं। इसलिए अपने-अपने स्थान ऐसे पक्के करो, मजबूत बनाओ जो आप जैसे ही चलें, अन्तर नहीं पड़े। ब्रह्मा बाप ने देखा क्या कि पीछे क्या होगा? नहीं देखा ना! अच्छा ही है और अच्छा ही होना है। तो सेकण्ड में लगावमुक्त आत्मा उड़ गई। कोई लगाव ने खींचा नहीं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ, कोई लगाव नहीं। मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना कोई कर नहीं सकेगा - यह संकल्प नहीं आवे, इससे भी वैराग्य। तो सुना बापदादा की बात? ध्यान से सुनी। अच्छा - अभी 6 मास में सभी ऐसे सेन्टर पक्का करना, फिर आर्डर होगा। पसन्द है ना? विश्व महाराजन बनना है कि स्टेट का राजा बनना है? कौन सा राजा बनना है? एक ही सेन्टर सम्भालना तो स्टेट का राजा बनेंगे। चक्रवर्ती बनेंगे तो विश्व के राजा बनेंगे। जैसे आप अनुभवी बने हो वैसे औरों को अनुभवी बनाओ। मुश्किल काम तो नहीं है? मुश्किल हो तो ना कर दें। अगर मुश्किल लगता हो तो बापदादा कहेंगे जहाँ हैं वहाँ ही रहो। यह भी छुट्टी है, जिसकी जो इच्छा हो वह करे, लेकिन बापदादा इस ग्रुप को आगे बढ़ने के उम्मींदवार समझते हैं। ठीक है? पसन्द है?

मनाने के पहले फिक्र तो नहीं हो गया? बेफिक्र बादशाह हैं। जब ब्रह्मा बाप ने कुछ नहीं सोचा, तो फालो फादर। बच्चों ने सोचा क्या होगा, कैसे होगा, सेन्टर चलेंगे नहीं चलेंगे, मुरली कहाँ से आयेगी.... कितने क्वेश्चन सोचे, ब्रह्मा बाप ने सोचा? सेकण्ड में व्यक्त से अव्यक्त हो गये। लेकिन और अच्छे ते अच्छा होना ही है, यह निश्चय रहा। और हो रहा है ना? बाकी बापदादा को हर ग्रुप की विशेषता प्यारी लगती है।

(18.01.1998)

यह ग्रुप समर्पण वाली टीचर्स का है। अच्छा किया, हिम्मत रख अपने सेवा के निमित्त बनने को प्रत्यक्ष स्टेज पर लाया। और बाप के बनने की, हाथ में हाथ देने की सेरीमनी 5-6 साल पहले हो गई थी लेकिन अभी और हाथ में हाथ पक्का किया, जो छूट नहीं सके। इसलिए बापदादा समर्पण वाली टीचर्स को बधाई देते हैं कि सदा हाथ में हाथ, साथ में साथ पक्का करके विजय माला अपने गले में डालेंगी। अब जिस स्थान पर रहती हो उस स्थान को और स्वयं को निर्विघ्न बनाना। कोई विघ्न की रिपोर्ट नहीं आवे। स्व के पुरुषार्थ में भी विघ्न रूप नहीं बनना। कई बार बाहर से भले विघ्न नहीं भी हो लेकिन मन में तो आता है ना। तो न मन का विघ्न हो, न साथियों का विघ्न हो, न स्टूडेन्टस द्वारा कोई विघ्न हो। स्व निर्विघ्न, सेन्टर निर्विघ्न, साथी निर्विघ्न - यह तीन सर्टीफिकेट इस मुक्ति वर्ष में लेना है। मंजूर है? और विघ्न डालें तो क्या करेंगी? आप तो निर्विघ्न होंगी और कोई विघ्न डालने वाला हो, तो क्या करेंगी? विघ्न विनाशक बनेंगी? तो समर्पण समारोह माना सम्पूर्णता का समारोह। सिर्फ समर्पणता का समारोह याद नहीं करना, वह भी याद करना लेकिन समय प्रमाण अभी सम्पूर्णता का दिवस मनाना ही है, इतना दृढ़ निश्चय का कंगन बांधकर जाना। बापदादा सभी टीचर्स को कह रहे हैं, जो भी सभी टीचर्स हैं चाहे देश की, चाहे विदेश की वह हाथ उठाओ। अच्छा। आज विदेश भी बहुत है, वेलकम हो आने की विदेश के सेन्टर्स को।

अच्छा - बापदादा की टीचर्स के प्रति एक शुभ भावना है, सुनायें? सिर्फ सुनेंगी या करेंगी भी? सिर्फ सोचेंगी या स्वरूप बनेंगी? सुनेंगी, करेंगी.. अच्छा - बहुत छोटी सी शुभ भावना है। बड़ी बात भी नहीं है, बहुत छोटी है। दादी ने सन्देश भेजा कि अभी सभी सेन्टर्स निर्विघ्न हो जाएं उसकी रेसपान्सिबुल टीचर्स हैं। अभी तक टीचर्स की कम्पलेन्स आती हैं। दादियों के पास वह फाइल है ना। आफिस वाली ईशू कहती है सेन्टर्स से इतने फालतू लेटर्स आते हैं जो किचड़े का डिब्बा भर जाता है। ऐसे है ना? यह पढ़ने में भी टाइम लगता, फिर फाड़ने में भी टाइम लगता, फिर बाक्स में डालने में भी टाइम लगता, तो यह मेहनत फालतू हो गई ना। इसलिए

बापदादा की शुभ भावना है कि सभी टीचर्स बाप के राइट हैण्डस हैं, लेफ्ट हैण्ड नहीं हैं, राइट हैण्ड हैं। राइट हैण्डस के स्थान से, सेन्टर्स से ऐसे समाचार आवें जो वेस्ट बाक्स ही भर जावे - तो ऐसा अच्छा है? बोलो हाँ या ना? जो समझते हैं इस वर्ष हम हर एक तीन सर्टीफिकेट लेंगे - स्व विघ्न-विनाशक, सेन्टर विघ्न-विनाशक और साथी विघ्न-विनाशक। यह तीन सर्टीफिकेट लेने के लिए जो तैयार हैं वह टीचर्स हाथ उठाओ। जो सेन्टर पर पाण्डव रहते हैं, वह भी हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) थैंक्यू।

अभी वेस्ट पेपर बाक्स खाली रहेंगे। पढ़ना नहीं पड़ेगा। यह (ईशू) कहती है लेटर्स खोल-खोलकर हाथ थक जाता है। तो इसीलिए चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे विदेश में सुन रहे हैं, चाहे देश में सुन रहे हैं, चाहे मुरली सुनेंगे। लेकिन बापदादा की सारे विश्व की निमित्त टीचर्स के प्रति यह शुभ भावना है कि यह वर्ष कोई कम्पलेन्ट नहीं आनी चाहिए। कम्पलेन्ट के फाइल खत्म हो जाएं। बापदादा के पास भी बहुत फाइल हैं। तो इस वर्ष कम्पलेन्ट के फाइल खत्म। सब फाइन बन जाएं। फाइन से भी रिफाइन। पसन्द है ना? कोई कैसा भी हो उनके साथ चलने की विधि सीखो। कोई क्या भी करता हो, बार-बार विघ्न रूप बन सामने आता हो लेकिन यह विघ्नों में समय लगाना, आखिर यह भी कब तक? इसका भी समाप्ति समारोह तो होना है ना? तो दूसरे को नहीं देखना। यह ऐसे करता है, मुझे क्या करना है? अगर वह पहाड़ है तो मुझे किनारा करना है, पहाड़ नहीं हटना है। यह बदले तो हम बदलें - यह है पहाड़ हटे तो मैं आगे बढ़ूं। न पहाड़ हटेगा न आप मंजिल पर पहुंच सकेंगे। इसलिए अगर उस आत्मा के प्रति शुभ भावना है, तो इशारा दिया और मन-बुद्धि से खाली। खुद अपने को उस विघ्न स्वरूप बनने वाले के सोच-विचार में नहीं डालो। जब नम्बरवार हैं तो नम्बरवार में स्टेज भी नम्बरवार होनी ही है लेकिन हमको नम्बरवन बनना है। ऐसे विघ्न वा व्यर्थ संकल्प चलाने वाली आत्माओं के प्रति स्वयं परिवर्तन होकर उनके प्रति शुभ भावना रखते चलो। टाइम थोड़ा लगता है, मेहनत थोड़ी लगती है लेकिन आखिर जो स्व-परिवर्तन करता है, विजय की

माला उसी के गले में पड़ती है। शुभ भावना से अगर उसको परिवर्तन कर सकते हो तो करो, नहीं तो इशारा दो, अपनी रेसपान्सिबिल्टी खत्म कर दो और स्व परिवर्तन कर आगे उड़ते चलो। यह विघ्न रूप भी सोने का लगाव का धागा है। यह भी उड़ने नहीं देगा। यह बहुत महीन और बहुत सत्यता के पर्दे का धागा है। यही सोचते हैं यह तो सच्ची बात है ना। यह तो होता है ना। यह तो होना नहीं चाहिए ना। लेकिन कब तक देखते, कब तक रुकते रहेंगे? अब तो स्वयं को महीन धागों से भी मुक्त करो। मुक्ति वर्ष मनाओ। इसलिए बच्चों की जो आशायें हैं, उमंग है, उत्साह है, इसके सभी फंक्शन मनाकर बापदादा पूरे कर रहे हैं। लेकिन इस वर्ष का अन्तिम फंक्शन मुक्ति वर्ष का फंक्शन हो। फंक्शन में दादियों को सौगात भी देते हो। तो बापदादा को इस मुक्त वर्ष के फंक्शन में स्वयं के सम्पूर्णता की गिफ्ट देना। अच्छा।

अमृतवेले जो मुख्य प्लैनिंग बुद्धि हैं उन्हों को बापदादा कार्य के निमित्त बनाता है, उन्हों को नई विधियां सेवा की टच होंगी, सिर्फ अपनी बुद्धि को बाप के हवाले करके बैठो। बुद्धिवानों की बुद्धि आपकी बुद्धि को टच करेंगे। यह प्लैनिंग बुद्धि वालों को वरदान मिलना ही है। निमित्त बनो।

(31.01.1998)

राजस्थान ने इतनी भीड़ को सम्भाल लिया ना। देखो बापदादा को कहना नहीं चाहिए, लेकिन इशारा दे रहे हैं सभी इतने आये, बहुत-बहुत मुबारक हो, भले आये। सिर्फ एक बात बापदादा कहे, सुनने के लिए तैयार हो? खास टीचर्स सुनने के लिए तैयार हैं? अच्छा। भले आये, पदमगुणा वेलकम, परन्तु... इतला देना यह टीचर्स का फ़र्ज है। अचानक आ गये, बापदादा को तो खुशी है, बापदादा तो वतन में रहते हैं, लेकिन आप लोग तो साकार में रहते हो ना, तो देखो आप लोगों को ही धूप में टेन्ट में सोना पड़ा, चाहे बच्चों को खुशी है, कोई बुरा नहीं मानते हैं लेकिन टीचर्स का फ़र्ज है संख्या पहले से सुनाना। इतनी तकलीफ जो थोड़ी बहुत हुई है,

वह नहीं होती। जो हुआ वह बहुत अच्छा हुआ, यह शान्तिवन का हाल तो भर गया ना। यह तो अच्छा हुआ। सिर्फ इतला करने से आप लोगों का बहुत-बहुत अच्छा प्रबन्ध होता। आगे के लिए आप आयेंगे, आपका स्वागत है, बापदादा ने यह भी सीन देखी कि कितने लोग धूप में स्थान मिलने के पहले बैठे हैं, बापदादा को अच्छा नहीं लगता। पहले से पता होने से आपकी रिजर्वेशन बुक हो जाती, फिर आपको ऐसे बैठना नहीं पड़ता। इसलिए जो थोड़ी बहुत तकलीफ हुई, उसका कारण इतला नहीं हुआ। इसलिए आगे आराम से आना, आओ भले आओ, लेकिन आराम से आना। सुना टीचर्स ने। आगे से ऐसे नहीं करना। पंखे तो ठीक मिले हैं ना।

(30.03.1998)

ब्रह्मा बाप कहते हैं कि क्या 99 में समाप्ति करें? प्रकृति को एक ताली बजायेंगे और प्रकृति तो तैयार खड़ी है। क्या फरिश्ते समान डबल लाइट बन गये हो? कम से कम 108 ऐसे सदा विजयी बने हैं, जो किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म अर्थात् सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में पास हों? व्यर्थ वा निगेटिव - यही बोझ सदाकाल के लिए डबल लाइट फरिश्ता बनने नहीं देता। तो ब्रह्मा बाप पूछते हैं - इस बोझ से हल्के फरिश्ते बने हैं? अन्डरलाइन है - सदा। कम से कम 108 तो सदा फरिश्ता जीवन का अनुभव करें तब कहेंगे ब्रह्मा बाप समान बनना। तो बाप पूछते हैं - ताली बजायें? या 2000 में ताली बजायें, 2001 में ताली बजायें, कब बजायें? क्या सोचते हो ताली बजेगी तो बन जायेंगे, ऐसे? क्या सोचते हो - ताली बजेगी उस समय बनेंगे? क्या होगा? बजायें ताली? बोलो तैयार हो? पेपर लेवें? ऐसे थोड़ेही मान जायेंगे, पेपर लेंगे? टीचर्स बताओ - पेपर लें? सब छोड़ना पड़ेगा। मधुबन वालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा, ज्ञान सरोवर वालों को ज्ञान सरोवर, सेन्टर वालों को सेन्टर, विदेश वालों को विदेश, सब छोड़ना पड़ेगा। तो एवररेडी हैं? अगर एवररेडी हो तो हाथ की ताली बजाओ।

एवररेडी? पेपर लें? कल एनाउन्समेंट करें? वहाँ जाकर भी नहीं छोड़ना है, वहाँ जाकर थोड़ा ठीक करके आऊं, नहीं। जहाँ हूँ, वहाँ हूँ। ऐसे एवररेडी। अपना दफतर भी नहीं, खटिया भी नहीं, कमरा भी नहीं, अलमारी भी नहीं। ऐसे नहीं कहना थोड़ा -सा काम है ना, दो दिन करके आयें। नहीं। आर्डर इज आर्डर। सोचकर हाँ कहो। नहीं तो कल आर्डर निकलेगा, कहाँ जाना है, कहाँ नहीं जाना है। निकालें आर्डर, तैयार हैं? इतना हिम्मत से हाँ नहीं कह रहे हैं। सोच रहे हैं थोड़ा-सा एक दिन मिल जाये तो अच्छा है। मेरे बिना यह नहीं हो जाए, यह नहीं हो जाए, यह वेस्ट संकल्प भी नहीं करना। ब्रह्मा बाप ट्रांसफर हुआ तो क्या सोचा कि मेरे बिना क्या होगा? चलेगा, नहीं चलेगा। चलो एक डायरेक्शन तो दे दूं, डायरेक्शन दिया? अपनी सम्पन्न स्थिति द्वारा डायरेक्शन दिया, मुख से नहीं। ऐसे तैयार हो? आर्डर मिला और छोड़ो तो छूटा। हलचल करें? ऐसा करना है - यह बता देते हैं। आर्डर होगा, पूछकर नहीं, तारीख नहीं फिक्स करेंगे। अचानक आर्डर देंगे आ जाओ, बस। इसको कहा जाता है डबल लाइट फरिश्ता। आर्डर हुआ और चला। जैसे मृत्यु का आर्डर होता है फिर क्या सोचते हैं, सेन्टर देखो, आलमारी देखो, जिज्ञासु देखो, एरिया देखो......! आजकल तो मेरे-मेरे में एरिया का झमेला ज्यादा हो गया है, मेरी एरिया! विश्व—कल्याणकारी की क्या हद की एरिया होती है? यह सब छोड़ना पड़ेगा। यह भी देह का अभिमान है। देह का भान फिर भी हल्की चीज़ है, लेकिन देह का अभिमान यह बहुत सूक्ष्म है। मेरा-मेरा इसको ही देह का अभिमान कहा जाता है। जहाँ मेरा होगा ना वहाँ अभिमान जरूर होगा। चाहे अपनी विशेषता प्रति हो, मेरी विशेषता है, मेरा गुण है, मेरी सेवा है, यह सब मेरापन - यह प्रभू पसाद है, मेरा नहीं। प्रसाद को मेरा मानना, यह देह-अभिमान है। यह अभिमान छोड़ना ही सम्पन्न बनना है। इसीलिए जो वर्णन करते हो फरिश्ता अर्थात् न देह-अभिमान, न देह-भान, न भिन्न-भिन्न मेरे-पन के रिश्ते हो, फरिश्ता अर्थात् यह हद का रिश्ता खत्म। तो अब क्या तैयारी करेंगे? ब्रह्मा बाप का आवाज अटेन्शन से सुनो, आह्वान कर रहे हैं। बाप कहते हैं समाप्ति का नगाड़ा बजाना तो बहुत

सहज है, जब चाहें तब बजा सकते हैं लेकिन कम-से-कम सतयुग आदि के 9 लाख तो एवररेडी हो ना! चाहे नम्बरवार हों, नम्बरवन तो थोड़े होंगे। कम से कम 108 नम्बरवन, 16 हजार नम्बर टू, 9 लाख नम्बर थ्री। लेकिन इतने तो तैयार हो जाएं। राजधानी तो तैयार होनी चाहिए।

(12.12.1998)

टीचर्स बहिनों से:- ग्रुप तो बहुत बड़ा है। (5-6 सौ टीचर्स हैं) टीचर्स क्या करेंगी? इस वर्ष में टीचर्स इनाम लेना। किस बात में? स्वयं और सेन्टर निवासी और साथ में सर्व स्टूडेन्ट पूरे वर्ष में निर्विघ्न रहे, कोई भी विघ्न न स्वयं में आवे, न साथियों में आवे, न स्टूडेन्ट में आवे, ऐसी हिम्मत है तो हाथ उठाओ। पार्टी लेकर आये हो तो नाम तो नोट हैं। सौगातें तैयार रखना। इनाम तैयार रखना। देखेंगे कितने इनाम लेने के पात्र बनते हैं। तीन सर्टीफिकेट लेंगे। तीन सर्टीफिकेट - एक अपना स्वयं का सर्टीफिकेट, दूसरा साथियों का सर्टीफिकेट और तीसरा स्टूडेन्ट का हाँ या ना। बातों में नहीं निकालेंगे सिर्फ हाँ निर्विघ्न रहे, या नहीं रहे। कचहरी नहीं करेंगे, बातें नहीं निकालेंगे। तो तीन सर्टीफिकेट लेने वाले को इनाम मिलेगा। हाथ तो सभी ने उठाया, जिसने नहीं उठाया समझते हैं कोशिश करेंगे, पता नहीं होवे नहीं होवे, वह हाथ उठाओ। ऐसा कोई है? शर्म तो नहीं करते हो? अगर हिम्मत नहीं भी हो तो हिम्मत रखना, हिम्मत की मदद जरूर मिलेगी। समझा। समझा। समझा? सब टीचर्स ने सुना? अच्छा है - टीचर्स को देखकर बापदादा खुश होते है - टीचर्स सेवा के साथी हैं इसलिए बापदादा को टीचर्स को देखकर खुशी होती है। बापदादा रिगार्ड भी रखते हैं क्योंकि बच्चे भी हैं, साथी भी हैं इसलिए विशेष मदद भी है। ठीक है ना।

(31.12.1998)

टीचर्स बहुत आई है ना? (1200 टीचर्स हैं) 1200 ही दृढ़ संकल्प कर लें तो कल ही परिवर्तन हो सकता है। फिर इतने एक्सीडेन्ट नहीं होंगे, बच जायेंगे सभी। टीचर अर्थात निमित्त फाउण्डेशन। अगर फाउण्डेशन पक्का अर्थात दृढ़ रहा तो झाड़ तो आपे ही ठीक हो जायेगा। आजकल चाहे संसार में, चाहे ब्राह्मण संसार में हर एक को हिम्मत और सच्चा प्यार चाहिए। मतलब का प्यार नहीं, स्वार्थ का प्यार नहीं। एक सच्चा प्यार और दूसरी हिम्मत, मानो 95 परसेन्ट किसने संस्कार के वश परवश होके नीचे-ऊपर कर भी लिया लेकिन 5 परसेन्ट अच्छा किया, फिर भी अगर आप उसके 5 परसेन्ट अच्छाई को लेकर पहले उसमें हिम्मत भरो, यह बहुत अच्छा किया फिर उसको कहो बाकी यह ठीक कर लेना, उसको फील नहीं होगा। अगर आप कहेंगी यह क्यों किया, ऐसे थोड़े ही किया जाता है, यह नहीं करना होता है, तो पहले ही बिचारा संस्कार के वश है, कमजोर है, तो वह नरवश हो जाता है। प्रोग्रेस नहीं कर सकता है। 5 परसेन्ट की पहले हिम्मत दिलाओ, यह बात बहुत अच्छी है आपमें। यह आप बहुत अच्छा कर सकते हैं, फिर उसको अगर समय और उसके स्वरूप को समझकर बात देंगे तो वह परिवर्तन हो जायेगा। हिम्मत दो, परवश आत्मा में हिम्मत नहीं होती है। बाप ने आपको कैसे परिवर्तन किया? आपकी कमी सुनाई, आप विकारी हो, आप गन्दे हो, कहा? आपको स्मृति दिलाई आप आत्मा हो और इस श्रेष्ठ स्मृति से आपमें समर्थी आई, परिवर्तन किया। तो हिम्मत से स्मृति दिलाओ। स्मृति समर्थी स्वतः ही दिलायेगी। समझा। तो अभी तो समान बन जायेंगे ना? सिर्फ एक अक्षर याद करो - 'फालो फादर-मदर'। जो बाप ने किया, वह करना है। बस। कदम पर कदम रखना है। तो समान बनना सहज अनुभव होगा।

(25.11.2000)

सभी टीचर्स ने 'कल्चर ऑफ पीस' की मेहनत अच्छी की है। अच्छी सेवा की है। आत्माओं को परिचय मिला, कोई सम्बन्ध-सम्पर्क में भी आयें, सन्देश भी

कई आत्माओं को मिला। चाहे अभी आये या नहीं आये लेकिन समय आने पर याद आयेगा। तो हमें भी पर्चा मिला था और ढूँढेंगे आपको कि वह सफेद वस्त्र वाली बहनें, कौन-सी थी जिन्होंने पर्चे दिये थे लेकिन हमने नहीं सुना। वह समय भी आयेगा, जिन आत्माओं में बीज डाला है वह फल निकलेगा।

(31.12.2000)

बापदादा ने यह भी देखा कि जो नये नये बच्चे आते हैं, उन्हों में कई आत्मायें ऐसे भी हैं जिन्हों को बापदादा के सहयोग के साथ-साथ आप ब्राह्मण आत्माओं के द्वारा हिम्मत, उमंग, उत्साह, समाधान मिलने की आवश्यकता है। छोटे-छोटे हैं ना! फिर भी हैं छोटे लेकिन हिम्मत रख ब्राह्मण तो बने तो हैं ना! तो छोटों को शक्तियों द्वारा पालना की आवश्यकता है। और पालना नहीं, शक्ति देने के पालना की आवश्यकता है। तो जल्दी से स्थापना की ब्राह्मण आत्मायें तैयार हो जाएं क्योंकि कम से कम 9 लाख तो चाहिए ना! तो शक्तियों का सहयोग दो, शक्तियों से पालना दो, शक्तियाँ बढ़ाओ। ज्यादा डिसकस करने की शिक्षायें नहीं दो। शक्ति दो। उनकी कमजोरी नहीं देखो लेकिन उसमें विशेषता वा जो शक्ति की कमी है वह भरते जाओ। आजकल जो निमित्त हैं उन्हों को इस पालना के निमित्त बनने की आवश्यकता है। जिज्ञासु बढ़ायें, सेवाकेन्द्र बढ़ायें यह तो कॉमन बात हैं, लेकिन हर एक आत्मा को बाप की मदद से शक्तिशाली बनायें, अभी इसकी आवश्यकता है। सेवा तो सब कर रहे हो और कने के बिना रह भी नहीं सकते। लेकिन सेवा में शक्ति स्वरूप के वायब्रेशन आत्माओं को अनुभव हो, शक्तिशाली सेवा हो। साधारण सेवा तो आजकल की दुनिया में बहुत करते हैं लेकिन आपकी विशेषता है - 'शक्तिशाली सेवा'। ब्राह्मण आत्माओं को भी शक्ति की पालना आवश्यक है।

(18.01.2001)

टीचर्स सभी अपने को क्या कहती है? समर्पण है ना! टीचर्स सभी समर्पण है? अच्छा-प्रवृत्ति मे रहने वाले समर्पण है? हाँ या ना? पाणडव समर्पण है? बहुत अच्छा मुबारक हो। आगे क्या करना है? समर्पण तो हो गये, बहुत अच्छा। अभी आगे यह चेक करना है, बतायें क्या? आप कहेंगे समर्पण तो हैं ना फिर क्या करना है? तो एक है समर्पण और आगे है - 'सर्व समर्पण'। 'सर्व' मे विशेष अन्डरलइन है अपने मन-बुद्धि-संस्कार सहित समर्पण क्योंकि जितना आगे बढते हो, पुरुषार्थ मे तीव्रगति से कदम उठाते हो और उठा भी रहे हो लकिन वर्तमान वायुमण्डल प्रमाण ब्रह्मण जीवन में मन और बुद्धि के ऊपर व्यर्थ का प्रभाव, बुरा नही, बुरा खतम हुआ लेकिन व्यर्थ और निगेंटिव उसका प्रभाव ज्यादा है, इसलिए यथार्थ और सत्य निर्णय करने की महसूसता शक्ति कम हो जाती है। समझ से महसूसता होती है - हाँ यह रांग है, यह ठीक नही है लेकिन एक है विवेक से महसूसता, दूसरा है दिल से महसूसता। अगर दिल से कोई भी बात को महसूस कर लिया तो दुनिया बदल जाए लेकिन स्वयं नही बदलेगा। और संस्कार, पुराने 63 जन्मों के होने के कारण नेचुरल हो गये हैं, जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो, 'यह गलती नही हैं लेकिन मेरा नेचर हैं'। तो पुराने संस्कार कुछ मिटते है, कुछ दब जाते है फिर निकल आते है। लेकिन **सर्व समर्पण का अर्थ है - मन का भाव और भावना हर आत्मा के प्रति परिवर्तन हो जाए, जिसको बापदादा कहते है कैसी भी आत्मा हो, भिन्न-भिन्न तो होगी ही, कल्प वृक्ष है, वैरायटी नही हो तो शोभा नही लेकिन हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना। अशुभ भावना को भी परिवर्तन कर शुभ भावना रखना वा शुभ भवना देना।** हर आत्मा के प्रति शुभ कामना, यह अवश्य बदलेंगे। ऐसा नही की यह तो बदलना है ही नही, उसके प्रति जज बनके जजमेंट नही दो, यह बदलना ही नही है। जब चैलेन्ज की है कि प्रकृति को भी परिवर्तन कर सतोगुणी बनाना ही है, वनाना ही है। बनेगी, नहीं बनेंगी - क्वेश्चन नही, बनाना ही है। 'ही' शब्द को अन्डरलइन किया है। तो क्या प्रकृति बदल सकती है, आत्मा नही बदल

सकती? आत्मा तो प्रकृति का पुरूष है। तो प्रकृति बदले पुरूष नही बदले क्यों? तो वर्तमान समय यह मन-बुद्धि-संस्कार, स्व के परिवर्तन और सर्व के परिवर्तन - यही सेवा है।

(20.02.2001)

टीचर्स भी बहुत आई हैं। टीचर्स को भी मुबारक हैं। आपने ही तो सेवा की हैं ना! तो सेवा की मुबारक। अच्छा। गुजरात का क्या हाल हैं? हलचल शुरु हुई है गुजरात से। ज्यादा हलचल गुजरात और विदेश में भी थोड़ा-थोड़ा शरु है। डरते तो नही हो ना! धरनी तो हिलती है लेकिन दिल तो नहीं हिलती है ना! जहाँ धरनी हिली है, नुकसान हुआ है वहाँ से जो आयें हैं वह उठो। अहमदाबाद वाले भी उठो। अच्छा। दिल हिली कि धरनी हिली? क्या हुआ? दिल मे थोडा ऐसा-ऐसा हुआ? नही हुआ! बहादूर है। बापदादा ने देखा कि बच्चों ने अपने हिम्मत और बाप की छत्रछाया से अच्छा अपना रिकार्ड रखा। कोई फेल नही हुआ, सब पास हो गये, कोई थोडा, कोई ज्यादा। नम्बरवार तो सब होता ही है हर जगह। लेकिन पास है। मुबारक है। सबसे ज्यादा नाजुक स्थान से कौन आये हैं? (एक भुज की और एक बचाऊ की बहन आई हैं) अच्छा, भुज मे आप तो हजार भुजाओं वालों के साथ थे। अच्छा, पेपर मे पास। बहुत अच्छा किया। आगे भी हिलना नही। अभी तो होता रहेगा। घबराना नही। (रोज होता हैं) होने दो। देखो परिवर्तन तो होना ही है ना! तो प्रकृति भी अपना काम तो करेगी ना! जब मनुष्य आत्माओं ने प्रकृति को तमो गुणी बना दिया, तो वह अपना काम तो करेगी ना। लेकिन हर खेल, ड्रामा के खेल मे यह भी खेल हैं। खेल को देखते हुए अपनी अवस्था ऊपर नीचे नही करना। मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं की स्व-स्थिति पर पर-स्थिति प्रभाव नही डाले। और ही आत्माओं को मानसिक परेशानियों से छुडा ने के निमित्त बनो क्यों की मन की परेशानी आप मेडिटेशन से ही मिटा सकते हो। डाक्टर्स अपना काम करेंगे, साईन्स वाले अपना काम करेंगे, गवमेंन्ट अपना काम करेगी,आप का काम हैं मन

के परेशानी, टेन्शन को मिटाना। टेन्शन फ्री जीवन का दान देना। सहयोग देना। जैसे वर्तमान समय देश विदेश वाले सहयोगी बन सहयोग दे रहे हैं ना! यह बहुत अच्छा कर रहे है। इस से सिद्ध होता है कि चाहे विदेश हो, चाहे कोई भी हो लेकिन भारत देश से प्यार है। हर एक अपना-अपना कार्य तो कर रहे हैं, आप अपना कर रहे है। जैसे आग लगती है तो आग बुझाने वाले डरते नही है, बुझाते है। तो आप सब भी मन के परेशानी की आग बुझाने वाले हो। अच्छा। तो गुजरात मजबूत है ना! हजार भुजाओं की छत्रछाया में हो। कहाँ भी आये, अभी तो गुजरात को देख कर अनुभवी हो गये हो ना। कहाँ भी आये। देखो प्रकृति को कोई मना नहीं कर सकता है,गुजरात में आओ, आबू में नहीं आओ, बाम्बे में नहीं आओ, नहीं। वह स्वतन्त्र है। लेकिन सभी को अपने स्व-स्थिति को अचल-अडोल और अपने बुद्धि को, मन के लाइन को क्लियर रखना हैं। लाइन क्लियर होगी तो टचिंग होगी। बापदादा ने पहले भी कहा था उन्हों की वायरलेस है, आपकी वाइसलस बुद्धि है। क्या करना है? क्या होना है? यह निर्णय स्पष्ट और शीघ्र होगा। ऐंसे नही सोचते रहो बाहर निकलें, अन्दर बैठें, दरवाजे पर बैठें, छत पर बैठें। नहीं। आपके पांव वहाँ ही चलेंगे जहाँ सेफटी होगी। और अगर बहुत घबरा जाओ, घबराना तो नही चाहिए, लेकिन बहुत घबरा जाओ, बहुत डर लगे तो मधुबन एशलम घर आपका है। डरना नहीं, अभी तो कुछ नही है, अभी तो सब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। परिवर्तन होना है ना। विनाश नही, परिवर्तन होना है। सबमें वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है। रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा सकाश दे रहम करो। समझा!

(20.02.2001)

बापदादा टीचर्स को इसी नजर से देखते हैं कि हर टीचर्स के फीचर्स में बापदादा के फीचर्स दिखाई दें। फेस में ब्रह्मा बाप के फीचर्स और भ्रकुटी में ज्योतिबिन्दु के फीचर, किसी भी टीचर को देखो तो सबके मुख से यही निकले कि यह तो बाप समान हैं। यह तो ब्रह्मा बाबा जैसे लगते हैं, यह तो शिव बाप जैसे लगते

हैं। हैं भी और होने ही हैं। तो टीचर्स आधारमूर्त हैं। जैसे बाप के लिए कहते हैं - ब्रह्मा बाप का सदा यही स्लोगन रहा 'जो कर्म मैं करूंगा वह सब करेंगे'। ऐसे हर एक टीचर को यही स्लोगन सदा याद रहता है कि 'जो कर्म, जो बोल, जो वृत्ति, जो विधि हम करेंगे, हमें देख सर्व करेंगे'। बापदादा ने ब्रह्मा बाप की गद्दी आप टीचर्स को बैठने के लिए दी हैं। मुरली सुनाने के लिए निमित्त टीचर्स हैं, बाप की गद्दी मिली हुई है। ड्रामा ने आप टीचर्स को बहुत-बहुत ऊँचा मर्तबा दिया है। बापदादा भी टीचर्स को इसी विशेष महत्व से देखते हैं। महान हो, महत्त्व वाले हो। है ना ऐसे? कभी स्टूडेन्ट से सर्टीफिकेट लेवें? बापदादा तो देखते रहते हैं।

(31.12.2001)

टीचर बनना बहुत-बहुत श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है क्योंकि बापदादा टीचर्स को गुरुभाई के रूप में देखते हैं, इतना समान रूप से देखते हैं क्योंकि बाप के आसन पर बैठते हैं, टीचर्स को यह हक मिलता है। जैसे गुरु की गद्दी होती है ना तो यह मुरली का तख्त, मुरली धारण कराना और मुरली सुनाना। सुनाना सिर्फ नहीं लेकिन मुरली धारण कराना, यह टीचर्स को बापदादा ने गुरुभाई का तख्त दिया है और फॉरेन में तो देखा जाता है कि बहुत जल्दी से जल्दी तख्तनशीन हो जाते हैं। बापदादा खुश होते हैं, जिम्मेवारी का ताज धारण कर लेना, हिम्मत रखना, यह भी कोई कम बात नहीं है लेकिन गुरुभाई अर्थात बाप समान। वैसे तो सभी को बाप समान बनना ही है लेकिन फिर भी टीचर्स को विशेष जिम्मेवारी का ताज है। बापदादा को भी टीचर्स का संगठन बहुत अच्छा लगता है।

तो सुना बापदादा टीचर्स को किस नजर से देखते हैं। यह क्लास की, मुरली सुनाने की सीट.... बहुत भाग्यवान हैं। बहुत-बहुत-बहुत लक्की हो क्योंकि साकार रूप में निमित्त कौन हैं? तो टीचर्स को बापदादा कहते हैं टीचर अर्थात अपने फीचर्स द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाली। फीचर्स द्वारा फ्युचर स्पष्ट दिखाने वाली। तो ऐसी टीचर्स हो ना? जो आपको देख बापदादा के पालना की

अनुभूति हो। परमात्म-गुण, परमात्म-शक्तियां आपके चेहरे से दिखाई दें, बोल से दिखाई दें। ऐसे नहीं फलानी टीचर ने बोला, नहीं। बापदादा ने टीचर्स के फीचर्स द्वारा अनुभव कराया। बाप से हर एक का कनेक्शन जोड़ना - यही है टीचर्स का कर्तव्य। हर एक के दिल से हर समय बाबा निकले।

(11.03.2002)

टीचर्स की विशेषता है कि हर टीचर के फीचर से फ्युचर दिखाई दे। या हर एक टीचर के फीचर्स से फरिश्ता स्वरूप दिखाई दे। ऐसे टीचर्स हो ना! आप फरिश्तों को देखकर और भी फरिश्ते बन जायें। देखो कितने टीचर्स हैं। फारेन ग्रुप में टीचर्स बहुत हैं। अभी तो थोड़े आये हैं। जो नहीं आये हैं उनको भी बापदादा याद कर रहे हैं। अच्छा है, अभी टीचर्स मिलकरके यह प्लेन बनाओ कि अपने चलन और चेहरे से बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें? दुनिया वाले कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है और आप कहते हो नहीं है। लेकिन बापदादा कहते हैं कि अभी समय प्रमाण हर टीचर मं बाप प्रत्यक्ष दिखाई दे तो सर्वव्यापी दिखाई देगा ना। जिसको देखे उसमें बाप ही दिखाई दें। आत्मा, परमात्मा के आगे छिप जायें और परमात्मा ही दिखाई दे। यह हो सकता है? अच्छा इसकी डेट क्या? डेट तो फिक्स होनी चाहिए ना? तो डेट कौन-सी है इसकी? टीचर्स को यही अटेन्शन रखना है कि बस अभी बाप के अन्दर मैं समाई हुई दिखाई दूं। मेरे द्वारा बाप दिखाई दे। प्लैन बनायेंगे ना! डबल विदेशी मीटिंग करने में तो होशियार हैं? अभी यह मीटिंग करना, इस मीटिंग के बिना जाना नहीं - कि कैसे हम एक एक से बाप दिखाई दे।अभी ब्रह्माकुमारियां दिखाई देती हैं, ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छी हैं लेकिन इनका बाबा कितना अच्छा है, वह देखें। तभी तो विश्व परिवर्तन होगा ना।

(25.10.2002)

बापदादा टीचर्स को एक टाइटल देते हैं। कौन-सा टाइटल देते हैं? (फ्रैण्डस) फ्रैण्डस तो सभी हैं ही। डबल फारेनर्स तो पहले फ्रैण्डस हैं। इन्हों को फ्रैण्ड का सम्बन्ध अच्छा लगता है। टीचर्स जो योग्य हैं, सभी को नहीं, योग्य टीचर्स को कहते हैं - यह गुरू-भाई हैं। जैसे बड़े बच्चे बाप के समान हो जाते हैं ना, तो टीचर्स भी गुरभाई हैं क्योंकि सदा बाप की सेवा के निमित्त बने हुए हैं। बाप समान सेवाधारी हैं। देखो, टीचर्स को बाप का सिंहासन मिलता है मुरली सुनाने के लिए। गुरु की गद्दी मिलती है ना। इसलिए टीचर अर्थात निरन्तर सेवाधारी। चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा कर्मणा - सदा सेवाधारी। ऐसे है ना! आराम पसन्द तो नहीं ना! सेवाधारी। सेवा, सेवा और सेवा। ठीक है ना?

(14.11.2002)

टीचर्स सेः- फालो करना सहज है या मुश्किल है? सहज है ना! बस फालो फादर। पहले चेक करो, जैसे कहावत है पहले सोचो फिर करो, पहले तौलो फिर बोलो। यह संकल्प करो कि सिवाए बाप के कदम पर कदम रखने के और कोई भी कदम नहीं उठायेंगे। बस फुट स्टेप। कदम पर कदम रखना तो इजी है ना! जैसे ब्रह्मा बाप सदा निमित्त और निर्माण रहे ऐसे निमित्त भाव और निर्माण भाव। सिर्फ निमित्त भाव नहीं, निमित्त भाव के साथ निर्माण भाव, दोनों आवश्यक हैं क्योंकि टीचर्स निमित्त हैं ना! निमित्त हैं ना! तो संकल्प में भी, बोल में भी और किसी के भी सम्बन्ध में, कर्म में, हर बोल में निर्माण। जो निर्माण है वही निमित्त भाव में हैं। जो निर्माण नहीं है उसमें थोड़ा बहुत सूक्ष्म, महानन रूप में अभिमान नहीं भी हो तो रोब होगा। ये रोब, यह भी अभिमान का अंश है और बोल में सदा निर्मल भाषी, मधुर भाषी। जब सम्बन्ध-सम्पर्क में आत्मिक रूप की स्मृति रहती है तो सदा निराकारी और निरहंकारी रहते हैं। ब्रह्माबाप के लास्ट के तीनों शब्द याद रहते हैं? निराकारी, निरहंकारी वही निर्विकारी। अच्छा, फालो फादर। पक्का रहा ना!

(30.11.2002)

टीचर्स से :- टीचर्स ने बापदादा की एक आश पूरी करने का संकल्प किया है लेकिन सामने नहीं लाया है। जानते हो कौन-सी? एक तो बापदादा ने कहा है कि अभी वारिसों की माला बनाओ। वारिसों की माला, जनरल माला नहीं। दूसरा - सम्बन्ध-सम्पर्क वालों को माइक बनाओ। आप नहीं भाषण करो लेकिन वह आपकी तरफ से मीडिया बन जायें। अपनी मीडिया बनाओ। तो माइक ऐसे तैयार हो जो मीडिया समान प्रत्यक्षता का आवाज फैलायें। आप कहेंगे भगवान आ गया, भगवान आ गया.... वह तो कॉमन समझते हैं लेकिन आपकी तरफ से दूसरे कहें, अथॉरिटी वाले कहें, पहले आप लोगों को शक्तियों के रूप में प्रत्यक्ष करें। जब शक्तियां प्रत्यक्ष होंगी तब बाप प्रत्यक्ष होगा। तो बनाओ, मीडिया तैयार करो। दूखेंगे। बापदादा देखेंगे कौन-से तैयार किये हैं, अच्छा हिम्मत तो रखी है। सुना - टीचर्स को क्या करना है! शिवरात्रि पर वारिस क्वालिटी तैयार करो। माइक तैयार करो, तब फिर दूसरे वष्र शिवरात्रि पर सबके मुख से शिव बाप आ गया, यह आवाज निकले। ऐसी शिवरात्रि मनाओ। प्रोग्राम तो ठीक बनाया है लेकिन हर प्रोग्राम से कोई माइक तैयार हो, कोई वारिस तैयार हो। यह पुरुषार्थ करो, भाषण किया चले गये, ऐसे नहीं। अभी शिवरात्रि की डायमण्ड जुबली मनाओ। यह दो प्रकार की आत्मायें तैयार करो, फिर देखो नगाड़ा बजता है या नहीं। नगाड़े आप थोड़े ही बजायेंगे। आप तो देवियां हो साक्षात्कार करायेंगी। नगाड़े बजाने वाले तैयार करो। जो प्रैक्टिकल में गीत गायें शिव शक्तियां आ गई। सुना - शिवरात्रि पर क्या करेंगी! ऐसे ही भाषण करके पूरा नहीं करना। फिर लिखेंगी बाबा 500-1000, लाख आदमी आ गये, आ तो गये सन्देश दिया, लेकिन वारिस कितने निकले, माइक कितने निकले, अभी वह समाचार देना। जो अभी तक किया धरनी बनाई, सन्देश दिया, उसको बाबा अच्छा कहते हैं, वह सेवा व्यर्थ नहीं गई है, समर्थ हुई है। प्रजा तो बनी है, रॉयल फैमिली तो बनी है लेकिन राजा रानी भी तो चाहिए। राजा रानी तख्त वाले नहीं, राजा रानी के साथ वहाँ दरबार में भी तो

राजे समान बैठते हैं, ऐसे तो बनाओ। राज्य दरबार शोभा वाली हो जाए। सुना, शिवरात्रि पर क्या करना है।

(15.12.2002)

टीचर्स सेः- टीचर्स अभी स्वयं भी सफल करो और सफल कराओ। सेवा में वृद्धि होना अर्थात खजानों को सफल किया और कराया। तो इस वर्ष इस स्लोगन को प्रैक्टिकल में लाना तो स्वतः ही वृद्धि होती जायेगी। हिम्मत दिलाओ। बापदादा ने देखा है, कोई-कोई स्थान में हिम्मत कम दिलाने की शक्ति है। हिम्मत दिलाओ, हर कार्य में मन्सा में भी, वाचा में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, कर्म में भी हिम्मत दिलाओ। टीचर्स की सीट ही है - हिम्मत में रहना और हिम्मत दिलाना। क्यों? क्योंकि टीचर्स को जो बाप की मुरली सुनाने का चांस मिला है और तख्त मिला है, यह एक्सट्रा मदद है। तो हिम्मत और उल्हास दिलाओ। सारा क्लास रूहानी खिला हुआ गुलाब दिखाई दे। सुना टीचर्स ने। उल्हास में लाओ क्लास को।

(31.12.2002)

टीचर्स सेः- टीचर्स अपने फीचर्स से ही बापदादा का साक्षात्कार कराने वाली हैं। बापदादा का भी और अपने फ्युचर का भी फीचर्स द्वारा प्रत्यक्ष करने की सेवा विशेष टीचर्स की है। हर एक का फीचर्स सदा ही जैसे प्रदर्शनी हो। प्रदर्शनी के चित्र स्वतः ही अपना परिचय देते हैं तो आपके फीचर्स चलता फिरता प्रदर्शनी हो और हर एक को स्वतः ही स्मृति दिलाते रहो।

(18.01.2003)

टीचर्स को अभी साक्षात्कार मूर्त बनना है। अभी थोड़ा सा यह 'मैं' को आज फुल सरेण्डर करेंगे ना तो साक्षात्कार शुरु हो जायेंगे। यह मैं-पन का पर्दा

थोड़ा आगे आ जाता है, यह पर्दा हट जायेगा तो हर एक से बाप का साक्षात्कार होगा। तब यह नारा लगेगा - साक्षात् बाप आ गये, आ गये, आ गये। साक्षात्कार दिव्य दृष्टि से नहीं, साक्षात् रूप का साक्षात्कार होगा। सबके मुख से एक ही आवाज निकलेगा - यह तो साक्षात् बाप हैं।

(28.02.2003)

मन्सा प्युरिटी अर्थात् सदा और सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामाना - सर्व प्रति। वह आत्मा कैसी भी हो लेकिन प्युरिटी की रॉयल्टी की मन्सा है - सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, कल्याण की भावना, रहम की भावना, दातापन की भावना। और दृष्टि में या तो सदा हर एक के प्रति आत्मिक स्वरूप देखने में आये वा फरिश्ता रूप दिखाई दे। चाहे वह फरिश्ता नहीं बना है, लेकिन मेरी दृष्टि में फरिश्ता रूप और आत्मिक रूप ही हो और कृति अर्थात् सम्बन्ध-सम्पर्क में, कर्म में आना, उसमें सदा ही सर्व प्रति स्नेह देना, सुख देना। चाहे दूसरा स्नेह दे, नहीं दे लेकिन मेरा कर्तव्य है स्नेह देकर स्नेही बनाना। सुख देना। स्लोगन है ना - ना दुःख दो, ना दुःख लो। देना भी नहीं है, लेना भी नहीं है। देने वाले आपको कभी दुःख भी दे दें लेकिन आप उसको सुख की स्मृति से देखो। गिरे हुए को गिराया नहीं जाता है, गिरे हुए को सदा ऊँचा उठाया जाता है। वह परवश होके दुःख दे रहा है। गिर गया ना! तो उसको गिराना नहीं है और भी उस बिचारे को एक लात लगा लो, ऐसे नहीं। उसको स्नेह से ऊँचा उठाओ। उसमें भी फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम। पहले तो चैरिटी बिगन्स एट होम है ना, अपने सर्व साथी, सेवा के साथी, ब्राह्मण परिवार के साथी हर एक को ऊँचा उठाओ। वह अपनी बुराई दिखावे भी लेकिन आप उनकी विशेषता देखो। नम्बरवार तो हैं ना! देखो, माला आपका यादगार है। तो सब एक नम्बर तो नहीं है ना! 108 नम्बर हैं ना! तो नम्बरवार हैं और रहेंगे लेकिन मेरा फर्ज क्या है? दूसरे को सुख देते-देते, स्नेह देते-देते आपके संस्कार भी स्नेही,

सुखी बन ही जाने हैं। यह सेवा है और यह सेवा फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम।

(17.10.2003)

शक्तियां, खजानें अभी कर्म तक लाओ, चेहरे तक लाओ, चलन में लाओ। तभी सभी कहेंगे, जो आपका गीत है ना, शक्तियाँ आ गई...। सब शिव की शक्तियाँ हैं। फिर शक्तियाँ शिव बाप को प्रत्यक्ष करेंगी। अभी छोटे-छोटे खेलपाल बन्द करो। अब वानप्रस्थ स्थिति को इमर्ज को। तो बापदादा सभी बच्चों को, इस समय बापदादा की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के सितारे देख रहे हैं। कोई भी बात आवे तो यह स्लोगन याद रखना - 'परिवर्तन, परिवर्तन, परिवर्तन'।

आज के बापदादा के बोल का एक शब्द नहीं भूलना, वह कौन-सा? 'परिवर्तन'। मुझे बदलना है। दूसरे को बदलकर नहीं बदलना है, मुझे बदलके औरों को बदलना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूं, नहीं। मुझे निमित्त बनना है। मुझे हे अर्जुन बनना है तब ब्रह्मा बाप समान नम्बरवन लेंगे।

(15.12.2003)

अभी बापदादा सभी बच्चों को सदा निर्विघ्न स्वरूप में देखना चाहते हैं, क्यों? जब आप निमित्त बने हुए निर्विघ्न स्थिति में रहो तब विश्व की आत्माओं को सर्व समस्याओं से निर्विघ्न बना सको। इसके लिए विशेष दो बातों पर अण्डरलाइन करो। करते भी हो लेकिन और अण्डरलाइन करो। एक तो हर एक आत्मा को अपने आत्मिक दृष्टि से देखो। आत्मा के ओरीज्नल संस्कार के स्वरूप में देखो। चाहे कैसी भी संस्कार वाली आत्मा है लेकिन आपकी हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, परिवत्रन की श्रेष्ठ भावना, उनके संस्कार को थोड़े समय के लिए परिवर्तन कर सकती है। आत्मिक भाव इमर्ज करो। जैसे शुरू-शुरू में देखा तो संगठन में रहते आत्मिक दृष्टि, आत्मिक वृत्ति, आत्मा-आत्मा से मिल रही है,

बात कर रही है, इस दृष्टि से फाउण्डेशन कितना पक्का हो गया। अभी सेवा के विस्तार में, सेवा के विस्तार के सम्बन्ध में आत्मिक भाव से चलना, बोलना, सम्पर्क में आना मर्ज हो गया है। खत्म नहीं हुआ है लेकिन मर्ज हो गया है। आत्मिक स्वमान, आत्मा को सहज सफलता दिलाता है क्योंकि आप सभी कौन आकर इकट्ठे हुए हो? वही कल्प पहले वाले देव आत्मायें, ब्राह्मण आत्मायें इकट्ठे हुए हो। ब्राह्मण आत्मा के रूप में भी सभी श्रेष्ठ आत्मायें हो, देव आत्माओं के हिसाब से भी श्रेष्ठ आत्मायें हो। उसी स्वरूप से सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ। हर समय चेक करो - मुझ देव आत्मा, ब्राह्मण आत्मा का श्रेष्ठ कर्तव्य क्या, श्रेष्ठ सेवा क्या है? 'दुआयें देना और दुआयें लेना'। आपके जड़ चित्र क्या सेवा करते हैं? कैसी भी आत्मा हो लेकिन दुआयें लेने जाते, दुआयें लेकर आते। और कोई भी अगर पुरुषार्थ में मेहनत समझते हैं तो सबसे सहज पुरुषार्थ है, सरा दिन दृष्टि, वृत्ति, बोल, भावना सबसे दुआयें दो, दुआयें लो। आपका टाइटल है, वरदान ही है महादानी, सेवा करते, कार्य में सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सिर्फ यही कार्य करो - दुआयें दो और दुआयें लो। यह मुश्किल है क्या? कि सहज है? जो समझते हैं सहज है, वह हाथ उठाओ। कोई आपका ओपोजिशन करे तो? तो भी दुआ देंगे? इतनी दुआओं का स्टॉक है आपके पास? ओपोजिशन तो होगी क्योंकि ओपोजिशन ही पोजीशन तक पहुंचाती है। देखो, सबसे ज्यादा ओपोजिशन ब्रह्मा बाप की हुई। हुई ना? और पोजीशन किसने नम्बरवन पाई? ब्रह्मा बाप ने पाई ना! कुछ भी हो लेकिन मुझे ब्रह्मा बाप समान दुआयें देनी है। क्या ब्रह्मा बाप के आगे व्यर्थ बोलने, व्यर्थ करने वाले नहीं थे? लेकिन ब्रह्मा बाप ने दुआयें दी, दुआयें ली, समाने की शक्ति रखी। बच्चा है, बदल जायेगा। ऐसे ही आप भी यही वृत्ति, दृष्टि रखो - यह कल्प पहले वाले हमारे ही परिवार के, ब्राह्मण परिवार के हैं। मुझे इसको भी बदलना है। यह बदले तो मैं बदलूं, नहीं। मुझे बदलके बदलना है, मेरी जिम्मेवारी है। तब दुआ निकलेगी और दुआ मिलेगी।

(02.02.2004)

आगे के लिए हर समय, हर दिन - वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ - यह याद रखना। आपको याद है - ब्रह्मा बाप साइन क्या करते थे? वर्ल्ड सर्वेन्ट। तो वर्ल्ड सर्वेन्ट हैं, तो सिर्फ शिवरात्रि की सेवा से वर्ल्ड की सेवा समाप्त नहीं होगी। लक्ष्य रखो कि मैं वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ, तो वर्ल्ड की सेवा हर श्वांस में, हर सेकण्ड में करनी है। जो भी आवे, जिससे भी सम्पर्क हो, उसको दाता बन कुछ न कुछ देना ही है। खाली हाथ कोई नहीं जावे। अखण्ड भण्डारा हर समय खुला रहे। कम से कम हर एक के प्रति शुभ भाव और शुभ भावना, अवश्य दो। शुभ भाव से देखो, सुनो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ और शुभ भावना से उस आत्मा को सहयोग दो। अभी सर्व आत्माओं को आपके सहयोग की बहुत-बहुत आवश्यकता है। तो सहयोग दो और सहयोगी बनाओ। कोई न कोई सहयोग चाहे मन्सा का, चाहे बोल से काई सहयोग दो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से सहयोग दो, तो शिवरात्रि जन्म उत्सव का विशेष स्लोगन याद रखो - 'सहयोग दो और सहयोगी बनाओ'। कम से कम जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आवे उसे सहयोग दो, सहयोगी बनाओ। कोई न कोई तो सम्बन्ध में आता ही है, उसकी और कोई खातिरी भल नहीं करो लेकिन हर एक को दिलखुश मिठाई जरूर खिलाओ। यह जो यहाँ भण्डारे में बनती है वह नहीं। दिल खुश कर दो। तो दिल खुश करना अर्थात दिलखुश मिठाई खिलाना। खिलायेंगे! उसमें तो कोई मेहतन नहीं है। न टाइम एक्सट्रा देना है, न मेहनत है। शुभ भावना से दिल खुश मिठाई खिलाओ। आप भी खुश, वह भी खुश और क्या चाहिए। तो खुश रहेंगे और खुशी देंगे। कभी भी आप सभ का चेहरा ज्यादा गम्भीर नहीं होना चाहिए। टू-मच गम्भीर भी अच्छा नहीं लगता है। मुस्कुराहट तो होनी चाहिए ना। गम्भीर बनना अच्छा है, लेकिन टू-मच गम्भीर होते हैं ना, तो वह ऐसे होते हैं जैसे पता नहीं कहाँ गायब हैं। देख भी रहे हैं लेकिन गायब। बोल भी रहे हैं लेकिन गायब रूप में बोल रहे हैं। तो वह चेहरा अच्छा नहीं। चेहरा सदा मुस्कुराता रहे। चेहरा सीरियस नहीं करना। क्या करें, कैसे करें तो सीरियस हो जाते हो। बहुत मेहनत है, बहुत काम है..... सीरियस हो जाते हो लेनिक जितना बहुत काम

उतना ज्यादा मुस्कुराना। मुस्कुराना आता है न? आता है? आपके जड़ चित्र देखो कभी ऐसे सीरियस दिखाते हैं क्या! अगर सीरियस दिखावे तो कहते हैं आर्टिस्ट ठीक नहीं है। तो अगर आप भी सीरियस रहते हो तो कहेंगे इसको जीने का आर्ट नहीं आता है। इसलिए क्या करेंगे? टीचर्स क्या करेंगे?

(17.02.2004)

कुछ भी हो जाए, बापदादा तो कहता है, स्व परिवर्तन के लिए इस हद के मैं-पन से मरना पड़ेगा, मैं-पन से मरना, शरीर से नहीं मरना। शरीर से नहीं मरना, मैं-पन से मरना है। मैं राइट हूँ, मैं यह हूँ, मैं क्या कम हूँ, मैं भी सब कुछ हूँ, इस मैं-पन से मरना है। तो मरना भी पड़े तो यह मृत्यु बहुत मीठा मृत्यु है। यह मरना नहीं है, 21 जन्म राज्य भाग्य में जीना है। तो मंजूर है? मंजूर है टीचर्स?

(20.03.2004)

बापदादा सदा टीचर्स को कहते हैं, टीचर्स अर्थात् जिसके फीचर्स से फ्युचर दिखाई दे। ऐसी टीचर्स हो ना! आपको देखकर स्वर्ग के सुख की फीलिंग आये। शान्ति की अनुभूति हो। चलेत-फिरते फरिश्ते दिखाई दें। ऐसी टीचर्स हो ना!

(20.02.2005)

सेन्टर वासीः- (बैनर- प्रेम और दया की ज्योति जगा कर रखेंगे) बहुत अच्छा संकल्प लिया है। अपने पर भी दया दृष्टि, साथियों के ऊपर भी दया दृष्टि और सर्व के ऊपर भी दया दृष्टि। ईश्वरीय लव चुम्बक है, तो आपके पास ईश्वरीय लव का चुम्बक है। किसी भी आत्मा को ईश्वरीय लव के चुम्बक से बाप का बना सकते हो। बापदादा सेन्टर पर रहने वालों को विशेष दिल की दुआयें देते हैं, जो

आप सभी ने विश्व में नाम बाला किया है। कोने-कोने में ब्रह्माकुमारीज का नाम तो फैलाया है ना!

(07.03.2005)

अभी बापदादा का क्वेश्चन है, सबका लक्ष्य तो है सम्पूर्ण बनने का, सम्पन्न बनने का। लक्ष्य है या थोड़ा थोड़ा बनने का है? लक्ष्य है? सबको है तो हाथ उठाओ। सम्पूर्ण बनना है, अच्छा। कब तक? आप लोगों से क्वेश्चन करते हो ना, स्टूडेन्ट से भी टीचर्स क्वेश्चन करती हैं ना - आपका क्या लक्ष्य है? तो आज बापदादा विशेष टीचर्स से पूछते हैं। 30 वर्ष वाले बैठे हैं ना। तो 30 वर्ष वालों को कल ही आपस में बैठकर प्रोग्राम बनाना चाहिए। मीटिंग तो बहुत करते हो। बापदादा देखते हैं मीटिंग, सीटिंग, मीटिंग सीटिंग। लेकिन अब ऐसी मीटिंग करो, कि कब तक सम्पन्न बनेंगे? और सब फंक्शन मनाते हो, ड़ेट फिक्स करते हो, फलाना प्रोग्राम फलानी ड़ेट, इसकी ड़ेट नहीं है? जितने साल चाहिए उतने बताओ। क्यों? बापदादा क्यों कहते हैं? क्योंकि बाप से प्रकृति पूछती है कि कब तक विनाश करें? तो बापदादा क्या जवाब दें। बापदादा बच्चों से ही पूछेंगे ना। कब तक? आज की विशेष टॉपिक है कब तक?

बापदादा का प्यार है ना, तो बापदादा समझते हैं सब ब्रह्मा बाप समान बन जायें। क्या बाप के आगे ओपोजीशन नहीं आई, ब्रह्मा बाप के आगे ओपोजीशन नहीं हुई, माया की भी हुई, आत्माओं की भी हुई, प्रकृति की भी हुई, लेकिन ब्रह्मा बाप ने पोजीशन छोड़ी? नहीं छोड़ी ना। तभी फरिश्ता बना। तो अभी अपने को फरिश्ता समझकर चलो, मैं फरिश्ता हूँ.... लेकिन एक दो को भी फरिश्ता रूप में देखो, सब फरिश्ते हैं। न मेरा पुराने संसार संस्कार से नाता, न इन कोई ब्राह्मणों का। बस खत्म। यह भी फरिश्ता, यह भी फरिश्ता उसी नजर से देखो। वायुमण्डल फैलाओ।

बहुत अच्छे-अच्छे रतन हैं। एक-एक की विशेषता अपनी अपनी है।

करावनहार करा रहा है और आप बच्चे निमित्त बनके कर रहे हैं। सब अच्छे उमंग उत्साह का सर्टीफिकेट दादियों द्वारा मिला है इसकी तो बहुत-बहुत मुबारक हो। लेकिन इसका कारण क्या? जिस भी सेवा स्थान का सेवा की वृद्धि होती है और निर्विघ्न होते हैं उसका कारण क्या होता है? जानते हो? पालना। कई सेन्टर्स में वी.आई.पी की सेवा बहुत अच्छी करते हैं लेकिन स्टूड़ेन्ट की पालना कम करते हैं इसीलिए स्टूड़ेन्ट बढ़ते नहीं हैं। और स्टूड़ेन्ट रेग्युलर सेवा के उमंग-उत्साह में नहीं रहेंगे, क्लास करेंगे, जो कहेंगे वह करेंगे लेकिन अपने उमंग-उत्साह में नहीं आयेंगे। तो यह रिजल्ट है पालना की। मुबारक हो।

सभी जो भी टीचर्स निमित्त बैठी हैं वह जितनी वी.आई.पी. का अटेन्शन रखते हो, उतनी पालना स्टूड़ेन्ट की भी रखो। स्टूड़ेन्ट में नवीनता लाओ, कोई न कोई नवीनता लाने से उमंग-उत्साह बढेगा। बहुत बिजी हो जाते हो सेवा में फिर थक जाते हो, फिर पालना इतनी रूचि से नहीं करते हो। पहले तो राजधानी तैयार करो। वह तो स्टूड़ेन्ट से ही होगी ना। दिल से पालना करो। एक-एक की कमजोरी हटाने की मेहनत करो। खुशी की मेहनत करो, बोझ वाली नहीं क्योंकि क्लास के स्टूड़ेन्ट जितना ज्यादा बढेंगे उतनी राजधानी जल्दी तैयार होगी। जो सहयोगी हैं, उनको संबंध में लाओ स्टूड़ेन्ट बनाओ। बहुत अच्छा है, टीचर्स की महिमा सुनी थी बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं, अच्छे प्लैन बना रहे हैं। टीचर्स हाथ उठाओ। अच्छा, आपको लाख गुणा बधाई हो। अभी एक मिन्ट ऐसा पावरफुल सर्व शक्तियां सम्पन्न विश्व की आत्माओं को किरणें दो जो चारों ओर आपके शक्तियों का वायब्रेशन विश्व में फैल जाये।

(21.10.2005)

जो निमित्त बनते हैं, निमित्त बनने वालों के ऊपर जिम्मेवारी भी होती है, तो स्नेह भी इतना होता है क्योंकि सबके प्यार की दुआओं की उनके जीवन में लिफ्ट मिल जाती है। आप भी जो निमित्त बनते हो उन्हों को भी लिफ्ट मिलती है

लेकिन लिफ्ट की गिफ्ट को कायप रखें तो बहुत फायदा हो सकता है। यह एकस्ट्रा वरदान मिलता है। किसी भी कार्य में, ईश्वरीय कार्य वा यज्ञ सेवा में जो विशेष निमित्त बनता है उसको दुआयें और प्यार दोनों की लिफ्ट मिलती है। प्यार एक ऐसी चीज है जो क्या से क्या बना देती है। आज दुनिया में भी किसी से पूछो क्या चाहिए? कहेंगे प्यार चाहिए। शान्ति चाहिए, वह भी प्यार से मिलेगी। तो प्यार, आत्मिक प्यार सबसे श्रेष्ठ है।

(15.11.2005)

सन्देश देने का कार्य तो बहुत किया, कर रहे हैं, करते रहेंगे। अब सन्देश-वाहकों के सहयोग और स्नेह की रूप रेखा स्टेज पर लाओ। टीचर्स बताओ, कर सकते हैं? कर सकते हैं या करना ही है? करना ही है। कोई कमजोर नहीं रहे, क्योंकि कोटों में कोई है ना! चाहे लास्ट दाना भी है, है तो कोटो में कोई। आपका टाइटिल ही है - मास्टर सर्वशक्तिवान। तो सर्वशक्तिवान का कर्तव्य क्या है? शक्ति की लेन-देन करना। बाप द्वारा मिला हुआ गुण आपस में लेन-देन करो। अगर कल्याण की भावना रखेंगे तो जैसे भाषण करके वाणी द्वारा सन्देश देते हो ना, वैसे अपने कल्याण की भावना द्वारा, कल्याण की वृत्ति द्वारा, कल्याण के वायुमण्डल द्वारा यह गुणों की गिफ्ट दो, शक्तियों की गिफ्ट दो। कमजोर को सहयोग देना, यह समय पर गिफ्ट देना है, गिरे हुए को गिराओ नहीं, चढ़ाओ, ऊँचा उठाओ। यह ऐसा है, यह ऐसा है...., नहीं। यह प्रभु प्यार के पात्र है, कोटो में कोई आत्मा है, विशेष आत्मा है, विजयी बनने वाली आत्मा है, यह दृष्टि रखो। अभी वृत्ति, दृष्टि, वायुमण्डल चेंज करो। कुछ नवीनता करनी चाहिए ना! कमजोरी देखते, देखो नहीं, उमंग दो, सहयोग दो। ऐसा ब्राह्मण संगठन तैयार करो तो बापदादा विजय की ताली बजायेगा।

(15.12.2005)

पहले स्वयं की बात है - योग लगाते हो, बापदादा बच्चों को योग में अभ्यास करते हुए देखते हैं। अमृतवेले भी बहुत पुरुषार्थ करते हैं लेकिन योग तपस्या, तप के रूप में नहीं करते हैं। प्यार से याद जरूर करते हैं, रूहरिहान भी बहुत करते हैं, शक्ति भी लेने का अभ्यास करते हैं लेकन याद को इतना पावरफुल नहीं बनाया है, जो जो संकल्प करो विदाई, तो विदाई हो जाए। योग को योग अग्नि के रूप में कार्य में नहीं लगाते। इसलिए योग को पावरफुल बनाओ। एकाग्रता की शक्ति विशेष संस्कार भस्म करने में आवश्यक है। जिस स्वरूप में एकाग्र होने चाहो, जितना समय एकाग्र होने चाहो, ऐसी एकाग्रता संकल्प किया और भस्म। इसको कहा जाता है योग अग्नि। नाम-निशान समाप्त। मारने में फिर भी लाश तो रहता है ना! भस्म होने के बाद नाम-निशान खत्म। तो इस वर्ष योग को पावरफुल स्टेज में लाओ।

ब्रह्मा बाप को देखो, साकार में तो ब्रह्मा बाप को फालो करना है ना! ब्रह्मा बाप ने त्याग, तपस्या और सेवा लास्ट घड़ी तक साकार रूप में प्रैक्टिकल दिखाया। अपनी डयुटी, शिव बाप द्वारा महावाक्य उच्चारण की डयुटी लास्ट दिन तक निभाई। लास्ट मुरली याद है ना? तीन शब्द का वरदान याद है? (निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बनो) त्याग भी लास्ट दिन तक किया, अपना पुराना कमरा नहीं छोड़ा। बच्चों ने कितना प्यार से ब्रह्मा बाप को कहा लेकिन बच्चों के लिए बनाया, स्वयं यूज नहीं किया। और सदा अढ़ाई तीन बजे उठकर स्वयं प्रति तपस्या की, संस्कार भस्म किये तब कर्मातीत अव्यक्त बने, फरिश्ता बने। जो सोचा वह करके दिखाया। कहना, सोचना और करना तीनों समान। फालो फादर। लास्ट तक अपने कर्तव्य में पूर्ण रहे, पत्र भी लिखे, कितने पत्र लिखे? सेवा भी नहीं छोड़ी। फॉलो फादर। अखण्ड महादानी, महादानी नहीं, अखण्ड महादानी का प्रैक्टिकल रूप दिखाया, अन्त तक। लास्ट तक बिना आधार के तपस्वी रूप रखा। आँखों में चश्मा नहीं डाला। यह सूक्ष्म शक्ति है। निराधार। शरीर पुराना है, दिन-प्रतिदिन प्रकृति हवा पानी दूषित हो रहा है इसलिए बापदादा आपको कहते नहीं

है, क्यों आधार लेते हो, क्यों चश्मा पहनेते हो, पहनो भले पहनो, लेकिन शक्तिशाली स्थिति जरूर बनाओ।

(31.12.2005)

मेगा प्रोग्राम भी कर लिया, सन्देश तो दे दिया, अपना उल्हाना निकाल लिया, इसकी मुबारक हो। लेकिन अब तक यह आवाज नहीं फैला कि यह परमात्म ज्ञान है। ब्रह्माकुमारियां कार्य अच्छा कर रही हैं, ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान बहुत अच्छा है लेकिन यही परमात्म ज्ञान है, परमात्म कार्य चल रहा है यह आवाज फैले। मेडिटेशन कोर्स भी कराते हो, आत्मा का परामत्मा से कनेक्शन भी जोड़ते हो लेकिन अब परमात्म कार्य स्वयं परमात्मा करा रहा है, यह बहुत कम अनुभव करते हैं। आत्मा और धारणायें यह प्रत्यक्ष हो रहा है, अच्छा कार्य कर रहे हैं, अच्छा बोलते हैं, अच्छा सिखाते हैं, यहाँ तक ठीक है। नॉलेज अच्छी है इतना भी कहते हैं लेकिन परमात्म नॉलेज है.... यह आवाज बाप के नजदीक लायेगा और जितना बाप के नजदीक आयेंगे उतना अनुभव स्वतः ही करते रहेंगे। तो ऐसा प्लैन बनाओ और भाषणों में ऐसा कुछ जौहर भरो, जिससे परमात्मा के नजदीक आ जायें। दिव्य गुणों की धारणा इसमें अटेन्शन गया है, आत्मा का ज्ञान देते हैं, परमात्मा का ज्ञान देते हैं, यह कहते हैं लेकिन परमात्मा आ चुका है, परमात्म कार्य स्वयं परमात्मा चला रहा है, यह प्रत्यक्षता चुम्बक की तरह समीप लायेगी। आप लोग भी समीप तब आये जब समझा बाप मिला है, बाप से मिलना है। स्नेही मैजारिटी बनते हैं, वह क्या समझके? कार्य बहुत अच्छा है। जो कार्य ब्रह्माकुमारियां कर रही है, वह कार्य कोई कर नहीं सकता, परिवर्तन कराती है। लेकिन परमात्मा बोल रहा है, परमात्मा से वर्सा लेना हे, इतना नजदीक नहीं आते क्योंकि अभी जो पहले समझते नहीं थे कि ब्रह्माकुमारियां क्या करती है, क्या इन्हों की नॉलेज है, वह समझने लगे हैं, लेनिक परमात्म प्रत्यक्षता, अगर समझ जाएं कि परमात्मा का ज्ञान है तो रुक सकते हैं क्या! जैसे आप भागकर आ गये हो ना, ऐसे भागेंगे। तो

अभी ऐसा प्लैन बनाओ, ऐसे भाषण तैयार करो, ऐसे परमात्म अनुभूति के प्रैक्टिकल सबूत बनो। तभी बाप की प्रत्यक्षता प्रैक्टिकल में दिखाई देगी। अभी 'अच्छा है' - यहाँ तक पहुंचे हैं, 'अच्छा बनना है', वह लहर परमात्म प्यार की अनुभूति से होगी। तो अनुभवी मूर्त बन अनुभव कराओ। अभी डबल मालिकपन की स्मृति से समर्थ बन समर्थ बनाओ।

बहुत समय से प्रयत्न कर रहे हैं - 'यही है, यही है, यही है'.... यह आवाज फैलाने का। अभी है - 'यह भी है', यह है नहीं है। यह आवाज आ जायें - यही है, यही है....। टीचर्स ठीक है? कब तक करेंगे? 'यह भी है' - यह तो बहुत सुन लिया। जैसे आपके मन में बस बाबा, बाबा, बाबा स्वतः याद रहता है, ऐसे उनके मुख से निकले 'हमारा बाबा आ गया'। वह भी 'मेरा बाबा', 'मेरा बाबा' - यह आवाज चारों कोने से निकले।

(03.02.2006)

टीचर्स को मुबारक हो। आप जो भी आई हो, वह पुरुषार्थ में संतुष्ट हो? अपने पुरुषार्थ में संतुष्ट हो, पढ़ाई में संतुष्ट हो? हाँ या अभी नई नई हैं! खुश रहती हैं, संतुष्ट रहती हैं? अच्छा हैण्डस तैयार करो क्योंकि समय कम है, सेवा बहुत है। सेवा बहुत-बहुत रही हुई है। आपका गीत भी है, समय की पुकार का प्रोग्राम भी करते हो ना, तो समय की पुकार टीचर्स की बहुत है। इसलिए जल्दी-जल्दी तैयार करो। अच्छा - खुश रहना और खुशी से उड़ती रहना।

(16.11.2006)

जो सभी टीचर्स इन्चार्ज हैं, सेन्टर इन्चार्ज हैं या जोन इन्चार्ज हैं, उन्हों का एक दिन संगठन करेंगे, हिसाब-किताब तो पूछेंगे ना! क्योंकि बापदादा के पास बहुत दुःखी और अशान्ति के आवाज आते हैं। परेशानी के आवाज आते हैं। आप लोगों के पास नहीं सुनने आते, आपके भी तो भक्त होंगे ना! तो भक्तों की पुकार

आप इष्ट देवों को नहीं आती? टीचर्स को भक्तों की आवाज सुनाई देती है?

(18.01.2007)

जैसे आफ्रीका वालों ने अपनी एरिया को सन्देश देने का कार्य सफल किया है। बापदादा को यह कार्य अच्छा लगता है, कोई का भी उल्हना नहीं रह जाना चाहिए। आपका काम है सन्देश देना, वह अभी आवे या पीछे आवे लेकिन आपने अपना कार्य सम्पन्न किया तो कर्नाटक वाले दूसरे वर्ष में जब आयेंगे, क्या करके आयेंगे? कोई भी एरिया खाली नहीं रहनी चाहिए। क्योंकि आप तो जानते हो ना - कि बाप का परिचय मिलने से, बाप के सम्बन्ध में आने से आत्मायें कितनी सुखी बन जायेंगी। अभी तो दिन-प्रतिदिन दुःख और अशान्ति बढ़ती जा रही है क्योंकि दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार, पापाचार बढ़ रहा है। अति में जा रहा है। लेकिन आप जानते हो कि अति के बाद क्या होता है? अन्त आती है। और अन्त किसको लाती है? आदि को। तो अपने भाई फिर भी बाप तो एक ही है ना, चाहे जाने चाहे मानें, नहीं भी मानें लेकिन बाप तो बाप ही है। तो अपने भाईयों को, अपनी बहनों को सन्देश जरूर दे दो। तो क्या करेंगे? रिकार्ड बनायेंगे, टीचर्स? कोई गाँव भी नहीं रहना चाहिए। हाथ उठाओ, जो करेगा, ऐसे ही नहीं हाथ उठाना। करेंगे? रिजल्ट जाके भेजना, प्लैन बनाना। कमाल तो करना है ना! जितनी कमाल करने में लग जायेंगे, उतनी छोटी-छोटी धमाल खत्म हो जायेगी। तो बहुत अच्छा चांस मिला है, चांस लिया है और चांस को जो काम मिला है वह भी करके आयेंगे।

(02.02.2007)

यह सब टीचर्स हैं। दोनों तरफ की टीचर्स हैं। अच्छा हैं। बापदादा को टीचर्स पर भी नाज़ हैं क्योंकि हिम्मत रखकर सरेण्डर होके सारी जीवन सेवा के प्रति लगाने का संकल्प ले लिया है। पक्के हैं ना टीचर्स? पक्के हैं? कि थोड़े-थोड़े कच्चे हैं? टीचर्स कच्चे नहीं बनना। टीचर्स अर्थात अपने फीचर्स से फ्युचर दिखाने

वाली। अभी संगमयुग का फ्युचर है - फरिश्ता भव। और भविष्य का फीचर्स है - देवता भव। तो जो भी ग्रुप आया है, सेवाधारी उनको डबल नशा हे कि वह फरिश्ता सो देवता बनना ही है! पक्के हैं ना सभी? हाँ देखो, आपका फोटो आ रहा है, तो ऐसा नहीं हो कि फोओ दिखाई नहीं दे, पक्के रहना। क्योंकि कई जब कहाँ थोड़ी बहुत हलचल होती है ना तो घबरा जाते हैं। बहुत जल्दी घबरा जाते हैं, गहराई में नहीं जाते, घबरा जाते हैं। अगर गहराई में जाये ना, तो कभी भी कितना भी बड़ा हलचल वाला पेपर हो या बात हो लेकिन गहराई में जाने वाले जैसे समुद्र होता है ना, तो समुद्र के तले में जाने वाले बहुत माल लेके आते हैं। ऊपर-ऊपर वाले नहीं, ऊपर वालों को मछली मिलेगी लेकिन गहराई में जाने वाले बहुत चीजें ले आते हैं। तो यहाँ भी कोई भी बात होवे, बातें तो आयेंगी, यह बापदादा नहीं कहेगा बातें आयेंगी नहीं, जितना आगे जायेंगे उतना सूक्ष्म बातें आयेंगी क्योंकि पास विद ऑनर होना है ना, क्या सोचा है टीचर्स ने? पास विद ऑनर होना है या 33 मार्क्स से पास होना है? पास विद ऑनर होना है हाथ उठाओ। इन्हों का फोटो निकालो, अच्छी तरह से। अच्छा।

आपका भी फोटो निकलेगा। घबराओ नहीं। बापदादा को उस समय भूल जाते हो, अकेले बन जाते हो ना तो छोटी बात भी बड़ी लगती है। बापदादा कम्बाइण्ड है, कम्बाइण्ड रखो, अनुभव करो तो देखो पहाड़ भी रूई बन जायेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। कितने बारी पास हुए हो, कितने कल्प पास हुए हो, पता है, है नशा? अनेक बार मैं ही पास हुआ हूँ, अभी रिपीट करना है। नई बात नहीं है, सिर्फ रिपीट करना है, यह स्मृति रखो।

(17.03.2007)

बापदादा तो सभी टीचर्स को गुरूभाई देखते हैं। गुरूभाई का अर्थ है बाप समान। तो टीचर्स को विशेष हर कर्म बाप समान करना ही है। करेंगे नहीं, करना ही है क्योंकि टीचर्स बाप की तरफ से स्टूडेन्ट के आगे एक निमित्त साकार रूप में

बाप समान हैं। टीचर का हर कर्म स्टूडेन्ट के आगे बाप समान दिखाई दे। सबके मुख से निकले यह तो बाप को फॉलो कर बाप समान बने हुए हैं। तो ऐसा लक्ष्य है ना। यही लक्ष्य है ना। कांध हिलाओ। टीचर निमित्त हैं। तो निमित्त के ऊपर जिम्मेवारी भी है ना। तो कर रही हो। लेकिन और भी आगे करना है। लक्ष्य बहुत अच्छा है। और बाप तो यही हर टीचर में शुभ भावना रखते हैं कि बाप समान बनना ही है। और क्या करेंगी? और कोई रास्ता है क्या, समान बाप के बनने के और कोई रास्ता नहीं है इसीलिए देखो इन्होंने यह स्लोगन बनाया है, बाप ही संसार है। अच्छा बनाया है। लेकिन कपड़े पर नहीं रह जाये, दिल में रह जाए।

(31.10.2007)

क्या सदा निर्विघ्न बन औरों को भी निर्विघ्न बनाती रहेंगी? यह वायदा किया? निर्विघ्न रहेंगी? या थोड़ा-थोड़ा बीच में विघ्न आयेगा? अच्छा आ भी जाए तो उस विघ्न को, समस्या को समाधान के रूप में परिवर्तन करने की शक्ति अनुभव करते हो? जो समझते हैं कि परिवर्तन शक्ति कार्य में लगाके बापदादा को या जिन टीचर्स ने सेवा की, उसको सबूत दिखायेंगे, ऐसी हिम्मत रखने वाले हाथ उठाओ। दिल का हाथ उठाया है ना! कुछ भी हो जाए, सी फादर। औरों की विशेषता को देखना लेकिन फॉलो फादर।

(30.11.2007)

बापदादा खुश है क्योंकि विश्व के सामने तो टीचर्स ही रहती हैं ना। टीचर्स विजयी तो सेन्टर विजयी। सेन्टर विजयी तो ज़ोन विजयी और ज़ोन विजयी तो विश्व विजयी। इसलिए यह पुरुषार्थ पक्का करना।

(15.12.2007)

टीचर्स सभी अपने-अपने सेन्टर्स में यह पक्का कराना और रिजल्ट देना। परचिंतन बन्द, व्यर्थ चिंतन बन्द। शुभचिंतन और शुभ चिंतक। हर आत्मा के प्रति, चाहे आपके पीछे ही पड़ा रहे, आपका उल्टा मित्र बना हुआ हो। तो भी शुभचिंतन, पक्का। मातायें हाथ उठाओ। आप टीचर्स रिजल्ट देखना, हर सप्ताह इस बात की रिजल्ट देखना। देख सकती हैं ना।

(18.01.2008)

टीचर्स से:- अभी टीचर्स को क्या करना है? टीचर्स को अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल फैलाना है। चाहे सेन्टर पर, चाहे विश्व में, विश्व में भी वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल की आवश्यकता है क्योंकि भ्रष्टाचार पापाचार बढ़ रहा है। बिना वैराग्य वृत्ति के इन आत्माओं का कल्याण नहीं होगा। जो सन्देश देने का कार्य कर रहे हो, अच्छा कर रहे हो। बापदादा को पसन्द है लेकिन उससे सहयोगी बनते हैं, माइक बनते हैं। आप जैसे बाप के वारिस बच्चे समर्पण बच्चे कम बनते हैं। चारों ओर के सेन्टर्स पर वैराग्य वृत्ति की आवश्यकता है। वैराग्य वृत्ति सिर्फ खाने पीने पहनने की नहीं, साधनों की नहीं, लेकिन टोटल मानसिक वृत्ति, दृष्टि और कृति, चारों ओर के ज़ोन में अभी वैराग्य वृत्ति से उपराम, देहभान से उपराम वह अभी लहर चाहिए। बेहद की वैराग्य वृत्ति पहले देह भान की वैराग्य वृत्ति, देह की बातों से वैराग्य वृत्ति, देह की भावना, भाव, इससे वैराग्य वृत्ति चाहिए। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों को यह अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि तीव्रगति से चाहे ब्राह्मण, चाहे सहयोगी आत्माओं में श्रेष्ठ उन्नति तब होगी जब वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल स्वयं में और सर्व में फैलायेंगे तब आवाज फैलेगा। सभी वर्ग वाले भी यही सोचते हैं प्रत्यक्षता करने चाहते हैं, प्रोग्राम भी बनाते हैं लेकिन अभी तक हुई नहीं है क्यों? कारण है चारों ओर, चाहे पाप कर्म, चाहे भ्रष्टाचार, चाहे बातों में, पोजीशन में वैराग्य वृत्ति नहीं है। तो प्रत्यक्षता सहज नहीं हो सकती है। तो अभी चारों ओर बेहद की वैराग्य वृत्ति, ब्रह्मा बाप को अन्त तक देखा कितनी बेहद की

वैराग्य वृत्ति रही। अपनी देह से भी वैराग्य वृत्ति। बच्चों के सम्बन्ध में भी वैराग्य वृत्ति। तो क्या करेंगे? यही लक्ष्य लक्षण में लाना।

(18.01.2008)

टीचर्स। टीचर्स ठीक हैं। बहुत हैं टीचर्स। अच्छा पुरानी भी उठ रही हैं। अच्छा है देखो, बाप समान टाइटल आपको भी है। बाप भी टीचर बन करके आता है तो टीचर माना स्व अनुभव के आधार से औरों को भी अनुभवी बनाना। अनुभव की अथॉरिटी सबसे ज्यादा है। अगर एक बार भी कोई बात का अनुभव कर लेते हैं, जीवन भर नहीं भूलता है। सुनी हुई बात, देखी हुई बात भूल जाती है लेकिन अनुभव की हुई बात कभी भी भूलती नहीं हैं। तो टीचर्स अर्थात् अनुभवी बन अनुभवी बनाना। यही काम करते हो ना। अच्छा है। जो भी अनुभव में कमी हो ना, वह एक मास में भर देना। फिर बापदादा रिजल्ट मंगायेंगे। अच्छा।

(18.02.2008)

अच्छा - टीचर्स उठो। बापदादा इतनी टीचर्स को देख खुश हो रहे हैं। क्यों टीचर्स गुरुभाई हैं। (2100 टीचर्स आई हैं) अच्छा है टीचर्स निमित्त हैं। निर्विघ्न बन निर्विघ्न वायुमण्डल बनाने के लिए। तो टीचर्स लक्ष्य रखेंगी, लक्ष्य रखेंगी और डेट फिक्स आप करना, बाप नहीं करेगा। हर एक ज़ोन एक दो में प्लैन बनाओ और एक दो को भी प्रेरणा दो। जिस भी ज़ोन में कोई भी नया उमंग उत्साह का प्लैन बने, तो एक दो को भी उमंग उत्साह देकर सभी को निर्विघ्न बनाना है। हाथ उठे, अभी तो पुरुषार्थ के हाथ उठते हैं, प्रत्यक्षता के पहले सभी का हाथ उठे कि हम सदा के लिए निर्विघ्न है, निर्विघ्न रहेंगे। जब सभा में सभी का ऐसा हाथ उठेगा तो कितनी वाह! वाह! हो जायेगी। आपके भक्त भी खुश हो जायेंगे वह भी अपने अपने स्थान पर तालियां बजायेंगे। वाह मेरे ईष्ट देव वाह! तो करना है ना। करना है? मधुबन वाले, मधुबन वालों को पहला नम्बर आना है। आना नहीं है, करना है।

क्योंकि मधुबन की तरफ सबकी आकर्षण है। मधुबन कहने से ही मधुबन का बाबा याद आता है। मधुबन की विशेषता यह है। तो बाप समान नम्बरवन बनना है। सिर्फ एक बात मधुबन वालों को बाबा कहे, कहे? हाथ उठाओ। करना पड़ेगा। करेंगे? करेंगे? इसमें हाथ कम उठाये। मधुबन निवासी एक-एक अपने को जिम्मेवारी दे तो मुझे बाप समान बनना ही है। कोई बने नहीं बने, मुझे बनना है। अपनी रेसपान्सिबिल्टी तो उठा सकते हैं ना। दूसरे की छोड़ो, अपनी रेसपान्सिबिल्टी उठाये मुझे बनना है। मुझे करके दिखाना है। तो आप सबका वायुमण्डल अनेक आत्माओं को मदद देगा। यह नहीं देखो यह तो करते नहीं हैं, यह तो बदलते नहीं हैं, मैं बदलूं। दूसरा आपेही बदलेंगे, मैं अपनी जिम्मेवारी लूं। करेंगे? पीछे भी बैठे हैं मधुबन वाले। अच्छा कितना समय दें? रिजल्ट 6 मास के बाद पूछें। 6 मास ठीक है। जो समझते हैं मैं बदलूं, दूसरे को नहीं देखो। दूसरे को बापदादा देखेगा। न दूसरे का वर्णन करो, यह ऐसा है, यह ऐसा है, नहीं। वह बाप देखेगा, मुझे बदलना है। मधुबन की बहनें हैं, हाथ उठाओ मधुबन की बहनें। अच्छा। बहनें भी करेंगी ना। शक्ति सेना को तो आगे रहना ही है। 6 मास में दूसरे को नहीं देखना, कारण नहीं बताना इसने किया ना। करेंगे जरूर, परेशानी देंगे, क्योंकि माया सुन रही है ना। बातें आयेंगी। आप कहो बातें ही नहीं आवें, यह नहीं होगा, लेकिन मुझे बदलना है। ठीक है। अच्छा। टीचर्स, टीचर्स तो निमित्त हैं। सब टीचर चाहे छोटी चाहे बड़ी। इसमें छोटे नहीं हो ना, सब बड़े हैं। सभी टीचर्स भी हिम्मत रखती हो, हिम्मत है? 6 मास देते हैं। हाथ उठाओ जो करेंगी। बातें आयेंगी। यह नहीं कहना मैंने कोशिश की, कोशिश नहीं। बाप के प्यार की कशिश, कोशिश नहीं। ठीक है टीचर्स। टीचर्स हाथ उठाओ, दो-दो हाथ उठाओ। सभी देख रहे हो। हाथ उठाया है। मुबारक हो। टीचर्स और मधुबन निवासी नम्बरवन। जो ओटे सो अर्जुन। अर्जुन माना बाप समान। कारण नहीं बताना, कारण तो आयेंगे, पहाड़ जैसे कारण आयेंगे, हिम्मत नहीं हारना। वेलकम। कारणों को कहो वेलकम और

सेकण्ड में विदाई दे दो। तीन बिन्दियों की चाबी, सफलता की चाबी तीन बिन्दियां। यह हमेशा साथ में रखना। अच्छा। अभी टीचर्स बैठ जाओ।

(02.04.2008)

टीचर्स से बापदादा क्या चाहता हैं? पता हैं? टीचर्स से बापदादा यही चाहते हैं कि आपके फीचर्स से बापदादा वा फ्यूचर दिखाई दे। साधारण नहीं दिखाई दे, फ्युचर दिखाई दे या बापदादा दिखाई दे। हो सकता है? हो सकता है? अच्छा, इसमें जो भी आई हो वह एक मास के बाद मधुबन में बापदादा के पास अपने इस विशेषता की रिजल्ट लिखना क्योंकि आप निमित्त बनी हुई हो, तो निमित्त बने हुए के ऊपर जिम्मेवारी भी होती है, आपकी शक्ल कभी भी एक मास में चिंता वाली वा व्यर्थ चिंतन वाली बनीं या एक मास जो बापदादा चाहते हैं वैसे ही फीचर्स रहे? नो प्रोब्लम, ठीक है? नो प्रोब्लम कि थोड़ी-थोड़ी आ जायेगी। आने नहीं देना। प्राब्लम का दरवाजा बन्द। डबल लॉक लगाना। डबल लॉक है - याद और सेवा। मन्सा सेवा सदा हाजिर है, ऐसे नहीं चांस ही नहीं मिला, बड़ी बहन ने मेरे को चांस ही नहीं दिया, मन्सा के लिए कोई नहीं रोकता। रात को भी जाग करके कर सकती हो, मन्सा सेवा सकाश दो, आह्वान करो आत्माओं का, बिचारे दुःखी आत्मायें हैं, सहारा दो। तो एक मास की रिजल्ट सभी टीचर्स नयी पुरानी सभी टीचर्स, जो नहीं भी आई हैं वह भी एक मास की रिजल्ट लिखना, नो प्रोब्लम।

(15.11.2008)

बापदादा खुश है। टीचर्स भी काफी हैं लेकिन कौन-सी टीचर्स? ऐसी टीचर्स जो अपने फीचर्स, चलन और चेहरे से सभी को फ्युचर दिखाये। अभी का फ्यूचर क्या है? फरिश्ता। भविष्य का फ्यूचर देवता। तो हर एक टीचर अभी का फ्यूचर जो फरिश्ता है, चलो देवता तो भविष्य में बनेंगे लेकिन जो लास्ट घड़ी का स्वरूप है फरिश्ता, वह फीचर्स अर्थात् चलन और चेहरे से स्पष्ट दिखाई दे। जैसे

शुरू-शुरू में जब आप सेवा में गये, 14 वर्ष तपस्या और बापदादा - माँ की पालना का साथ लिया, तो पहले शुरू में जब सेवा में गये तो आप कोई सेवाधारी आत्माओं को जिज्ञासु को कभी लाइट का ताज और कभी मस्तक में चमकता हुआ बिन्दू, यह दिखाई देता था और परखने की शक्ति आप में बहुत तीव्र थी, कोई भी आसुरी स्वभाव वाला आता था, क्योंकि कुमारियाँ नाम था ना लेकिन उसकी चाल नहीं चलती थी, इतनी ताकत थी जो वह स्वयं पाँव पर गिरकर कहते थे कि हमने क्या सोचा और आप कौन हो! यह पवित्रता का जो चमत्कार था वह प्रत्यक्ष चलन में, स्वप्न तक था। अपवित्रता का स्वप्न मात्र भी नहीं था, था, है नहीं कहते हैं था। अब फिर से अपने साथियों में यह लाइट माइट की दृढ़ता लाते रहो। ईज़ी नहीं। समझते तो हो सभी, टीचर्स निमित्त हो ना बाबा की तरफ से और बापदादा को टीचर्स छोटी चाहे बड़ी उनके लिए दिल में बहुत प्यार हैं क्योंकि बाप के कार्य में सहयोगी हो। निमित्त हो, सहयोगी हो। चारों ओर सभी स्टूडेन्ट के सामने साकार रूप में आप टीचर्स हो। अव्यक्त रूप में बापदादा है और एडवान्स पार्टी भी आपको सकाश देती रहती हैं, जब अमृतवेले वतन में आते हैं तो सखियों को भी याद करती हैं, सेन्टर्स को भी याद करती हैं।

(09.03.2009)

ओम् शान्ति

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेः-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत–307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः +919414007497, +919414150607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com